आवश्यक सूचनायें

(१) हमने प्रथम खण्ड की समाप्ति पर उसके साथ एक महाभारत-कालीन भारतवर्ष का प्रामाणिक सुन्दर मानचित्र भी देने की सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में हम ग्राहकों को सूचित करते हैं कि पूरा महाभारत समाप्त हो जाने पर हम प्रत्येक ग्राहक को एक परिशिष्ट अध्याय बिना मूल्य भेजेंगे जिसमें महाभारत-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण खोज, साहित्यिक आलोचना, चरित्र-चित्रण तथा विश्लेषण आदि रहेगा। इसी परिशिष्ट के साथ ही मानचित्र भी लगा रहेगा जिसमें पाठकों को मानचित्र देख कर उपरोक्त बातें पढ़ने और समझने आदि में पूरी सुविधा रहे।

(२) महाभारत के प्रेमी ग्राहकों को यह शुभ समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कानपुर, उन्नाव, काशी (रामनगर), कलकत्ता, ग़ाज़ीपुर, बरेली, मथुरा (वृन्दावन), जोधपुर, बुलन्दशहर, प्रयाग और लाहौर आदि में ग्राहकों के घर पर ही महाभारत के अङ्क पहुँचाने का प्रबन्ध किया है। अब तक ग्राहकों के पास यहीं से सीधे डाक-द्वारा प्रतिमास अङ्क भेजे जाते थे जिसमें प्रति अङ्क तीन चार आना खर्च होता था पर अब हमारा नियुक्त किया हुआ एजेंट ग्राहकों के पास घर पर जाकर अङ्क पहुँचाया करेगा और अङ्क का मूल्य भी ग्राहकों से वसूल कर ठीक समय पर हमारे यहाँ भेजता रहेगा। इस अवस्था पर ग्राहकों को ठीक समय पर प्रत्येक अङ्क सुरक्षित रूप में मिल जाया करेगा और वे डाक, रजिस्टरी तथा मनीआर्डर इत्यादि के व्यय से बच जायँगे। इस प्रकार उन्हें प्रत्येक अङ्क केवल एक रुपया मासिक देने पर ही घर बैठे मिल जाया करेगा। यथेष्ट ग्राहक मिलने पर अन्य नगरों में भी शीघ्र ही इसी प्रकार का प्रबन्ध किया जायगा। आशा है जिन स्थानों में इस प्रकार का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ के महाभारतप्रेमी सज्जन शीघ्र ही अधिक संख्या में ग्राहक बन कर इस अवसर से लाभ उठावेंगे। और जहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो चुकी है वहाँ के ग्राहकों के पास जब एजेंट अङ्क लेकर पहुँचे तो ग्राहकों को रुपया देकर अङ्क ठीक समय पर ले लेना चाहिए जिसमें उन्हें ग्राहकों के पास बार बार आने जाने का कष्ट न उठाना पड़े। यदि किसी कारण उस समय ग्राहक मूल्य देने में असमर्थ हों तो अपनी सुविधानुसार एजेंट के पास से जाकर अङ्क ले आने की कृपा किया करें।

(३) हम हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जनों से एक सहायता की प्रार्थना करते हैं। वह यही कि हम जिस विराट् आयोजन में संलग्न हुए हैं आप लोग भी कृपया इस पुण्य-पर्व में सम्मिलित होकर पुण्य-सञ्चय कीजिए अपनी राष्ट्र-भाषा हिन्दी का साहित्य-भाण्डार पूर्ण करने में सहायक हूजिए और इस प्रकार सर्वसाधारण का हित-साधन करने का उद्योग कीजिए। सिर्फ़ इतना ही करें कि अपने दस-पाँच हिन्दी-प्रेमी इष्ट-मित्रों में से कम से कम दो स्थायी ग्राहक इस वेद-तुल्य सर्वाङ्गसुन्दर महाभारत के और बना देने की कृपा करें। जिन पुस्तकालयों में हिन्दी की पहुँच हो वहाँ इसे ज़रूर मँगवावें। एक भी समर्थ व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसके घर यह पवित्र ग्रन्थ न पहुँचे। आप सब लोगों के इस प्रकार साहाय्य करने से ही यह कार्य्य अग्रसर होकर समाज का हितसाधन करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

महर्षि वेदव्यास-प्रणीत

महाभारत का अनुवाद

कर्णपर्व

पहला अध्याय

वैशम्पायन से जनमेजय का प्रश्न

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

वैशम्पायन ने कहा—राजन् ! जब महाबली द्रोणाचार्य मारे गये तब अत्यन्त घबराये हुए राजा दुर्योधन, सब राजाओं को साथ लेकर, अश्वत्थामा के पास पहुँचे। मोह के कारण अत्यन्त निस्तेज और द्रोण-वध के कारण अत्यन्त शोकाकुल सब लोग चारों ओर से अश्वत्थामा को घेरकर बैठ गये। शास्त्रोक्त बातों से दुःख का वेग कम होने पर सब राजा लोग रात्रि के समय अपने-अपने डेरे में गये। उस तीव्र जन-संहार की याद ने वहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। वे दुःख और शोक के कारण व्याकुल थे, रात को करवटें ही बदलते रहे। कर्ण, दुःशासन और महारथी शकुनि ये तीनों उस रात को दुर्योधन के डेरे में ही रहे। पाण्डवों को इनसे जो-जो महाक्लेश पहुँचे थे उनका ख़याल इस समय इन्हें बेतरह डर दिखाने लगा। जुए में तरह-तरह से क्लेश देने और द्रौपदी को सभा में बुला भेजने आदि का स्मरण करके वे बहुत ही घबराये। जुए से पाण्डवों को जो-जो कष्ट पहुँचे थे उन्हें सोचने के कारण कौरवों को

वह एक रात सौ वर्ष के समान हो गई। सवेरा होने पर कौरव भी, भावी की प्रेरणा से, फिर विधिपूर्वक आवश्यक काम और युद्ध की तैयारी करने लगे। स्नान, सन्ध्या आदि करने के उपरान्त युद्ध की तैयारी होने लगी और सब लोग सुसज्जित होकर युद्ध को रवाना हुए। इससे पहले उन्होंने मङ्गल-उत्सव करके, कर्ण को सेनापति बनाकर, ब्राह्मणों की पूजा की। दधिपात्र, घी, अक्षत, गाय, घोड़े, सुवर्ण और बहुमूल्य वस्त्र देकर सबने ब्राह्मणों से आशीर्वाद प्राप्त किया। सूत-मागध-चारण वन्दना और जय-जयकार करने लगे। इसी तरह पाण्डव दल के लोग भी सवेरे के ज़रूरी कामों से छुट्टी पाकर, युद्ध का निश्चय करके, शीघ्रता के साथ अपने-अपने डेरों से निकले। अब परस्पर विजय के लिए लाग-डाँट रखनेवाले पाण्डव और कौरव बहुत ही लोमहर्षण संग्राम करने लगे। महारथी कर्ण को

१०

सेनापति बनाकर कौरवों ने दो दिन पाण्डवों से घोर युद्ध किया। महाप्रतापी कर्ण ने इन दो दिनों में बेशुमार शत्रुओं को मारा और अन्त को वे, आपके पुत्रों के सामने ही, अर्जुन के बाण से मरे। कर्ण के मारे जाने पर सञ्जय शीघ्र हस्तिनापुर में पहुँचे और उन्होंने राजा धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र के युद्ध का सब वृत्तान्त कह सुनाया।

जनमेजय ने कहा—ब्रह्मन्! महात्मा भीष्म पितामह और यशस्वी द्रोणाचार्य के वध की ख़बर पाकर राजा धृतराष्ट्र बहुत ही चिन्तित हो रहे थे। अब दुर्योधन के हितैषी कर्ण की, जिनके बाहु-बल और वीर्य के भरोसे वे अपने पुत्रों के विजयी होने की आशा रक्खे हुए थे, मृत्यु सुनकर उनकी क्या दशा हुई होगी? वे कैसे जीते रहे होंगे? ऐसे शोक-समाचार को सुन कर भी यदि उनके प्राण नहीं निकले तो, मैं समझता हूँ, मनुष्य अत्यन्त कष्ट की दशा में किसी तरह शरीर को छोड़ना नहीं चाहता। बूढ़े राजा धृतराष्ट्र अपने प्रिय और सगे भीष्म पितामह, द्रोण, कर्ण, बाह्लीक, सोमदत्त, भूरिश्रवा तथा अन्य बहुत से सुहृत्-पुत्र-पौत्र आदि की

२०

हाथ जोड़कर बड़े कष्ट से उन्होंने कहा—महाराज ! मैं सञ्जय हूँ ।—पृष्ठ २७११

राजा दुर्योधन ने मधुर वाक्यों से उन श्रेष्ठ वीरों को प्रसन्न करते हुए समय के अनुकूल यों कहा।—पृ० २७२७

का हाल सुनकर भी जीते रहे, इससे जान पड़ता है कि प्राण छोड़ देना बहुत ही दुष्कर है। हे तपोधन! अब आप सब हाल आदि से अन्त तक विस्तार के साथ कहिए। अपने पूर्व-पुरुषों के पुण्य चरित्र सुनने की मेरी उत्कण्ठा किसी तरह नहीं मिटती। २४

दूसरा अध्याय

धृतराष्ट्र का शोक और प्रश्न

वैशम्पायन ने कहा कि राजन्! महाबली कर्ण के मारे जाने पर महात्मा सञ्जय उस रात में ही उदास और खिन्न भाव से, पवन के समान वेग से जानेवाले घोड़ों को हाँकते हुए, हस्तिना-पुर में पहुँचे। तेज और श्री से रहित, खिन्न, बूढ़े राजा धृतराष्ट्र से मिलकर, हाथ जोड़कर, बड़े कष्ट से उन्होंने यों कहा—महाराज! मैं सञ्जय हूँ। आप आराम से तो हैं? हाय, बड़े कष्ट की बात है! अपने ही दोष से आप पर यह आपत्ति आई है। इस आपत्ति के कारण अब आप घबराते तो नहीं हैं? विदुर, द्रोण, श्रीकृष्ण और भीष्म ने पहले जो हित की सलाह दी थी उसे आपने नहीं माना। अब उसका स्मरण करके आपको पछतावा तो नहीं हो रहा है? सभा में परशुराम, नारद, कण्व आदि महर्षियों ने आकर आपको हित की बातें सुनाई थीं। उन्हें आपने नहीं माना। अब उनको याद कर आप पछताते तो नहीं हैं? आपके सुहृद् और हितैषी भीष्म, द्रोण आदि को शत्रुओं ने युद्ध में मार डाला, यह स्मरण करके क्या आप व्यथित होते हैं?

हाथ जोड़कर यों कह रहे सूत-पुत्र सञ्जय की बातों से अत्यन्त पीड़ित राजा धृतराष्ट्र ने लम्बी साँस लेकर कहा—हे सञ्जय! दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले महाबली भीष्म और द्रोण की मृत्यु सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त व्याकुल हो रहा है। जिन्होंने नित्य दस हज़ार रथियों को मारा वे महावीर भीष्म, पाण्डवों के बल से रक्षित, शिखण्डी के बाणों से मारे गये! यह समाचार मेरे चित्त को मथे डालता है। भृगुकुमार परशुराम ने प्रसन्न होकर लड़कपन में जिन्हें धनुर्वेद सिखलाया और सब दिव्य अस्त्र दिये, जिनकी कृपा से महाबली पाण्डवगण और अन्य अनेक राजा महारथी कहलाते हैं, उन सत्यप्रतिज्ञ धनुर्द्धरश्रेष्ठ आचार्य द्रोण को समर में धृष्टद्युम्न ने मार डाला! यह सुनकर मेरा हृदय अत्यन्त कातर हो रहा है। इस पृथ्वीमण्डल में महावीर भीष्म और द्रोण के समान चारों प्रकार की अस्त्रविद्या में निपुण दूसरा कोई नहीं था। उन्हीं दोनों के मारे जाने की ख़बर पाकर मैं अत्यन्त व्याकुल हो रहा हूँ। हे सञ्जय! त्रिभुवन में जिनके समान अस्त्र जाननेवाला कोई नहीं देख पड़ता, वे वीरवर द्रोणाचार्य जब समर में मारे गये तब मेरे पक्ष के वीरों ने क्या किया? महावीर अर्जुन के पराक्रम से जब संशप्तक-सेना मारी गई, अश्वत्थामा का १०

नारायणास्त्र निष्फल हो गया और सब सेना भाग खड़ी हुई तब कौरवों ने क्या किया ? मुझे जान पड़ता है कि द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद वे सब लोग समुद्र के बीच नाव टूटने पर उसके
२० यात्रियों की सी दशा को प्राप्त हुए होंगे। हे सञ्जय! सारी सेना जब भागने लगी तब कर्ण, कृतवर्मा, दुर्योधन, शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य और बचे हुए मेरे पुत्रों तथा अन्य वीरों की क्या दशा हुई? तुम यह सब हाल और युद्ध में कौरवों तथा पाण्डवों का पराक्रम विस्तार के साथ मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—राजन्! आपके दोष से कौरवों की जो दुर्दशा हुई और हो रही है, उसे सुनकर आप व्यथित न हों। ऐसी होनी ही थी। भाग्य-दोष से होनेवाले अनिष्ट से समझदार लोग व्यथित नहीं होते; क्योंकि मनुष्यों का इष्ट-अनिष्ट तो दैव के अधीन है। जो होनी है वह होगी और जो नहीं होनी है वह नहीं होगी। इसलिए इष्ट के न मिलने और अनिष्ट के मिलने पर व्यथित होना या शोक करना बुद्धिमान् का काम नहीं है।

धृतराष्ट्र ने कहा—सञ्जय! मुझे इन अनिष्ट समाचारों से बहुत अधिक व्यथा नहीं हो
२५ सकती। मैं इसे भाग्य का दोष समझता हूँ। तुम खुलासा सब हाल कहो।

तीसरा अध्याय

सञ्जय का संक्षेप में कर्ण के मारे जाने का हाल कहना

सञ्जय ने कहा—राजन्! श्रेष्ठ वीर महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य जब युद्ध में मारे गये तब आपके महारथी पुत्र विषाद से मलिनमुख, चिन्तित और अचेत-से हो उठे। शोक से व्याकुल, मुँह लटकाये हुए, सब शस्त्रधारी कौरव चुपचाप एक दूसरे की ओर ताकने लगे। उन्हें व्यथित देखकर सैनिक लोग भी, स्वयं दुःख और त्रास से पीड़ित होकर, शून्य दृष्टि से आकाश की ओर निहारने लगे। युद्ध में द्रोणाचार्य की मृत्यु देखकर वे ऐसे घबरा गये कि खून से तर हथियार उनके हाथों से छूट पड़े। उनकी कमर में जो खड्ग आदि शस्त्र लटक रहे थे वे आकाशमण्डल में नक्षत्रों की तरह चमक रहे थे।

अपनी सेना को इस तरह निश्चेष्ट और मृत-तुल्य देखकर राजा दुर्योधन ने कहा—हे वीर योद्धाओ! तुम्हारे ही बाहुबल के सहारे मैंने पाण्डवों को युद्ध के लिए ललकारा और यह युद्ध ठाना है। किन्तु इस समय द्रोणाचार्य के मरने पर तुम लोग विषादपूर्ण देख पड़ रहे हो, युद्ध में वैसा उत्साह नहीं देख पड़ता। युद्ध करनेवाले योद्धा लड़ने में मारे ही जाते हैं। समरभूमि में जानेवाला या तो मरता है या शत्रु को मारकर विजय पाता है। इसमें आश्चर्य ही क्या है?

तुम लोग उत्साहपूर्वक चारों ओर से युद्ध करो। वह देखो, महारथी महात्मा वैकर्तन कर्ण अपना अस्त्रबल और बाहुबल दिखाते हुए युद्धभूमि में विचर रहे हैं। सिंह के सामने जैसे क्षुद्र मृग १० डर के मारे नहीं जाता वैसे ही मन्दमति अर्जुन युद्ध में कर्ण का सामना नहीं करते। दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले भीमसेन की दुर्दशा तो तुम लोग देख ही चुके हो। कर्ण ने साधारण मनुष्य-युद्ध करके ही भीमसेन को परास्त किया था। दिव्य अस्त्रों का जाननेवाला मायावी शूर घटोत्कच युद्ध में पराक्रम दिखाकर बेतरह सिंहनाद कर रहा था। उसको दिव्य अमोघ शक्ति से वीर कर्ण ने मार डाला। कर्ण का पराक्रम ऐसा है कि शत्रुगण उसके सामने कुछ नहीं कर सकते। आज युद्ध में तुम लोग उन्हीं सत्यप्रतिज्ञ बुद्धिमान् कर्ण का अक्षय बाहुबल देखोगे। विष्णु और

इन्द्र के तुल्य पराक्रमी अश्वत्थामा और कर्ण का पराक्रम आज पाण्डव देखेंगे। तुम सब पराक्रमी और अस्त्र-विद्या में निपुण हो। तुममें से हर एक इतनी शक्ति रखता है कि सेना सहित पाण्डवों को मारना कुछ कठिन नहीं है। फिर तुम सब लोग मिलकर क्या नहीं कर सकते?

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सैनिकों को यों उत्साहित करके आपके पुत्र दुर्योधन ने, भाइयों के साथ, कर्ण के पास जाकर उन्हें सेनापति का पद दिया। युद्धदुर्मद महावीर महारथी कर्ण सेनापति होने पर ज़ोर से सिंहनाद करके शत्रुओं से तुमुल युद्ध करने लगे। उन्होंने संग्राम में सब सृञ्जय, पाञ्चाल, केकय, विदेह आदि देशों के वीरों को मारना शुरू कर दिया। उनके धनुष से लगातार, भौंरों की पङ्क्तियों के समान शब्द कर रहे, सैकड़ों-हज़ारों बाण निकल रहे थे। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! महाबली कर्ण महापराक्रमी पाञ्चालों और पाण्डवों को पीड़ित करके, २१ हज़ारों वीर योद्धाओं को मारकर, अन्त को वीर अर्जुन के हाथों मारे गये।

चौथा अध्याय

राजा धृतराष्ट्र का शोक

वैशम्पायन कहते हैं—हे जनमेजय ! महावीर कर्ण के मरने का समाचार सुनकर राजा धृतराष्ट्र अपार शोक-सागर में डूब गये। अपने पुत्र दुर्योधन को भी मृततुल्य जानकर वे, अत्यन्त कातर होकर, चेतना-हीन गज-राज की तरह धरती पर गिर पड़े। रनिवास की स्त्रियाँ वृद्ध राजा की दशा देखकर हाय हाय करने लगीं। वह शब्द सर्वत्र गूँज उठा। भरतकुल की महिलाएँ भयानक शोकसागर में डूब-कर, व्याकुल होकर, रोने लगीं। गान्धारी आदि स्त्रियाँ राजा के पास जाकर, बेहोश हो-होकर, गिर पड़ीं। आँखों में आँसू भरे हुए और शोक से मूर्च्छित सी उन रमणियों को महात्मा सञ्जय समझाने और सान्त्वना देने लगे। सञ्जय के आश्वासन देने से सब स्त्रियाँ कुछ धैर्य धरके उठ बैठीं। उनके अङ्ग पवन-सञ्चालित केले के पत्तों की तरह काँप रहे थे। प्रज्ञाचक्षु बड़े भाई राजा धृत-

राष्ट्र को महामति विदुर दिलासा देने लगे। राजा धृतराष्ट्र को धीरे-धीरे होश आया। अपने पास सब स्त्रियों को उपस्थित जानकर, ग्रहग्रस्त पुरुष की तरह, वे चुपचाप बैठे रहे। बहुत देर तक योंही सोचने के बाद बारम्बार लम्बी साँसें छोड़ने और पाण्डवों की प्रशंसा करने के साथ

१० ही वे अपने दुर्मति पुत्रों की निन्दा करने लगे। शकुनि की, और अपनी, बुद्धि को बुरा कहकर वे देर तक सोचते और शोक के वेग से काँपते रहे। दम भर बाद धैर्यधारणपूर्वक स्थिरचित्त होकर उन्होंने पूछा—हे सञ्जय! तुमने जो बातें कहीं उन्हें मैंने सुना। तुम ठीक-ठीक मुझसे कहो, राज्याभिलाषी मेरे पुत्र दुर्योधन ने विजय-लाभ से हताश होकर प्राण तो नहीं छोड़ दिये?

राजा धृतराष्ट्र के ये वचन सुनकर सञ्जय ने कहा—राजन् ! महावीर कर्ण अपने पुत्र और भाई-बन्धुओं सहित मारे गये। महायशस्वी प्रतापी भीमसेन ने रणभूमि में दुःशासन

१६ को गिराकर, क्रोधान्ध हो, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए उनके हृदय का रक्त पिया।

पाँचवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र के प्रश्न के अनुसार कौरव दल के मारे गये योद्धाओं का वर्णन

वैशम्पायन कहते हैं कि महाराज! महामति सञ्जय के वचन सुनकर राजा धृतराष्ट्र शोक से विह्वल हो उठे। उन्होंने कहा—हे तात! मेरी दुर्नीति और शीघ्र ही मृत्यु के मुख में जानेवाले मेरे पुत्र दुर्योधन के अन्याय का ही यह फल है कि आज वैकर्तन कर्ण की मृत्यु सुनकर उस कठिन शोक से मैं व्याकुल हो रहा हूँ—वह शोक मेरे मर्मस्थल को काटे डालता है। मुझे दुःख के पार जाने की इच्छा है। मेरे आगे तुम यह कहो कि कौरवों और सृञ्जयों में कौन-कौन वीर पुरुष मारे गये हैं और कौन-कौन अभी जीते हैं। यह वृत्तान्त सुनाकर मेरा संशय दूर करो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! महाप्रतापी दुर्द्धर्ष भीष्म पितामह ने दस दिन में पाण्डवों की सेना के एक अर्बुद वीरों को मारा और अब वे रणशय्या पर शयन कर रहे हैं। महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य ने पाञ्चालों के झुण्ड के झुण्ड रथी योद्धाओं को मारा था। इस तरह घोर युद्ध करने के बाद पन्द्रहवें दिन वे भी मारे गये। भीष्म और द्रोण के हाथों से जो पाण्डव-सेना बच रही थी उसमें से आधी सेना मारने के बाद वीरवर कर्ण की मृत्यु हुई। महाराज! महाबली राजकुमार विविंशति ने द्वारका के यादवों के सैकड़ों योद्धा मारे और अन्त को वे स्वयं युद्ध में मारे गये। आपके पुत्र शूर विकर्ण के बाण चुक गये थे तथापि क्षत्रिय के धर्म को स्मरण करके उन्होंने रणभूमि नहीं छोड़ी और वे उसी दशा में शत्रु के हाथ से मारे गये। दुर्योधन के द्वारा प्राप्त महाघोर बहुत से क्लेशों को और अपनी प्रतिज्ञा को स्मरण करके वीर भीमसेन ने विकर्ण को मार डाला। अवन्ति देश के राजपुत्र महारथी दोनों भाई विन्द और अनुविन्द युद्ध में ख़ूब लड़े और दुष्कर कर्म करके अन्त में मारे गये। सिन्धु आदि दस राष्ट्र जिनकी आज्ञा का पालन करते थे १० और जो आपके कहे पर चलते थे, उन महावीर जयद्रथ को अकेले अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से, ग्यारह अक्षौहिणी सेना को जीतकर, मार डाला। पिता की आज्ञा माननेवाले, दुर्योधन के पुत्र, मनस्वी युद्धदुर्मद को अभिमन्यु ने मारा। युद्ध में प्रचण्ड रूपवाले शूर दुःशासन के पुत्र को द्रौपदी के पुत्र ने मार डाला। समुद्र के अनूप प्रदेश में रहनेवाले किरातों के स्वामी, धर्मात्मा, इन्द्र के आदरपात्र सखा और क्षत्रिय-धर्म में निरत राजा भगदत्त को अर्जुन ने पराक्रमपूर्वक मार गिराया। महायशस्वी वीर भूरिश्रवा ने जब शस्त्र रख दिये तब यादव सात्यकि ने उनको मार डाला। आपके पुत्र, सदा अमर्षपूर्ण रहनेवाले, अस्त्र-विद्या में निपुण, युद्धदुर्मद, दुःशासन को भीमसेन ने बलपूर्वक मार डाला। कई हज़ार हाथियों की अद्भुत सेना साथ रखनेवाले राजा सुदक्षिण को अर्जुन ने यमपुर पहुँचा दिया। कोसल देश के राजा ने बहुत से शत्रु- २० योद्धाओं को मारा और अन्त को उन्हें अभिमन्यु ने बलपूर्वक मार डाला। बहुत देर तक लड़-

कर मद्दारथी भीमसेन को छकाने के बाद राजकुमार चित्रसेन उनके हाथ से मारे गये। मद्र-राज के पुत्र, शूर, ढाल-तलवार से शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न करने के बाद अभिमन्यु के हाथ से मारे गये। युद्ध में कर्ण के समान ही योद्धा, महातेजस्वी, फुरतीले दृढ़विक्रम कर्णपुत्र वृषसेन को अर्जुन ने मार डाला। अभिमन्यु के वध का स्मरण करके और अपनी प्रतिज्ञा का ख़याल करके अर्जुन ने, कर्ण के सामने ही, अपने पराक्रम और बाहुबल से वृषसेन को यमपुर भेज दिया। अम्बष्ठदेशीय क्षत्रियश्रेष्ठ श्रुतायु निर्भय होकर युद्ध करते रहे। पाण्डवों से सदा वैर रखनेवाले उक्त राजा ने अर्जुन से दारुण युद्ध किया और स्वयं उनके बाणों से मारे गये। सहदेव ने अपने मामा के बेटे रुक्मरथ को मार डाला। वृद्ध राजा भगीरथ और केकय देश के बृहत्क्षत्र, ये दोनों बड़े बली और पराक्रमी होकर भी युद्ध में मारे गये। वीर नकुल ने, श्येन पक्षी की तरह, युद्ध में विचर रहे महाबली भगदत्त के पुत्र कृतप्रज्ञ को मारा। भीमसेन ने आपके पितामह महाबली पराक्रमी बाह्लीक को, बाह्लीक देश की सेना के साथ, मार-

३० कर गिरा दिया। वीर अभिमन्यु ने मगधराज जरासन्ध के पुत्र जयत्सेन को युद्ध में मारा। महाराज! आपके पुत्र शूरमानी महारथी दुर्मुख और दुःसह को भीमसेन ने गदा के प्रहार से मार डाला। ऐसे ही आपके पुत्र दुर्मर्षण, दुर्विषह और महारथी दुर्जय—दुष्कर कर्म करने के बाद—मारे गये। युद्ध-दुर्मद दोनों भाई कलिङ्ग और वृषक भी दुष्कर कर्म करके मारे गये। आपके सचिव शूर वीर्यशाली वृषपर्वा को भीमसेन ने पराक्रम के साथ मार डाला। दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले पौरव, अपनी सेना के साथ, युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारे गये। महाराज! अचूक प्रहार करनेवाले दो हज़ार वसाति-योद्धा और शूरसेन देश के सब पराक्रमी वीर युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। कवचधारी, प्रहार करनेवाले, युद्ध में दुर्द्धर्ष अभीषाहगण, महारथी शिबि और कलिङ्ग देश के क्षत्रिय युद्ध में मारे गये। गोकुल में रहनेवाले, समर में महाक्रोधी, वीर गोपों की सेना को भी युद्ध में अर्जुन ने मार डाला। कई हज़ार संशप्तकगण आदि

४० सब अर्जुन के सामने जाकर मारे गये। आपके साले वृषक और अचल, आपकी ओर से ख़ूब लड़े और अन्त को अर्जुन के हाथ से मौत का शिकार बने। शाल्व देश के राजा, नाम के अनुसार ही, उग्रकर्मा को भीमसेन ने मार डाला। महाराज! ओघवान् और बृहन्त, इन दोनों ने मित्र के लिए परम पराक्रम प्रकट करके शरीर-त्याग किया। श्रेष्ठ रथी क्षेमधूर्ति को भीमसेन ने रण में गदा के प्रहार से मार डाला। महाधनुर्द्धर महाबली जलसन्ध ने ख़ूब शत्रुसेना का संहार किया और अन्त को सात्यकि के हाथ से मारे गये। राक्षसेन्द्र अलम्बुष खरों (गदहों) के रथ पर बैठकर आपकी ओर से ख़ूब लड़ा। उसे घटोत्कच ने पराक्रमपूर्वक मार डाला। अर्जुन के हाथ से कर्ण, उनके महारथी भाई, कैकेय, मालव, मद्रक, उग्रकर्मा द्राविड़, यौधेय, ललित्थ, क्षुद्रक, औशीनर, मावेल्लक, तुण्डिकेर, सावित्रीपुत्रक, पूर्व उत्तर पश्चिम

और दक्षिण इत्यादि दिशाओं के, अनेक देशों के, वीर असंख्य योद्धा मारे गये। पैदलों के झुण्ड, प्रयुत घोड़े, रथों के समूह और श्रेष्ठ हाथियों के झुण्ड के झुण्ड मारे गये। सुख में पले हुए, ५० महाबली, परस्पर मारने के लिए उद्यत, ध्वजा, शस्त्र, कवच, बहुमूल्य कपड़ों और गहनों आदि से अलंकृत असंख्य वीर काल के वश होकर अर्जुन के बाणों से मारे गये। महाराज ! जिनका वर्णन किया गया ये तथा अन्य सैकड़ों-हज़ारों राजा लोग अपने अनुचरों और सैनिकों सहित रण में मारे गये हैं। आप जो मुझसे पूछते हैं, सो मैंने आपके आगे कह दिया। कर्ण और अर्जुन के युद्ध में इस तरह यह जनसंहार हुआ है। पहले जैसे इन्द्र से वृत्र, राम से रावण, श्रीकृष्ण से नरकासुर और मुर, तथा भार्गव परशुराम से कार्तवीर्य सहस्रबाहु अर्जुन का दारुण युद्ध हुआ था, वैसे ही अर्जुन से कर्ण का युद्ध हुआ और उसमें अर्जुन ने द्वैरथ-युद्ध करके रणदुर्मद कर्ण को मार डाला। जातिवालों और भाइयों सहित शूर युद्धदुर्मद कर्ण ने त्रैलोक्य को चकित करनेवाला महायुद्ध किया। स्कन्द के हाथ से महिषासुर या शिव के हाथ से अन्धकासुर जैसे मारा गया था, वैसे ही अमात्य-बान्धवों सहित महारथी कर्ण द्वैरथ-युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारे गये। श्रेष्ठ योद्धा कर्ण ही आपके पुत्रों की जय की आशा और इस पाण्डव-कौरव-वैर की जड़ थे। उन्हें मारकर पाण्डव रणसागर के पार पहुँच गये। राजन् ! पहले समझाने से भी जो आपकी समझ में नहीं आता था, आपके हितचिन्तक मित्र लाख कहते थे, पर आप ध्यान ही नहीं देते थे, यह वही महाघोर सङ्कट और कष्ट का समय आ गया है। राजन् ! आप पुत्रों के हितैषी थे और आपके पुत्र अन्याय से पाण्डवों का हिस्सा ले लेना चाहते थे। राज्यलोभी पुत्रों का कहा मानकर आपने सदा पाण्डवों का अहित ही किया। यह आपकी उसी करतूत का फल है। ६०

छठा अध्याय

पाण्डव पक्ष के मारे गये योद्धाओं के नामों का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! तुमने पाण्डवों के हाथ से मरे हुए, मेरे पक्ष के, वीरों के नाम तो सुनाये, अब पाण्डव पक्ष के उन वीरों के नाम सुनाओ, जिन्हें कौरवों ने मारा है।

सञ्जय ने कहा—महाराज ! पराक्रमी भीष्म पितामह ने कृतास्त्र, युद्धप्रिय, महावीर्यशाली, महाबली, सेना और सचिव सहित सैकड़ों-हज़ारों नारायण, वल्लव, राम आदि नामवाले, विजय में अनुरक्त शूरों को मार गिराया। पराक्रमी और बल में अर्जुन के तुल्य राजा सत्यजित् को युद्ध में द्रोणाचार्य ने मारा। महारथी द्रोणाचार्य से युद्ध करके युद्धनिपुण सब पाञ्चाल मारे गये। वृद्ध राजा विराट, द्रुपद, उनके पुत्र आदि—पाण्डवों के लिए पराक्रम प्रकट करके—आचार्य के हाथ से मारे गये। लड़कपन में ही अर्जुन के समान योद्धा गिने जानेवाले, श्रीकृष्ण के समान दुर्द्धर्ष और बल में बलभद्र के बराबर, वीरवर, रण-विशारद बालक अभिमन्यु ने

अगणित शत्रु-सेना का संहार किया। अकेले अभिमन्यु का सामना न कर सकने-पर उन्हें छः महारथियों ने मिलकर मार डाला। क्षत्रियधर्म का पालन कर रहे अभिमन्यु ने रथ नष्ट हो जाने पर भी लड़ना नहीं छोड़ा। उन्हें उसी अवस्था में दुःशासन के पुत्र ने गदा के प्रहार से मार डाला। पटच्चर-निहन्ता अम्बष्ठ के पुत्र श्रीमान् बहुत बड़ी सेना लेकर अपने मित्र पाण्डवों की
११ ओर से लड़ रहे थे। सैन्यसंहार कर चुकने पर वे दुर्योधन के पुत्र वीर लक्ष्मण के हाथ से मारे गये। महाधनुर्द्धर, अस्त्रनिपुण, युद्धदुर्मद राजा बृहन्त को रण में दुःशासन ने मार डाला। पाण्डवों की ओर से लड़नेवाले मणिमान् और दण्डधार को द्रोणाचार्य ने मारा। भोजराज महारथी अंशुमान् को और उनकी सेना को द्रोणाचार्य ने मारा। समुद्रतटवासी चित्रसेन और उनके पराक्रमी पुत्र को समुद्रसेन ने बलपूर्वक मार डाला। अनूपदेशवासी नील और वीर्यशाली व्याघ्रदत्त को अश्वत्थामा और विकर्ण ने यमपुर भेज दिया। चित्रयुद्ध-निपुण चित्रायुध को घोर सैन्य-संहार करते देखकर विकर्ण ने विचित्र गति से युद्ध में मार डाला। युद्ध में भीमसेन के समान केकय देश के राजकुमार को केकय देश के ही दूसरे राजकुमार ने, भाई को भाई ने, मार डाला। गदा-युद्ध करनेवाले, प्रतापी, पहाड़ी राजा जनमेजय को आपके पुत्र दुर्मुख ने मारा। दो ग्रहों के समान
२० शोभायमान रोचमान नाम के दो भाइयों को द्रोणाचार्य ने अपने बाणों से यमपुर भेज दिया।

महाराज! इनके सिवा और असंख्य पराक्रमी राजा लोग युद्ध में दुष्कर कर्म करके मारे गये हैं। अर्जुन के मामा पुरुजित् और कुन्तिभोज को महावीर द्रोणाचार्य ने मार डाला। उन्होंने पाञ्चाल देश के वीर सिंहवर्मा और क्षत्रधर्मा को भी यमपुर भेज दिया। काशिराज अभिभू अपनी सेना सहित वसुदान के पुत्र के हाथ से मारे गये। महापराक्रमी अमितौजा, युधामन्यु और उत्तमौजा, इन तीनों वीरों ने सैकड़ों योद्धाओं को मारा और अन्त को वे हमारे पक्ष के वीरों के हाथ से मारे गये। आपके पोते लक्ष्मण ने शिखण्डी के पुत्र क्षत्रदेव को मारा। सुचित्र और चित्रवर्मा, ये दोनों महारथी बाप-बेटे बड़े वीर थे। इन्हें द्रोणाचार्य ने युद्ध में मारा। महाराज! वृद्धक्षेम के पुत्र भी, पर्वदिवस में सागर की तरह, शस्त्र न रहने पर मृत्यु की परम शान्ति को प्राप्त हुए। क्षत्रियश्रेष्ठ सेनाबिन्दु के पुत्र युद्ध में शत्रुओं पर प्रहार करते समय कौरवेन्द्र महाराज बाह्लीक के हाथ से मारे गये। चेदि देश के श्रेष्ठ महारथी धृष्टकेतु भी दुष्कर
३० कर्म करके अन्त को यमपुर सिधारे। वीर सत्यधृति युद्ध में शत्रुसंहार और पाण्डवों के लिए पराक्रम करके मृत्यु के वश हुए। शिशुपाल के पुत्र राजा सुकेतु भी शत्रुओं को रण में मारकर अन्त को द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये। पराक्रमी मदिराश्व, सूर्यदत्त आदि वीर भी द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये। विराट के छोटे भाई श्रीमान् शतानीक और पराक्रमी श्रेणिमान्, दोनों वीर दुष्कर कर्म करके अन्त में यमपुर को सिधार गये। अस्त्रविद्या में निपुण शत्रुनाशन मगधराज भी भीष्म के बाणों से मारे गये। विराट के पुत्र शङ्ख और महारथी उत्तर भी दुष्कर

कर्म करके मृत्यु को प्राप्त हुए। वसुदान कौरव-सेना का संहार करते समय द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये। महाराज! इनको तथा पाण्डव दल के और भी महारथियों को द्रोणाचार्य ने मारा। आपने जो मुझसे पूछा था, सो मैंने सुना दिया। ३९

सातवाँ अध्याय

मरने से बचे हुए वीरों का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरी सेना के सब प्रधान-प्रधान वीर मारे जा चुके हैं। इसी से जो बच रहे हैं, उन्हें भी मैं मृतप्राय ही समझता हूँ। मेरे लिए महाधनुर्द्धर अद्वितीय वीर भीष्म और द्रोण दोनों मारे जा चुके, अब मेरा जीना व्यर्थ है। जिसकी बाहुओं में दस हज़ार हाथियों के बराबर बल था वह युद्ध में सुशोभित होनेवाला वीरवर कर्ण अब इस पृथ्वी पर नहीं है। कर्ण की मृत्यु मेरे लिए असह्य है। हे सञ्जय! जैसे तुमने मेरी सेना के मुख्य-मुख्य वीरों के मरने का ब्यौरा सुनाया, वैसे ही उन योद्धाओं के भी नाम बताओ, जो अभी जीते हैं। तुमने जिन लोगों को मृत बतलाया उनके मरने से मुझे जीते हुए लोग भी मरे से जान पड़ते हैं।

सञ्जय ने कहा—राजन्! वीर द्रोणाचार्य ने जिन्हें धनुर्वेद-कथित चतुर्विध (दृढ़, दूर, सूक्ष्म, शब्दवेध) विचित्र दिव्य अस्त्र बतलाये हैं वे महारथी, कृती, फुरतीले, दृढ़ शस्त्रधारी, दृढ़-मुष्टि, दृढ़ रूप से बाण चलानेवाले, पराक्रमी अश्वत्थामा आपकी ओर से लड़ने को तैयार हैं। द्वारकावासी भोजराज, यादवश्रेष्ठ, महारथी वीर कृतवर्मा आपका हित करने के लिए युद्ध करने को तैयार हैं। प्रतिज्ञा-पालन के लिए अपने भानजे पाण्डवों को छोड़कर आपका साथ देनेवाले इन्द्रसम पराक्रमी दुर्द्धर्ष आर्तायन के पुत्र शल्य, जो युधिष्ठिर के आगे यह प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि युद्ध में कर्ण का तेज नष्ट करेंगे, अभी युद्ध करने को उपस्थित हैं। १० बढ़िया घोड़ों का रिसाला साथ लिये गान्धारराज शकुनि आपकी ओर से युद्ध करने को तैयार हैं। महाबाहु, महारथी और विचित्र अस्त्रों के युद्ध में निपुण कृपाचार्य भारी भार को सहने-वाले विचित्र, बड़े और दृढ़ धनुष को लिये समरभूमि में आपकी ओर से युद्ध करने को प्रस्तुत हैं। महारथी केकय देश का राजपुत्र भी, उत्तम घोड़ों और पताकाओं से शोभित रथ पर बैठकर, आपकी ओर से लड़ने को तैयार है। आपके पुत्र कुरुश्रेष्ठ पुरुमित्र भी सूर्य और अग्नि के समान चमकीले रथ पर बैठकर मेघहीन आकाश में सूर्य के समान प्रकाशमान हैं और पाण्डवों से लड़ने को तैयार हैं। युद्ध का महा उत्साह रखनेवाले राजा दुर्योधन, हाथियों में सिंह की तरह, सुनहरे रथ पर बैठकर युद्ध के लिए तैयार हैं। राजाओं में सुवर्ण का कवच पहने हुए कमलवर्ण दुर्योधन थोड़े धुएँ से युक्त अग्नि, अथवा मेघ की आड़ में स्थित प्रकाशरहित सूर्य की तरह, कर्णवध के शोक से मलिनमुख होकर भी युद्ध के लिए प्रस्तुत हैं। इसी तरह ढाल-

तलवार लेकर लड़नेवाले आपके पुत्र सुषेण, वीर सत्यसेन और चित्रसेन, ये तीनों वीर उत्साह-पूर्वक युद्ध करने को तैयार हैं। महाबली राजपुत्र उग्रायुध, सुदर्श, जरासन्ध का ज्येष्ठ पुत्र, चित्रायुध, श्रुतवर्मा, जय, शल, सत्यव्रत, दुःशल आदि अपनी-अपनी सेना साथ लिये युद्ध करने को प्रस्तुत हैं। हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों की सेना साथ लेकर चलनेवाले, प्रत्येक रण में शत्रुओं का संहार करनेवाले, वीर-मानी, कैतव्याधिपति राजपुत्र आपकी ओर से समर में मरने-मारने के लिए तैयार हैं। वीर श्रुतायु, धृतायुध, चित्राङ्गद, चित्रसेन आदि नररत्न, मानी, २० सत्यप्रतिज्ञ, प्रहार करने में निपुण योद्धा आपकी ओर से लड़ना चाहते हैं। सत्यप्रतिज्ञ महारथी कर्ण के तीन पुत्र अस्त्रविद्या में पारदर्शी और फुरतीले हैं। वे बड़े साहसी हैं और इसी कारण थोड़ी सी सेना लेकर पाण्डवों की विशाल सेना पर आक्रमण करने को उद्यत हैं। महेन्द्र-तुल्य दुर्योधन इन्हें तथा अन्य अनेक महाप्रभाव-सम्पन्न अमितवीर्य योद्धाओं को साथ लिये गज-सेना के बीच विजय की इच्छा से युद्ध करने को तैयार हैं।

यह सुनकर राजा धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! हमारे और शत्रुपक्ष के जीवित तथा मृत वीरों के नाम तुमने मुझे बतला दिये। इस प्रकार दोनों पक्ष के बल की तुलना करके मैं देखता हूँ तो मुझे भावी हार-जीत साफ़ देख पड़ती है, अर्थात् मुझे निश्चय हो गया है कि अब मेरे पक्ष की विजय नहीं होगी।

वैशम्पायन कहते हैं—हे जनमेजय! महाराज धृतराष्ट्र यों कहने के बाद अपने पक्ष के श्रेष्ठ-श्रेष्ठ अधिकांश वीरों की मृत्यु और थोड़े से बचे हुए अपने सैन्यबल का वृत्तान्त सुनने के कारण शोक से व्याकुल और अचेत से हो उठे। उन्होंने सञ्जय से कहा—हे सूत! दम भर ठहर जाओ। इस अप्रिय समाचार के सुनने से मेरा मन व्याकुल हो गया है। मेरे अङ्ग शिथिल हो रहे हैं। २८ मैं किसी तरह धैर्य धारण नहीं कर सकता। अब बूढ़े राजा विह्वल और अचेतप्राय हो गये।

आठवाँ अध्याय

कर्ण के गुणों का वर्णन करके धृतराष्ट्र का शोक करना

जनमेजय ने कहा—हे तपोधन! कुरुराज धृतराष्ट्र ने महाबली कर्ण और युद्ध से विमुख न होनेवाले पुत्रों की मृत्यु का हाल सुनकर, आत्मीय-विनाश और पुत्र-वियोग से उत्पन्न दुःख से अत्यन्त विह्वल होकर, जो कुछ कहा सो आप मुझे सुनाइए।

वैशम्पायन ने कहा—राजन्! कर्ण की मृत्यु एक ऐसी अद्भुत घटना थी जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता और जो प्राणियों को मोहाकुल बना देनेवाली कही जा सकती है। सुमेरु पर्वत का अपनी जगह छोड़कर चलना, महात्मा शुक्राचार्य के चित्त को मोह

अथवा बुद्धि-विभ्रम होना, महातेजस्वी भीमकर्मा इन्द्र का शत्रुओं से हारना, महातेजोमय सूर्य-पिण्ड का आकाश से पृथ्वीतल पर गिर पड़ना, अक्षय समुद्रजल का सूख जाना, पृथ्वी-आकाश-दिशा और जलराशि का अद्‌भुत अत्यन्ताभाव अथवा पुण्य और पाप दोनों तरह के कर्मों का कुछ फल न होना जैसे असम्भव, अद्‌भुत, अचिन्त्य, अयुक्त और अश्रद्धेय है वैसे ही कर्ण की मृत्यु भी थी। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर महाराज धृतराष्ट्र, थोड़ी देर तक सोचकर, समझ गये कि अब उनकी सेना का कोई भी प्राणी जीता नहीं बचेगा। पहले उन्हें कर्ण के मरने का विश्वास ही नहीं होता था; किन्तु अन्त को उन्होंने सोचा कि प्राणिमात्र को एक दिन मरना है और इसी से कर्ण की मृत्यु भी कुछ विचित्र नहीं है। उनका सारा शरीर और हृदय शोक की आग से मानों जल उठा। उनके सब अङ्ग शिथिल हो गये। वे दुःखित होकर दीन भाव से लम्बी साँसें लेकर हाय-हाय करते हुए इस तरह विलाप करने लगे—हे सञ्जय! अधिरथ के पुत्र वीर कर्ण, सिंह और गजराज के समान पराक्रमी, वृषस्कन्ध, वृषनेत्र और वृषगति थे। युवा कर्ण के सब अङ्ग वज्र के समान थे। जैसे कोई साँड़ किसी साँड़ को सामने पाकर पीछे नहीं हटता वैसे ही शत्रु से, चाहे वह साक्षात् इन्द्र ही क्यों न हो, लड़ने में कर्ण कभी पीछे नहीं हटे। उनकी प्रत्यञ्चा और बाणवर्षा के निर्घोष और तलशब्द को सुनकर ही रथी, हाथी, घोड़े और पैदल योद्धा डर जाते थे और युद्ध में सामने नहीं ठहरते थे। शत्रुनाशन और रण से पीछे न हटनेवाले कर्ण का सहारा पाकर ही, उन्हीं के बल पर, दुर्योधन ने महारथी पाण्डवों से वैर किया था। उन्हीं पराक्रमी महारथी पुरुषसिंह कर्ण को अर्जुन ने रण में कैसे मार डाला? वीर कर्ण को अपने बाहुबल का ऐसा दर्प था कि वे अपने आगे श्रीकृष्ण, अर्जुन और अन्य व यादवों को कुछ समझते ही न थे। पाण्डवों के भय से आतुर राज्य के लोभी, लोभ से मोहित, चिन्ता से अधोमुख, मन्दमति दुर्योधन से कर्ण सदा कहा करते थे कि तुम क्यों चिन्ता करते हो? मैं अकेला ही अपराजित कृष्ण और अर्जुन को मारकर दिव्य रथ से पृथ्वी पर गिरा दूँगा। अकेले कर्ण ने प्रज्वलित, कङ्कपत्रशोभित, तीक्ष्ण बाणों से सब काम्बोज, अवन्ती देश के, केकय देश के, गान्धार देश के, मद्र देश के, मत्स्य देश के, त्रिगर्त देश के, तङ्गण, शक, पाञ्चाल देश के, विदेह देश के, कुलिन्द, काशी राज्य के, कोसल देश के, सुह्म देश के, अङ्ग देश के, वङ्ग देश के, निषाद, पुण्ड्र, चीरक देश के, वत्स देश के, कलिङ्ग देश के, तरल, अश्मक, ऋषिक आदि अनेकानेक देशों के राजाओं और योद्धाओं को जीतकर उन्हें राजा दुर्योधन को कर देने के लिए विवश किया था। महारथी कर्ण ने दुर्योधन की बढ़ती के लिए सब शत्रुओं को परास्त कर दिया था। वही महातेजस्वी वैकर्तन कर्ण, दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता और कौरव दल के सेना-पति होकर, किस तरह समर में शूर पाण्डवों के हाथ से मारे गये? सर्वत्र जल बरसाने के कारण देवताओं में इन्द्र का नाम वृष (वर्षा करनेवाला) है, और सबको यथेष्ट वस्तु दान करने

के कारण मनुष्यों में कर्ण को भी लोग वृष कहते थे। त्रिलोकी में तीसरा और कोई वृष नहीं सुन पड़ता। घोड़ों में उच्चैःश्रवा, राजाओं में राजाधिराज कुबेर और देवताओं में महेन्द्र जैसे श्रेष्ठ हैं, वैसे ही योद्धाओं में कर्ण श्रेष्ठ समझे जाते थे। उन्होंने दुर्योधन के अभ्युदय के लिए सारी पृथ्वी को जीत लिया था और बड़े-बड़े समर्थ वीर्यशाली शूर राजा लोग कर्ण को नहीं जीत सके थे। मगध देश के राजा प्रतापी जरासन्ध ने कर्ण को अपना मित्र बनाकर, कौरवों और यादवों के सिवा, सब क्षत्रिय राजाओं को जीता और अपने यहाँ क़ैद कर रक्खा था। उन्हीं कर्ण का द्वैरथ-युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारा जाना सुनकर मैं शोकसागर में वैसे ही डूब गया हूँ, जैसे टूटी नाव समुद्र में डूब जाती है। द्वैरथ-युद्ध में महारथी कर्ण की मृत्यु सुनने से मेरी वही दशा हो रही है, जैसे कोई आदमी नाव आदि पास न होने के कारण घबरा रहा हो और समुद्र में ग़ोते खा रहा हो। हे सञ्जय! अगर ऐसे दारुण दुःख उठाकर भी मैं नहीं मरा तो इसमें सन्देह नहीं कि मेरा हृदय वज्र से भी कठिन और दुर्भेद्य है। हे सूत! मेरे सिवा और किसका ऐसा कठिन हृदय होगा, जो जातिवालों, सम्बन्धियों और मित्रों का यों हारना अथवा मरना सुनकर भी जीता रहेगा? मैं विष खाकर, आग में कूदकर अथवा पहाड़ से गिरकर मरना पसन्द करता हूँ, क्योंकि ऐसे दुःख और कष्ट मुझसे नहीं सहे जा सकते। ३१

नवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का शोक और कर्ण की मृत्यु के बारे में प्रश्न

सञ्जय ने कहा—महाराज! आज दिन सब लोग आपको यश, लक्ष्मी, कुल, तपस्या और शास्त्रज्ञान में राजा ययाति के समान मानते हैं। आप शास्त्र के ज्ञान में महर्षि-तुल्य और कृतकृत्य हैं, इसलिए शोक त्याग करके धैर्य धारण कीजिए।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मैं दैव को ही सबसे बढ़कर समझता हूँ, अनर्थक पौरुष को धिक्कार है। शालवृक्ष-तुल्य बली कर्ण की मृत्यु ही दैव के बली और पौरुष के व्यर्थ होने का प्रमाण है। युधिष्ठिर की सेना और पाञ्चालों के महारथी योद्धा जिसके हाथ से मारे गये, जिस महारथी ने सब ओर घोर बाण-वर्षा करके शत्रुसेना को व्याकुल कर दिया, जिसे वज्रपाणि इन्द्र की तरह समरभूमि में देखकर असुर-सदृश पाण्डवगण मोह और भय से विह्वल हो उठते थे, वही कर्ण इस समय कैसे आँधी से टूटे पेड़ की तरह पृथ्वी पर मरे पड़े हैं? अपार सागर के समान इस शोक का अन्त मुझे नहीं देख पड़ता। मेरे मन में अत्यन्त चिन्ता बढ़ रही है और आत्महत्या करने को जी चाहता है। मुझे तो अभी तक कर्ण का मारा जाना विश्वास करने योग्य नहीं प्रतीत हो रहा है। कर्ण की मृत्यु और अर्जुन की विजय का वृत्तान्त सुनकर भी मेरा हृदय क्यों नहीं फट जाता? वीर कर्ण की मृत्यु सुनकर भी मेरा हृदय नहीं विदीर्ण

होता, इसी से जान पड़ता है कि वह वज्र का बना हुआ है ! अवश्य ही देवताओं ने मुझे बहुत बड़ी आयु दी है, तभी तो इतना दुःख आ पड़ने पर भी अब तक मेरे प्राण नहीं निकलते ! मित्रों से हीन मेरे इस जीवन को धिक्कार है! हे सञ्जय ! मैं मन्दमति इस समय बहुत ही निन्दनीय दशा को प्राप्त हूँ। अब मुझे दीनभाव से जीवन बिताना पड़ेगा; मैं सबकी दृष्टि में शोचनीय होकर जीवन बिताऊँगा। हे सूत ! पहले सब लोग मेरा सत्कार करते थे, वही मैं अब दूसरे के अधीन होकर कैसे जी सकूँगा ? मुझे यह सबसे बड़ा दुःख प्राप्त हुआ है। भीष्म, द्रोण और कर्ण की मृत्यु मेरे लिए घोर से घोर दुःख है। कर्ण की भी मृत्यु हो जाने से अब मुझे निश्चय हो गया है, और मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि अब कौरवपक्ष सर्वनाश से नहीं बच सकता। हे सञ्जय ! मेरे पुत्रों को कर्ण का बड़ा भरोसा था। वही शूर कर्ण युद्ध में असंख्य बाण बरसाकर अन्त को मारे गये। पुरुषश्रेष्ठ कर्ण जब मर गये तब मेरे ही जीवन का क्या प्रयोजन है ? अवश्य ही अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर वीर कर्ण, वज्रपात से फटे हुए पर्वत-शिखर के समान, रथ से पृथ्वी पर गिर पड़े होंगे। रक्त से भीगे हुए वीर कर्ण, गजराज के गिराये हुए गजराज की तरह, रणभूमि की शोभा को बढ़ा रहे होंगे। जो महाधनुर्द्धर कर्ण मेरे पुत्रों के बल, पाण्डवों के लिए विभीषिकास्वरूप और धनुर्द्धर वीरों के अगुआ थे, उन्हें आज अर्जुन ने मार डाला। वीर कर्ण मित्रों को सदा अभय देते थे। इन्द्र के मारे हुए बल दानव की तरह वही कर्ण इस समय रणभूमि में पड़े होंगे। लँगड़े का मञ्ज़िल तय करना, दरिद्र का मनोरथ, प्यासे को पानी की बूँदें और दुर्योधन का राज्यलोभ ये सब व्यर्थ हैं। सच है, दैव बड़ा बली है और काल को कोई टाल नहीं सकता। मनुष्य कुछ करना चाहता है, किन्तु प्रबल दैव और ही कुछ कर देता है ! १० २०

हे सञ्जय ! मेरा पुत्र दुःशासन क्या दीनभाव से पौरुषहीन होकर रण से भाग खड़ा हुआ था ? और क्या वह उसी दशा में मारा गया ? उसने रण में कायरता तो नहीं दिखाई ? जैसे और श्रेष्ठ क्षत्रिय वीरता दिखाकर मारे गये हैं वैसे ही वह भी मारा गया है न ? आदि से अन्त तक युधिष्ठिर युद्ध के विरुद्ध ही रहे, किन्तु मेरे पुत्र मन्दमति दुर्योधन ने युधिष्ठिर की वह बात स्वीकार नहीं की; जैसे मूर्ख पुरुष पथ्य औषध को नहीं ग्रहण करता। पितामह भीष्म ने शरशय्या पर लेटे-लेटे पीने के लिए जल माँगा और अर्जुन ने पृथ्वी को बाण से फोड़ करके तत्काल वहीं पर जल पैदा कर दिया। उस समय भी भीष्म ने दुर्योधन को समझाया था कि बेटा ! पाण्डवों से मेल कर लो। मेल करने से शान्ति स्थापित होगी। यह तुम पाण्डवों और कौरवों का युद्ध मेरी मृत्यु से ही समाप्त हो जाय। पाण्डवों से मित्रता करके तुम भ्रातृभाव को बढ़ाओ और हिस्सा बाँटकर राज्य करो। हे सञ्जय ! उस समय मेरे पुत्र ने भीष्म की बात नहीं मानी; किन्तु अब वह अवश्य ही उस भूल के लिए शोक और पश्चात्ताप कर

रहा होगा। दूरदर्शी विदुर और वृद्ध पितामह ने जो कहा था वही अब होता दिखाई पड़ता है। उस जुए के कारण ही यह सब हुआ है। अमात्य-पुत्र-पौत्र आदि के मरने से मैं उस पक्षी की तरह कष्ट पा रहा हूँ, जिसके पङ्ख नोच लिये गये हों। लड़के जैसे किसी पक्षी को पकड़कर उसके पर काटकर उसे छोड़ दें, उसे सतावें और वह पर न होने के कारण कहीं ३० उड़कर न जा सके, वैसी ही दशा इस समय मेरी होगी। मैं सजातीय बन्धु-बान्धव-स्वजन आदि से हीन और सब प्रकार विवश, अर्थहीन, दीन और शत्रुओं के अधीन होकर सिवा कष्ट भोगने के क्या करूँगा? कहाँ जाऊँगा?

वैशम्पायन कहते हैं कि राजन्! अत्यन्त दुःखित और शोक से व्याकुल राजा धृतराष्ट्र ने इस तरह बहुत विलाप करके फिर सञ्जय से कहा—हे सञ्जय! जिन महावीर ने दुर्योधन के अभ्युदय के लिए युद्ध में सब काम्बोज, अम्बष्ठ, केकय, गान्धार, विदेह आदि देशों को जीता था, उन्हीं कर्ण को शूर पाण्डवों ने जीत लिया! युद्ध में अर्जुन ने जब महाधनुर्द्धर कर्ण को मार डाला तब मेरे दल के कौन-कौन वीर युद्ध से भागे? पाण्डवों के हाथ से मरे हुए कर्ण को रण में अकेले छोड़कर तो वे नहीं भाग खड़े हुए? जिस तरह वीर कर्ण मारे गये, सो तुम पहले ही कह चुके हो। भीष्म पितामह शिखण्डी पर बाण नहीं चलाते थे, उसी अवस्था में उन श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ पितामह को शिखण्डी ने उग्र बाण मार-मारकर गिरा दिया। वैसे ही जब घायल द्रोणाचार्य शस्त्र त्यागकर योगस्थ हो गये, तब खड्गप्रहार करके धृष्टद्युम्न ने उनका सिर काट लिया। इस तरह शत्रुओं ने छल करके, भीष्म और द्रोण को मार डाला। यह मैं तुम्हीं से सुन चुका हूँ। मैं सच कहता हूँ कि न्यायपूर्वक धर्मयुद्ध करके भीष्म और द्रोणाचार्य को साक्षात् ४० इन्द्र भी नहीं मार सकते थे। कर्ण समर में विविध दिव्य अस्त्रों के प्रयोग करनेवाले वीर इन्द्र-तुल्य योद्धा थे, उनके पास मौत कैसे आ सकी? इन्द्र ने कर्ण से कवच-कुण्डल लेकर उन्हें बिजली सी चमकीली, दिव्य, सुवर्ण-भूषित, शत्रुनाशिनी एक शक्ति दी थी। कर्ण के तरकस में एक सर्पमुख, दिव्य, सुवर्ण-भूषित, तीक्ष्ण, युद्ध में शत्रु को मारनेवाला विकट बाण था। अभिमानी कर्ण भीष्म और द्रोण आदि महारथियों से भी नहीं दबे थे। उन्होंने परशुराम से महाघोर ब्रह्मास्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी। युद्ध में जब अभिमन्यु ने द्रोण आदि वीरों को बाण-वर्षा से व्यथित और विमुख कर दिया था, तब कर्ण ने तीक्ष्ण बाणों से अभिमन्यु का धनुष काट डाला था। वज्र के समान वेगशाली, भुजाओं में दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले भीम-सेन को कर्ण ने सहसा रथहीन कर दिया था और उपहास किया था। उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से सहदेव को रथहीन और परास्त करके भी, केवल कुन्ती से की हुई प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए, मार नहीं डाला, दया करके छोड़ दिया। हज़ारों प्रकार की माया फैला रहे, विजय के लिए यत्न कर रहे राक्षसराज घटोत्कच को कर्ण ने इन्द्र की दी हुई उसी अमोघ शक्ति से मार डाला।

इतने दिनों तक अर्जुन कर्ण से डरते ही रहे, सामने द्वैरथ-युद्ध करने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ी। ४६ वही कर्ण किस तरह समर में मारे गये ? संशप्तक मुझे ललकार रहे हैं; इनको मार लेने पर ही मैं कर्ण का सामना करूँगा,—यह कहकर अर्जुन कर्ण से युद्ध करना टालते रहे। उन्हीं को अर्जुन ने अकस्मात् कैसे मार डाला ? अगर युद्ध करते समय उनका रथ नहीं टूट गया था, धनुष नहीं कट गया था, या अस्त्र नहीं नष्ट हो गये थे, तो फिर शत्रुओं ने उन्हें कैसे मार डाला ? महारथी कर्ण जब भारी धनुष हाथ में लेकर घोर बाण और अस्त्र बरसाते हों, उस समय उन वीर को कौन पुरुषसिंह जीत सकता था ? अवश्य ही उनका धनुष कट गया होगा या रथ धरती में धँस गया होगा, अथवा अस्त्र-शस्त्र नष्ट हो गये होंगे, तभी तो वे मारे गये। कर्ण की मृत्यु का और कोई कारण मुझे नहीं देख पड़ता। वीर कर्ण का यह प्रण था कि मैं जब तक अर्जुन को नहीं मार लूँगा, तब तक पैर नहीं धुलाऊँगा। धर्मराज युधिष्ठिर, कर्ण के डर से, तेरह वर्ष तक नींद भर नहीं सोये। पराक्रमी कर्ण के बाहुबल के भरोसे ही मेरे पुत्र ने बलपूर्वक पाण्डवों की पत्नी को भरी सभा में लाने का साहस किया था। यही नहीं, सभा में पाण्डवों के सामने ही, सब कौरवों के आगे, उसने द्रौपदी को दासभार्या तक कहा था। महावीर कर्ण ने उस समय सभा में पाण्डवों के आगे ही ऐसी कठोर बातें द्रौपदी से कही थीं कि हे पाञ्चाली ! अब ये पाण्डव तुम्हारे पति नहीं हैं, ये सब खोखले तिलों के समान निस्सार हैं। इसलिए हे सुन्दरी, तुम किसी अन्य पुरुष को अपना पति बना लो। हे सञ्जय ! वही वीर-मानी कर्ण कैसे शत्रुओं के हाथ से मारे गये ? कर्ण सदा दुर्योधन से कहा करते थे कि राजन् ! महारथी भीष्म या महा- ६१ धनुर्द्धर द्रोणाचार्य अगर पक्षपात के कारण पाण्डवों को नहीं मारेंगे, तो मैं अकेला सबको मारूँगा; तुम अपने मन की चिन्ता दूर करो। स्निग्ध चन्दन-चर्चित मेरे बाण जब चारों ओर दौड़ने लगेंगे तब गाण्डीव धनुष और दोनों अक्षय तरकस कुछ नहीं कर सकेंगे। हे सञ्जय ! उन्हीं महाबलशाली कर्ण को अर्जुन ने कैसे मार लिया ? जिन कर्ण ने गाण्डीव धनुष से निकलनेवाले बाणों के उग्र स्पर्श की कुछ परवा न करके पाण्डवों की ओर देखकर द्रौपदी से कहा था कि हे पाञ्चाली, तुम पति-विहीन हो; जो अर्जुन, अभिमन्यु और श्रीकृष्ण से नहीं डरते थे; जो अपने बाहुबल के बल पर दम भर के लिए भी श्रीकृष्ण और पाण्डवों से नहीं दबे, उन्हें पाण्डवों ने कैसे मार डाला ? मैं तो समझता हूँ कि इन्द्र सहित सब देवता भी कर्ण को नहीं मार सकते थे। कर्ण अगर प्रत्यञ्चा को हाथ से छुएँ, पहनने के लिए तलत्र (दस्ताने) और कवच हाथ में लें, तो तभी कोई मनुष्य उनके सामने ठहरने का साहस नहीं कर सकता था। पृथ्वी-तल चाहे चन्द्र, सूर्य और अग्नि की किरणों से एकदम शून्य भी हो जाय, किन्तु कर्ण का मारा जाना सम्भव नहीं।

हे सञ्जय ! मेरे पुत्र दुर्मति दुर्योधन ने सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये हुए श्रीकृष्ण को, वीर कर्ण और अपने भाई दुःशासन की सहायता के बल पर ही, सूखा जवाब दे दिया था। ७०

इस समय वृषभ-स्कन्ध कर्ण और दुःशासन को शत्रुओं के हाथ से निहत देखकर वह अवश्य ही शोक कर रहा होगा। अर्जुन के हाथ से द्वैरथ-युद्ध में कर्ण को निहत और पाण्डवों को विजयी देखकर दुर्योधन ने क्या कहा? मैं समझता हूँ कि युद्ध में दुर्मर्षण, वृषसेन आदि महारथियों को मरते और शत्रुपक्ष के महारथियों के प्रहार से अपनी सेना को भागते—महारथी राजाओं को रणविमुख होते—देखकर अवश्य दुर्योधन शोक कर रहा होगा। हे सञ्जय! किसी के समझाने से न माननेवाले, अभिमानी, दुर्मति, अजितेन्द्रिय दुर्योधन ने अपनी सेना को उत्साह-हीन देखकर क्या कहा? हितचिन्तक इष्ट-मित्रों के मना करने पर भी दुर्योधन ने ख़ुद पाण्डवों से वैर किया और अन्त को यह दारुण युद्ध ठान दिया। अब युद्ध में प्रधान-प्रधान पुरुषों सहित अधिकांश सेना के मरने पर उस दुर्योधन ने क्या कहा? युद्ध में भीमसेन ने जब दुःशासन को मारकर उसके हृदय का रक्त पिया तब दुर्योधन ने क्या कहा? कौरव-सभा में गान्धारराज शकुनि के साथ दुर्योधन कहा करता था कि वीर कर्ण युद्ध में अर्जुन को मारेंगे। अब अर्जुन के हाथ से कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन ने क्या कहा? शकुनि ने पहले हर्षपूर्वक द्यूतक्रीड़ा का ठान ठाना और पाण्डवों को कपट से जीतकर राज्य से निकाल दिया था। इस समय महावीर कर्ण के मरने पर उस शकुनि ने क्या कहा? हृदिक के पुत्र, यादव महारथी कृतवर्मा ने कर्ण की मृत्यु देखकर क्या कहा? ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य लोग जिनसे धनुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं और सेवा करते हैं उन बुद्धिमान्, जवान, सुरूप, महायशस्वी वीर अश्वत्थामा ने, कर्ण के मारे जाने पर, क्या कहा? गौतमवंशी, धनुर्वेद के आचार्य, श्रेष्ठ योद्धा कृपाचार्य ने कर्ण के मारे जाने पर क्या कहा? कर्ण के रथ को हाँकनेवाले, सभा को शोभित करनेवाले, महाधनुर्द्धर, मद्रराज शल्य ने कर्ण की मृत्यु होने पर क्या कहा? और जो पृथ्वीतल के अनेक राजा युद्ध करने आये थे, उन रण में दुर्जय राजाओं ने कर्ण के मारे जाने पर क्या-क्या कहा?

८०

हे सञ्जय! पहले पुरुषश्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य के मारे जाने पर मेरी सेना के दलों में कौन-कौन वीर आगे स्थित हुए थे? मद्रराज शल्य किस तरह कर्ण के सारथी बनाये गये? यह सब हाल तुम मुझसे कहो। महावीर कर्ण जब युद्ध करने चले थे तब किन वीरों ने उनके रथ के दाहने पहिये की, किन वीरों ने बायें पहिये की और किन वीरों ने उनके पृष्ठ भाग की रक्षा की थी? किन शूरों ने वीर कर्ण का साथ दिया और कौन कायर उन्हें छोड़कर भाग खड़े हुए? तुम सब कौरव दल के लोग मिलकर भी कर्ण की रक्षा नहीं कर सके? तुम लोगों के सामने ही महारथी कर्ण कैसे मारे गये? पाण्डव लोग स्वयं शूर हैं। वे महारथी कर्ण पर आक्रमण करने के समय उसी तरह बाणों की वर्षा कर रहे होंगे जिस तरह मेघ जल बरसाते हैं।

हे सञ्जय! कर्ण के पास वह जो सर्पमुख श्रेष्ठ बाण था, वह कैसे व्यर्थ हो गया? मेरी सेना के श्रेष्ठ और प्रधान योद्धा मारे जा चुके हैं, सबका उत्साह नष्ट हो गया है। मुझे जान

पड़ता है कि जो मेरी सेना बच रही है, वह भी अब नहीं बच सकती। महावीर पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण ने मेरे लिए अपने प्राण दे दिये। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर, मैं समझता हूँ कि, मेरा जीता रहना व्यर्थ है। दस हज़ार हाथियों के बल के बराबर कर्ण का बाहुबल था। वे कर्ण भी पाण्डवों के हाथ से मारे गये। बारम्बार इस तरह का कष्ट मैं नहीं सह सकता। अब तुम यह बतलाओ कि द्रोणाचार्य के मारे जाने पर कौरवों और पाण्डवों ने कैसे युद्ध किया? कौरवों के हितैषी कर्ण ने जिस तरह पाण्डवों से युद्ध किया और अन्त को वे जिस तरह मारे गये, सो सब मुझसे कहो। ९७

दसवाँ अध्याय

कर्ण का सेनापति-पद पर अभिषेक और युद्ध-यात्रा की तैयारी

सञ्जय ने कहा—महाराज! धनुर्द्धरश्रेष्ठ द्रोणाचार्य की मृत्यु के दिन महारथी अश्वत्थामा ने सारी पाण्डवसेना का नाश करने की प्रतिज्ञा की, किन्तु नारायणास्त्र और आग्नेय अस्त्र निष्फल होने के कारण उनकी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो पाई। उस समय कौरवों की सेना इधर-उधर भागने लगी। उधर अर्जुन अपनी सेना को, व्यूह-रचनापूर्वक, युद्ध के मैदान में खड़ा करके भाइयों सहित युद्ध करने को स्थित हुए। आपके पुत्र राजा दुर्योधन भी महावीर अर्जुन को युद्धभूमि में स्थित और अपनी सेना को भागते देखकर अपने पौरुष से उसे लौटाने लगे। अपने बाहुबल के आश्रय से दुर्योधन ने अपनी सेना को फिर युद्ध के लिए उत्साहित करके बहुत देर तक—विजयी, उत्साहित, प्रसन्न और शत्रुजय के लिए यत्न कर रहे—पाण्डवों से युद्ध किया। अन्त को दिन डूबने पर युद्ध बन्द किया गया। कौरवगण युद्ध बन्द करके सेना सहित अपने शिविर में गये। वहाँ सब लोग अत्यन्त मनोहर मुलायम बिछौनेवाले महामूल्य आसनों और पलँगों पर बैठकर, सुख-शय्याओं पर विराजमान देवताओं की तरह, सलाह करने लगे। उस समय राजा दुर्योधन ने मधुर वाक्यों से उन श्रेष्ठ वीरों को प्रसन्न करते हुए समय के अनुकूल यों कहा—हे नरपतियो! आप लोग बुद्धिमानों में श्रेष्ठ नररत्न हैं। इस समय आप अपनी-अपनी सम्मति के अनुसार यह बतलावें कि हमारे लिए आवश्यक कर्तव्य क्या है।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! दुर्योधन के यों पूछने पर युद्ध की इच्छा रखनेवाले, सिंहासनों पर विराजमान, वे पुरुषसिंह तरह-तरह की चेष्टाओं से युद्ध के लिए उत्साह प्रकट करने लगे। युद्ध में प्राण देने के लिए तैयार नरपतियों की चेष्टाएँ और इशारे देख-सुनकर और बाल- १० सूर्य के समान तेजस्वी राजा दुर्योधन के मुख की ओर देखकर बातचीत करने में चतुर बुद्धिमान् अश्वत्थामा ने कहा—हे श्रेष्ठ वीरो! स्वामिभक्ति, देश-काल आदि की अनुकूलता, बल या

युद्ध-कौशल और नीति ये ही उपाय युद्ध में विजय पाने के पण्डितों ने बतलाये हैं। किन्तु ये सब उपाय दैव की अनुकूलता के आश्रित हैं। यद्यपि हमारे पक्ष के ऐसे देवतुल्य महारथी मारे जा चुके हैं, जो कि पृथ्वी पर श्रेष्ठ वीर, नीतिज्ञ, रणनिपुण, बली, स्वामिभक्त और देश-काल के श्रेष्ठ ज्ञाता थे; तो भी हमें जय की आशा न छोड़नी चाहिए। सुनीति के साथ पूर्वोक्त उपायों का प्रयोग करने से दैव भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। स्वामिभक्ति आदि उपायों की अपेक्षा दैव को प्रबल समझना ठीक नहीं है। इसलिए इस समय हम लोग योद्धा के सब गुणों से युक्त, नरवर, कर्ण को अपना सेनापति बनाकर शत्रुओं का संहार करेंगे। ये कर्ण महाबली, शूर, अस्त्र-विद्या में निपुण, रणदुर्मद और साक्षात् यमराज के समान शत्रुओं के लिए असह्य हैं। ये रण में शत्रुओं को सब तरह से जीत सकते हैं।

महाराज! अश्वत्थामा के मुँह से ये प्रिय और हितकर वचन सुनकर राजा दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुए। भीष्म और द्रोण की मृत्यु के उपरान्त दुर्योधन के हृदय में यह बड़ी आशा थी कि कर्ण अकेले ही पाण्डवों को जीत लेंगे। उसी आशा से दुर्योधन को धैर्य हुआ। उन्होंने २१ आश्वस्त होकर, अपने बाहुबल का भरोसा करके, स्नेहपूर्वक कर्ण से कहा—मित्र कर्ण! अपने ऊपर तुम्हारे परम स्नेह, बाहुबल तथा मित्रता को मैं विशेष रूप से जानता हूँ, तथापि मैं तुमसे इस समय जो हित की बात कहता हूँ उसे सुन लो; फिर जो तुम्हारा जी चाहे और जो तुमको रुचे वही करना। तुम बड़े चतुर और समझदार हो; मुझे तुम्हारा ही भरोसा है। मेरे सेनापति पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण की मृत्यु हो चुकी है। वे दोनों अतिरथी अवश्य थे, किन्तु वृद्ध थे। परन्तु युवा होने के कारण तुम उनसे अधिक बली और फुर्तीले हो। इसलिए अब तुम मेरे सेनापति बनो। भीष्म और द्रोण दोनों महारथी वृद्ध होने के अलावा अर्जुन से स्नेह भी रखते थे। तुम्हारे कहने से ही मैंने प्रथम सेनापति बनाकर उन दोनों वीरों का सम्मान किया था। महात्मा भीष्म पितामह हमारे ही समान पाण्डवों के भी पितामह थे। इसी सम्बन्ध का ख़याल करके उन्होंने दस दिन के युद्ध में बराबर पाण्डवों की रक्षा की। तुम उस समय यह कहकर कि "जब तक पितामह जीते रहेंगे, मैं शस्त्र-ग्रहण नहीं करूँगा," शस्त्र-त्याग कर चुके थे। इसी से मौक़ा पाकर, शिखण्डी को आगे खड़ा करके, अर्जुन ने पितामह को रथ से गिरा दिया। महाधनुर्द्धर पितामह जब शरशय्या पर शयन कर चुके तब हे पुरुषसिंह! तुम्हारे कहने से द्रोणाचार्य सेनापति बनाये गये। मेरा ख़याल है कि उन्होंने भी, गुरु होने के कारण, अपने शिष्य पाण्डवों की रक्षा की। वृद्ध आचार्य को दुष्ट धृष्टद्युम्न ने मार डाला। हे पराक्रमी कर्ण! उन दोनों प्रधान सेनापतियों के मारे जाने पर अब मुझे तुम्हारे ३० समान दूसरा योद्धा अपनी सेना में नहीं देख पड़ता। निस्सन्देह तुम्हीं मुझे इस युद्ध में विजय दिलाओगे। तुम युद्ध के पहले, बीच में और अन्त में सदा मेरा हित करनेवाले हो।

तुम स्वयं इस समय युद्ध में श्रेष्ठ समर्थ पुरुष की तरह युद्ध का भार सँभालो और आप ही सेनापति के पद पर अपना अभिषेक करो। यही तुमको उचित है। देवताओं के सेनापति जैसे भगवान् कार्त्तिकेय हैं वैसे ही तुम हमारे सेनापति होकर इस कौरव-सेना की रक्षा और सञ्चालन करते हुए वैसे ही शत्रुओं का संहार करो जैसे इन्द्र दानवों को मारते हैं। दैत्यगण जैसे पुरुषोत्तम विष्णु को देखकर भाग गये थे, वैसे ही तुमको युद्ध में सेनापति होकर खड़े हुए देख पाण्डवों और पाञ्चालों के महारथी भाग खड़े होंगे। इसलिए हे वीर! तुम इस महासेना का सञ्चालन करो। तुम जब युद्ध के लिए उद्यत होगे तब मन्दमति पाण्डव, पाञ्चाल और सृञ्जय-गण अपने अनुचरों सहित भाग खड़े होंगे। सूर्यदेव जैसे उदय होकर अपने तेज से घने अँधेरे को मिटा देते हैं वैसे ही तुम भी शत्रुओं को सन्ताप पहुँचाओ।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! आपके पुत्र दुर्योधन को प्रबल आशा थी कि पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण के मारे जाने पर कर्ण पाण्डवों को जीत लेंगे। इसी बिरते पर दुर्योधन ने कहा कि हे कर्ण! अर्जुन किसी तरह संग्राम में तुम्हारे सामने नहीं ठहर सकते।

राजा दुर्योधन के यों कहने पर महाबली कर्ण ने प्रसन्न होकर सब राजाओं के बीच में दुर्योधन को प्रसन्न करते हुए कहा—महाराज! मैं तुम्हारे आगे पहले ही कह चुका हूँ कि कृष्ण सहित सब पाण्डवों और उनके पुत्रों को जीत लूँगा। मैं तुम्हारा सेनापति ज़रूर बनूँगा। ४० निर्भय और निश्चिन्त होकर पाण्डवों को परास्त ही समझो। सञ्जय कहते हैं कि राजन्! यह सुनकर राजाओं सहित दुर्योधन, देवगण सहित इन्द्र की तरह, प्रसन्नतापूर्वक अपने आसन से उठ खड़े हुए। जैसे देवताओं ने स्कन्द को सेनापति बनाया था वैसे ही कर्ण को सेनापति बनाकर, उनका सत्कार करने के लिए, सब लोग उद्यत हुए। महाराज! तब विजय की इच्छा रखने-वाले दुर्योधन आदि राजाओं ने विधिपूर्वक कर्ण का अभिषेक किया। गूलर के आसन पर रेशमी कपड़ा बिछा हुआ था, उसी पर महावीर कर्ण आराम से बैठे। शास्त्रोक्त विधि से मन्त्र पढ़-पढ़कर, सोने के और मिट्टी के कलशों में भरे हुए अभिमन्त्रित पवित्र जल से, उनका अभिषेक किया गया। हाथीदाँत के पात्रों और गैंड़े तथा गवय आदि के सींगों में जल भरकर उससे, और पवित्र गन्धवाली ओषधियों तथा मणिमुक्तायुक्त अन्य वस्तुओं (आभूषण आदि) से तथा अन्य सामग्रियों से कर्ण का अभिषेक किया गया। उस अभिषेक के समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सत्-शूद्रगण बढ़िया आसन पर बैठे हुए कर्ण की स्तुति करने लगे। हे राजेन्द्र! इस तरह सेनापति के पद पर अपना अभिषेक हो चुकने पर शत्रुदलन कर्ण ने श्रेष्ठ वेदपाठी ब्राह्मणों को सोना, धन, गाय आदि देकर सन्तुष्ट किया और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। तब ब्राह्मण और सूत-मागध-वन्दीजन कर्ण को इस प्रकार आशीर्वाद देने लगे कि हे वीर! तुम्हारी जय हो। सूर्य जैसे उदय होकर अपनी उग्र किरणों से अँधेरे को दूर करते हैं वैसे ही तुम भी

कृष्ण और अनुचरों समेत पाण्डवों को महायुद्ध में परास्त करो और विजय पाओ। तुम पाञ्चालों
५० की सेना का संहार करो। उल्लू पक्षी जैसे सूर्य की किरणों को देख नहीं सकते, वैसे ही कृष्ण सहित सब पाण्डव तुम्हारे छोड़े हुए प्रज्वलित बाणों को देख भी नहीं सकेंगे, उनके स्पर्श को सहने की कौन कहे। वज्रपाणि इन्द्र के सामने जैसे दानव नहीं ठहर सकते, वैसे ही तुम्हारे आगे पाण्डव और पाञ्चालगण नहीं ठहर सकेंगे।

हे पुरुषश्रेष्ठ! इस तरह सेनापति-पद पर अभिषेक होने के उपरान्त तेजस्वी कर्ण का तेज और भी बढ़ गया। वे दूसरे सूर्य के समान जान पड़ने लगे। आपके पुत्र राजा दुर्योधन, जिनके सिर पर मौत सवार है, कर्ण को सेनापति बनाकर अपने को कृतार्थ समझने लगे। महाबली कर्ण ने सेनापति होकर सब सेनाओं को सूर्योदय के समय युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दे दी। हे भरतकुलश्रेष्ठ! तारकामय-संग्राम में देवगण सहित कार्त्तिकेय की जैसी शोभा हुई थी वैसी ही शोभा को प्राप्त होकर वीर कर्ण आपके
५६ पुत्रों और अन्य राजाओं के बीच विराजमान हुए।

ग्यारहवाँ अध्याय

व्यूह बना करके कर्ण और अर्जुन का युद्ध के लिए मैदान में आना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरे पुत्र दुर्योधन ने, अपने सगे भाई की तरह स्नेहपूर्ण मधुर वचन कहकर, जब कर्ण को सेनापति बनाया तब मेरे पुत्र के हितचिन्तक प्रिय करनेवाले महामति कर्ण ने, सेना को सूर्योदय के समय सुसज्जित होने की आज्ञा देकर, फिर क्या किया?

सञ्जय ने कहा—राजन्! महावीर कर्ण का इरादा जानकर कौरवगण सेना को सुसज्जित होने की आज्ञा देने लगे। उस समय तुरही नगाड़े आदि बाजे बजने लगे। महाराज! रात के पिछले पहर आपकी सेना के बीच तैयारी होने लगी और "तैयार हो जाओ, तैयार हो जाओ" का बड़ा कोलाहल चारों ओर सुनाई पड़ने लगा। सजे जा रहे बड़े-बड़े हाथियों और घोड़ों का, जोते जा रहे रथों का और एक दूसरे को तैयार होने के लिए पुकार रहे और तैयार हो रहे योद्धाओं का भारी शब्द आकाश में गूँज उठा। उस समय महाबली कर्ण पताकायुक्त रथ पर विराजमान देख पड़े। उस रथ में सफ़ेद ध्वजा फहरा रही थी। घोड़े भी बगले के रङ्ग के सफ़ेद लगे हुए थे। केतु में सुवर्ण की, हाथी की ज़ञ्जीर (नागकक्षा) शोभायमान हो रही थी। सुवर्णपृष्ठ-शोभित दृढ़ धनुष, सैकड़ों भरे हुए तरकस, गदा, वरूथ, शतघ्नी, किङ्किणी, शक्ति, शूल, तोमर, अनेक धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र और सामान उसमें रक्खे हुए थे। वह रथ

निर्मल सूर्य के समान जगमगा रहा था। वायु के प्रतिकूल होने के कारण उसकी पताका पीछे की ओर फहरा रही थी। उस रथ पर बैठकर वीर कर्ण सुवर्णजाल-भूषित शङ्ख बजाने और सुवर्णभूषित धनुष की डोरी का शब्द करने लगे। उदय हो रहे सूर्य के समान तेजस्वी महारथी १० कर्ण को, अन्धकार-सदृश, भय का नाश करते हुए रथ पर स्थित देखकर कौरवों को भीष्म, द्रोण तथा अन्य श्रेष्ठ वीरों की मृत्यु का शोक भूल सा गया। अब शङ्ख बजाकर योद्धाओं को शीघ्र आगे बढ़ाते हुए कर्ण कौरवों की भारी सेना को लेकर चले। शत्रुओं को सन्ताप पहुँचानेवाले महारथी कर्ण, मकर-व्यूह की रचना करके, पाण्डवों को जीतने के लिए उनकी ओर बढ़े।

राजन्! उस मकर-व्यूह के मुख में वीर कर्ण, नेत्रों में महावीर शकुनि और महाबली उलूक, मस्तक में अश्वत्थामा, ग्रीवा में दुर्योधन के सब भाई और मध्य भाग में सब श्रेष्ठ सेना साथ लिये राजा दुर्योधन ख़ुद खड़े हुए। बायें चरण में युद्धदुर्मद गोपालों की (नारायणी) सेना लिये हुए कृतवर्मा स्थित हुए। दाहने चरण में सत्यविक्रमी कृपाचार्यजी महाधनुर्द्धर दाक्षिणात्यों की और त्रिगर्त देश की सेना साथ लेकर विराजमान हुए। बायें चरण के पीछे बहुत सी सेना सहित मद्रराज शल्य और दाहने चरण के पिछले भाग में एक हज़ार रथ और तीन सौ हाथी लिये सत्यसन्ध सुषेण स्थित हुए। व्यूह के पिछले भाग २० (पूँछ) में सेना सहित महाबली चित्र और चित्रसेन नाम के दोनों सगे भाई खड़े हुए। इस तरह मगर की सूरत का मोर्चा बनाया गया।

महाराज! वीर कर्ण ने जब इस तरह युद्ध के लिए तैयारी की तब धर्मपुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन की ओर देखकर, कहने लगे—हे वीरशिरोमणि अर्जुन! यह देखो, कर्ण ने वीरों के द्वारा सुरक्षित कौरवसेना को, व्यूह बना करके, खड़ा किया है। हे पार्थ! दुर्योधन की सेना के सब

श्रेष्ठ योद्धा मारे जा चुके हैं, सेना भी थोड़ी ही बच रही है। मैं तो अब इसे तृणतुल्य समझता हूँ। किन्तु अभी एक कर्ण महारथी बाक़ी है। इसे देवता, असुर, गन्धर्व, किन्नर, नाग आदि चराचर तीनों लोकों के प्राणी नहीं जीत सकते। हे महाबाहु! इस महारथी को आज तुम मार डालो; बस, तुम्हारी पूर्ण विजय हो जायगी और मेरे हृदय से बारह वर्ष का काँटा निकल जायगा। यह जानकर अब तुम अपनी इच्छा के अनुसार व्यूह बनाकर युद्ध करो।

राजन्! अर्जुन ने बड़े भाई के ये वचन सुनकर अपनी सेना को अर्द्धचन्द्राकार व्यूह में खड़ा किया। व्यूह के वाम भाग में भीमसेन, दक्षिण भाग में महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्न, मध्य-भाग में राजा युधिष्ठिर और स्वयं अर्जुन स्थित हुए। धर्मराज के पीछे नकुल और सहदेव खड़े ३० हुए। अर्जुन के द्वारा रक्षित उनके रथ के चक्ररक्षक पाञ्चाल देश के वीर योद्धा युधामन्यु और उत्तमौजा अर्जुन के निकट स्थित हुए। बचे हुए और सब कवचधारी क्षत्रिय राजा लोग, अपने उत्साह के अनुसार, व्यूह के अन्य भागों में स्थित हुए। इस प्रकार दोनों ओर के मोर्चे बँध जाने पर महायोद्धा कौरव और पाण्डव युद्ध के लिए उत्सुक हो उठे। भाइयों सहित राजा दुर्योधन ने कर्ण के बनाये व्यूह की रचना देखकर अपने मन में पाण्डवों को मरा हुआ समझ लिया। ऐसे ही उधर राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी सेना की व्यूह-रचना देखकर समझ लिया कि कर्ण और भाइयों सहित दुर्योधन मारे जा चुके।

तब दोनों सेनाओं में शङ्ख, नगाड़े, पणव, गोमुख, डङ्के, तुरही, झाँझें, डिंडिम आदि तरह-तरह के उत्साह बढ़ानेवाले विचित्र बाजे बजने लगे। जय के अभिलाषी शूरों का सिंहनाद चारों ओर सुनाई पड़ने लगा। राजन्! चारों ओर हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों का शब्द गूँज उठा। रथों की घरघराहट का उग्र शब्द कान फोड़ने लगा। व्यूह के अगले हिस्से में कवचधारी सेनापति कर्ण को देखकर कौरव पक्ष के मनुष्यों को आचार्य द्रोण की मृत्यु का शोक ही भूल गया। महाराज! कवच पहने हुए दोनों सेनाओं के वीर प्रसन्नमुख और प्रसन्नचित्त हो ४० रहे थे। दोनों ओर के योद्धा एक दूसरे को मारने-मरने और लड़ने को प्रस्तुत थे। विजय-प्राप्ति के लिए यत्न करनेवाले कर्ण और अर्जुन दोनों वीर कुपित होकर स्पर्धा की दृष्टि से एक दूसरे को देखकर अपनी-अपनी सेना को घूम-फिरकर देख रहे थे। वे दोनों तेज़ी से नृत्य सा करते हुए एक दूसरे के सामने आये और उनके आसपास और पीछे से युद्ध की इच्छा रखनेवाले अनेक योद्धा निकलकर परस्पर भिड़ने लगे। उस समय मनुष्य, हाथी, घोड़े, रथ आदि ४३ से युक्त दोनों ओर की चतुरङ्गिणी सेनाएँ परस्पर भिड़कर युद्ध करने लगीं।

सेनाएँ परस्पर भिड़ गईं और योद्धा लोग एक दूसरे पर प्रहार करने लगे।—पृ० २७२३

बारहवाँ अध्याय

संकुल युद्ध में क्षेमधूर्ति का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! देवताओं और दानवों की सेना के समान वे प्रसन्नचित्त हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों से परिपूर्ण दोनों विशाल सेनाएँ परस्पर भिड़ गईं और योद्धा लोग एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। रथों, हाथियों और घोड़ों पर सवार तथा पैदल योद्धा लोग परम पराक्रमपूर्वक शरीर के साथ ही पातक को नष्ट करनेवाले उग्र प्रहार करने लगे। प्रधान योद्धा लोग अर्धचन्द्र, भल्ल, क्षुरप्र आदि बाणों और खड्ग, पट्टिश, परश्वध आदि शस्त्रों के प्रहार से युद्ध करनेवाले वीरों के पूर्णचन्द्र-कान्ति-युक्त, सूर्यसमान तेजस्वी और कमलसमान सुगन्धित मुख-कमलों को काट-काटकर गिराने और उनसे रणभूमि को पाटने लगे। पुष्ट और लम्बे हाथोंवाले वीरगण शत्रुओं के पुष्ट और लम्बे हाथ काट-काटकर पृथ्वी पर गिराने लगे। शस्त्र और अङ्गद आदि आभूषणों से शोभित और लाल उँगलियों तथा हथेलियोंवाले उन हाथों के इधर-उधर तड़पने से जान पड़ता था कि रणभूमि में गरुड़ के मारे हुए पाँच मुख के साँप तड़प रहे हैं। पुण्य क्षीण होने पर जैसे स्वर्गवासी पुण्यात्मा लोग विमानों से पृथ्वीतल पर गिरें, वैसे ही शत्रुओं के प्रहार से मरे हुए वीर लोग हाथियों, घोड़ों और रथों पर से नीचे गिर रहे थे। बहुत से वीर रण में शत्रुओं के मुशल, परिघ और भारी गदाओं आदि के प्रहार से चूर्ण होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उस महासंकुल युद्ध में रथियों को रथी, हाथियों को हाथी और घोड़ों के सवारों को घोड़ों के सवार नष्ट-भ्रष्ट करने लगे। रथों से कुचले हुए मनुष्यों, हाथियों के तोड़े रथों और पैदलों के मारे हुए घुड़सवारों तथा

घुड़सवारों के मारे हुए पैदलों का पृथ्वी पर ढेर लगने लगा। घोड़ों, रथों और पैदलों को हाथियों ने और रथों, हाथियों और घोड़ों को पैदलों ने गिराना शुरू कर दिया। इस तरह रथ, हाथी, घोड़े और मनुष्यगण शत्रुपक्ष के रथ, हाथी, घोड़े और मनुष्यों के हाथ, पैर, और शस्त्र आदि को नष्ट करके घोर युद्ध करने लगे। १०

महाराज ! इस तरह जब शूरों ने सेना को मारना शुरू किया तब, भीमसेन को आगे करके, पाण्डवगण हम लोगों पर आक्रमण करने को बढ़े। उनके साथ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, प्रभद्रकगण, सात्यकि, चेकितान और द्रविड़ देश की सेना सहित पाण्ड्य, चोल, केरल आदि देशों के योद्धा भी अग्रसर हुए। उन सबकी छाती चौड़ी, भुजाएँ लम्बी, कन्धे ऊँचे, नेत्र विशाल, दाँत लाल और कपड़े अनेक रङ्ग के थे। वे अनेक गहने पहने और पराक्रम में मत्त हाथी के समान थे। तरह-तरह के सुगन्धित चूर्ण उनके शरीरों को सुगन्धित कर रहे थे। खड्ग बाँधे और पाश हाथ में लिये हुए हाथियों के सवार योद्धा परस्पर भिड़कर मरने-मारने लगे। जीते-जी कोई किसी के आगे से नहीं हटता था। लम्बे केश धारण किये, कलापभूषित, चाप-धारी, प्रिय वचन बोलनेवाले, घोररूप और पराक्रमी घुड़सवार तथा पैदल योद्धा बाणों से घायल हो-होकर रणभूमि में गिरने लगे। इसी समय चेदि, पाञ्चाल, केकय, करूष, कोशल, काञ्ची और मगध आदि देशों के वीर योद्धा भी प्राणों का मोह छोड़कर युद्ध करने के लिए वेग से आगे बढ़े। रथों, हाथियों, घोड़ों पर सवार योद्धागण और उग्र कर्म करनेवाले पैदल वीर अनेक प्रकार
२० के बाजों के शब्द से प्रसन्न और उत्साहित होकर हँसने और नाचने लगे।

उस समय उस महती सेना के बीच हाथी पर सवार भीमसेन, श्रेष्ठ गजारोही योद्धाओं को साथ लिये, आपकी सेना के सामने आये। भीमसेन के श्रेष्ठ हाथी का रूप अत्यन्त उग्र था और वह विधिपूर्वक सुसज्जित था। उसके ऊपर बैठे भीमसेन उदयाचल के शिखर पर विराजमान सूर्य-देव के समान शोभायमान हो रहे थे। उस हाथी पर पड़ा हुआ, अनेक रत्नों से शोभित, लोहे का कवच तारागण-शोभित शरद ऋतु का स्वच्छ आकाश सा प्रतीत हो रहा था। सुन्दर मुकुट और अन्य अलङ्कारों से शोभित भीमसेन उस हाथी के ऊपर से तोमर का प्रहार करके, शरद ऋतु के दोपहर के सूर्य के समान, अपने तेज से शत्रुओं को भस्म कर रहे थे। सेना के अगले भाग में स्थित और हाथी पर सवार क्षेमधूर्ति राजा भीमसेन के हाथी को देखकर हँसते हुए उधर ही चले और भीमसेन को युद्ध के लिए ललकारने लगे। उग्र रूपवाले और महापर्वत के समान ऊँचे दोनों हाथी परस्पर अपनी इच्छा से भिड़कर भयङ्कर युद्ध करने लगे। उधर हाथियों को भिड़ते देखकर उनके सवार क्षेमधूर्ति और भीमसेन भी, सूर्य-किरण-सदृश चमकीले तोमरों से बलपूर्वक परस्पर प्रहार करके, सिंह की तरह गरजने लगे। फिर हाथियों को हटाकर वे मण्डलाकार गतियाँ (पैंतरे) दिखाने लगे। इसके बाद दोनों योद्धा धनुष लेकर परस्पर बाण मारने लगे। उल्लास से सिंहनाद करके, ताल ठोंककर और सनसनाते हुए बाणों की वर्षा करके दोनों वीर अपनी-अपनी सेना को प्रसन्न और उत्साहित करने लगे। उनके हाथी सूँड़ उठा-उठाकर परस्पर भिड़ रहे थे
३० और उनके हौदों पर पताकाएँ फहरा रही थीं। दोनों ने दोनों के धनुष काटकर सिंहनाद किया। फिर वर्षा ऋतु के मेघों के समान दोनों वीर एक दूसरे पर शक्ति-तोमर आदि शस्त्र बरसाने लगे।

इसी बीच में महाबली क्षेमधूर्ति ने भीमसेन की छाती में एक तीक्ष्ण तोमर मारकर सिंहनाद किया। इसके बाद छः तोमर और मारे। भीमसेन का शरीर क्रोध से प्रज्वलित हो उठा। जैसे मेघ की आड़ में स्थित सूर्य की किरणें चारों ओर छिटकती हैं, वैसे ही भीमसेन के अङ्ग में वे तोमर शोभायमान हुए। तब भीमसेन ने भी यत्नपूर्वक अपने शत्रु के ऊपर एक सूर्य सा चमकीला वेगगामी लोहे का तोमर चलाया। उधर कुलूताधिपति क्षेमधूर्ति ने धनुष चढ़ाकर फुर्ती के साथ दस बाणों से उस तोमर को काट डाला और भीमसेन को साठ बाण मारे। भीमसेन ने भी मेघ के समान शब्द करनेवाला धनुष लेकर शत्रु के हाथी पर बाण बरसाना और गरजना शुरू किया। युद्ध में भीम के बाणों से पीड़ित होकर वह हाथी, हवा के उड़ाये बादल की तरह, बेतहाशा भाग खड़ा हुआ; लाख रोकने पर भी नहीं रुका। भीमसेन के गजराज ने उस हाथी

का इस तरह पीछा किया, जैसे आँधी के उड़ाये बादल के पीछे दूसरा बादल चलता है। प्रतापी क्षेमधूर्ति ने बहुत यत्न करके अपने हाथी को लौटाकर खड़ा किया और भीमसेन के हाथी को बाणों से घायल कर दिया। तब भीमसेन ने ताककर एक क्षुरप्र बाण से शत्रु का धनुष काट डाला और उसके हाथी को भी पीड़ित किया। अब क्षेमधूर्ति ने क्रोध करके रण में भीमसेन को अनेक प्रहारों से ४० घायल किया और फिर उनके हाथी के मर्मस्थलों में तीक्ष्ण नाराच बाण मारे। क्षेमधूर्ति के प्रहार से भीमसेन का महागजराज मर गया। सावधान भीमसेन, हाथी के गिरने के पहले ही, उसके ऊपर से कूद पड़े। उन्होंने कुपित होकर क्षेमधूर्ति के हाथी को गदा के प्रहार से चूर-चूर कर डाला। क्षेमधूर्ति भी अपने हाथी की पीठ पर से कूद पड़े। वे तीक्ष्ण तलवार खींचकर भीमसेन की ओर झपटे। खड्ग लेकर आ रहे शत्रु के ऊपर भीमसेन ने गदा का प्रहार किया। उस प्रहार से क्षेमधूर्ति के प्राण निकल गये। वे खड्ग हाथ में लिये उसी हाथी के शरीर पर वैसे ही गिर पड़े, जैसे वज्रपात से फटे हुए पहाड़ के शिखर पर वज्रप्रहार से मरा हुआ सिंह गिर पड़े। कुलूत देश के यशस्वी राजा क्षेमधूर्ति को मरते देखकर आपकी सेना अत्यन्त व्यथित और उत्साह-हीन होकर भाग खड़ी हुई। ४५

तेरहवाँ अध्याय

द्वन्द्व युद्ध। विन्द-अनुविन्द दोनों भाइयों का सात्यकि के हाथ से वध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! तब महाधनुर्द्धर कर्ण तीक्ष्ण बाणों से रणभूमि में पाण्डवों की सेना का संहार करने लगे। राजन्! ऐसे ही पाण्डव पक्ष के महारथी योद्धा लोग, कर्ण के सामने ही, कुपित होकर आपके पुत्र की सेना को मारने लगे। कर्ण समर में सूर्य-किरण के समान चमकीले और साफ़ किये गये तीक्ष्ण नाराच बाणों से पाण्डवों की सेना को नष्ट कर रहे थे। कर्ण के नाराच बाणों की चोट खाये हुए बड़े-बड़े हाथी अत्यन्त व्यथित, शिथिल और आर्त होकर चिंघारने, चक्कर खाकर गिरने और मरने लगे। इस तरह कर्ण को अपनी सेना का संहार करते देखकर वीरवर नकुल उनसे लड़ने के लिए बढ़े। रण में दुष्कर कर्म कर रहे अश्वत्थामा से भीमसेन भिड़ गये। सात्यकि ने विन्द और अनुविन्द को रोका। श्रुतकर्मा को आते देखकर राजा चित्रसेन उनके सामने आ गये। विचित्र ध्वजा और धनुष से शोभित राजा चित्र से प्रतिविन्ध्य का युद्ध होने लगा। राजा दुर्योधन का राजा युधिष्ठिर ने सामना किया। सब संशप्तकगण प्रसन्नतापूर्वक अर्जुन से भिड़ गये। वीरों का संहार करनेवाले उस महासंग्राम में धृष्टद्युम्न और कृपाचार्य का युद्ध होने लगा। शिखण्डी और कृतवर्मा परस्पर युद्ध करने लगे। १० श्रुतकीर्ति से शल्य का युद्ध होने लगा। प्रतापी सहदेव से आपके पुत्र दुःशासन लड़ने लगे।

केकय देश के दोनों राजकुमार विन्द और अनुविन्द सात्यकि के ऊपर और वीरवर सात्यकि उनके ऊपर कुपित होकर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। जैसे दो हाथी अपने विपक्षी गज-राज के ऊपर दाँतों से प्रहार करें, वैसे ही वे दोनों भाई सात्यकि की छाती ताककर तीक्ष्ण और दृढ़ बाण मारने लगे। सात्यकि ने हँसते-हँसते उनके सब बाणों को व्यर्थ करके सब दिशाओं को अपने बाणों से व्याप्त कर दिया। युद्ध में उन दोनों भाइयों के कवच कट गये। सात्यकि के बाणों से व्याकुल वे दोनों वीर भी अपने बाणों से सात्यकि के रथ को ढकने लगे। रणनिपुण महावीर सात्यकि ने यह देखकर उन दोनों वीरों के धनुष काट डाले। वे तीक्ष्ण बाण बरसाकर दोनों राजकुमारों को रण से भगाने की कोशिश करने लगे। धनुष कट जाने पर वे दोनों भाई शीघ्र ही और धनुष लेकर सात्यकि पर बाण बरसाते हुए रणस्थल में विचरने लगे। उनके वे कङ्कपत्र-शोभित सुवर्णालङ्कृत तीक्ष्ण बाण आसपास प्रकाश फैलाते हुए चारों ओर गिरने लगे। उन दोनों भाइयों ने इतने बाण बरसाये कि दम भर में रणभूमि में अँधेरा छा गया। इसी बीच में सात्यकि ने उन दोनों वीरों के धनुष काट डाले और उन्होंने भी फुर्ती करके सात्यकि का धनुष काट डाला। महाराज! तब युद्ध में अजेय सात्यकि ने क्रुद्ध होकर और धनुष हाथ में २० लिया और उस पर डोरी चढ़ाई। फिर एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से अनुविन्द का सिर काट

डाला। वह कुण्डलों से शोभित सिर कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। जिस तरह शम्बरासुर का सिर कट गया था उसी तरह केकय देश की सेना को शोक-सागर में निमग्न करता हुआ अनुविन्द का सिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अपने शूर भाई की मृत्यु देखकर महारथी विन्द क्रोध से अधीर हो उठे। वे दूसरा धनुष लेकर और उस पर डोरी चढ़ाकर सात्यकि से युद्ध करने लगे। विन्द ने सुवर्णपुङ्ख-शोभित और घिसकर तीक्ष्ण बनाये गये साठ बाण सात्यकि की छाती में मारकर, "ठहर जा ठहर जा" कहकर, सिंहनाद किया। महारथी विन्द ने क्रोध करके फुर्ती के साथ सात्यकि की छाती और दोनों हाथों में कई हज़ार तीक्ष्ण बाण मारे। पराक्रमी सात्यकि के सब अङ्ग बाणों से कट-फट गये। वे उस समय फूले हुए ढाक के पेड़ के समान जान पड़ने लगे। इस तरह वीर विन्द के प्रहार से जर्जर सात्यकि ने हँसते-हँसते उनको पचीस बाण मारे।

उन दोनों वीरों ने युद्ध में एक दूसरे का धनुष काट डाला। दोनों ने दोनों के रथों, घोड़ों और सारथियों को नष्ट कर दिया। इस तरह रथ न रहने पर दोनों वीर खड्ग और शतचन्द्र-चित्रित ढाल हाथ में लेकर एक दूसरे के सामने उपस्थित हुए। देवासुर-युद्ध में महाबली जम्भासुर और इन्द्र जैसे लड़े थे, वैसे ही वे दोनों वीरश्रेष्ठ ढाल-तलवार लेकर महासमर में तरह-तरह के पैंतरे बदलने लगे। दोनों परस्पर प्रहार करने का मौक़ा देखते थे। एक दूसरे को मार डालने का यत्न कर रहा था। इसी बीच में सात्यकि ने खड्ग के प्रहार से विन्द की ढाल काट डाली। विन्द ने भी सात्यकि की शतचन्द्र-चित्रित ढाल काट डाली। दोनों वीर फिर आगे बढ़कर, पीछे हटकर तरह-तरह के पैंतरे, कौशल और फुर्ती दिखाने लगे। रणभूमि में खड्ग लेकर विचर रहे विन्द को सात्यकि ने तलवार का एक ऐसा आड़ा हाथ फुर्ती से मारा कि वे उसको बचा नहीं सके। कवचधारी विन्द के शरीर के दो टुकड़े हो गये और वे वज्रपात से फटे हुए पहाड़ की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। रण में इस तरह विन्द को भी मारकर महारथी सात्यकि फुर्ती के साथ युधामन्यु के रथ पर सवार हो लिये। ३०

इसके बाद एक सुसज्जित रथ सात्यकि के लिए शीघ्र लाया गया। उस पर बैठकर वे केकय देश की श्रेष्ठ सेना को तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। केकय देश की वह विशाल सेना सात्यकि के
३८ बाणों से पीड़ित होकर, अपने शत्रु सात्यकि के सामने से, इधर-उधर भागने लगी।

चौदहवाँ अध्याय

राजा चित्रसेन और चित्र का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उधर महावीर श्रुतकर्मा ने अत्यन्त कुपित होकर राजा चित्रसेन को पचास बाण मारे। राजन्! महाराज चित्रसेन ने भी नव बाण श्रुतकर्मा को और पाँच बाण उनके सारथी को मारे। वीरवर श्रुतकर्मा ने क्रोध करके चित्रसेन के मर्मस्थल में एक तीक्ष्ण नाराच मारा। वह नाराच बाण इतने वेग से आकर लगा कि चित्रसेन को मूर्च्छा आ गई। इसी बीच में महायशस्वी श्रुतकीर्ति ने श्रुतकर्मा को नब्बे तीक्ष्ण बाण मारकर छिपा सा दिया। इधर महारथी चित्रसेन को होश हो आया। उन्होंने एक भल्ल बाण से श्रुतकर्मा का धनुष काट डाला और उनको सात बाण मारे। श्रुतकर्मा ने दूसरा सुवर्णभूषित दृढ़ धनुष लेकर चित्रसेन पर इतने बाणों की वर्षा की कि रक्त से उनका विचित्र रूप हो गया। विचित्र माला पहने हुए युवा चित्रसेन शरीर में अनेक बाण लगने से काँटेदार स्याही (एक पशु) के समान प्रतीत होने लगे। उन्होंने भी कुपित होकर "ठहर ठहर" कहते-कहते श्रुतकर्मा की छाती में एक उग्र बाण मारा। वह बाण लगने से श्रुतकर्मा की छाती फट गई और गेरू के पहाड़ से जैसे गेरू बहे
१० वैसे रक्त बहने लगा। रक्त से सारा शरीर भीग जाने के कारण श्रुतकर्मा फूले हुए ढाक के पेड़ से जान पड़ने लगे। इस प्रकार शत्रु के प्रहार से पीड़ित होने पर श्रुतकर्मा ने उनके धनुष को काट डाला। चित्रसेन का धनुष कट जाने पर श्रुतकर्मा ने उनको तीन सौ तीक्ष्ण बाण मारे। इसके बाद और एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से चित्रसेन के शिरस्त्राण-शोभित सिर को काट डाला। उनका प्रभायुक्त सिर, आकाश से चन्द्रबिम्ब के समान, पृथ्वीतल पर गिर पड़ा।

अभिसार-नरेश चित्रसेन को निहत देखकर उनकी सब सेना कुपित होकर वेग से श्रुतकर्मा पर आक्रमण करने को चली। तब महाधनुर्द्धर श्रुतकर्मा ने कुपित होकर बाण-वर्षा से वैसे ही उस सेना को मारना शुरू किया, जैसे प्रलयकाल में यमराज सब प्राणियों का संहार करते हैं। महाराज! आपके पोते श्रुतकर्मा के बाणों से मारे जा रहे सब सैनिक, दावानल से जल रहे हाथियों की तरह, चारों ओर भागने लगे। शत्रु-विजय के बारे में निरुत्साह होकर भागते हुए शत्रुपक्ष के सैनिकों को बाणवर्षा से भगा रहे श्रुतकर्मा उस समय बहुत ही शोभायमान हो रहे थे।

इधर प्रतिविन्ध्य और महाराज चित्र से युद्ध होने लगा। प्रतिविन्ध्य ने चित्र को पाँच
२० तीक्ष्ण बाण मारकर सारथी को तीन बाणों से पीड़ित किया और फिर एक बाण ध्वजा में मारा।

चित्र ने भी प्रतिविन्ध्य की छाती और बाहुओं में सुवर्णपुङ्ख-शोभित पैने कङ्कपत्रयुक्त नव भल्ल बाण मारे। राजन्! प्रतिविन्ध्य ने चित्र का धनुष काटकर उनको पाँच तीक्ष्ण बाण मारे। तब चित्र ने सुवर्ण-घण्टायुक्त एक असह्य शक्ति प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंकी। वह मानों प्राणों को खोज रही थी। बड़ी उल्का के समान एकाएक आकाशमार्ग में चली आ रही उस उग्र शक्ति के प्रतिविन्ध्य ने हँसते-हँसते दो टुकड़े कर डाले। प्रतिविन्ध्य के तीक्ष्ण बाणों से दो टुकड़े होकर वह शक्ति प्रलयकाल के वज्र के समान सबको डराती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। उस शक्ति को इस तरह व्यर्थ होते देखकर चित्र ने सुवर्णभूषित एक बड़ी गदा उठाकर प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंकी। वह गदा अपने वेग से प्रतिविन्ध्य के रथ, सारथी और घोड़ों को चूर्ण करके पृथ्वी में धँस गई। इसी अवसर में प्रतिविन्ध्य ने रथ से कूदकर फुर्ती के साथ एक सुवर्णदण्ड-शोभित भयानक शक्ति चित्र के ऊपर फेंकी। महामनस्वी चित्र ने उस शक्ति को हाथ से पकड़ लिया और वही शक्ति प्रतिविन्ध्य को ताककर उन पर चलाई। महावीर प्रतिविन्ध्य के दाहने हाथ को घायल करके वह शक्ति पृथ्वी पर गिर पड़ी। उस शक्ति के प्रकाश से रणभूमि का उतना स्थान बिजली के से प्रकाश से जगमगा उठा। ३०

महाराज! तब प्रतिविन्ध्य ने क्रुद्ध होकर चित्र को मार डालने के लिए उन पर सुवर्ण से शोभित तोमर फेंका। उस तोमर के प्रहार से चित्र का कवच कट गया और हृदय भी फट गया। इस तरह उनके प्राण लेकर वह तोमर, बिल में साँप की तरह, पृथ्वी में घुस गया। तोमर लगने से प्राण-हीन होकर और बेलन सी मोटी गोल लम्बी भुजाएँ फैलाकर राजा चित्र पृथ्वी पर गिर पड़े। राजन्! उनकी मृत्यु देखकर रण की शोभा बढ़ानेवाले आपके पक्ष के वीर योद्धा लोग चारों ओर से प्रतिविन्ध्य पर आक्रमण करने के लिए दौड़ पड़े। विविध बाण और किङ्किणी-जाल-शोभित शतघ्नी आदि शस्त्र बरसाते हुए उन वीरों ने प्रतिविन्ध्य को वैसे ही ढक दिया, जैसे बादल सूर्य को छिपा लेते हैं। इन्द्र जैसे असुर-सेना को भगावें, वैसे ही महाबाहु प्रतिविन्ध्य ने बाण बरसाकर कौरव-सेना को भगा दिया।

आँधी से टुकड़े-टुकड़े होकर उड़ रहे बादलों की तरह कौरव-सेना पाण्डव-सेना के आगे से भागने लगी। चारों ओर से मारी जा रही कौरव-सेना को भागते देखकर महाप्रतापी अश्वत्थामा अकेले ही महाबली भीमसेन से युद्ध करने के लिए वेग से आगे बढ़े। देवासुर-संग्राम में इन्द्र और वृत्रासुर ने जैसे घोर युद्ध किया था, वैसे ही वे दोनों वीर एकाएक भिड़कर दारुण युद्ध करने लगे। ३९

पन्द्रहवाँ अध्याय

भीमसेन से अश्वत्थामा का संग्राम

सञ्जय कहते हैं—राजन्! अश्वत्थामा ने पहले फुर्ती दिखाते हुए भीमसेन को एक बाण मारा और उसके बाद ही नब्बे तीक्ष्ण बाणों से उन्हें पीड़ित किया। मर्मज्ञ अश्वत्थामा ने सब मर्मस्थलों में ताककर बाण मारे। उन तीक्ष्ण बाणों के शरीर में घुसने पर महाबली भीमसेन किरणों से युक्त सूर्यदेव के समान शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने भी ताककर हज़ार बाण अश्वत्थामा को मारे और सिंहनाद किया। अश्वत्थामा ने अपने बाणों से उन बाणों को व्यर्थ करके, मुसकाकर, भीमसेन के ललाट में एक विकट नाराच मारा। वह बाण मस्तक में लगने से भीमसेन वैसे ही शोभायमान हुए जैसे दर्प में भरा हुआ गैंडा वन में अपने सींग से शोभित होता है। भीमसेन ने पराक्रमपूर्वक रण में प्रहार कर रहे अश्वत्थामा के मस्तक में तीन नाराच मारे। उन तीनों बाणों के मस्तक में लगने से अश्वत्थामा वर्षा में भीगे हुए तीन शिखरोंवाले पर्वत के समान जान पड़ने लगे। उन्होंने भीमसेन के ऊपर सैकड़ों बाण चलाये; किन्तु पहाड़ जैसे आँधी के वेग से नहीं हिलता वैसे ही भीमसेन तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने भी अश्वत्थामा को अनेक बाण मारे; किन्तु वे अश्वत्थामा को वैसे ही विचलित नहीं कर सके, जैसे जल का प्रवाह पहाड़ को नहीं डिगा सकता। १० रथ पर बैठे हुए वे दोनों महारथी एक दूसरे पर बाणों की वर्षा कर रहे थे। जान पड़ता था कि वे दोनों प्रलयकाल के सूर्य हैं, जो किरणरूप बाणों से संसार का नाश करते हुए एक दूसरे को सता रहे हैं। दोनों निर्भय वीर महारण में बाण-प्रहार करके एक दूसरे के अस्त्र-प्रहारों को व्यर्थ करने का यत्न कर रहे थे। उन दोनों भयङ्कर नरसिंहों के बाण ही दाढ़ें और धनुष ही मुख थे। आकाश में मेघों से ढके हुए चन्द्र-सूर्य की तरह वे दोनों योद्धा बाणवर्षा से अदृश्य हो गये। दम भर में बाणों को काटकर वे मेघ को चीरकर निकले हुए मङ्गल और बुध ग्रह की तरह प्रकाशित हो उठे। इस तरह महादारुण संग्राम होते समय अश्वत्थामा बाण बरसाते हुए भीमसेन की दहनी ओर छोड़ गये। शत्रु के इस विजयसूचक कर्म को भीमसेन नहीं सह सके। वे भी जलधारा के समान बाणों से पर्वत-सदृश अश्वत्थामा को पीड़ित करते हुए उनके वाम भाग में चले गये। इस तरह विविध मण्डलाकार गतियों से आगे बढ़कर, पीछे हटकर, दोनों योद्धा दारुण युद्ध कर रहे थे। दोनों ही, तरह-तरह की गतियाँ और पैंतरे

दिखाते हुए, कानों तक खींचकर छोड़े गये बाणों से परस्पर प्रहार कर रहे थे। दोनों ही एक दूसरे को मार डालने का यत्न कर रहे थे, दोनों ही एक दूसरे के रथ को नष्ट कर डालने की घात में थे। महारथी अश्वत्थामा युद्ध में दिव्य महास्त्र छोड़ने लगे; किन्तु वीर भीमसेन ने अपने दिव्य अस्त्रों से उन अस्त्रों को भी व्यर्थ कर दिया। महाराज! उस समय घोर अस्त्र-युद्ध होने लगा। जिस तरह प्रलय के समय आकाश में दो ग्रह युद्ध करें उसी तरह वे दोनों वीर दारुण संग्राम कर रहे थे। उन दोनों वीरों के बाण, सब दिशाओं को और आपकी सेना को प्रकाशित करते हुए, चारों ओर गिर रहे थे। आकाश में चारों ओर असंख्य बाण ही बाण दिखाई पड़ रहे थे। जान पड़ता था कि चारों ओर युद्धभूमि में आकाश से उल्काएँ गिर रही हैं, इस तरह वे बाण एक दूसरे से टकराकर आग उगलते हुए नीचे गिरते थे। बाणों की रगड़ से आग पैदा हो गई, आग की चिनगारियाँ और जल रहे बाण ऊपर गिर-गिरकर दोनों सेनाओं को जलाने लगे। २१

युद्ध देखनेवाले सिद्धगण आपस में कहने लगे कि "यह युद्ध सब युद्धों से बढ़कर हो रहा है और सब युद्ध इसकी सोलहवीं कला को भी नहीं पहुँचते। ऐसा युद्ध फिर कभी हो नहीं सकता। अहो, ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों को ही युद्ध-विद्या का पूरा ज्ञान है। दोनों ही शूर और उग्र पराक्रमी हैं। अहो, भीमसेन का बल बेहद है, और अश्वत्थामा को अतुल अस्त्राभ्यास है। ये दोनों वीर समर में यम के समान स्थित हैं। जैसे दो रुद्र, दो सूर्य और दो यम हों, वैसे ही ये दोनों वीर घोर रूप धारण किये हुए रण में स्थित हैं।" महाराज! सिद्धों के ऐसे ही वचन बारम्बार आकाश में सुनाई पड़ने लगे। आकाश में एकत्र हुए स्वर्गवासी देवगण सिंहनाद करने लगे। रण में दोनों वीरों के अद्भुत अचिन्त्य कर्म देखकर सिद्धों और चारणों को बड़ा आश्चर्य हुआ। देवता, सिद्ध और महर्षिगण "शाबाश भीमसेन" "शाबाश अश्वत्थामा" कहकर दोनों की प्रशंसा करने और साधुवाद देने लगे। राजन्! एक दूसरे के अपराधी दोनों शूर लाल-लाल आँखें निकालकर एक दूसरे को देखने लगे। दोनों के होठ फड़क रहे थे, ३१

दोनों ही दाँतों से होठ चबा रहे थे। वे दोनों महारथी, मेघ की तरह, बाणों की वर्षा से एक दूसरे को ढक रहे थे। उनके शस्त्र ही बिजली के समान चमक रहे थे। दोनों ने दोनों के सारथी, ध्वजा और घोड़ों को बाणों से बेधकर एक दूसरे को बाणों से घायल करना शुरू कर दिया। दोनों ही एक दूसरे को मार डालने के लिए तैयार थे। दोनों ने उस महायुद्ध में भयङ्कर तीक्ष्ण
४० बाण धनुष पर चढ़ाकर फुर्ती के साथ एक दूसरे पर छोड़े। महाराज! सेना के अगले भाग में चमक रहे, वज्र के समान वेगशाली और दुर्द्धर्ष दो बाण दोनों योद्धाओं को आकर लगे। दोनों ही पराक्रमी योद्धा एक दूसरे के तीक्ष्ण बाणों की चोट से अत्यन्त घायल होकर अपने-अपने रथ पर गिर पड़े और अचेत हो गये। अश्वत्थामा का सारथी अपने स्वामी को मूर्च्छित देखकर सब सेना के सामने ही रथ लेकर रणभूमि से चल दिया। वैसे ही भीमसेन का सारथी विशोक भी शत्रुओं को
४४ ताप पहुँचानेवाले अपने स्वामी को विह्वल और अचेत देखकर रथ लेकर समरभूमि से हट गया।

सोलहवाँ अध्याय

अश्वत्थामा और अर्जुन का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! संशप्तकगण के साथ अर्जुन ने किस तरह कैसा रण किया? अश्वत्थामा ने अर्जुन से कैसा युद्ध किया और पाण्डव पक्ष के वीरों के साथ मेरे दल के वीरों ने कैसा युद्ध किया? यह सब वृत्तान्त मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! अपने शत्रुपक्ष के साथ वीरों ने जैसा प्राणनाशक और पातकनाशक विकट संग्राम किया, सो मैं वर्णन करता हूँ, सुनिए। अर्जुन उस सागर-सदृश संशप्तकसेना के भीतर घुस गये और प्रचण्ड आँधी जैसे समुद्र को मथ डालती है, वैसे ही उन्होंने उस सेना में हलचल मचा दी। भल्ल बाणों से वीरों के नेत्र, दाँत, भौंह आदि से शोभित पूर्णचन्द्र-सदृश कान्तिसम्पन्न सिरों को काटकर उन्होंने मानों बिना डण्डी के कमलों से रणभूमि को परिपूर्ण कर दिया। राजन्! उस संग्राम में वीर अर्जुन ने क्षुरप्र बाणों से वीर शत्रुओं के, पाँच मुँहवाले साँप के समान, गोल, चौड़े, पुष्ट, चन्दन-अगुरु आदि से भूषित, शस्त्र सहित, तलत्र-युक्त हाथों को काट-काटकर ढेर लगा दिया। वे शत्रुपक्ष के घोड़े, सारथी, रथ के धुरे, ध्वजा, धनुष-बाण-अँगूठी प्रभृति समेत हाथ आदि को पैने भल्ल बाणों से काटने लगे। उस युद्ध में वीर अर्जुन ने सवारों सहित रथों, हाथियों और असंख्य घोड़ों को हज़ारों बाण मारकर मार गिराया। जैसे गाय के लिए बहुत से मस्त साँड़ गरज-गरजकर युद्ध करें, वैसे ही गरजते हुए क्रोधान्ध वीरगण कुपित अर्जुन की ओर झपटने लगे। अपने को मार रहे अर्जुन के ऊपर वे सींग-सदृश बाणों से विकट प्रहार करने लगे। त्रैलोक्य-विजय के समय दैत्यों के

कृष्णचन्द्र अर्जुन के ये वचन सुनकर उनका रथ अश्वत्थामा के पास ले गये।—पृ० २७४३

साथ इन्द्र का जैसा घोर युद्ध हुआ था वैसा ही लोमहर्षण युद्ध उस समय संशप्तकों के साथ वीर अर्जुन कर रहे थे। सब ओर से आ रहे शत्रुओं के अस्त्रों को अस्त्रों से ही नष्ट करके अर्जुन बाण मारकर उनके प्राण लेने लगे। शत्रुओं के भय को बढ़ानेवाले अर्जुन ने उसी तरह शत्रुओं के रथों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जिस तरह प्रचण्ड आँधी बादलों के टुकड़े उड़ा देती है। हज़ारों महारथी योद्धाओं के समान अद्भुत युद्ध कर रहे अर्जुन के कामों को देखकर दर्शकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनके बाणों से रथों के त्रिवेणु, पहिये, अक्ष, योद्धा, सारथी, शस्त्र, तरकस, ध्वजा, जोत, लगाम, कूबर, बन्धन, युग, अक्षप्रमण्डल आदि अङ्गों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। सिद्ध, देवता, ऋषि और चारणगण अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। देवता लोग नगाड़े बजाने लगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन के सिर पर फूलों की वर्षा होने लगी। आकाशवाणी हुई कि चन्द्रमा, अग्नि, वायु और सूर्य की कान्ति, दीप्ति, बल और द्युति को सदा धारण करनेवाले ये वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं। पूर्व समय में ब्रह्मा और शिव जैसे एक रथ पर स्थित हुए थे, वैसे ही इस समय ये दोनों अजेय वीर एक रथ पर सवार हैं। ये वीर नर और नारायण हैं, जो कि सब प्राणियों में श्रेष्ठ हैं।

महाराज! यह अत्यन्त आश्चर्य देख-सुनकर अश्वत्थामा अत्यन्त कुपित हो उठे और उस महायुद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन की ओर बड़े वेग से चले। शत्रुओं का नाश करनेवाले, बाण बरसा रहे, अर्जुन को बाण-सहित हाथ के इशारे से अपनी ओर बुलाकर महावीर अश्वत्थामा ने हँसकर कहा—हे वीर! अगर तुम मुझे अपने योग्य, पूजनीय अतिथि समझते हो तो अब पूरे यत्न से युद्धरूप अतिथि-सत्कार करो। राजन्! इस तरह एकाएक अश्वत्थामा ने जब युद्ध के लिए अर्जुन को ललकारा तब उसे अपना बहुत सम्मान मानकर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! मुझे संशप्तक-सेना का भी संहार करना है और उधर अश्वत्थामा भी युद्ध के लिए ललकार रहे हैं। बतलाइए, इस अवसर पर मुझे पहले क्या करना चाहिए? अगर आप उचित समझें तो पहले अश्वत्थामा की इच्छा पूरी करना ही ठीक होगा। २१

राजन्! कृष्णचन्द्र अर्जुन के ये वचन सुनकर उनका रथ अश्वत्थामा के पास ले गये, जैसे कि शिक्षा-विधि से बुलाये गये इन्द्र को वायुदेव यज्ञशाला में पहुँचाते हैं। पास पहुँचकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अश्वत्थामा! स्थिर होकर शीघ्र प्रहार करो और अर्जुन के वार को सहो। नौकरों के लिए अपने प्रतिपालक स्वामी के ऋण को चुकाने का यही उपयुक्त समय है। [तुम भी अपने स्वामी दुर्योधन का ऋण चुकाने की चेष्टा कर लो।] ब्राह्मणों का विवाद (शास्त्रार्थ) सूक्ष्म होता है, और क्षत्रियों की हार-जीत का विषय स्थूल है। तुम मोहवश अर्जुन से युद्धरूप आतिथ्य माँगते हो; किन्तु इनके दिव्य अस्त्रों को तुम नहीं सह सकोगे। ख़ैर, अब स्थिर होकर उस सत्कार के पाने के लिए अर्जुन से युद्ध करो।

महारथी द्विजश्रेष्ठ अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण के वचन सुनकर कहा—अच्छी बात है, यही होगा। अब अत्यन्त कुपित अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण को साठ और अर्जुन को तीन तीक्ष्ण नाराच
३० बाण मारे। अर्जुन ने भी कुपित होकर तीन बाणों से अश्वत्थामा का धनुष काट डाला। इन्होंने तुरन्त एक भयानक धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई और पलक मारते ही तीन सौ बाण श्रीकृष्ण को और एक हज़ार बाण अर्जुन को मारे। इसके बाद वीर अश्व त्थामा यत्न-पूर्वक हज़ारों, लाखों, करोड़ों बाण बरसाने लगे। उनकी लगातार अपार बाण-वर्षा के प्रभाव से अर्जुन के हाथ बँध से गये। उस समय योगबल के कारण, और अस्त्र के प्रभाव से, अश्वत्थामा के तरकस, धनुष, धनुष की डोरी, उँगलियों, बाहुओं, हथेलियों, छाती, मुँह, नाक, नेत्र, कान, सिर, सम्पूर्ण अङ्ग, रोम-रोम, रथ और ध्वजा से निरन्तर असंख्य बाण निकल रहे थे। इस प्रकार बाणजाल से श्रीकृष्ण और अर्जुन को बाँधकर अश्वत्थामा बहुत प्रसन्न हुए और मेघ की तरह गरजकर सिंहनाद करने लगे।

शत्रुदमन अर्जुन ने महाबली अश्वत्थामा का सिंहनाद सुनकर कहा—हे श्रीकृष्ण! मेरे प्रति गुरुपुत्र का यह दौरात्म्य तो देखिए। वे इन बाणों से हम दोनों को आवृत करके मरा हुआ समझ रहे हैं। देखिए, मैं अभी अपनी युद्धशिक्षा के कौशल और बल से अश्वत्थामा की (हमें मार डालने की) इच्छा को व्यर्थ किये डालता हूँ। महाराज! अर्जुन ने इतना कहकर, हवा जैसे कुहासे को मिटा देती है वैसे ही, फुर्ती के साथ अपने बाणों से अश्वत्थामा के एक-एक बाण के तीन-तीन टुकड़े कर डाले। इस तरह अश्वत्थामा की चेष्टा को व्यर्थ करके अर्जुन ने संशप्तकगणों पर भी उग्र बाणों की वर्षा की, जिससे उनके घोड़े, सारथी, रथ, हाथी, ध्वजा,
४० पैदल और वे स्वयं घायल होने लगे। उस समय शत्रुपक्ष का जो मनुष्य जहाँ जिस तरह खड़ा था, वहाँ उसी हालत में उसे जान पड़ने लगा कि उसके चारों ओर बाण ही बाण हैं। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए तरह-तरह के बाण कोस भर पर या और भी आगे स्थित हाथियों और मनुष्यों को मार-मारकर गिरा रहे थे। जिनके मस्तक से मद गिर रहा था, ऐसे हाथियों की सूँड़ें भल्ल बाणों से कट-कटकर वैसे ही पृथ्वी पर गिरने लगीं, जैसे कुल्हाड़ी से काटे गये बड़े-बड़े पेड़ों की डालें धरती पर गिरें। सूँड़ कटने के बाद पहाड़ के समान हाथी भी अपने सवारों सहित पृथ्वी पर गिरने लगे, जैसे कि इन्द्र के वज्र की चोट से फट-फटकर पहाड़ गिरें। जिनमें सुशिक्षित तेज़ घोड़े जुते हुए थे और युद्ध में अजेय वीर बैठे हुए थे, ऐसे गन्धर्व-नगर के समान सुसज्जित बड़े-बड़े रथों का, अर्जुन के बाणों से टुकड़े-टुकड़े होकर, पृथ्वी पर ढेर होने लगा। शत्रुओं पर बाण बरसा रहे अर्जुन ने सुन्दर अलङ्कृत पैदलों और घुड़सवारों को मार-मारकर गिरा दिया। अर्जुन उस समय प्रलयकाल के सूर्य की तरह तप रहे थे। उन्होंने बाणरूप किरणों से संशप्तक-सेना-रूप महासागर को सुखा दिया। संशप्तक-सेना को नष्ट

करना और किसी वीर के लिए बहुत ही कष्टसाध्य था। महाराज! इन्द्र जैसे पर्वत पर वज्र-प्रहार करें वैसे ही अर्जुन ने फिर फुर्ती के साथ बड़े वेग से वज्र-तुल्य नाराच मारकर महापर्वत के समान अटल अश्वत्थामा को घायल कर दिया। उन्होंने भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर घोड़े और सारथी सहित अर्जुन के ऊपर अनेक बाण छोड़े; किन्तु अर्जुन ने उन बाणों को काट डाला। तब अश्वत्थामा ने अपने अनुरूप शत्रु अर्जुन से युद्ध करने के लिए, उनके सामने जाकर, उन पर अपने तरकस के बाण बरसाना शुरू कर दिया। जैसे कोई पुरुष अपने घर आये हुए अतिथि को, उसका सत्कार करने के लिए, अपना घर अर्पण करे वैसे ही अश्वत्थामा ने अर्जुन के ऊपर अपने अस्त्र-शस्त्र छोड़ना शुरू किया। जिस तरह दान देनेवाला पुरुष पंक्ति से भ्रष्ट (अपात्र) लोगों को छोड़कर पंक्ति में बैठने योग्य (सुपात्र) याचक के पास जाता है, वैसे ही अर्जुन भी संशप्तक-सेना को छोड़कर अश्वत्थामा के पास आ गये। ५१

सत्रहवाँ अध्याय

अर्जुन का अश्वत्थामा को हराना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उस समय शुक्र और बृहस्पति के समान तेजस्वी दोनों वीर वैसे ही युद्ध करने लगे जैसे नक्षत्र को लक्ष्य करके शुक्र और बृहस्पति युद्ध करें। प्रज्वलित बाण-रूप किरणों से एक दूसरे को पीड़ित कर रहे दोनों महारथी, वक्रमार्ग में स्थित ग्रहों के समान, लोगों के मन में त्रास उत्पन्न करने लगे। महावीर अर्जुन ने बार-बार अश्वत्थामा को, भौंहों के बीच में, नाराच बाण मारकर पीड़ित किया। उन बाणों से अश्वत्थामा वैसे ही शोभित हुए जैसे

ऊर्ध्वगामी किरणों से सूर्य शोभा को प्राप्त हों। तब अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को सैकड़ों बाण मारे, जिनसे वे अपनी किरणें फैलाये हुए प्रलयकाल के दो सूर्यों के समान जान पड़ने लगे। श्रीकृष्ण पर अश्वत्थामा को प्रहार करते देखकर अर्जुन बहुत ही कुपित हो उठे। उन्होंने अश्वत्थामा के ऊपर चारों ओर से शस्त्रधारा बरसानेवाला अस्त्र छोड़ा और वज्र के समान अमोघ, अग्नि के समान जलानेवाले और यमदण्ड के समान प्राण हरनेवाले बाण मारना शुरू किया। अत्यन्त रौद्र कर्म करनेवाले महातेजस्वी अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण और अर्जुन के मर्मस्थलों में ताक-कर वेगगामी बाण मारे। वे बाण ऐसे थे कि उनकी चोट से साक्षात् मृत्यु भी व्यथित हो जाय। अर्जुन ने अश्वत्थामा के बाणों को उनसे दूने बाणों से व्यर्थ कर दिया। इस प्रकार घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि सहित वीर अश्वत्थामा को बाणों से पीड़ित करके वे फिर संशप्तक-सेना को मारने लगे। समर से न हटनेवाले संशप्तक वीरों के धनुष, बाण, तरकस, धनुष की डोरी, हाथ, हथेली, हाथों के शस्त्र, छत्र, ध्वजा, घोड़े, रथ की ईषा, वस्त्र, माला, आभूषण, कवच, ढाल-तलवार और सिर आदि को अर्जुन ने बलपूर्वक अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करना शुरू कर दिया। सुसज्जित रथ, हाथी, घोड़े आदि के ऊपर बैठे हुए वीर संशप्तकगण यत्नपूर्वक युद्ध कर रहे थे। वीर अर्जुन तीक्ष्ण सैकड़ों बाण मारकर उन वाहनों और उन पर बैठे हुए वीरों को पृथ्वी पर गिराने लगे। अर्जुन भल्ल, अर्धचन्द्र, १० क्षुर आदि विविध बाणों से शत्रुओं के किरीट-मुकुट, माला और आभूषणों से अलङ्कृत और कमल, सूर्य तथा पूर्णचन्द्र के समान मुखवाले सिरों को काट-काटकर लगातार धरती पर गिराने लगे। तब कलिङ्ग, वङ्ग, अङ्ग और निषाद आदि देशों के दानव-तुल्य वीर योद्धा लोग ऐरावत के समान श्रेष्ठ हाथियों को आगे बढ़ाकर अर्जुन को मार डालने के लिए उनकी ओर चले। अर्जुन ने फुर्ती के साथ अपने बाणों से जब उन हाथियों के कवच, मर्म, सूँड़, महावत, ध्वजा, पताका आदि को काट डाला तब वे वज्र के प्रहार से फटे हुए पहाड़ों के शिखर की तरह पृथ्वी पर गिरने लगे।

इस प्रकार अर्जुन के बाणों से वह गज-सेना छिन्न-भिन्न होकर भाग खड़ी हुई। तब फिर वे सूर्यवर्ण बाणों की वर्षा से गुरु-पुत्र को उसी तरह ढकने लगे जिस तरह हवा उदय हो रहे सूर्य को बादलों से ढक लेती है। अश्वत्थामा ने भी अपने बाणों से अर्जुन के बाणों को काट डाला। वर्षाकाल में गगनमण्डल में सूर्य-चन्द्र को छिपाकर जैसे बादल गरजते हैं वैसे ही तीक्ष्ण बाणों से श्रीकृष्ण और अर्जुन को छिपा करके महारथी अश्वत्थामा गरजने लगे। इस प्रकार अश्वत्थामा और उनके साथ की सेना ने निकट आकर जब शस्त्र-वर्षा से अर्जुन को पीड़ित किया तब अर्जुन ने भी एकाएक उस बाणजाल के अन्धकार को दूर करके उन्हें सुवर्ण-पुङ्ख युक्त तीक्ष्ण बाणों से मारना शुरू किया। उस समय रथ में बैठे हुए अर्जुन ऐसी फुर्ती से हाथ चला रहे थे कि कब वे बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते और कब छोड़ते हैं, यह कुछ भी नहीं देख पड़ता था। केवल यही देख पड़ता था कि रथ, हाथी, घोड़े और पैदल योद्धा उनके बाणों से छिन्न-भिन्न हो रहे हैं—मर-मरकर तर ऊपर ढेर हो रहे हैं। तब अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ दस नाराच बाणों को एक बाण की तरह धनुष पर चढ़ाकर छोड़ा। उनमें से पाँच बाण अर्जुन को और पाँच बाण श्रीकृष्ण को लगे। सब मनुष्यों में श्रेष्ठ और इन्द्र तथा कुबेर के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन के शरीर में वे बाण वेग से घुस गये और रक्त की धारा बह चली। सबने समझा कि समग्र धनुर्वेद के ज्ञाता गुरुपुत्र के प्रहार से श्रीकृष्ण और अर्जुन की मृत्यु ही हो गई।

तब श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! तुम शत्रु को मारने में शिथिलता क्यों कर रहे हो? यह तुम्हारा प्रमाद ठीक नहीं। तुम गुरुपुत्र समझकर अश्वत्थामा से कोमल युद्ध कर रहे हो। किन्तु जैसे रोग की चिकित्सा करने में आलस्य करने से वह फिर बढ़कर बड़ा कष्ट देता है, वैसे ही अश्वत्थामा भी इस प्रकार उपेक्षा करने से बड़ी हानि पहुँचा सकते हैं। २०

महाराज! श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर अर्जुन ने, सावधान होकर, कहा—अच्छी बात है, मैं अभी अश्वत्थामा को परास्त करता हूँ। अब हँसते-हँसते अर्जुन ने अश्वत्थामा के चन्दन-चर्चित हाथों में, छाती में, सिर में और जाँघों में असंख्य विकट बाण ताक-ताककर मारना शुरू किया। वे बाण गाण्डीव धनुष से छूटकर अश्वत्थामा के अङ्गों को छिन्न-भिन्न करने लगे। इसी बीच में अर्जुन ने अश्वत्थामा के घोड़ों की रासें काट दीं। अर्जुन के बाणों से पीड़ित घोड़े बड़े वेग से भागे और उनके रथ को रणभूमि से बहुत दूर ले गये। अर्जुन के दृढ़ प्रहार से अश्वत्थामा पीड़ित हो रहे थे। हवा के समान वेग से जानेवाले घोड़े जब उन्हें अर्जुन के आगे से हटा ले गये तब फिर उनकी हिम्मत न पड़ी कि सामने जाकर अर्जुन से युद्ध करें। अश्वत्थामा बुद्धिमान् थे। उन्होंने सोचकर फिर अर्जुन के सामने न जाने में ही अपना कल्याण समझा। वे जानते थे कि श्रीकृष्ण और अर्जुन को कोई संग्राम में जीत नहीं सकता। जहाँ वे दोनों वीर हैं वहीं विजय है। अश्वत्थामा का उत्साह टूट गया। उनके बाण-अस्त्र आदि भी चुक गये थे। वे सीधे कर्ण की सेना

में चले गये। मन्त्र, औषध, क्रिया आदि उपचारों से जैसे व्याधि शरीर से दूर होती है वैसे ही विरुद्ध आचरण करनेवाले अश्वत्थामा को जब घोड़े युद्धभूमि से हटा ले गये तब जल-प्रवाह की तरह शब्द करनेवाले और वायु से फहरा रही पताका से शोभित रथ को बढ़ाकर श्रीकृष्ण और अर्जुन संशप्तक-सेना की ओर फिर चल दिये। २६

अठारहवाँ अध्याय

दण्ड और दण्डधार का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इसी समय रणभूमि की उत्तर-सीमा में पाण्डव-सेना के बीच घोर कोलाहल सुनाई पड़ा। वीरवर दण्डधार बड़े वेग से बाणवर्षा करके रथी, हाथी, घोड़े, पैदल आदि का संहार कर रहे थे और इसी से सब लोग अपने वाहनों सहित चिल्लाते हुए भाग रहे थे। गरुड़ और वायु के समान वेगवाले घोड़ों को हाँक रहे कृष्णचन्द्र ने रथ को उसी ओर फेरकर अर्जुन से कहा—हे अर्जुन! मगध देश के वीर योद्धाओं में श्रेष्ठ यह दण्डधार, शत्रुदलन हाथी पर बैठा हुआ, तुम्हारी सेना का संहार कर रहा है। शिक्षा और बल में यह भगदत्त से किसी तरह कम नहीं है। इसका हाथी भी बड़ा विकट है। इसलिए पहले इसे मार लो, फिर संशप्तक-सेना का संहार करना।

राजन्! श्रीकृष्ण ने यों कहकर, बात की बात में, अर्जुन को दण्डधार के हाथी के पास पहुँचा दिया। अशुभ ग्रह धूमकेतु के समान त्रास उत्पन्न करनेवाला, महाबली, मागध-श्रेष्ठ, दारुण दण्डधार अपने योद्धाओं को साथ लिये सारी शत्रु-सेना को मथ रहा था। गज-युद्ध में उसका सामना करनेवाला कोई न था। जैसे अन्य ग्रह उत्पाती केतु ग्रह का वेग नहीं सह सकते वैसे ही दण्डधार का पराक्रम अन्य वीरों के लिए असह्य हो रहा था। वह वीर राजा जिस गजराज पर बैठा हुआ था वह विकट हाथी दानवराज के हाथी के समान, सुसज्जित, रण में महामेघ के समान शब्द करनेवाला और रथ, हाथी, घोड़े, पैदल आदि को नष्ट करनेवाला था। पराक्रमी राजा दण्डधार कालचक्र की तरह चारों ओर घूमकर, उस हाथी के ऊपर से बाणों की वर्षा करके असंख्य महारथियों, महावतों, हाथियों, घोड़ों, उनके सवारों और पैदलों को मारने और गिराने लगा। उसका श्रेष्ठ हाथी भी घोड़ों और सारथी सहित रथों तथा मनुष्यों को, आक्रमण करके, पैरों से रौंद रहा था। वह तेजस्वी हाथी जहाँ-तहाँ काँसे और लोहे के कवचों से शोभित मनुष्यों और घोड़ों को गिराकर रौंदता था, जिससे सूखे नल-वन (नकुल) को रौंदने का सा शब्द होता था।

इधर महापराक्रमी अर्जुन अपने श्रेष्ठ रथ को बढ़वाकर रणभूमि में उसी गजराज के पास पहुँचे। वहाँ चारों ओर धनुष की डोरियों का शब्द, रथों के पहियों की घरघराहट, असंख्य

पराक्रमी राजा दण्डधार कालचक्र की तरह... ..असंख्य महारथियों, महावतों, हाथियों, घोड़ों, उनके सवारों और पैदलों को मारने और गिराने लगा, उसका श्रेष्ठ हाथी भी घोड़ों और सारथी-सहित रथों तथा मनुष्यों को पैरों से रौंद रहा था।—पृष्ठ २७४८

मृदङ्ग, शङ्ख, नगाड़े आदि की ध्वनि और हज़ारों रथ, हाथी, घोड़े, मनुष्य आदि का कोलाहल गूँज रहा था। वीर दण्डधार ने अर्जुन को बारह, श्रीकृष्ण को सोलह और घोड़ों को तीन-तीन बाण मारकर सिंहनाद किया। वह इस तरह फुर्ती दिखाकर बारम्बार हँसने लगा। यह देखकर वीर अर्जुन ने भल्ल बाणों से दण्डधार का डोरी और बाण सहित धनुष और अलंकृत भारी ध्वजा काट डाली। फिर हाथी के प्रधान महावत और चारों चरण-रक्षकों को मार डाला। इससे गिरिव्रज के राजा दण्डधार को क्रोध चढ़ आया। उसने अर्जुन और श्रीकृष्ण को अत्यन्त उद्विग्न करने के लिए अपने वायु के समान वेगशाली मस्त और खूनी हाथी को आगे बढ़ाया। दण्डधार बारम्बार अर्जुन और श्रीकृष्ण पर तोमरों से प्रहार करने लगा। तब अर्जुन ने कई क्षुर बाण एक साथ छोड़कर दण्डधार के पूर्णचन्द्र-तुल्य मुख से शोभित सिर और हाथी की सूँड़ के समान दोनों हाथों को काट डाला। साथ ही सैकड़ों बाण उस हाथी को मारे। सुनहरे कवच से शोभित उस हाथी के शरीर में अर्जुन के सुवर्ण-भूषित बाण लगने से ऐसा जान पड़ने लगा कि रात के समय किसी पर्वत पर दावानल लगी हुई है और उसमें उसके ऊपर के वृक्ष-ओषधि आदि जल रहे हैं। बाण-प्रहार की वेदना से पीड़ित वह हाथी मेघ-गर्जन के समान आर्तनाद करता हुआ चक्कर खाकर लड़खड़ाता भागा और कुछ दूर जाकर, वज्र से फटे हुए पहाड़ की तरह, मय अपने महावत के पृथ्वी पर गिरकर मर गया।

अपने भाई दण्डधार की मृत्यु देखकर महाबली दण्ड भी सुवर्ण-माला से शोभित, हिमाचल के शिखर के समान ऊँचे, सफ़ेद हाथी पर चढ़कर श्रीकृष्ण और अर्जुन को मार डालने के लिए उनके समीप आया। उसने सूर्य की किरणों के समान चमकीले तीन तीक्ष्ण तोमर अर्जुन को और पाँच तोमर कृष्णचन्द्र को मारे। इस तरह दोनों शत्रुओं को पीड़ित करके वह सिंहनाद करने लगा। अर्जुन ने कुपित होकर दो क्षुरप्र बाणों से उसके तोमरयुक्त दोनों हाथ काट डाले। चन्दन-चर्चित और अङ्गद-भूषित उसकी दोनों

विशाल भुजाएँ हाथी की पीठ पर से पृथ्वी पर गिरते समय पर्वत के शिखर पर से गिरनेवाले दो महासर्पों के समान जान पड़ीं। फिर अर्जुन ने एक अर्धचन्द्र बाण से दण्ड का सिर भी काट डाला। खून से तर वह कटा हुआ सिर हाथी के ऊपर से वैसे ही गिरा जैसे सूर्य का मण्डल अस्ताचल से पश्चिम दिशा में नीचे जाता है। अर्जुन ने सूर्य-किरण-तुल्य तीक्ष्ण बाण मारकर, कैलास पर्वत के शिखर के समान, हाथी के शरीर को छिन्न-भिन्न कर डाला। वज्र की चोट से २० फटे सफ़ेद पर्वत के शिखर के समान, शब्द करता हुआ, वह हाथी पृथ्वी पर गिरकर मर गया। दण्ड और दण्डधार के साथ और भी अनेक योद्धा वैसे ही हाथियों पर विराजमान थे। वे लोग युद्ध करके अर्जुन को जीतने का उद्योग करने लगे। अर्जुन ने उन योद्धाओं को मारा और उनके हाथियों की भी वही दशा कर दी, जो कि दण्ड और दण्डधार के हाथियों की की थी। यह हाल देखकर शत्रुपक्ष की भारी सेना डर के मारे भाग खड़ी हुई। हाथियों, रथों, घोड़ों और मनुष्यों के झुण्ड परस्पर प्रहार कर रहे थे। उनमें से अधिकांश मर-मरकर पृथ्वी पर गिरते जा रहे थे। भागते समय एक पर एक गिर रहा था। बहुत लोग कोलाहल करते हुए चोट खाकर भागे, किन्तु भाग नहीं सके; चक्कर खाकर गिर पड़े और मर गये।

इधर अर्जुन को उनके पक्ष के सैनिकों ने चारों ओर से आकर घेर लिया। देवमण्डली के बीच में इन्द्र के समान उनके बीच में अर्जुन शोभायमान हुए। सब सैनिक हर्ष प्रकट करते हुए कहने लगे—हे वीर धनञ्जय! मौत से जैसे मनुष्य डरते हैं वैसे ही इस दण्डधार से हमें डर था। बड़े भाग्य की बात है, जो तुमने इस शत्रु को मार डाला। हे शत्रुदमन! इन बली शत्रुओं ने हम सबको पीड़ित कर रक्खा था। यदि तुम आकर इस भय से हमारी रक्षा न करते, तो जिस तरह इन शत्रुओं के मरने से हम प्रसन्न हो रहे हैं उसी तरह हमारे शत्रु हमारी मृत्यु देखकर प्रसन्न होते।

महाराज! महावीर प्रसन्नचित्त अर्जुन अपने पक्ष के लोगों के मुँह से ये प्रशंसापूर्ण वचन सुनकर, और यथोचित रूप से उन सबका सत्कार करके, फिर संशप्तकगण का संहार २५ करने के लिए उनकी ओर चल दिये।

उन्नीसवाँ अध्याय

संशप्तक-संहार

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह महावीर दण्ड और दण्डधार के मारे जाने पर वीर अर्जुन फिर, वक्र अतिवक्र गति से जानेवाले मङ्गल ग्रह की तरह, संशप्तक-सेना के सामने पहुँचे। कौरव पक्ष के हाथी, घोड़े, रथ और योद्धा लोग अर्जुन के बाणों से विचलित होकर, चक्कर खाकर गिरने, मरने और मलिन होने लगे। समर में अर्जुन ने भल्ल, क्षुर, अर्धचन्द्र और वत्स-

दन्त आदि अनेक प्रकार के बाण मारकर शत्रुओं के श्रेष्ठ वाहन, सारथी, ध्वजा, बाण, धनुष, खड्ग, हाथ में स्थित शस्त्र, बाहु और सिर आदि का, काट-काटकर, ढेर लगा दिया। बहुत से साँड़ जैसे एक गाय के लिए किसी एक साँड़ पर आक्रमण करें, वैसे ही शत्रुपक्ष के हज़ारों योद्धा अर्जुन पर आक्रमण करते हुए आगे बढ़े। त्रैलोक्य-विजय के समय इन्द्र से दैत्यों ने जैसे घोर युद्ध किया था, वैसे ही इस समय वे वीर योद्धा लोग अर्जुन से तुमुल संग्राम कर रहे थे। इसी समय उग्रायुध के पुत्र ने दन्दशूक (डस लेनेवाले काले) सर्प-सदृश प्राणघातक तीन बाण अर्जुन को मारे। उन बाणों के प्रहार से कुपित होकर अर्जुन ने तुरन्त उसका सिर काट डाला। वर्षा ऋतु में प्रबल आँधी से सञ्चालित मेघमण्डल जैसे हिमालय को ढक लेता है वैसे ही शत्रुदल के योद्धाओं ने विविध अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा से अर्जुन के रथ को पाट दिया। महावीर अर्जुन ने अपने अस्त्रबल से शत्रुओं के अस्त्र-शस्त्रों को व्यर्थ करके तीक्ष्ण बाणों से असंख्य वीरों को मार डाला। उन्होंने तीक्ष्ण बाण बरसाकर फुर्ती के साथ योद्धाओं के रथों के त्रिवेणु, घोड़े, सारथी, हाथ, तरकस, पहिये, आसन, रास, जोत, जुआ, रथ के नीचे की लकड़ी और सब बन्धन आदि अङ्ग-उपाङ्गों को काट-काटकर ढेर लगा दिया। इस तरह टूटे-फूटे हुए बहुमूल्य विशाल ११ रथ धनी लोगों के—आग, आँधी और जल से—नष्ट हुए महलों के खण्डहर से प्रतीत होते थे। वज्र के समान विकट बाणों से जिनके मर्मस्थल कट-फट गये थे, ऐसे बड़े-बड़े हाथी वज्र, वायु और आग से नष्ट हुए—पहाड़ों की चोटी पर के—मकानों की तरह पृथ्वी पर गिर रहे थे। महेन्द्र जैसे दानवों का संहार करें वैसे ही वज्र, अग्नि, विष आदि के समान शीघ्र प्राण हरनेवाले तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन ने असंख्य वैरियों को समर में मार गिराया। अर्जुन के बाणों की चोट खाकर सवारों सहित बहुत से घोड़े पृथ्वी पर गिर पड़े। उनकी जीभ और आँतें निकल आई थीं और ख़ून से तर होने के कारण उनका रूप भयानक हो रहा था। अर्जुन के नाराच लगने से शत्रुपक्ष के मनुष्य, हाथी और घोड़ें चक्कर खाकर लड़खड़ाकर गिरने, आर्त-नाद करने, और मरने लगे। बहुमूल्य कवच और आभूषण पहने, अनेक प्रकार के वस्त्रों और शस्त्रों से शोभित वीरगण रथ हाथी घोड़े आदि अपने वाहनों सहित अर्जुन के हाथ से मरकर पृथ्वी पर लोटने लगे। युद्ध में निर्भय, वीर-कर्म करनेवाले, पुण्यात्मा, श्रेष्ठ कुलों में उत्पन्न योद्धा लोग अपने श्रेष्ठ कर्मों से स्वर्ग को सिधारे। उनके शरीर पृथ्वी पर पड़े हुए थे।

महाराज! इसी बीच में आपके पक्ष के वीरगण, अनेक देशों के राजा लोग, अपने-अपने दलों को साथ लिये हुए चारों ओर से अर्जुन के रथ की ओर चले। वे सब क्रोध से विह्वल हो रहे थे। वे रथ, हाथी, घोड़े आदि वाहनों पर सवार थे। उनके साथ हज़ारों की संख्या में पैदल योद्धा भी थे। वे सब फुर्ती के साथ तरह-तरह के शस्त्र अर्जुन के रथ पर बरसाने लगे। वे अर्जुन को मार डालने का पूरा प्रयत्न कर रहे थे। फुर्तीले अर्जुन ने योद्धा रूप २०

संघों की की हुई उस शस्त्रवर्षा को तीक्ष्ण बाणों से बहुत शीघ्र नष्ट कर दिया। पैदल, हाथी, घोड़े, रथ आदि से पूर्ण वह सेना महासागर के तुल्य अपार थी। बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्र उसमें प्रवाह के समान जान पड़ते थे। अर्जुन अपने अस्त्र-शस्त्र के सेतु के द्वारा एकाएक उस सागर के पार जाना चाहते थे। यह देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! तुम इन साधारण शत्रुओं के साथ खेलकर क्यों वृथा समय नष्ट कर रहे हो? इन संशप्तकों को शीघ्र मारकर फिर कर्ण को मारने का उद्योग करो। राजन्! महावीर अर्जुन, श्रीकृष्ण का कहा मानकर, दानवदलन इन्द्र की तरह बल-वीर्य दिखाकर बचे हुए संशप्तकों को अस्त्र-शस्त्रों से शीघ्रता के साथ मारने लगे। किसी को नहीं देख पड़ता था कि अर्जुन कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते और कब छोड़ते हैं। श्रीकृष्ण भी अर्जुन की फुर्ती देखकर बहुत विस्मित हुए। जैसे हंसों के झुण्ड सरोवर में प्रवेश करते हैं, वैसे ही अर्जुन के घोड़े शत्रुसेना में प्रवेश करने लगे।

इस तरह बहुत जन-संहार होने पर संग्रामभूमि को देख रहे श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! एक दुर्योधन के अपराध से यह भरतवंश का संहार और पृथ्वीतल के राजाओं का नाश हो रहा है। वह देखो, मरे हुए योद्धाओं के सुवर्ण से मढ़ी पीठवाले असंख्य धनुष, तरकस और अलङ्कार इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। सुवर्णपुङ्ख-युक्त, और सन्नतपर्व बाण, तेल से ३० धोये और केंचुल छोड़े हुए नाग के समान चमक रहे नाराच बाण, तोमर, सुवर्णदण्ड-युक्त छत्र, सोने की पीठवाली ढालें, सुवर्ण-शोभित प्रास, सुवर्ण-मण्डित शक्तियाँ, सोने की पट्टियों से बँधी हुई गदाएँ, ऋष्टियाँ, पट्टिश, सुवर्णदण्ड से अलग हो गये परश्वध, परिघ, भिन्दिपाल, भुशुण्डी, कुणप, लौहकुन्त, भारी मूसल आदि तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र हाथों में लिये ये जय चाहनेवाले वीर योद्धा रणभूमि में मरे पड़े हैं, किन्तु देखने में जीवित से जान पड़ते हैं। हज़ारों ऐसे योद्धा मरे पड़े हैं, जिनके अङ्ग गदा-प्रहार से चूर्ण हो गये हैं, मुशल-प्रहार से मस्तक फट गये हैं, ऊपर से हाथी, घोड़े, रथ आदि के निकलने के कारण शरीर छिन्न-भिन्न हो गये हैं। मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीर बाण, शक्ति, ऋष्टि, तोमर, निस्त्रिंश, पट्टिश, प्रास, नखर, लगुड़ आदि शस्त्रों से खण्ड-खण्ड होकर रुधिर से तर हो रहे हैं। हे शत्रुनाशन! मरे हुए वीरों के शरीरों से सारी युद्धभूमि पटी पड़ी है। वीरों के कटे हुए, चन्दन-चर्चित, अङ्गद केयूर आदि आभूषणों और तलत्राणों से शोभित विशाल बाहु चारों ओर पड़े हैं, जिनसे रणभूमि की अपूर्व शोभा हो रही है। लोगों के अङ्गुलित्राण-युक्त अलंकृत हाथों के अग्रभाग, हाथी की सूँड़ के समान कटी ४० हुई जाँघें, चूड़ामणि और कुण्डलों से शोभित सिर सब तरफ़ ढेर हो रहे हैं। सुवर्ण किंकिणी-युक्त बड़े-बड़े श्रेष्ठ रथ टूटे-फूटे पड़े हैं। देखो, घायल घोड़े ख़ून से नहाये पड़े हैं। रथ के नीचे के काष्ठ, तरकस, पताका, विविध ध्वजा, योद्धाओं के सफ़ेद महाशङ्ख, प्रकीर्णक, मरे पड़े हुए पर्वताकार हाथी, विचित्र वैजयन्ती (झण्डे), मरे हुए हाथियों के सवार योद्धा, हाथियों के हौदे,

उन पर के बहुमूल्य अनेक कम्बल, हाथियों के गले के घण्टे, विचित्र आसन, घोड़ों की पीठ पर की ज़ीनें, वैडूर्य मणि की डण्डोवाले पृथ्वी पर पड़े अंकुश, घोड़ों के सिर पर की कलँगियाँ, रत्नों से शोभित सुवर्णजाल और कवच, सवारों की ध्वजाओं के अग्रभाग में बिंधे हुए सुवर्ण-शोभित विचित्र कम्बल, विचित्र मणियों से चित्रित और सुवर्ण से मण्डित घोड़ों की पीठ पर के बहुमूल्य ऊनी आसन और काठी आदि सामान युद्धभूमि में सर्वत्र पड़ा हुआ है। राजाओं की चूड़ामणियाँ, सुवर्ण की विचित्र मालाएँ, छत्र, चामर-व्यजन आदि इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। वीरों के सुन्दर कुण्डलों से शोभित और चन्द्र तथा नक्षत्रों के समान कान्तिसम्पन्न, अलंकृत, दाढ़ी-मूछोंवाले सिर युद्धभूमि में पटे पड़े हैं। उनसे बहनेवाले रक्त से रणभूमि में कीच ही कीच दिखाई पड़ती है। देखो, जो जीव अभी मरे नहीं हैं, जीते हैं, वे भी घायल होकर आर्तनाद कर रहे हैं। वीरों के कटे हुए सिरों से यह रणभूमि खिले हुए कमल और कुमुद के फूलों से परिपूर्ण सरोवर अथवा शरद ऋतु में चन्द्र-नक्षत्र-युक्त आकाश-मण्डल के समान जान पड़ती है। हे अर्जुन! इस महा- ५० युद्ध में जो काम तुमने किया है वह तुम्हारे ही योग्य है। ऐसा युद्ध या तो इन्द्र कर सकते हैं और या तुम कर सकते हो। तीसरा पुरुष ऐसा अद्भुत कर्म नहीं कर सकता।

राजन्! महात्मा कृष्णचन्द्र इस तरह अर्जुन को युद्धभूमि दिखलाते हुए जा रहे थे। इसी समय उन्हें दुर्योधन की सेना में घोर कोलाहल, शङ्ख दुन्दुभि भेरी पणव आदि बाजों का शब्द और इधर-उधर दौड़ रहे रथों हाथियों घोड़ों और मनुष्यों का घोर नाद सुन पड़ा। वायु के वेग से जानेवाले घोड़ों को बढ़ाकर श्रीकृष्ण ने उस सेना के भीतर प्रवेश किया। जाकर देखा कि महाबली पाण्ड्यराज ने आपकी सेना को पीड़ित कर रक्खा है। पाण्ड्यराज का अद्भुत पराक्रम देखकर श्रीकृष्ण को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। यमराज जैसे प्राणियों का संहार करते हैं, वैसे ही श्रेष्ठ धनुर्द्धर पाण्ड्य-राज अनेक प्रकार के बाणों से हज़ारों शत्रुओं का संहार कर रहे थे। वे हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को, बाणों से टुकड़े-टुकड़े करके, पृथ्वी पर गिरा रहे थे। इन्द्र जैसे असुरों का नाश करते हैं वैसे पाण्ड्यराज वीर शत्रुओं के अस्त्र-शस्त्रों को अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करके उन्हें मार रहे थे। ५८

बीसवाँ अध्याय

पाण्ड्यराज का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! तुम पहले ही लोक-प्रसिद्ध पाण्ड्यदेश के राजा मलयध्वज का नाम ले चुके हो, किन्तु उनके युद्ध और पराक्रम का वर्णन नहीं किया। अब तुम उनके पराक्रम, शिक्षा, प्रभाव, वीर्य, बल के प्रमाण और दर्प आदि का विस्तार से वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! आप जिन धनुर्विद्या के पारगामी भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, अर्जुन और कृष्णचन्द्र, इन सात वीरों को श्रेष्ठ योद्धा और धनुर्द्धर मानते हैं, उन

सातों महारथियों को वीरश्रेष्ठ मलयध्वज अपने से बढ़कर नहीं मानते थे और सदा उनसे लाग-डाँट रखते थे। वे किसी राजा को बल-वीर्य और अस्त्रज्ञान में अपने समान नहीं समझते थे। अगर कोई उन्हें द्रोण और भीष्म के समान कहता था, तो वे इस बात को सह नहीं सकते थे, अर्थात् अपने को द्रोण और भीष्म से बढ़कर समझते थे और कृष्णचन्द्र और अर्जुन से अपने को किसी बात में कम नहीं जानते थे। वही राजाओं में श्रेष्ठ और सब योद्धाओं के शिरोमणि पाण्ड्यराज, पाशपाणि यमराज की तरह, कर्ण की सेना का संहार कर रहे थे। हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों से परिपूर्ण कर्ण की अपार सेना पाण्ड्यराज के प्रहार से पीड़ित होकर कुँभार के चाक की तरह चारों ओर भागने और जान बचाने लगी। शत्रुदमन पाण्ड्यराज बाणों से घोड़े, सारथी, ध्वजा, रथी आदि सहित रथों के टुकड़े वैसे ही करने लगे, जैसे प्रबल आँधी बादलों को टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा देती है। सवारों सहित बड़े-बड़े हाथी, मलयध्वज के भयङ्कर बाणों के प्रहार से ध्वजा पताका शस्त्र आदि से हीन होकर, चरणरक्षक सिपाहियों सहित, वज्रपात से फटे हुए पहाड़ों की तरह, पृथ्वी पर गिरने और मरने लगे। महावीर पाण्ड्यराज ने तीक्ष्ण बाणों से शक्ति प्रास तरकस आदि धारण किये हुए, रणविशारद, घोड़ों पर सवार, बलवीर्यशाली पुलिन्द,
१० खश, बाह्लीक, निषाद, अन्ध्रक, कुन्तल, दाक्षिणात्य और भोजवंशी योद्धाओं के शस्त्र और कवच काट डाले और उनमें से अधिकांश को मार डाला।

इसी समय निर्भय अश्वत्थामा ने निडर पाण्ड्यराज को बाणों से चतुरङ्गिणी सेना का संहार करते देखकर उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। निःशङ्क अश्वत्थामा ने निःशङ्क होकर लड़ रहे मलयध्वज से मुसकाकर मधुर स्वर में कहा—राजन्, हे कमललोचन! आपके शस्त्र और वाहन श्रेष्ठ हैं, आपका बल और पौरुष प्रसिद्ध है और शरीर भी वज्र के समान दृढ़ है। आप विशाल भुजाओं की कड़ी मुट्ठी से भारी धनुष को चढ़ाते हुए महामेघ के समान जान पड़ते हैं। शत्रुओं के ऊपर आप बड़े वेग से बाण बरसा रहे हैं। मुझे इस समय यहाँ अपने सिवा और कोई ऐसा योद्धा नहीं देख पड़ता, जो आप से युद्ध कर सके। आप अत्यधिक बलवाले सिंह की तरह निर्भय होकर वन में रहनेवाले मृगों के समान इन असंख्य रथों, घोड़ों, पैदलों और हाथियों को अकेले ही मार-मारकर गिरा रहे हैं। वर्षा ऋतु के अन्त में सूर्यनारायण जैसे अपनी किरणों से पृथ्वीमण्डल को तपाते हैं, वैसे ही आप रथ के महाशब्द से पृथ्वी और आकाश को परिपूर्ण करते हुए सर्प-सदृश बाणों से कौरव-सेना को पीड़ित कर रहे हैं। शिव से त्र्यम्बकासुर ने जैसे घोर युद्ध किया था वैसे ही आप मुझ अकेले से युद्ध कीजिए, इन अनेकों का नाश करना व्यर्थ है।

ये वचन सुनकर श्रेष्ठ वीर मलयध्वज 'तथास्तु' कहकर अश्वत्थामा के सामने आये। पाण्ड्य-
२० राज ने एक विकट कर्णिक बाण उनको मारा। अश्वत्थामा ने भी अग्निशिखा के तुल्य मर्मभेदी

उग्र अनेक बाण मलयध्वज के मर्मस्थलों में मारे। इस तरह बाणों से शत्रुओं को पीड़ित करके अश्वत्थामा ने और नव कङ्कपत्रयुक्त नाराच बाण लेकर उन्हें दसवीं गति से छोड़ा*। पाण्ड्य-राज ने नव बाणों से अश्वत्थामा के बाणों को काट डाला और फिर चार बाणों से उनके रथ के चारों घोड़ों को भी मार गिराया। इस तरह अश्वत्थामा के बाणों को व्यर्थ करके मलय-ध्वज ने उनके धनुष की दृढ़ डोरी को भी काट डाला। तब सूर्य के समान तेजस्वी और शत्रुदलदलन अश्वत्थामा ने दिव्य धनुप पर डोरी चढ़ाई। इसी बीच में अनुचरों ने उनके रथ में और श्रेष्ठ घोड़े लाकर लगा दिये। अब अश्वत्थामा एक साथ हज़ारों बाण बरसाने लगे। आकाश भर में और सब दिशाओं में अश्वत्थामा के बाण छा गये। उन-के बाणों को, अक्षय जानकर भी, पुरुषश्रेष्ठ मलयध्वज छिन्न-भिन्न करने लगे। इस तरह अश्वत्थामा के छोड़े हुए बाणों को व्यर्थ करके वीर मलय-ध्वज ने उनके रथ के पहियों की रक्षा करनेवालों को अपने तीक्ष्ण बाणों से मार गिराया।
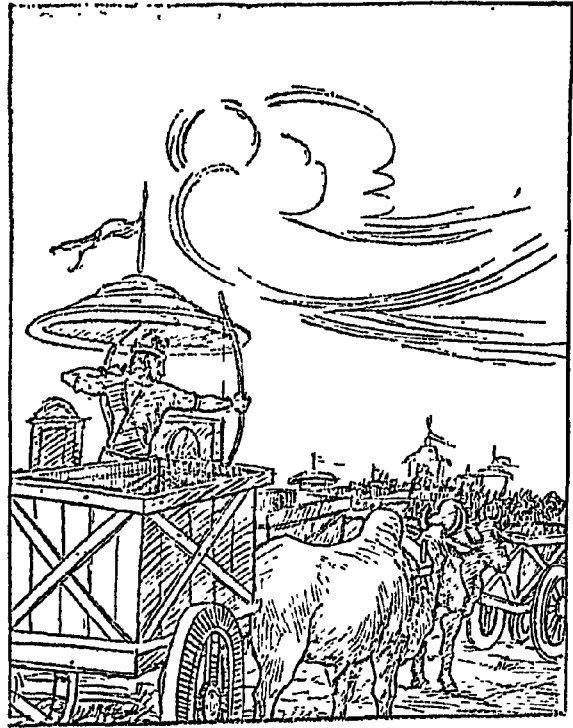
महातेजस्वी अश्वत्थामा अपने शत्रु की यह फुर्ती न सह सके। उनका धनुप मण्डलाकार गति से घूमने लगा। मेघ जैसे जल बरसाते हैं वैसे ही अश्व-त्थामा भी बाणों की वर्षा करने लगे। आठ-आठ बैलों से खींचे जानेवाले, बाणों से भरे, आठ छकड़े अश्वत्थामा ने आधे पहर में ख़ाली कर डाले। कुपित काल के समान रौद्ररूप अश्वत्थामा को उस समय जिसने देखा, वही भयविह्वल और अचेत सा हो गया। मेघ जैसे वर्षा ऋतु में ३०

* बाणों की दस गतियाँ ये हैं—उन्मुखी, अभिमुखी, तिर्य्यक्, मन्द, गोमूत्रगति, ध्रुवगति, स्खलित-गति, यमकाक्रान्तगति, क्रुष्टगति और अतिक्रुष्टगति। पहली तीन गतियाँ सिर, हृदय और पार्श्वदेश में स्पर्श करती हैं। चौथी कुछ चमड़ी को छील देती है। पाँचवीं दाहनी और बाईं ओर से जाकर कवच को काट देती है। छठी लक्ष्यभेदिनी है। सातवीं लक्ष्य से च्युत होनेवाली है। आठवीं लक्ष्य को भेदकर बारम्बार निकलती है। नवीं लक्ष्यैकदेश बाहु आदि को भेदती है। दसवीं अतिक्रुष्ट गति से जानेवाला बाण सिर काटकर उसे बहुत दूर ले जाता है।

पर्वत-वृक्ष-सहित सम्पूर्ण पृथ्वी पर जल बरसाते हैं, वैसे ही अश्वत्थामा ने शत्रुसेना के ऊपर लगातार बाण बरसाये। मेघस्वरूप अश्वत्थामा की की हुई उस बाणवर्षा को अग्निस्वरूप मलयध्वज ने वायव्य अस्त्र से नष्ट कर दिया। उनको इस तरह सिंहनाद करते देखकर अश्वत्थामा कुपित हो उठे। उन्होंने मलयाचल के समान ऊँची और चन्दन-अगुरु आदि से पूजित मलयध्वज की ध्वजा काट डाली। फिर चारों घोड़े मार डाले, एक बाण से सारथी का सिर काट डाला, और मेघ के समान शब्द करनेवाले धनुष को अर्धचन्द्र बाण से काट डाला। इसके उपरान्त मलयध्वज के रथ को शीर्ण तिल-तिल करके पृथ्वी पर गिरा दिया। इस तरह अस्त्रों से सब अस्त्र व्यर्थ कर डाले और बाणों से सब शस्त्र भी काट डाले। उस समय अश्वत्थामा अपने शत्रु को सहज ही मार डाल सकते थे; किन्तु उन्होंने युद्ध करने की इच्छा से मलयध्वज को नहीं मारा।

इसी बीच में कर्ण ने हाथियों की सेना पर हमला करके पाण्डवों की सेना को तितर-बितर कर दिया। रथियों को रथ-हीन करके उन्होंने हाथियों और घोड़ों की ख़बर ली।

४०

इसी समय पाण्ड्यराज की सेना का एक सुसज्जित हाथी, जिसका सवार मारा जा चुका था, बड़े वेग से शब्द करता हुआ उसी ओर भागा आ रहा था। रथ-हीन और अश्वत्थामा के बाणों से पीड़ित मलयध्वज जल्दी से उस हाथी की ओर, हाथी की तरह, गरजते हुए चले। गजयुद्ध में निपुण मलयध्वज पर्वतशिखर-सदृश उस हाथी की पीठ पर फुर्ती के साथ ऐसे सवार हो गये, जैसे कोई सिंह पहाड़ की चोटी पर गरजता हुआ चढ़ जाय। बलपूर्वक अस्त्र चलाने के लिए उद्यत कुपित मलयध्वज ने गरजकर अंकुश के प्रहार से उस हाथी को कुपित किया और उसे आगे बढ़ाकर, सूर्य-किरण के समान चमकीला, एक तोमर अश्वत्थामा के ऊपर छोड़कर घोर सिंहनाद किया। "तुम मरे, तुम मरे" इस तरह बारम्बार कह रहे मलयध्वज के हाथ से छूटे हुए उस तोमर की चोट से अश्वत्थामा का मणि, हीरे, सुवर्ण, वस्त्र, माला, मोती आदि से अलंकृत, बहुमूल्य, सूर्य-चन्द्र-ग्रह-गण, अग्नि आदि के समान कान्ति-

वाला किरीट मुकुट कटकर पृथ्वी पर इस तरह गिर पड़ा, जिस तरह इन्द्र के वज्र-प्रहार से पर्वत का शिखर पृथ्वी पर गिर पड़े। तब महारथी अश्वत्थामा, लात की चोट खाये हुए महासर्प की तरह, कुपित हो उठे। उन्होंने यमदण्ड के समान भयानक और शत्रुओं के प्राण हरनेवाले चौदह बाण तरकस से निकाले। अश्वत्थामा ने पाँच बाणों से उस हाथी के चारों पैर और सूँड़ काट डाली, और तीन बाणों से मलयध्वज के दोनों हाथ और सिर काट डाला। फिर छः बाणों से मलयध्वज के छहों अनुचरों को मार। गिराया वे छहों वीर महारथी और छहों ऋतुओं के समान कान्तिशाली थे। पाण्ड्यराज मलयध्वज के चन्दन-चर्चित और सुवर्ण मणि मोती हीरे आदि के आभूषणों से अलंकृत दोनों हाथ, गरुड़ के मारे दो महासर्पों की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़े। मलयध्वज का वह पूर्णचन्द्र के समान मुखमण्डल सुन्दर नासिका और क्रोध से लाल विशाल नेत्रों से शोभित हो रहा था। पृथ्वी पर गिरने पर भी वह कुण्डल-शोभित सिर विशाखा नक्षत्र के दो तारों के बीच चन्द्रमा के समान बहुत ही सुन्दर जान पड़ रहा था। महाराज! रण-निपुण अश्वत्थामा ने पाँच बाणों से उस हाथी के शरीर के चौकोर छः टुकड़े कर डाले और तीन बाणों से मलयध्वज के शरीर के भी वैसे ही चार टुकड़े कर दिये। उन्होंने सवार सहित उस हाथी के दस टुकड़े इस तरह कर डाले, जिस तरह दशहविष्क इष्टि में पिष्टपिण्ड के दस भाग, दस देवताओं के लिए, किये जाते हैं। राजन्! पहले हाथी घोड़े मनुष्य आदि के टुकड़े-टुकड़े करके, राक्षसों को भोज। देकर, महाबली मलयध्वज इस तरह मृत्यु को प्राप्त हुए जिस तरह मसान की आग मृत शरीर रूप स्वधा को पाकर, जलाकर, फिर जल से शान्त हो जाती है। अच्छी तरह शस्त्र और शास्त्र की विद्या के ज्ञाता गुरुपुत्र को उस समय विजय पाते देखकर आपके पुत्र राजा दुर्योधन उनके पास सुहृद्गण सहित आये और उन्होंने परम प्रसन्नतापूर्वक अश्वत्थामा का सत्कार वैसे ही किया जैसे बलि-विजय के उपरान्त इन्द्र ने विष्णु की पूजा की थी। ५१

इक्कीसवाँ अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! इस तरह अश्वत्थामा ने जब महाबली पाण्ड्यराज को मार डाला और महाबली कर्ण ने अकेले ही युधिष्ठिर और उनकी सेना को मार भगाया तब विजय पानेवालों में श्रेष्ठ महाबली अर्जुन ने कुपित होकर क्या किया? अर्जुन पूर्ण रूप से धनुर्विद्या के जाननेवाले, बलवान् और सब श्रेष्ठ साधनों से युक्त हैं। सबसे बढ़कर बात तो यह है कि महात्मा शङ्कर ने उनको यह वरदान दिया है कि कोई प्राणी तुमको न जीत सकेगा। मुझे शत्रुनाशन अर्जुन से ही बड़ा खटका है। इसलिए तुम विस्तार के साथ कहो कि इसके उपरान्त युद्ध में अर्जुन ने क्या किया?

सञ्जय ने कहा कि महाराज! पाण्ड्यराज के मारे जाने पर श्रीकृष्ण ने अर्जुन का हित करने के लिए कहा—हे अर्जुन! हमारे महाराज युधिष्ठिर यहाँ कहीं नहीं देख पड़ते। अन्य पाण्डव भी कर्ण के आगे से भाग गये हैं। यदि तुम्हारे चारों भाई लौट आवें तो शत्रुदल मार भगाया जाय। यह देखो महारथी कर्ण ने, अश्वत्थामा की इच्छा के अनुसार, सृञ्जयों को मार गिराया है। उसने हाथियों, घोड़ों और रथों का भी सत्यानाश कर दिया।

महाराज! श्रीकृष्ण के वचन सुनकर और राजा युधिष्ठिर पर भारी सङ्कट आया जानकर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! घोड़ों को शीघ्र हाँककर उसी जगह ले चलो। श्रीकृष्ण ने, अर्जुन के कहने के अनुसार, युद्धभूमि में अद्वितीय वीर अर्जुन का रथ आगे बढ़ाया। उस समय फिर दोनों सेनाएँ भिड़ गईं और दारुण युद्ध होने लगा। दोनों ओर के वीर सिंहनाद करने लगे। भीमसेन को आगे करके पाण्डव-सेना ने आक्रमण किया और कर्ण को आगे करके हम लोग १० उनके आक्रमण को रोकने लगे। इस तरह कर्ण के साथ पाण्डवों का भयङ्कर संग्राम होने लगा। दोनों पक्ष के वीरगण एक दूसरे को मार डालने के लिए अनेक प्रकार के बाण, बेलन, तलवार, पट्टिश, तोमर, मूसल, भुशुण्डी, शक्ति, ऋष्टि, परशु, गदा, प्रास, कुन्त, भिन्दिपाल और अंकुश आदि ले-लेकर, धनुष की डोरी के शब्द, बाण चलाने के शब्द, तल-शब्द, रथों की घरघराहट और सिंहनाद से सब दिशाओं को, आकाश-मण्डल और पृथ्वी-मण्डल को प्रतिध्वनित करते हुए अपने शत्रुओं के सामने आये और उन पर आक्रमण करने लगे। वीर पुरुष धनुष-बाण-रथ आदि के शब्द और सिंहनाद से अत्यन्त प्रसन्न और उत्साहित होकर, विजय पाने की इच्छा से, अपने प्रतिद्वन्द्वी वीरों से घोर युद्ध करने लगे। धनुष की डोरी, तलत्र और धनुष का शब्द, हाथियों का चीत्कार, चल रहे शस्त्रों की झनझनाहट, पैदल सैनिकों का कोलाहल, घायल होकर गिर रहे लोगों का आर्तनाद और शूर-वीरों का सिंहनाद चारों ओर गूँज उठा। इन सब शब्दों को सुनकर अनेक सैनिक डर के मारे मलिन होकर गिरने लगे।

महावीर कर्ण ने उन गरज रहे और अस्त्र-शस्त्र बरसा रहे शत्रुओं में से अधिकांश को अपने बाणों की चोट से मार गिराया। कर्ण ने अपने बाणों से पाञ्चाल-सेना के बीस रथियों को घोड़े, सारथी और ध्वजा सहित नष्ट कर दिया। तब पाण्डवपक्ष के प्रधान और रणनिपुण सुशिक्षित वीर्यशाली अनेक योद्धाओं ने कुपित होकर चारों ओर से कर्ण को घेर लिया। उन वीरों के बाणों से आकाश परिपूर्ण हो गया। जल के पक्षी सारस आदि से परिपूर्ण सरोवर में जैसे कोई गजराज घुसकर कमलवन को विदलित करे, वैसे ही वीर कर्ण ने भी बाणों की वर्षा से शत्रु-सेना २० को नष्ट करना शुरू किया। वीर कर्ण शत्रु-सेना में घुसकर, उत्तम धनुष से विकट बाण बरसाकर, शत्रुओं के सिर काटने और पृथ्वी पर गिराने लगे। वीर योद्धा लोग यद्यपि सुदृढ़ कवच पहने हुए थे तथापि कर्ण के बाणों की चोट उनसे नहीं सही जाती थी। दूसरा

बाण मारने की नौबत ही नहीं आती थी, एक ही बाण लगने से उनके प्राण निकल जाते थे और वे गिर पड़ते थे। सवार जैसे घोड़े को कोड़ा मारता है वैसे ही कर्ण, प्रत्यञ्चा से छूटे हुए बाणों से, शत्रुओं के शरीरों पर प्रहार करते थे। उनके बाण इस वेग से जाते थे कि शत्रुओं के तलत्राण और कवच आदि को काटते हुए शरीर में घुस जाते थे। सिंह जैसे मृगों के झुण्ड को मारता है वैसे ही वीर कर्ण भी, जहाँ तक उनके बाण पहुँचते थे उस सीमा के भीतर आये हुए, पाण्डव पक्ष के सृञ्जय पाञ्चाल आदि वीरों को विमर्दित कर रहे थे।

तब धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, नकुल, सहदेव और सात्यकि, ये नव महारथी कर्ण के सामने आये। इस तरह कौरव और पाञ्चालगण सहित पाण्डव, विजय-लाभ के लिए, दारुण संग्राम करने लगे। प्रिय प्राणों का मोह छोड़कर योद्धा लोग परस्पर लड़ने और प्रहार करने लगे। कवच, शिरस्त्राण और आभूषणों से अलंकृत महाबली योद्धा लोग कालदण्ड के समान गदा, मूसल, बेलन आदि शस्त्रों को तानकर एक दूसरे पर झपट रहे थे। कोई सिंहनाद कर रहा था, कोई अपने शत्रु को ललकार रहा था और कोई उछलकर शत्रु पर प्रहार कर रहा था। एक दूसरे के प्रहार से घायल होकर योद्धा लोग पृथ्वी पर गिर रहे थे। किसी के मुँह से ख़ून बह रहा था, किसी के अङ्गों से ख़ून निकल रहा था। किसी का सिर चूर हो गया था, किसी की आँखें निकल आई थीं, किसी के हाथ का शस्त्र बेकाम होकर अलग गिर पड़ा था। बहुतों के मुख में चोट लगने से ख़ून निकल आया था और वह दाँतों में जम गया था; उनके मुख खिले हुए अनार के फल से जान पड़ते थे। बहुत से योद्धा, हाथों में शस्त्र लिये, मर जाने पर भी जीवित-से जान पड़ते थे। महाराज! उस महारण में योद्धा लोग परस्पर परश्वधों, पट्टिशों, तलवारों, शक्तियों, भिन्दिपालों, नखरों, प्रासों और तोमरों से एक दूसरे के शरीर को लकड़ी की तरह चीर रहे, काट रहे, छेद रहे, भोंक रहे, कतर रहे और मार रहे थे। परस्पर के प्रहार से मरकर, रुधिर से तर होकर, हज़ारों योद्धा पृथ्वी पर गिर रहे थे, जिन्हें देखने से प्रतीत होता था कि मानों कटे हुए लाल चन्दन के वृक्षों से उनका रस निकल रहा है। रथियों ने रथी योद्धाओं को, हाथियों ने हाथियों को, घोड़ों ने घोड़ों को और पैदलों ने पैदलों को हज़ारों की संख्या में मार-मारकर गिरा दिया। क्षुर, भल्ल और अर्धचन्द्र बाणों से कटी हुई ध्वजा, सिर, छत्र, हाथियों की सूँड़ें और मनुष्यों की भुजाएँ रणभूमि में गिर रही थीं। मनुष्य, हाथी और घोड़े मरकर तथा रथ टूट-फूटकर रणभूमि में गिर रहे थे। घोड़े के सवार शूर योद्धा लोग तलवार के वार से हाथियों की सूँड़ें काट डालते थे; वे हाथी मय ध्वजा और पताका के वज्रपात से फटे हुए पहाड़ों की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ते थे। पैदल सिपाही उछल-उछलकर हाथियों और रथों पर वार करते थे। रथ, हाथी आदि उनके प्रहार से टूटकर और मरकर पृथ्वी पर गिर रहे थे। पैदलों के प्रहार से मरे हुए घोड़ों के सवार और घुड़सवारों के वार से मरे हुए पैदल लोग युद्धभूमि में ३०

गिर रहे थे। मारे गये मनुष्यों के मुखमण्डल और शरीर मले गये कमल के फूलों और मुरझाई हुई मालाओं के समान दिखाई पड़ रहे थे। हाथी, घोड़े, मनुष्य आदि के परम रमणीय
४० दर्शनीय स्वरूप, भीगे कपड़ों की तरह, अत्यन्त मलिन और दुर्निरीक्ष्य हो उठे।

बाईसवाँ अध्याय

गजयुद्ध और संकुल-युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन्! तब दुर्योधन की आज्ञा पाकर प्रधान-प्रधान हाथियों के सवार योद्धा लोग कुपित होकर धृष्टद्युम्न को मार डालने के लिए, अपने-अपने हाथियों को बढ़ाकर, धृष्टद्युम्न की ओर बढ़े। गजयुद्ध में निपुण पूर्व और दक्षिण के देशों के योद्धा लोग, बरस रहे बादलों की तरह, आगे बढ़कर पाञ्चाल-सेना पर बाण, तोमर, नाराच आदि की वर्षा करने लगे। अङ्ग, वङ्ग, पुण्ड्र, मगध, ताम्रलिप्त, मेकल, कोशल, मद्र, दशार्ण, निषध और कलिङ्ग आदि देशों के योद्धाओं ने मिलकर पाञ्चाल-सेना के ऊपर आक्रमण किया। अँगूठों, घुटनों और अंकुशों के प्रहार से प्रेरित उन मस्त हाथियों को वेग से आते देखकर वीर धृष्टद्युम्न ने उनके ऊपर नाराच बाण बरसाना शुरू कर दिया। धृष्टद्युम्न ने फुर्ती के साथ उन पर्वताकार हाथियों में से हर एक को छः, आठ और दस तक बाण मारे। मेघों के द्वारा सूर्य के छिपाये जाने की तरह हाथियों की सेना के द्वारा धृष्टद्युम्न को घिरते देखकर पाण्डव और पाञ्चाल-गण, धनुष चढ़ाकर, सिंहनाद करते

हुए आगे बढ़े। उधर हाथियों पर सवार वीरगण हाथियों को धृष्टद्युम्न की ओर बढ़ा रहे थे, और इधर धनुष की डोरी बजा रहे, वीर-नृत्य कर रहे, तलध्वनि से रणभूमि को गुँजा रहे पराक्रमी नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पुत्र, सात्यकि, शिखण्डी, चेकितान और प्रभद्रकगण आदि वीर चारों ओर से उस गजसेना पर इस तरह लगातार बाण बरसा रहे थे, जिस तरह मेघों के

झुण्ड पहाड़ों पर जल बरसाते हैं। हाथियों को उनके म्लेच्छ सवारों ने अंकुश मार-मारकर कुपित किया और वे शत्रुओं के बाणों के प्रहार से भी अत्यन्त कुपित हो उठे। घोड़ों, मनुष्यों और रथों को सूँड़ों से उठाकर वे हाथी पृथ्वी पर पटकने, पैरों से रौंदने और दाँतों से चीरने-फाड़ने लगे। हाथियों के दाँतों के प्रहार से बहुत से वीर पुरुष गिरने और मरने लगे। ११

इसी समय सात्यकि ने अपने सामने उपस्थित वङ्ग देश के नरेश के गजराज को, मर्मस्थल में नाराच बाण मारकर, पृथ्वी पर गिरा दिया। वङ्गराज उस हाथी के ऊपर से कूदकर प्रहार से अपने को बचाने लगे, इसी बीच में सात्यकि ने फुर्ती के साथ उनकी छाती में नाराच बाण मारा। वे भी मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। पुण्ड्र देश के राजा का हाथी, चलते हुए पहाड़ के समान, वेग से आ रहा था। सहदेव ने उसको तीन नाराच बाण मारे। उनके प्रहार से उस हाथी के ध्वजा-पताका-कवच आदि कटकर गिर पड़े। सहदेव ने उसके महावत को और उसे भी मार डाला। इस तरह पुण्ड्रनरेश को नष्ट करके सहदेव अङ्गनरेश की ओर बढ़े। नकुल ने सहदेव को रोक लिया, और ख़ुद अङ्गनरेश के शरीर में यमदण्ड-सदृश तीन नाराच बाण मारकर उनके हाथी को भी सौ नाराच मारे। तब अङ्गराज ने अत्यन्त कुपित होकर सूर्य की किरणों के समान चमकीले आठ सौ तोमर नकुल के ऊपर चलाये। किन्तु उन्होंने फुर्ती के साथ एक-एक तोमर के तीन-तीन टुकड़े कर डाले और फिर एक अर्धचन्द्र बाण से अङ्गराज का सिर काट डाला। म्लेच्छ अङ्गराज अपने हाथी के साथ मरकर रणभूमि में गिर पड़ा। इस तरह गजयुद्ध में निपुण अङ्ग देश के राजकुमार के मारे जाने पर उस देश के सब गज-योद्धा अपने हाथियों को बढ़ाकर नकुल को मारने का उद्योग करने लगे। उन हाथियों के ऊपर पताकाएँ फहरा रही थीं और उनके शरीरों में सोने के कवच तथा ज़ंजीरें शोभायमान हो रही थीं। ऐसे प्रज्वलित पर्वताकार हाथियों से नकुल को कुचलवा डालने के लिए आगे बढ़ रहे मेकल, उत्कल, कलिङ्ग, निषध और ताम्रलिप्त आदि देशों के भी गजयोद्धा एकत्र होकर नकुल के ऊपर लगातार बाण तोमर आदि की वर्षा सी करने लगे। सूर्य को जिस तरह बादल ढक लें, उसी तरह उन शत्रुओं के द्वारा नकुल को घिरते देखकर पाण्डव, पाञ्चाल और सोमकगण कुपित होकर नकुल की सहायता और शत्रुओं का संहार करने को आगे बढ़े। महाराज! तब बाणों और तोमरों की वर्षा कर रहे रथ-योद्धाओं और गज-योद्धाओं में परस्पर घोर युद्ध होने लगा। रथी योद्धाओं के बाण-प्रहार से हाथियों के मस्तक, मर्मस्थल, नख और दाँत आदि अङ्ग-उपाङ्ग छिन्न-भिन्न होने लगे। रथी लोग सुवर्ण-भूषित नाराचों की चोट से हाथियों की सेना को पीड़ित और नष्ट करने लगे। महावीर सहदेव ने चौंसठ अत्यन्त तीक्ष्ण नाराच बाण मारकर उनमें से आठ बड़े-बड़े हाथियों को, मय उनके सवारों के, मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया। महावीर नकुल ने भी श्रेष्ठ धनुष को खींचकर नाराच बाणों से हाथियों और उनके सवारों को मारा और २०

नकुल के ये वचन सुनकर कर्ण ने हँसकर कहा—हे वीर! तुम्हारे ये वचन राजपुत्र के, और खासकर धनुर्द्धर योद्धा के, योग्य ही हैं। अच्छी बात है, प्रहार करो। हम भी तुम्हारे पौरुष को देख लें। हे शूर! किन्तु पहले काम करके फिर मुँह से कहना चाहिए। यही शूरों का नियम है। जो वीर और बलशाली हैं वे मुँह से बड़ी-बड़ी बातें न कहकर यथाशक्ति युद्ध करते हैं। ख़ैर, तुम अपनी शक्ति के अनुसार मुझसे युद्ध करो। मैं तुम्हारे प्राण तो नहीं लूँगा, किन्तु तुम्हारे इस दर्प को दूर अवश्य कर दूँगा।

अब महावीर कर्ण ने फुर्ती के साथ तिहत्तर बाण मारकर नकुल को पीड़ित किया। कर्ण के बाणों से घायल नकुल ने भी कुपित होकर, विषैले नाग के समान, अस्सी बाण कर्ण को मारे। उन्होंने सुवर्णपुङ्ख-युक्त बाणों से नकुल का धनुष काट डाला और उन्हें तीस बाण मारे। उन बाणों ने नकुल के कवच को तोड़कर उनके शरीर का रुधिर पी लिया (अर्थात् बहुत गहरे घुस गये), जैसे कि विषैले साँप पृथ्वी को फोड़कर जल पियें।

नकुल ने और एक सुवर्ण-मण्डित धनुष हाथ में लेकर सत्तर बाण कर्ण को और तीन बाण उनके सारथी को मारे। फिर कुपित होकर एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से कर्ण का धनुष भी काट डाला और हँसते-हँसते तीन सौ बाण कर्ण को और मारे। अन्य सब योद्धा और युद्ध देखने को आये हुए ऋषिगण और देवगण नकुल के बाणों से श्रेष्ठ महारथी कर्ण को पीड़ित देखकर बहुत ही विस्मित हुए। इसी बीच में महापराक्रमी कर्ण ने दूसरा धनुष लेकर नकुल के कन्धे में पाँच बाण मारे। विश्व को प्रकाशित करनेवाले सूर्यदेव जैसे अपनी किरणों से शोभित होते हैं, वैसे ही वीरवर नकुल कन्धे में लगे हुए कर्ण के बाणों से शोभायमान हुए। नकुल ने विचलित न होकर फुर्ती के साथ कर्ण को सात तीक्ष्ण बाण मारे और फिर उनके धनुष की कोटि काट डाली। तब महावीर कर्ण ने दूसरा सुदृढ़ श्रेष्ठ धनुष लेकर इतने बाण बरसाये कि उन असंख्य बाणों में महावीर नकुल छिप से गये। किन्तु उन्होंने शीघ्रता के साथ बाण बरसाकर कर्ण के सब बाणों को काट डाला। उस समय आकाशमार्ग में बाणों का जाल सा फैल गया। जैसे आकाश में चारों ओर जुगनू ही जुगनू छा जायँ वैसे ही चारों ओर बाण ही बाण देख पड़ने लगे। जिस तरह टीड़ीदल निकलने पर आकाश छिप सा जाता है उसी तरह बाणों से आकाश व्याप्त हो गया। वे पंक्तिबद्ध सुवर्णालङ्कृत बाण आकाश में होकर, क्रौञ्च पक्षियों के झुण्ड की तरह, पृथ्वी पर गिर रहे थे। बाणों से आकाश व्याप्त हो गया और सूर्य-बिम्ब अदृश्य सा हो गया। उस समय आकाशचारी कोई भी प्राणी आकाश से पृथ्वी पर नहीं उतर सकता था।

इस तरह बाणों से आकाशमार्ग के चारों ओर रुँध जाने पर महारथ ने बड़ा विकट रूप धारण किया। दोनों वीर उदय हुए प्रलयकाल के दो सूर्यों के समान देख पड़ रहे थे। कर्ण के धनुष से छूटे हुए बाणों से मारे जा रहे, अत्यन्त पीड़ित और वेदना से आर्त सोमकगण इधर-

इस तरह बाणों से आकाशमार्ग के चारों ओर रुँध जाने पर महारण ने बड़ा विकट रूप धारण किया।—२७६४
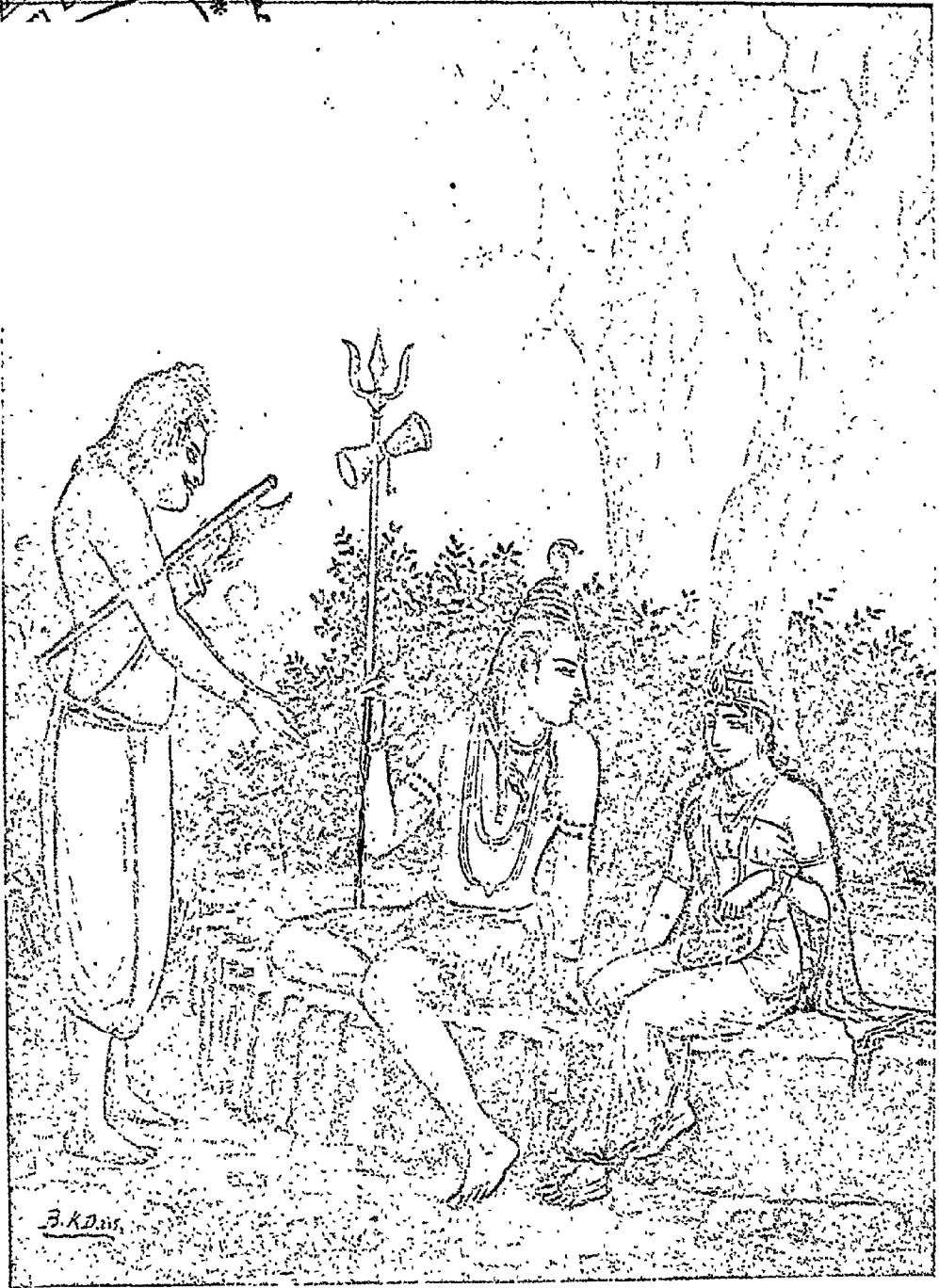
उन्होंने पार्वती के आगे बारम्बार परशुराम के गुणों का वर्णन करके कहा— × × परशुराम मेरे परम भक्त हैं।—पृ० २८००

उधर छिपने और मरने लगे। वैसे ही नकुल के बाणों से मारे जा रहे आपके योद्धा भी, हवा के झोंकों से छिन्न-भिन्न मेघों की तरह, भागने लगे। दोनों दलों के सैनिकगण उन महारथियों के दिव्य बाणों की चोट न सह सकने के कारण प्राण बचाने के लिए दूर जा खड़े हुए। जहाँ बाण नहीं पहुँचते थे उस जगह पर जाकर दोनों ओर के लोग उस महायुद्ध को देखने लगे। महाराज! कर्ण और नकुल के बाणों से सब लोग भाग गये। दोनों महारथी योद्धा, एक दूसरे को मार डालने के लिए, बाणवर्षा करके एक दूसरे को पीड़ित करने लगे। दोनों ही वीर उस महायुद्ध में अपने दिव्य अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करते और रण-कौशल दिखाते हुए एक दूसरे पर असंख्य बाण छोड़ रहे थे। कङ्क और मोर के पङ्खों से शोभित बाण नकुल के ३० धनुष से लगातार निकलकर कर्ण को आच्छादित कर रहे थे। वैसे ही कर्ण के धनुष से छूटे हुए अनगिनत बाण आकाश में छाये हुए थे और नकुल को आच्छादित कर रहे थे। बाणों के जाल में छिपे हुए वे दोनों वीर किसी को दिखाई नहीं देते थे, जिस तरह कि मेघों से ढके हुए सूर्य और चन्द्र को कोई नहीं देख पाता।

राजन्! तब महारथी कर्ण अत्यन्त कुपित हो उठे; उनका रूप बहुत ही भयानक हो गया। उन्होंने और भी फुर्ती के साथ इतने बाण छोड़े कि नकुल चारों ओर से उनसे ढक गये। मेघों से ढके हुए सूर्य की तरह कर्ण के बाणों से आच्छादित हो जाने पर भी वीरवर नकुल व्यथित नहीं हुए। तब कर्ण ने हँसकर फिर नकुल के ऊपर सैकड़ों-हज़ारों बाण बरसाये। कर्ण के धनुष से लगातार निकल रहे बाणों से रणभूमि में घनघटा की सी छाया हो गई। इसी बीच में महारथी कर्ण ने नकुल का धनुष काट डाला, सारथी को मारकर गिरा दिया, चार तीक्ष्ण बाणों से चारों घोड़ों को मार डाला और उनके रथ को पैने बाणों से काट डाला। इसी तरह नकुल के रथ की पताका, चक्ररक्षक योद्धा आदि को नष्ट करके गदा, खड्ग, सौ चन्द्र-बिम्बों से शोभित ढाल और अन्य सब शस्त्रों को भी काट डाला। रथ, घोड़े, कवच आदि के न रहने पर वीरश्रेष्ठ नकुल एक लोहे का बेलन हाथ ४० में लेकर प्रहार करने को उद्यत हुए। रथ से उतरकर बेलन हाथ में लिये प्रहार करने के लिए खड़े नकुल को देखकर महारथी कर्ण ने तीक्ष्ण बाणों से उस बेलन को भी काट डाला। इस तरह शस्त्र-हीन नकुल को कर्ण ने कई बाण मारे, किन्तु अत्यन्त पीड़ित नहीं किया और न मार डालने का ही यत्न किया। अस्त्र-विद्या में निपुण महाबली कर्ण के बाणों की चोट से व्याकुल होकर नकुल एकाएक प्राण बचाने के लिए भाग खड़े हुए। कर्ण हँसते हुए नकुल के पीछे दौड़े और डोरी समेत धनुष उनके गले में डालकर उन्हें रोक लिया। उस समय गले में धनुष की डोरी पड़ने से नकुल की वैसी ही शोभा हुई, जैसी शोभा 'मण्डल' पड़ने पर चन्द्रमा की होती है। बारम्बार हँस रहे कर्ण ने कहा—नकुल! उस समय तुम

व्यर्थ ही डींग हाँक रहे थे! मैं इस समय तुमको वारम्वार पीड़ित और परास्त कर चुका हूँ। अब क्या तुम फिर वैसी ही बातें कहोगे? हे पाण्डव! तुम लज्जित न होना। मैं तुमको समझाता हूँ कि अब अपने से प्रबल कौरवों से लड़ने का साहस न करना, इसी में तुम्हारा कल्याण है। जो लोग तुम्हारे समान हैं, उनसे जाकर युद्ध करो। अथवा घर को लौट जाओ, या जहाँ पर कृष्ण और अर्जुन हैं, वहाँ पर चले जाओ।

५० महाराज! धर्मात्मा कर्ण ने इतना कहकर नकुल को छोड़ दिया। कर्ण चाहते तो अपने हस्तगत नकुल को मार डालते; किन्तु उन्होंने कुन्ती से जो प्रतिज्ञा की थी, उसका ख़याल करके नहीं मारा। परास्त और सूतपुत्र की कृपा से छुटकारा पाये हुए नकुल बहुत ही लज्जित हुए और युधिष्ठिर के पास चले गये। कर्ण के पराक्रम से पीड़ित नकुल युधिष्ठिर के रथ पर सवार हो गये। घड़े में बन्द कर दिये गये साँप की तरह वे वारम्वार लम्बी साँसें छोड़ रहे थे। दुःख और लज्जा के मारे उनका बुरा हाल हो गया। महापराक्रमी कर्ण भी नकुल को हराकर फुर्ती के साथ, ऊँची पताका और सफ़ेद घोड़ों से शोभित, श्रेष्ठ रथ हाँककर पाञ्चाल-सेना का संहार करने के लिए उधर चल दिये। उस समय सेनापति कर्ण को पाञ्चाल-सेना पर आक्रमण करने को जाते देखकर पाण्डवों की सेना में घोर कोलाहल होने लगा। महावीर कर्ण चक्राकार गति से रथ को घुमाते हुए अपने बाणों से पाञ्चालसेना को विमर्दित करने लगे। पाण्डव पक्ष के रथ, हाथी आदि सब दावानल में जल रहे जीवों की तरह विकल होकर भागने लगे। रथों की बड़ी दुर्दशा हो रही थी। रथों के पहिये, जुए, धुरे आदि अङ्ग टूट-फूट गये। किसी रथ की ध्वजा और पताका कट गई, किसी रथ के घोड़े मर गये और किसी रथ का सारथी मर गया। कुछ छिन्न-भिन्न रथों को सारथी घबराकर भगाये लिये जा रहे थे। हाथियों के मस्तक फट गये, वे रक्त से नहा गये। किसी की सूँड़ और किसी की पूँछ कट गई। वे हवा से छिन्न-भिन्न होकर मेघखण्डों की तरह पृथ्वी पर गिर

६० रहे थे। कर्ण के बाणों और तोमरों के प्रहार से भयविह्वल और भ्रान्त होकर कुछ हाथी, आग में गिरनेवाले पतङ्गों की तरह, कर्ण की ही ओर दौड़कर जाने लगे। कुछ हाथियों के शरीर से रक्त बह रहा था और वे पीड़ित होकर आर्तनाद कर रहे थे। जैसे पहाड़ों से झरने बह रहे हों, वैसी ही शोभा उन हाथियों की हो रही थी। कर्ण ने बाण मारकर बढ़िया घोड़ों का भी बुरा हाल कर दिया। उनके सुवर्णमय कवच, चाँदी सोने और काँसे के गहने, साज, चामर, आसन, लगाम आदि सब कट गये थे, सवार भी मारे जा चुके थे और वे घबराकर इधर-उधर भाग रहे थे। महाराज! हमने देखा कि समर की शोभा बढ़ानेवाले वीर घोड़ों के सवार—कंचुक और पगड़ी पहने—हाथों में प्रास, खड्ग, ऋष्टि आदि शस्त्र लिये कर्ण पर आक्रमण कर रहे थे और वीर कर्ण उनके शस्त्रों को काटकर उनका संहार कर रहे थे।

कुछ तो मारे गये थे, कुछ मारे जा रहे थे और कुछ काँप रहे थे। रथी योद्धाओं के मारे जाने पर, वेगगामी घोड़ों से युक्त और सुवर्ण-मण्डित बड़े-बड़े रथ अक्ष, कूबर, चक्र, ध्वजा, पताका, ईषा, दण्ड, बन्धन आदि से हीन होकर इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे थे। बहुत से रथी योद्धा रथ न रहने पर पैदल ही दौड़कर अपनी जान बचाना चाहते थे, और कर्ण के तीक्ष्ण बाण उनका पीछा नहीं छोड़ते थे। बहुत से वीर शस्त्रहीन होकर और बहुत से योद्धा शस्त्र हाथों में लिये मर-मरकर गिर रहे थे। तारकाजालों से सुशोभित, सुन्दर भारी घण्टों से अलंकृत, रङ्ग-बिरङ्गी विचित्र पताकाओं से भूषित बड़े-बड़े हाथी कर्ण के बाणप्रहार की वेदना से विह्वल होकर इधर-उधर भाग रहे थे। कर्ण के धनुष से छूटे हुए बाणों से कट-कटकर वीरों के सिर, हाथ, जङ्घा आदि अङ्गों का चारों ओर ढेर लग रहा था। राजन्! इस प्रकार कर्ण पर तीक्ष्ण बाणों और शस्त्रों से प्रहार करनेवाले असंख्य योद्धागण कर्ण के बाणों से मरते और घबराकर भागते दिखाई पड़ते थे। ७१

उस समय का दृश्य बड़ा भयानक था और योद्धाओं की बड़ी दुर्दशा हो रही थी। सृञ्जयगण यद्यपि कर्ण के बाणों से मारे जा रहे थे फिर भी, पतङ्ग जैसे आग की ओर दौड़ते हैं वैसे ही, कर्ण की ओर जा रहे थे। प्रलयकाल की प्रचण्ड आग के समान सेनाओं को सर्वत्र भस्म कर रहे महारथी कर्ण के सामने से पाञ्चाल सैनिक दूर भागने लगे। पाञ्चालसेना के जो महारथी मरने से बचे थे और प्राण लेकर भागे जा रहे थे उनको वीर कर्ण पीछे से बाण मार-मारकर मारने लगे। कवच और ध्वजाएँ जिनकी कट गई हैं, ऐसे भाग रहे वीरों का तेजस्वी कर्ण ने पीछा किया। दोपहर के समय सूर्यदेव जैसे सब प्राणियों को पीड़ित करते हैं, वैसे ही कर्ण भी शत्रु-सेना को विकट बाणों की वर्षा से पीड़ा पहुँचाने लगे। ७८

पचीसवाँ अध्याय

युयुत्सु से उलूक का और शकुनि से सुतसोम का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उधर पाण्डवों की ओर से आपके पुत्र वीर युयुत्सु कौरव-सेना के वीरों को मारकर भगा रहे थे, इसी समय महावीर उलूक "ठहर जाओ, खड़े रहो" कहते हुए उनकी ओर दौड़े। तब युयुत्सु ने वज्रतुल्य तीक्ष्ण बाण उलूक को मारा। महावीर उलूक ने भी क्रोध से विह्वल होकर तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला और उनको एक विकट कर्णिक बाण मारा। युयुत्सु ने वह कटा हुआ धनुष फेंककर दूसरा दृढ़ धनुष हाथ में लिया और कोप से आँखें लाल करके साठ बाण उलूक को और तीन बाण उनके

सारथी को मारे। पराक्रमी युयुत्सु फिर तीक्ष्ण बाण मारकर उलूक को पीड़ित करने लगे। उन्होंने क्रुद्ध होकर सुवर्ण-भूषित बीस बाणों से युयुत्सु को घायल करके उनकी सुवर्ण-मण्डित ध्वजा काट डाली जो उनके सामने ही गिर पड़ी। युयुत्सु अपनी ध्वजा का कटना न सह सके। उन्होंने क्रोध से अधीर होकर उलूक की छाती में पाँच बाण मारे। तब उलूक ने, तेल से साफ़ किये गये, एक भल्ल बाण से युयुत्सु के सारथी का सिर काट डाला। आकाश से गिरे हुए विचित्र तारा की तरह युयुत्सु के सारथी का सिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। उलूक ने युयुत्सु के चारों घोड़ों को भी मार डाला और उनको पाँच बाण मारे। राजन्! आपके पुत्र युयुत्सु बाणों की चोट से अत्यन्त व्याकुल होकर, अन्य रथ पर जाने के लिए, सामने से हट गये। उनको जीतकर उलूक भी पाञ्चालों तथा सृञ्जयों को तीक्ष्ण बाणों से मारते हुए फुर्ती से दूसरी ओर चले। महाराज! इधर आपके पुत्र श्रुतकर्मा ने दम भर में शतानीक के रथ, घोड़े, सारथी आदि को नष्ट कर

१०

दिया। महारथी शतानीक ने उस बिना घोड़ों के रथ पर से ही कुपित होकर श्रुतकर्मा के ऊपर एक गदा फेंकी। वह गदा घोड़े, सारथी सहित रथ को चूर्ण करके मानों पृथ्वी को फाड़ती हुई गिर पड़ी। कुरुवंश की कीर्ति को बढ़ानेवाले वे दोनों वीर रथ-हीन होकर, एक दूसरे को देखते हुए, संग्राम से हट गये। श्रुतकर्मा विविंशु के रथ पर और शतानीक प्रतिविन्ध्य के रथ पर चले गये।

हे भरतकुल-तिलक! वीरवर शकुनि अत्यन्त कुपित होकर सुतसोम को बहुत ही पैने बाण मारने लगे। किन्तु जल का वेग जैसे पहाड़ को नहीं डिगा सकता, वैसे ही वे उनको तिल भर विचलित नहीं कर सके। महाराज! सुतसोम ने अपने पिता के परम शत्रु शकुनि को देखकर उन पर लगातार हज़ारों बाण छोड़े। तब अस्त्र-शस्त्र चलाने में चतुर, विचित्र युद्ध करनेवाले, शकुनि ने अपने बाणों से सुतसोम के सब बाण काट डाले और उनको

तीन बाण मारकर उनकी ध्वजा, सारथी और घोड़ों को तिल-तिल करके काट डाला। यह देखकर उस जगह के सब लोग चिल्लाने लगे। २१

हे आर्य! घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि के यों नष्ट होने पर महाबली सुतसोम ने दूसरा धनुष हाथ में लिया। वे उस बेकाम रथ पर से उतर पड़े और पृथ्वी पर से ही शकुनि के ऊपर असंख्य सुवर्ण-भूषित तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उन बाणों से शकुनि का रथ ढक गया। टीड़ी-दल की तरह आ रहे उन असंख्य बाणों के द्वारा आच्छादित होकर भी शकुनि व्यथित नहीं हुए। उन्होंने अनेक बाणों से उन असंख्य बाणों को काट डाला। वहाँ पर स्थित योद्धागण और स्वर्ग में स्थित सिद्धगण पैदल सुतसोम को रथ पर सवार शकुनि से युद्ध करते देखकर सन्तुष्ट और विस्मित हुए। शकुनि ने तीक्ष्ण भल्ल बाणों से सुतसोम के धनुष और तर्कसों को काट डाला। रथ-हीन सुतसोम का धनुष भी जब कट गया तब वे वैदूर्य और

कमल के समान आभा तथा हाथीदाँत की मूठ से सुशोभित तीक्ष्ण खड्ग को तानकर सिंहनाद करने लगे। नीले आकाश के समान चमकीला और सुतसोम के द्वारा घुमाया जा रहा वह खड्ग शकुनि को कालदण्ड के समान जान पड़ने लगा। खड्गयुद्ध की शिक्षा पाये हुए वीर सुतसोम वह खड्ग हाथ में लेकर हज़ारों तरह के पैंतरे और चौदह तरह के हाथ दिखाने लगे। भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सृत, सम्पात, समुदीर्ण आदि पैंतरे दिखाते हुए सुतसोम रणभूमि में विचरने लगे। शकुनि ने उस समय अनेकों विषैले सर्प-सदृश बाण सुतसोम के ऊपर चलाये; किन्तु सुतसोम ने उस खड्ग से ही उन बाणों को काट डाला। गरुड़ के समान वेगशाली बली सुतसोम ने फुर्ती और सफ़ाई दिखाकर जब उस खड्ग से ही सब बाण काट डाले तब शत्रुदलन शकुनि ने क्रुद्ध होकर और भी कई बाण ताक-ताककर मारे; परन्तु उन्हें भी सुतसोम ने काट डाला। अब शकुनि ने पैंतरे दिखा रहे सुतसोम के हाथ की उस तलवार को एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से काट डाला। ३०

उस महा खड्ग का आधा हिस्सा कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा, और मूठ की ओर का आधा हिस्सा सुतसोम के हाथ में रह गया।

वह खड्ग कट जाने पर महावीर सुतसोम ने एकाएक छः पग उछलकर वह अधकटा खड्ग शकुनि के ऊपर खींचकर फेंका। वह खड्ग शकुनि के सुवर्ण-हीरे आदि से अलंकृत धनुष को काटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अब महावीर सुतसोम फुर्ती के साथ श्रुतकीर्ति के रथ पर चले गये। शकुनि भी दूसरा दृढ़ धनुष लेकर शत्रुओं को ४० पीड़ित करते हुए पाण्डव-सेना की ओर दौड़े। महाराज! उस समय महावीर शकुनि बेखटके संग्रामभूमि में शत्रु-सेना का संहार करते हुए विचरने लगे। पाण्डवों की सेना में खलबली मच गई। योद्धा लोग घोर कोलाहल करने लगे। इन्द्र जैसे दानवों की सेना का संहार करें ४३ वैसे ही वीर शकुनि पाण्डवों की सेना को मारने और भगाने लगे।

छब्बीसवाँ अध्याय

कृपाचार्य और कृतवर्मा से धृष्टद्युम्न और शिखण्डी का संग्राम

सञ्जय कहते हैं—राजन्! वन में शरभ* जैसे सिंह पर आक्रमण करता है वैसे ही कृपाचार्य ने धृष्टद्युम्न का सामना किया। महाबली कृपाचार्य ने इस तरह धृष्टद्युम्न को रोका कि वे अपने स्थान से एक पग भी आगे न बढ़ सके। वहाँ पर जो लोग मौजूद थे वे धृष्टद्युम्न के रथ के सामने कृपाचार्य के रथ को देखकर बहुत डरे और सोचने लगे कि धृष्टद्युम्न अब जीते नहीं बच सकते। उस समय रथों, हाथियों और घोड़ों पर स्थित पाण्डव दल के योद्धा लोग उदास से होकर कहने लगे—जान पड़ता है, ये दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता तेजस्वी उदारबुद्धि वीरवर कृपाचार्य अवश्य ही द्रोणाचार्य के मारे जाने से अत्यन्त क्रुद्ध

* यह आठ पैरोंवाला जीव सिंह का शत्रु होता है। इसका आधा धड़ पशु का सा और आधा पक्षी का सा होता है, जिससे यह उड़ता भी है।

हो उठे हैं। धृष्टद्युम्न इनसे युद्ध कर रहे हैं; ईश्वर ही धृष्टद्युम्न की रक्षा करे। इस सम्पूर्ण सेना के लिए यह महाभय का कारण उपस्थित है; ईश्वर ही इस सेना को इस विपत्ति से बचावे। युद्ध करने के लिए उपस्थित हम लोगों को कहीं ये आचार्य नष्ट न कर दें। इस समय इनका यह काल का सा भयङ्कर रूप देखकर हमें तो जान पड़ता है कि ये अवश्य महात्मा द्रोणाचार्य के समान ही पराक्रम दिखावेंगे और शत्रु-सेना का संहार करेंगे। ये आचार्य फुर्तीले, युद्ध में सदा विजय पानेवाले, अस्त्रबल-सम्पन्न, वीर्यशाली और विशेषकर इस समय क्रुद्ध हो रहे हैं। उधर धृष्टद्युम्न महायुद्ध में इनके आगे विमुख से होते दिखाई पड़ रहे हैं। महाराज! कृपाचार्य और धृष्टद्युम्न के युद्ध के समय आपके पक्ष के और पाण्डवों के दल के तरह-तरह के वचन सुनाई पड़ने लगे।

क्रोध से गहरी साँस लेकर कृपाचार्य ने, निश्चेष्ट होकर खड़े हुए, धृष्टद्युम्न के मर्मस्थलों में फिर अनेक बाण मारना शुरू किया। महारथी धृष्टद्युम्न कृपाचार्य के बाणों से पीड़ित १० हो घबराहट के मारे अपना कुछ कर्तव्य न निश्चित कर सके। यह हाल देखकर सारथी ने उनसे कहा—हे राजकुमार! ख़ैर तो है? मैंने युद्ध में कभी आपको इस तरह शिथिल और व्याकुल होते नहीं देखा। मामला क्या है? महात्मा कृपाचार्य ने मर्मस्थलों को ताककर आपके ऊपर जितने बाण छोड़े, वे सब दैवयोग से आपको नहीं लगे, यही कुशल हुई। समुद्र से नदी के वेग की तरह मैं आपके रथ को रणभूमि से शीघ्र हटाये लिये चलता हूँ। मैं समझता हूँ कि आपके पराक्रम को नष्ट करनेवाले ये ब्राह्मण अवध्य हैं।

राजन्! सारथी के ये वचन सुनकर वीर धृष्टद्युम्न धीरे से कहने लगे—हे सूत! इस समय मैं घबरा गया हूँ, शरीर से पसीना निकल रहा है, अङ्ग काँप रहे हैं, रोएँ खड़े हो आये हैं; मेरी विचित्र दशा हो रही है। तुम इन ब्राह्मण से बचते हुए धीरे-धीरे मेरे रथ को अर्जुन के पास ले चलो। मुझे जान पड़ता है कि इस समय अर्जुन अथवा भीमसेन के पास जाने से ही मेरा कल्याण होगा। महाराज! सारथी ने धृष्टद्युम्न के वचन सुनकर, जहाँ पर भीमसेन आपकी

सेना के साथ युद्ध कर रहे थे वहाँ रथ ले जाने के लिए, तेज़ी से घोड़ों को हाँक दिया। धृष्टद्युम्न के रथ को अपने आगे से हटते देखकर वीर कृपाचार्य भी सैकड़ों तीक्ष्ण बाण
२० बरसाते हुए पीछे-पीछे चले। शत्रुदमन कृपाचार्य बारम्बार शङ्ख बजाकर, सिंहनाद करके, नमुचि दानव को इन्द्र की तरह, धृष्टद्युम्न को डरवाने लगे।

भीष्म पितामह को मारनेवाले दुर्द्धर्ष शिखण्डी उधर कौरव-सेना का संहार कर रहे थे। वीरवर कृतवर्मा बारम्बार हँसकर उनको रोकने की चेष्टा करने लगे। वीर शिखण्डी ने कृत-वर्मा के कन्धे में पाँच तीक्ष्ण भल्ल बाण मारे। कृतवर्मा ने भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर पहले साठ बाणों से शिखण्डी को पीड़ित किया, और फिर एक बाण से उनका दृढ़ धनुष काट डाला। शिखण्डी क्रोध से विह्वल हो उठे। वे और धनुष लेकर 'ठहर तो जाओ—ठहर तो जाओ'' कह-कर कृतवर्मा पर आक्रमण करने को उद्यत हुए। उन्होंने सुवर्णपुङ्खयुक्त अत्यन्त तीक्ष्ण नव्वे बाण कृतवर्मा को मारे; परन्तु वे बाण कृतवर्मा के कवच से टकराकर गिर पड़े। शिखण्डी ने तब एक क्षुरप्र बाण से कृतवर्मा का धनुष काट डाला। जिसके सींग टूट जायँ उस बैल की तरह, धनुष कट जाने पर, अपना बल और पौरुष प्रकट करने में असमर्थ कृतवर्मा की छाती और भुजाओं में शिखण्डी ने फिर अत्यन्त तीक्ष्ण अस्सी बाण मारे। महावीर कृतवर्मा का शरीर इस तरह शिखण्डी के बाणों से कट-फट गया। तब वे क्रोध से अत्यन्त अधीर हो उठे। घड़े के मुँह से जैसे पानी की धारा निकले, वैसे ही कृतवर्मा के शरीर से लगातार रक्त बहने लगा। रक्त से नहा जाने के कारण वे गेरू से रँगे हुए पहाड़ की तरह शोभायमान हुए। इसके उपरान्त और
३० एक श्रेष्ठ धनुष लेकर कृतवर्मा ने शिखण्डी के कन्धों में कई बाण मारे। कन्धों में लगे हुए बाणों से वीर शिखण्डी शाखा-प्रशाखा-युक्त किसी बड़े वृक्ष के समान जान पड़ने लगे। दोनों वीर पर-स्पर के प्रहार से घायल और ख़ून से तर होकर परस्पर के सींगों की चोट से घायल दो बड़े साँड़ों के समान शोभायमान हुए। महाराज! इस प्रकार एक दूसरे को मार डालने का यत्न कर रहे वे दोनों महारथी वीर हज़ारों मण्डलों और गतियों से रथों को चलाते हुए रणभूमि में विचर रहे थे।

श्रेष्ठ योद्धा कृतवर्मा ने सुवर्णपुङ्ख-युक्त सुतीक्ष्ण सत्तर बाण शिखण्डी को मारे और उसके बाद फ़ुर्ती के साथ जीवन को हरनेवाला एक विकट बाण उनकी छाती को ताककर छोड़ा। वह बाण लगते ही शिखण्डी को मूर्च्छा आ गई। वे ध्वजा का डण्डा पकड़कर आसन पर बैठ गये। सारथी ने जब देखा कि कृतवर्मा के बाण की गहरी चोट खाकर शिखण्डी मूर्च्छित हो गये हैं और दर्द के मारे बारम्बार साँस छोड़ रहे हैं, तब वह फ़ुर्ती के साथ रथ को रणभूमि से हटा ले गया। शूर शिखण्डी के यों परास्त होने पर कृतवर्मा के बाणों से मारी जा रही
३८ पाण्डवों की सेना चारों ओर भागने लगी।

सत्ताईसवाँ अध्याय

अर्जुन का संशप्तक-सेना को मार भगाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! दूसरी ओर, हवा जैसे रुई के ढेर को इधर-उधर उड़ा दे वैसे ही, वीरश्रेष्ठ अर्जुन भी आपकी सेना को मार-मारकर चारों ओर भगाने लगे। कौरव, शिवि, त्रिगर्त, शाल्व, नारायणी सेना और अन्य अनेक देशों के राजाओं की सेनाएँ अर्जुन को रोकने के लिए चारों ओर से चलीं। जलराशि जैसे समुद्र की ओर जाती है वैसे ही ऊपर कही गई सेनाएँ और सत्यसेन, चित्रसेन, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चन्द्रदेव, मित्रवर्मा आदि भाइयों सहित त्रिगर्तराज भी अर्जुन की ओर चले। त्रिगर्तराज के साथ उनके पुत्र भी थे, जो कि महाधनुर्द्धर और सब तरह के शस्त्रों के युद्ध में निपुण थे। ये लोग चारों ओर से अर्जुन के ऊपर असंख्य बाण बरसाने लगे। गरुड़ को देखते ही जैसे साँप बिल में घुस जाते हैं वैसे ही सैकड़ों-हज़ारों योद्धा अर्जुन के सामने आते ही उनके अस्त्रबल से नष्ट होने लगे। अर्जुन के बाणों से मारे जाने पर भी वे सब सेनाएँ उन्हीं की ओर बढ़ी जा रही थीं, जैसे पतिङ्गों के झुण्ड के झुण्ड अपने साथियों को जलते देखकर भी आग में कूदते हैं। महाराज! वीरश्रेष्ठ सत्यसेन ने अर्जुन को तीन बाण मारे। इसी तरह मित्रदेव ने तिरसठ, चन्द्रदेव ने सात, मित्रवर्मा ने तिहत्तर, सौश्रुति ने सात, शत्रुञ्जय ने बीस और सुशर्मा ने नव बाण अर्जुन को मारे। महारथी अर्जुन इस तरह अनेक शत्रुओं के अनेक बाणों के प्रहार से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

राजन्! अर्जुन ने भी सौश्रुति को सात, सत्यसेन को तीन, शत्रुञ्जय को बीस, चन्द्रदेव को आठ, मित्रदेव को सौ, श्रुतसेन को तीन, मित्रवर्मा को नव और सुशर्मा को आठ बाण मारे। फिर शिला पर घिसकर तीक्ष्ण किये गये बाणों से शत्रुञ्जय को मारकर अर्जुन ने सौश्रुति के शिरस्त्राण सहित सिर को धड़ से काटकर अलग कर दिया। अब १०

फुर्ती के साथ बाणों से चन्द्रदेव को भी मार डाला। अन्य महारथियों को, जो कि बाण-प्रहार कर रहे थे, अर्जुन ने पाँच-पाँच बाण मारे। इसी बीच में सत्यसेन ने अत्यन्त कुपित होकर श्रीकृष्ण को बहुत तीक्ष्ण एक तोमर मारा और घोर सिंहनाद किया। वह सोने की डण्डीवाला लोहे का तीक्ष्ण तोमर महात्मा श्रीकृष्ण की बाईं भुजा को चीरता हुआ पृथ्वी में गिर पड़ा। उसकी चोट से पीड़ित श्रीकृष्ण के हाथ से घोड़ों की रास छूट गई और कोड़ा भी गिर पड़ा।

महात्मा श्रीकृष्ण को घायल देखकर अर्जुन क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा—हे महाबाहो! मेरे घोड़ों को सत्यसेन के रथ के पास ले चलिए; मैं इसे अभी तीक्ष्ण बाणों से यमपुर भेजना चाहता हूँ।

महाराज! श्रीकृष्ण ने घोड़ों की रास और चाबुक उठाकर अर्जुन के रथ को सत्यसेन के २० रथ के पास पहुँचा दिया। महारथी अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से सत्यसेन को पीड़ित करके सब सेना के सामने उसके कुण्डल-मण्डित भारी सिर को भल्ल बाणों से काटकर गिरा दिया। अब उन्होंने मित्रवर्मा को कई तीक्ष्ण बाण मारे और एक वत्सदन्त बाण से उसके सारथी को मार गिराया। इसके बाद महाबली वीर अर्जुन अत्यन्त कुपित होकर सैकड़ों बाणों से हज़ारों संशप्तकों को मार-मारकर गिराने लगे। चाँदी के पुङ्ख से शोभित एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उन्होंने मित्रदेव का सिर काट डाला और कुपित होकर सुशर्मा के कन्धे में कई बाण मारे। तब सब संशप्तकगण कुपित हो उठे। वे अर्जुन को चारों ओर से घेरकर उन पर अनेक शस्त्र बरसाने लगे। उनके सिंहनाद से दसों दिशाएँ गूँज उठीं। इन्द्र के समान पराक्रमी महारथी अर्जुन ने शत्रुओं के आक्रमण से पीड़ित होकर, उनके नाश के लिए, इन्द्रास्त्र का प्रयोग किया। महाराज! उस दिव्य अस्त्र के प्रभाव से अर्जुन के धनुष से हज़ारों बाण आप ही आप प्रकट होने लगे। उन बाणों से असंख्य ध्वजा, पताका, धनुष, रथ, तरकस, युग, जुए, पहिये, ३० जोत, घोड़ों की रासें, कूबर, वरूथ, पृषत्क, घोड़े, प्रास, ऋष्टि, गदा, बेलन, शक्ति, तोमर, पट्टिश, शतघ्नी, और उनके चक्र, बाहु, ऊरु, जङ्घा, कण्ठसूत्र, केयूर, हार, निष्क, कवच, छत्र, चमर, सिर, मुकुट आदि आभूषण और वाहन कट-कटकर रणभूमि में गिरने लगे। सुन्दर नेत्रों और कुण्डलों आदि से अलंकृत, पूर्ण चन्द्रमा के समान, वीरों के कटे हुए सिर, आकाश में तारागण के समान, रणभूमि में दिखाई पड़ने लगे। मरे हुए वीरों के चन्दन-चर्चित, सुन्दर माला और वस्त्रों से शोभित, शरीर पृथ्वी पर पड़े हुए थे। मारे गये महाबली राजपुत्रों और क्षत्रियों के शरीरों से परिपूर्ण रणभूमि भयङ्कर दिखाई पड़ने लगी। फटे हुए पहाड़ों के समान, गिरे पड़े हुए हाथियों और घोड़ों के कारण वह भूमि अत्यन्त दुर्गम हो उठी। वीर अर्जुन ने भल्ल बाणों से शत्रुपक्ष के इतने हाथी, घोड़े और मनुष्य मार-मारकर गिरा दिये थे कि उनके रथ को आगे बढ़ने के लिए भी राह नहीं मिलती थी। कौरव दल के समान ही अर्जुन के रथ

के पहिये वहाँ रक्त की कीच में धँस-धँस जाते थे। अर्जुन के, मन और हवा के समान वेग से चलनेवाले, श्रेष्ठ घोड़े बड़ा ज़ोर लगाकर रथ के फँसे हुए पहियों को खींचते और आगे बढ़ते थे। ४० धनुर्द्धर अर्जुन के बाणों से नष्ट हो रही हमारी वह सेना रण छोड़कर भाग खड़ी हुई; कोई भी वीर अर्जुन के सामने ठहरने का साहस नहीं कर सका। महाराज! इस तरह बहुत से संशप्तकगणों को जीतकर वीरवर अर्जुन बिना धुएँ की प्रज्वलित आग के समान शोभा को प्राप्त हुए। ४२

अट्ठाईसवाँ अध्याय

युधिष्ठिर और दुर्योधन का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! युद्धभूमि में असंख्य बाण बरसा रहे राजा युधिष्ठिर से लड़ने के लिए स्वयं राजा दुर्योधन आगे बढ़े और निडर होकर उन्हें रोकने लगे। आपके महारथी पुत्र दुर्योधन को एकाएक आक्रमण करने के लिए आते देखकर धर्मराज ने उनको कई बाण मारे और "ठहर-ठहर" कहकर सिंहनाद किया। दुर्योधन ने भी युधिष्ठिर को तीक्ष्ण नव बाण मारकर एक भल्ल बाण से उनके सारथी को पीड़ित किया। राजन्! तब महारथी युधिष्ठिर ने सुवर्णपुङ्खयुक्त तेरह बाण दुर्योधन के ऊपर छोड़े। उनमें चार बाणों से दुर्योधन के चारों घोड़े मार डाले, पाँचवें बाण से सारथी का सिर काट डाला, छठे बाण से ध्वजा और सातवें से धनुष काट डाला, आठवें से दुर्योधन के हाथ का खड्ग काटकर शेष पाँच बाणों से दुर्योधन को अत्यन्त पीड़ित किया। महाराज! इस प्रकार सङ्कट में पड़े हुए आपके पुत्र दुर्योधन उस बिना घोड़ों के रथ से कूदकर नीचे खड़े हो गये। राजा को इस तरह सङ्कट में देखकर कर्ण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि कौरव दल के वीरगण उनकी रक्षा और सहायता करने के लिए अकस्मात् वहाँ पर आ गये। इधर पाण्डव लोग भी युधिष्ठिर को चारों ओर से घेरकर, उनकी रक्षा करते हुए, शत्रुओं पर आक्रमण करने को तैयार हुए। इस प्रकार दोनों ओर के योद्धा जमा हो गये और घोर युद्ध होने लगा। दोनों ओर हज़ारों तुरही और नगाड़े आदि बाजे बजने लगे। १०

महाराज! जहाँ पर पाञ्चालगण और कौरव दल के लोग लड़ने के लिए एकत्र हुए वहाँ पर वीर लोग किलकारियाँ मारने लगे। मनुष्य मनुष्यों से, हाथी हाथियों से, रथी रथियों से और घोड़ों के सवार घुड़सवारों से भिड़ गये। वाहनों पर सवार योद्धा और पैदल सैनिक भिड़कर घोर युद्ध करने लगे। वीरों का परस्पर द्वन्द्व-युद्ध देखने ही योग्य था। उस समय होनेवाले श्रेष्ठ और तरह-तरह के शस्त्रों के द्वन्द्व-युद्ध ऐसे थे कि मनुष्य उनकी कल्पना भी नहीं कर सकता। बड़े वेगशाली और एक दूसरे को मार डालने की इच्छा रखनेवाले वे वीरगण ख़ूबसूरती और फुर्ती के साथ विचित्र युद्ध करने लगे। योद्धा लोग युद्धनीति के अनुसार परस्पर सामने से प्रहार कर रहे थे। घड़ी दो घड़ी तक तो मन्द गति से युद्ध हुआ, किन्तु उसके

बाद सब लोग उन्मत्त से हो उठे और मर्यादा छोड़कर घमासान युद्ध करने लगे। रथ पर सवार कोई योद्धा हाथी और उसके सवार को तीक्ष्ण बाणों से चीर करके मार डालता था। बड़े-बड़े हाथी जहाँ-तहाँ घोड़ों पर आक्रमण करके उग्र-भाव से उन्हें चीरते-फाड़ते और मारते थे। बढ़िया घोड़ों पर सवार वीर लोग ताल ठोंकते और आक्रमण करते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। दौड़ रहे और भाग रहे बड़े-बड़े हाथियों पर घोड़ों के सवार आसपास से और २० पीछे से प्रहार कर रहे थे। बहुत से मतवाले हाथी घोड़ों को भगाकर उन पर दाँतों से चोट करते थे और जो गिर पड़ते थे उन्हें पैरों से रौंद डालते थे। महाबली अन्य हाथी कुपित होकर सवार सहित घोड़ों को दाँतों के प्रहार से मारते, गिराते और फेंक देते थे। पैदल सिपाही भी हाथियों के मर्मस्थलों में प्रहार करते थे, जिससे पीड़ित होकर वे चिल्लाते हुए इधर-उधर भाग रहे थे। महायुद्ध में प्रहार से पीड़ित पैदल सैनिक अपने शस्त्रों को छोड़-छाड़कर भाग खड़े हुए। उन्हें भागते देखकर दूसरे दल के हाथी शीघ्रता के साथ घेरने लगे। अपनी विजय देखकर बड़े-बड़े हाथियों के सवार योद्धा लोग अपने हाथियों को झुकाकर शत्रुदल के

भागते हुए पैदलों को पकड़वाने, फड़वाने और रौंदवाने लगे। भगोड़े पैदलों के विचित्र गहनों और शस्त्रों को विपक्षी वीर उठा लेते थे। यह देखकर महाबली पैदलों के झुण्ड भी खड़े हो गये और हाथियों के सवारों को घेरकर उन पर बड़े वेग से आक्रमण करने लगे। बहुत से सधे हुए हाथी शत्रुओं को सूँड़ से पकड़कर ऊपर उछाल देते थे और जब वे नीचे गिरते थे तब उन्हें दाँतों पर रोककर छेदकर मार डालते थे। कुछ महागज, सेना के भीतर घुसकर, दाँतों के प्रहार से ही शत्रुओं के प्राण ले लेते थे। कुछ घायल लोगों को हाथियों ने आगे पाकर पङ्खे की तरह बार-म्बार घुमाकर (उछालकर) ही मार डाला। महाराज! हाथियों की सेना के अग्रवर्ती अनेक वीरों के शरीर अत्यन्त छिन्न-भिन्न ३० हो गये और उनके प्राण निकल गये। पैदलों और घुड़सवारों ने भी हाथियों को—उनके दाँतों

की सन्धियों, मस्तकों और दन्तवेष्टनों में—प्रास, तोमर और शक्ति के उग्र प्रहारों से पीड़ित और नष्ट कर दिया। कोई-कोई हाथी, अपने पास खड़े हुए, रथी वीरों के दारुण प्रहार से पीड़ित और घुड़सवारों के प्रहार से छिन्न-भिन्न होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। घुड़सवार योद्धा लोग तोमर मारकर, ढाल धारण किये हुए, पैदलों को पृथ्वी पर गिराकर घोड़ों की टापों से रौंदने लगे। हाथियों के झुण्ड क्रुद्ध होकर किसी-किसी रथी के रथ को मय सामान के सूँड़ से पकड़कर एकाएक उलट देते और तोड़-फोड़ डालते थे। उस महाभयानक रण में बड़े-बड़े बली हाथी नाराच बाणों के प्रहार से मर-मरकर, वज्र से फटे हुए पहाड़ों के शिखरों के समान, पृथ्वी पर गिर रहे थे। योद्धा लोग परस्पर भिड़कर एक दूसरे को घूँसे मारने, केश पकड़कर पछाड़ने और मार डालने में लगे हुए थे। कोई-कोई दोनों हाथों से विपक्षी को पृथ्वी पर पटककर, छाती पर पैर रखकर, उसका सिर काट रहे थे। किसी-किसी ने गिर रहे शत्रु का सिर खड्ग से काट डाला। कोई-कोई अधमरे शत्रु की देह में शस्त्र भोंक रहे थे।

इसके बाद योद्धा लोग बेतरह मुष्टियुद्ध और उग्र बाहुयुद्ध करने तथा केश खींचने लगे। कहीं-कहीं ऐसा हुआ था कि एक दूसरे से युद्ध कर रहा था, इसी बीच में तीसरे ने उसका सिर काट डाला। महाराज! योद्धा लोग इस तरह भिड़कर जब घोर संग्राम करने लगे तब ४० युद्ध में मारे गये बड़े-बड़े शूर-वीरों के हज़ारों कबन्ध जहाँ-तहाँ उठने और लड़ने लगे। वीरों के ख़ून से तर शस्त्र और कवच लाल रङ्ग में रँगे कपड़ों की तरह जान पड़ने लगे। बढ़ी हुई गङ्गा के से शब्द से जगत् को व्याप्त करता हुआ घोर युद्ध उस समय हो रहा था। हज़ारों तरह के असंख्य शस्त्र चल रहे थे। उस युद्ध में अपने या पराये की कोई पहचान नहीं रह गई थी। बाणों से घायल राजा लोग, विजय पाने के लिए उन्मत्त से होकर, युद्ध कर रहे थे। जो सामने पड़ता था उसी पर वार करते थे। महाराज! ऐसी हलचल मच गई कि लोग अपने ही दल के लोगों को मार डालते थे। दोनों दलों के वीर उस तुमुल युद्ध में सामने आये हुए अपने और पराये दोनों को, समान रूप से, मार काट रहे थे। दम भर में असंख्य टूटे हुए रथों, मरे हुए हाथी-घोड़ों और मनुष्यों की लाशों के ढेर चारों ओर लग गये। किसी ओर जाने या चलने की राह नहीं रही। चारों ओर रक्त के प्रवाह बह चले। एक ओर कर्ण पाञ्चालों की सेना को मार रहे थे और दूसरी ओर अर्जुन त्रिगर्तों (संशप्तकों) को मार रहे थे। भीमसेन भी कौरवसेना को और विशेष रूप से गजसेना को नष्ट कर रहे थे। महाराज! महायश चाहनेवाले कौरवों और पाण्डवों ने दिन के तीसरे पहर इस तरह घमासान युद्ध करके घोर जनसंहार कर डाला। ४९

उनतीसवाँ अध्याय

युधिष्ठिर से दुर्योधन का परास्त होना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मैंने तुम्हारे मुँह से बहुत सी घोर दुःखदायिनी घटनाओं और कई पुत्रों की मृत्यु के समाचार सुने हैं। हे सूत! मुझे बख़ूबी जान पड़ता है कि कौरव नहीं बच सकते। मेरे महारथी पुत्र दुर्योधन को धर्म-पुत्र युधिष्ठिर ने जब रथहीन कर दिया तब फिर क्या हुआ? दुर्योधन ने युधिष्ठिर से और युधिष्ठिर ने दुर्योधन से फिर कैसा युद्ध किया? तीसरे पहर के समय कैसा लोम-हर्षण संग्राम हुआ? यह वृत्तान्त कहो। तुम वर्णन करने में बड़े निपुण हो।

सञ्जय ने कहा कि राजन्! दोनों ओर की सेनाएँ जब दल बनाकर भिड़ गई और वीर योद्धा लोग परस्पर मरने और मारने लगे तब वीर राजा दुर्योधन दूसरे रथ पर बैठकर, कुपित विषैले नाग की तरह, धर्मराज को क्रोधभरी दृष्टि से देखकर अपने सारथी से कहने लगे—हे सूत! जहाँ पर राजा युधिष्ठिर कवच और छत्र धारण किये विराजमान हैं, वहीं पर तुम शीघ्र मेरा रथ ले चलो। सारथी ने राजा दुर्योधन की आज्ञा से उनका रथ युधिष्ठिर के रथ के पास पहुँचा दिया। उधर धर्मराज ने भी मस्त हाथी की तरह बेखटके अपने सारथी को दुर्योधन के पास रथ ले चलने की आज्ञा दी। अब राजा युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों आमने-सामने होकर, भारी धनुष लेकर, एक दूसरे पर बाण बरसाने लगे।

११

हे आर्य! राजा दुर्योधन ने एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से युधिष्ठिर का धनुष काट डाला। उस अपमान को युधिष्ठिर नहीं सह सके। उनको क्रोध चढ़ आया। लाल आँखें करके, दूसरा धनुष लेकर, उन्होंने भी दुर्योधन के धनुष और ध्वजा को काट डाला। राजन्! आपके पुत्र ने दूसरा धनुष लेकर युधिष्ठिर के ऊपर विषैले बाण बरसाना शुरू कर दिया। कुपित दो सिंहों के समान, परस्पर जय पाने का यत्न कर रहे, दोनों राजा शस्त्रों की वर्षा करने लगे। दोनों महारथी,

साँड़ों की तरह, गरजकर एक दूसरे पर प्रहार करने का मौक़ा देखते और प्रहार करते हुए विचर रहे थे। कानों तक तानकर छोड़े गये बाणों के लगने से दोनों ही घायल हो गये थे, जगह-जगह से रक्त निकल रहा था। ऐसा जान पड़ता था, जैसे दो फूले हुए ढाक के पेड़ खड़े हों। दोनों ही बारम्बार सिंहनाद करते, ताल ठोंकते और धनुष की डोरी बजाते थे। शङ्ख बजाकर दोनों महारथी परस्पर प्रहार कर रहे थे।

राजा युधिष्ठिर ने क्रोध के वश होकर, वज्र के समान वेग से जानेवाले, दुःसह तीन बाण दुर्योधन की छाती में मारे। उन्होंने भी सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण पाँच बाण युधिष्ठिर को मारकर उनके ऊपर एक छुरे के समान तेज़ लोहे की शक्ति फेंकी। उस शक्ति को बड़ी उल्का के समान वेग से आते देखकर युधिष्ठिर ने तुरन्त तीन तीक्ष्ण बाणों से काट डाला और साथ ही दुर्योधन को पाँच बाण मारे। सुवर्ण की डण्डी से शोभित वह शक्ति अग्निपुञ्ज और उल्का के समान घोर शब्द करती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। अपनी शक्ति को व्यर्थ होते देखकर दुर्योधन ने नव भल्ल बाण युधिष्ठिर को मारे। पराक्रमी शत्रुदमन युधिष्ठिर इस तरह बली शत्रु के बाणों से अत्यन्त घायल होने पर क्रोधित हो उठे। उन्होंने एक बड़ा विकट बाण धनुष पर चढ़ाकर दुर्योधन को ताककर मारा। उसकी चोट से राजा दुर्योधन बेहोश हो गये। वह बाण उन्हें घायल करके पृथ्वी में घुस गया। दम भर में सचेत होकर, इस झगड़े को समाप्त करने के विचार से, कुपित दुर्योधन ने भारी गदा उठाई और वेग से युधिष्ठिर पर प्रहार करना चाहा। दण्डपाणि यमराज की तरह दुर्योधन को गदा ताने देखकर धर्मराज ने एक भयावनी शक्ति आपके पुत्र के ऊपर चलाई। जलती हुई उल्का सी, महावेगशालिनी उस शक्ति ने कवच तोड़कर दुर्योधन की छाती पर चोट की। रथ पर स्थित दुर्योधन उस प्रहार से गिरकर मूर्च्छित हो गये। २० ३०

तब भीमसेन ने युधिष्ठिर से कहा—महाराज! इसकी मृत्यु आपके हाथ से न होनी चाहिए; इसको मारने की प्रतिज्ञा तो मैंने कर रक्खी है। यह सुनकर युधिष्ठिर ने दुर्योधन को मारने का विचार छोड़ दिया। इसी बीच में कृतवर्मा ने झटपट आकर सङ्कट में पड़े हुए आपके पुत्र को उबार लिया। उधर भीमसेन भी सुवर्ण की पट्टियों से शोभित गदा हाथ में लेकर कृतवर्मा की ओर वेग से दौड़े। महाराज! विजय चाहनेवाले आपके दल के लोगों ने इस तरह तीसरे पहर शत्रुओं से घोर युद्ध किया। ३६

तीसवाँ अध्याय

सोलहवें दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय कहते हैं—महाराज! अब आपके पक्ष के योद्धा लोग वीर कर्ण को आगे करके फिर लौटकर, देवासुर-संग्राम के समान, घोर युद्ध करने लगे। हाथियों और घोड़ों के सवार,

रथी और पैदल योद्धा आदि सभी सैनिक हाथियों की चिंघार, मनुष्यों के कोलाहल, रथों की घर-घराहट, घोड़ों की हिनहिनाहट, और शङ्खनाद, सिंहनाद आदि से अत्यन्त पुलकित हो उठे। क्रोध से भरे हुए योद्धा लोग विविध शस्त्र चलाकर एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। वीर पुरुषों के चलाये हुए धारदार फरसों, खड्गों, पट्टिशों और बहुत प्रकार के बाणों से हाथी, घोड़े और रथी मरने और गिरने लगे। वाहनों पर वाहन और योद्धाओं पर योद्धा चोट करते थे। चन्द्र, सूर्य या कमल के समान, सफ़ेद दाँतों से युक्त, सुन्दर नासिका और मुख से सुशोभित, मनोहर नयन, रुचिर किरीट और कुण्डलों से अलंकृत वीरों के सिर पृथ्वी पर बिछ से गये। असंख्य परिघ, मूसल, शक्ति, तोमर, नखर, भुशुण्डी, गदा आदि शस्त्रों से हाथी घोड़े और मनुष्य इतने मारे गये कि रक्त की नदी बह चली। बेशुमार रथी, पैदल, हाथी, घोड़े आदि घायल होकर गिर पड़े। उनके रूप देखने में बहुत ही भयावने जान पड़ते थे। उस समय समरभूमि प्रलय-काल में यमराज का राज्य सी प्रतीत होने लगी।

राजन्! इसके बाद देवकुमार-सदृश आपके पुत्रगण और बहुत सी सेना साथ लिये कौरव पक्ष के और श्रेष्ठ योद्धा लोग सात्यकि पर आक्रमण करने चले। असंख्य हाथियों, रथों, घोड़ों और पैदलों से परिपूर्ण कौरव-सेना आगे बढ़ते समय समुद्र की तरह भयङ्कर शब्द करती हुई इन्द्रसेना के समान शोभायमान हुई। तब इन्द्र के समान पराक्रमी महारथी कर्ण ने सूर्य-किरण-से चमकीले तीक्ष्ण बाण उपेन्द्र-तुल्य सात्यकि को मारे। महावीर सात्यकि ने भी तुरन्त

१० रथ-घोड़े-सारथी सहित कर्ण को विषैले सर्प-सदृश विविध बाणों से ढक दिया। हे आर्य! आपके पक्ष के महारथियों ने कर्ण को सात्यकि के बाणों से पीड़ित देखकर वेग से अपने-अपने रथ बढ़ाये। वे असंख्य चतुरङ्गिणी सेना लिये हुए कर्ण की सहायता करने को उनके पास पहुँच गये। अब समुद्र-तुल्य कौरव-सेना को धृष्टद्युम्न आदि ने मारना शुरू किया। उस समय मनुष्य, रथ, हाथी और घोड़े बेहद मारे गये।

इधर इसी समय श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सन्ध्या आदि करके, भगवान् शङ्कर की यथा-विधि पूजा करने के उपरान्त, शत्रुवध का निश्चय करके आपकी सेना के सामने आये। हवा में फहरा रही पताका और बढ़िया सफ़ेद घोड़ों से शोभित अर्जुन के, मेघ के समान शब्द करनेवाले, रथ को सामने देखकर कौरवगण विस्मित, भीत और मोहित से हो गये। गाण्डीव धनुष को मण्डलाकार घुमाते हुए महावीर अर्जुन रथ पर नृत्य सा कर रहे थे। उनके बाण क्या आकाश और क्या दिशाओं-उपदिशाओं में, सर्वत्र फैल गये। हवा जैसे बादलों के टुकड़े कर डाले, वैसे ही विमान-से सुसज्जित—आयुध, ध्वजा और सारथी सहित—बड़े-बड़े रथों के अर्जुन ने बाणों से टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इसके बाद महावीर अर्जुन बाणवर्षा करके ध्वजा-वैजयन्ती-शस्त्र आदि से शोभित हाथियों, उनके सवारों, घोड़ों, उनके सवारों और पैदलों को मार-मारकर गिराने लगे।

काल के समान क्रुद्ध, अनिवार्य, महारथी अर्जुन से लड़ने के लिए अकेले दुर्योधन ही बाण बरसाते हुए चले। महाबली अर्जुन ने दुर्योधन को सामने आते देखकर सात बाणों से उनके धनुष, घोड़े, ध्वजा और सारथी को नष्ट करके एक बाण से छत्र के दो टुकड़े कर डाले। फिर दुर्योधन को ताककर और एक प्राण हरनेवाला बाण छोड़ा; किन्तु महावीर अश्वत्थामा ने उस बाण को सात जगह से काट डाला। अर्जुन ने बाणों की वर्षा करके अश्वत्थामा का धनुष काट डाला और चारों घोड़े मार डाले। फिर कृपाचार्य के धनुष के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इसके बाद कृतवर्मा का धनुष और ध्वजा काटकर घोड़े मार डाले। दुःशासन का भी धनुष काटकर वे कर्ण के सामने चले। महावीर कर्ण, सात्यकि को छोड़कर, अर्जुन के सामने आये। उन्होंने चटपट तीन बाण अर्जुन को और बीस बाण श्रीकृष्ण को मारे। इसके बाद लगातार बाण बरसाकर वे अर्जुन को घायल करने लगे। कुपित इन्द्र के समान असंख्य बाण बरसाने और शत्रुओं का संहार करने पर भी कर्ण तनिक भी नहीं थके। २०

इसी समय सात्यकि ने कर्ण के सामने आकर पहले निन्नानवे और फिर तीक्ष्ण सौ बाण उनको मारे। उस समय युधामन्यु, शिखण्डी, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रकगण, उत्तमौजा, युयुत्सु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, चेकितान, बलवान् धर्मराज और चेदि, करूप, मत्स्य, केकय आदि के राजा और उनकी सारी सेना, ये सब मिलकर कर्ण को पीड़ित करने लगे। इस तरह पाण्डव दल की सारी सेना और सब योद्धा रण में कर्ण को रथों, हाथियों, घोड़ों और उग्र पराक्रमी पैदलों के द्वारा चारों ओर से घेरकर उन पर शस्त्रों की और रूखे उग्र वचनों की वर्षा करने लगे। महारथी कर्ण ने अस्त्रबल से और तीक्ष्ण बाणों से उनके सब शस्त्रों को वैसे ही काट डाला जैसे आंधी वृक्षों को तोड़ डालती है। कर्ण ने अपने को मार डालने का यत्न कर रहे शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दिये। रथी वीरों को, योद्धाओं सहित बड़े-बड़े हाथियों को, सवारों सहित घोड़ों को और पैदलों को बाणों से मार रहे कुपित कर्ण युद्धभूमि में बहुत ही भले देख पड़ते थे। पाण्डव दल के प्रायः सभी लोग कर्ण के अस्त्र के तेज से पीड़ित, शस्त्रहीन और कवच-रहित हो-होकर भागने लगे। ३०

तब मुसकाते हुए अर्जुन ने अस्त्र के द्वारा कर्ण के अस्त्र को नष्ट कर दिया। वे सब दिशाओं सहित आकाश और पृथ्वी को अपने बाणों से व्याप्त करने लगे। अर्जुन के बाण मूसल, बेलन, शतघ्नी और उग्र वज्र की तरह सब ओर गिरकर कौरवसेना को चौपट करने लगे। उन बाणों की मार से व्याकुल पैदल, हाथी, घोड़े, रथी आदि भाग भी नहीं सकते थे। वे आँखें मूँदे इधर-उधर भटकते और चिल्लाते थे। अर्जुन के बाणों की चोट से मनुष्य, हाथी और घोड़े मर रहे थे। इससे घबराकर वह चतुरङ्गिणी सेना भाग खड़ी हुई। महाराज! जय की इच्छा से भिड़कर लड़ते-लड़ते आपके दल के लोगों ने देखा कि सूर्यदेव अस्ताचल पर पहुँच गये। उस

समय धूल और अँधेरे की अधिकता से हम लोगों को शुभ या अशुभ कुछ भी नहीं देख पड़ता था। कौरव पक्ष के महारथी योद्धा लोग रात्रि-युद्ध से बहुत डरे हुए थे, इसलिए इस डर से कि कहीं आज फिर रात्रि-युद्ध न हो, वे लोग अपनी-अपनी सेना लेकर रणभूमि से हट गये। ३९
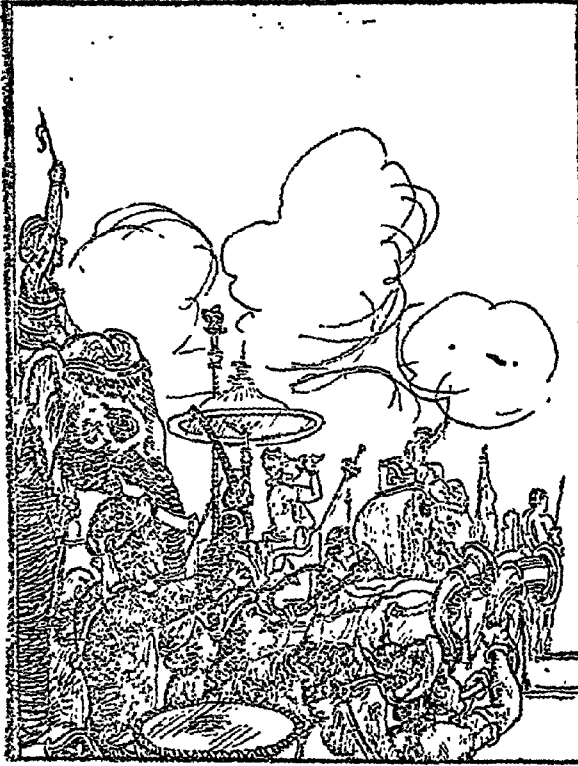
सन्ध्या के समय कौरवों के हट जाने पर पाण्डव लोग विजय-लक्ष्मी पाकर सिंहनाद करने लगे। पाण्डव दल के लोग बाजों को बजाते, शत्रुओं को हँसते, श्रीकृष्ण और अर्जुन की प्रशंसा करते, अपने शिविर को लौट गये। महाराज! इस तरह युद्ध बन्द होने पर पाण्डवगण और उनके साथी राजा लोग रात को प्रसन्नता-पूर्वक अपने डेरों में जाकर विश्राम करने लगे। उधर रात्रि का समय पाकर राक्षस, पिशाच और मांसाहारी जीवों के झुण्ड के झुण्ड उस घोर रणभूमि में पहुँचे, जो कि मसान सी सूनसान हो रही थी। ४४

इकतीसवाँ अध्याय

कर्ण और दुर्योधन का संवाद

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! यह स्पष्ट है कि अर्जुन ने मेरे दल के सब लोगों को अपनी शक्ति भर मारा, उन्हें कोई रोक नहीं सका। मुझे निश्चय हो गया है कि शस्त्र हाथ में लिये अर्जुन के सामने साक्षात् काल भी लड़ने आवे तो जीता नहीं बच सकता। अर्जुन अकेले ही सुभद्रा को हर लाये, उन्होंने अकेले ही खाण्डव वन जलाने की आज्ञा देकर अग्नि को तृप्त किया और अकेले ही दिग्विजय करके सब राजाओं से कर वसूल किया। उन्होंने अकेले ही दिव्य धनुष लेकर निवातकवच दानवों को मारा, अकेले ही किरातरूपी शिव को युद्ध करके सन्तुष्ट किया और अकेले ही घोष-यात्रा के अवसर पर गन्धर्वों से लड़कर दुर्योधन आदि को छुड़ाया। उन्हीं

अर्जुन ने अकेले अपने बाहु-बल से उग्र तेजवाले मेरे पक्ष के सब महारथियों को परास्त किया। अर्जुन से परास्त होना भी मेरे दल के लोगों के लिए निन्दा की नहीं, प्रशंसा की बात है। हे सूत! इसके उपरान्त मेरे दलवालों ने और दुर्योधन ने क्या किया?

सञ्जय बोले—राजन्! शस्त्र, कवच, वाहन आदि से हीन, घायल, अङ्गहीन, वाहनों से गिरकर अधमरे-से हो गये, शत्रुओं से परास्त, मानी और अपनी दुर्दशा से दुःखित हमारे पक्ष के लोग अपने शिविर में बैठकर दीन स्वर से आपस में सलाह करने लगे। जिसके दाँत तोड़ दिये गये हों, विष निकाल दिया गया हो, बस लातें खा रहे, किन्तु विवश होने के कारण कुछ न कर सकनेवाले, साँप की सी दशा उन लोगों की हो रही थी। क्रोध के मारे साँप की तरह फुफकार रहे महारथी कर्ण ने हाथ से हाथ मलकर, दुर्योधन की ओर देखकर, उन लोगों से कहा—देखो, अर्जुन सदा सावधान, दृढ़, धनुर्विद्या में निपुण, धैर्य-सम्पन्न और स्वयं शूर हैं; उस पर समय-समय पर श्रीकृष्ण उनको बचने के और शत्रुओं को मारने के उपाय सुझाया करते हैं। आज अर्जुन ने अकस्मात् शस्त्रों की वर्षा और अस्त्र का

प्रयोग करके हमें वञ्चित कर दिया, अर्थात् वे हमारी सेना को मार गये और हम उन्हें नहीं रोक सके। किन्तु कल सबेरे मैं अवश्य उनके सब इरादों को मिट्टी में मिला दूँगा। १०

कर्ण के यों कहने पर दुर्योधन ने उसका अनुमोदन किया और सब राजाओं को अपने-अपने शिविर में जाकर विश्राम करने की अनुमति दे दी। दुर्योधन की आज्ञा पाकर सब राजा लोग अपने डेरों में जाकर सुखपूर्वक आराम करने लगे। प्रातःकाल होने पर सब क्षत्रिय प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ युद्ध करने को निकले। उन लोगों ने देखा कि धर्मराज ने बृहस्पति और शुक्राचार्य की कही हुई विधि से एक दुर्जय व्यूह बनाया है। उस समय दुर्योधन ने युद्ध में शत्रुसेना का नाश करनेवाले, इन्द्र के तुल्य योद्धा, मरुद्गण के समान बली, कार्तवीर्य सहस्रबाहु के समान वीर्यशाली, वृषस्कन्ध, महारथी वीर कर्ण को याद किया। क्योंकि इस

समय वही पाण्डवों के मुक़ाबले में सेना के सञ्चालक सेनापति थे। जैसे प्राणसङ्कट के समय अपने किसी मित्र को स्मरण करते हैं वैसे ही कौरवसेना के सब लोग कर्ण को ही याद करने लगे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! तब दुर्योधन ने क्या किया? वैकर्त्तन कर्ण को ही अपना संरक्षक समझकर सब लोगों ने जब उन्हें स्मरण किया तब कर्ण ने क्या किया? जाड़े से पीड़ित लोगों को जैसे सूर्य दर्शन देते हैं वैसे ही पहले दिन युद्ध होने के बाद सवेरे फिर रण का उद्योग होने के समय कर्ण सबके सामने आये या नहीं? फिर समर छिड़ने पर महारथी कर्ण ने कैसा युद्ध किया? सब पाण्डवों ने कर्ण से कैसा युद्ध किया? वीर कर्ण अकेले ही सब सृञ्जयों सहित पाण्डवों को मार सकते हैं। कर्ण का बाहुबल युद्ध में इन्द्र और विष्णु के समान हो जाता है। कर्ण के शस्त्र घोर और श्रेष्ठ हैं, वे पराक्रमी भी अद्वितीय हैं।
१० उनका आश्रय पाकर ही राजा दुर्योधन ने पाण्डवों से लड़ने का साहस किया है। महारथी कर्ण पहले दिन दुर्योधन को पाण्डव के पराक्रम से अत्यन्त पीड़ित और पाण्डवों को अत्यन्त प्रबल होकर पराक्रम प्रकट करते देखकर युद्ध में प्रवृत्त हुए थे। हे सूत! मन्दमति दुर्योधन कर्ण के भरोसे युद्ध में श्रीकृष्ण सहित पाण्डवों और उनके पुत्रों को जीतने का उत्साह बारम्बार प्रकट करता था। किन्तु हाय! कैसे दुःख की बात है कि महारथी अद्वितीय वीर कर्ण युद्ध में पाण्डवों को नहीं जीत सके! अवश्य ही इसका कारण दैव का प्रतिकूल होना है। अहो! उस कपटद्यूत का ही यह घोर परिणाम है। हे सञ्जय! इसमें सन्देह नहीं कि मैं दुर्योधन की दुर्बुद्धि के कारण जीवन भर काँटे की तरह खटकनेवाले अनेक तीव्र दुःख सहूँगा। दुर्योधन उस समय कर्ण और शकुनि के ही कहे में था, और कर्ण तथा शकुनि को सबसे बढ़कर पराक्रमी एवं नीतिज्ञ समझता था। इस समय उसकी मूर्खता कहो या दैव की प्रतिकूलता, जिसके कारण मैं नित्य सुनता हूँ कि मेरे ही पुत्र मारे जाते हैं, मेरे ही पुत्र हारते हैं। पाण्डवों में से किसी का मरना नहीं सुन पड़ता। स्त्रियों के समूह की तरह मेरी सेना में घुसकर पाण्डव लोग बड़े-बड़े शूर-वीरों को मार डालते हैं। इसी से कहना पड़ता है कि दैव बड़ा बली है।

सञ्जय ने कहा—राजन्! पहले की द्यूतक्रीड़ा आदि का ख़याल कीजिए, जिन्हें उस समय आप धर्म समझ रहे थे और जिनका फल यह सत्यानाश है। सच तो यह है कि बीती हुई बात को पीछे से सोचना ही व्यर्थ है; क्योंकि जो हो चुका वह मिट नहीं सकता, उलटे चिन्ता करने से मनुष्य की बुद्धि और शक्ति नष्ट होती है। उचित-अनुचित का विचार आपको पहले ही कर लेना था, सो आपने नहीं किया। आप समझते सब थे। अब तो जो हो गया
३० उसे आप फेर नहीं सकते; उसका फल भोगना ही पड़ेगा। मैंने ही कई बार आपसे कहा था कि पाण्डवों से मत लड़िए; किन्तु पाण्डवों पर द्वेष-बुद्धि रखने के कारण आपने मेरी बात नहीं मानी। महाराज! आपने पाण्डवों के साथ पापपूर्ण व्यवहार किये हैं और आपके ही कारण

इस समय क्षत्रियों का नाश और सत्यानाश हो रहा है। हे भरतश्रेष्ठ! इसलिए जो बीत गया उसके लिए शोक न कीजिए। मैं युद्ध का वर्णन करता हूँ, सुनिए।

सवेरा होने पर महारथी कर्ण ने राजा दुर्योधन से मिलकर कहा—राजन्! आज मैं यशस्वी अर्जुन से युद्ध करूँगा। आज या तो मैं अर्जुन को मारूँगा और या वे मुझे मारेंगे। अर्जुन को और मुझे बहुत से काम थे, इसी कारण आज तक हम दोनों का सामना नहीं हुआ। मैं अपनी समझ के माफ़िक़ जो कुछ आपसे कहता हूँ, उसे सुनिए। हे भारत! आज मैं समर में अर्जुन को मारे बिना नहीं लौटूँगा। हमारे मुख्य और श्रेष्ठ वीर मारे जा चुके हैं और मेरे पास भी अब इन्द्र की दी हुई शक्ति नहीं रही है। मैं ही सेनापति हूँ। आज अवश्य अर्जुन मुझसे युद्ध करने आवेंगे। अब मैं आपके लिए श्रेय देनेवाला गुप्त विषय कहता हूँ, सुनिए। हम दोनों के—अर्जुन के और मेरे—शस्त्र दिव्य हैं और पराक्रम भी समान है। किन्तु शत्रु का उपाय नष्ट करने में, फुर्ती में, दूर तक निशाना मारने में, कौशल में और अस्त्र के प्रयोग में अर्जुन मेरे समान नहीं हैं। शारीरिक और मानसिक बल में, अस्त्र-शिक्षा में, पराक्रम में और लक्ष्य स्थिर करने में अर्जुन मेरे समान नहीं हैं। महाराज! मेरा यह विजय नाम का धनुष ४१ साधारण नहीं है, जिसे लेकर मैं अर्जुन से युद्ध करूँगा। इन्द्र का प्रिय करने के लिए इस धनुष को विश्वकर्मा ने बनाया था। इसी धनुष से इन्द्र ने दैत्यों को मारा था और इसके शब्द से दैत्य ऐसे मोहित हुए थे कि उन्हें दिशाओं का भ्रम हो गया था। यह श्रेष्ठ धनुष इन्द्र ने परशुराम को दिया और उनसे मैंने पाया। इन्द्र ने जैसे एकत्र हुए सब दानवों से युद्ध किया था वैसे ही मैं यह धनुष लेकर, विजय प्राप्त करनेवालों में श्रेष्ठ, अर्जुन से युद्ध करूँगा। यह मेरा घोर धनुष अर्जुन के गाण्डीव से बढ़कर है। परशुराम ने इसी धनुष से इक्कीस बार पृथ्वी भर के क्षत्रियों को परास्त किया था। परशुराम ने इस धनुष के दिव्य कार्यों का वर्णन किया था। हे दुर्योधन! आज समर में वीरश्रेष्ठ अर्जुन को मारकर मैं तुमको और तुम्हारे बन्धुओं को प्रसन्न करूँगा। आज यह सारी पृथ्वी, तुम्हारे प्रतिद्वन्द्वी वीर से शून्य होकर, तुम्हारी हो जायगी और तुम्हारे पुत्र-पौत्र तक निष्कण्टक राज्य करेंगे। जिस तरह जितेन्द्रिय और धर्म में अनुरक्त पुरुष के लिए सिद्धि (मोक्ष) अशक्य नहीं होती उसी तरह आज मैं तुम्हारे भले के लिए विशेष रूप से सब कुछ कर सकता हूँ। अग्नि के तेज को वृक्ष जैसे नहीं सह सकता ५० वैसे ही आज अर्जुन मेरे पराक्रम को नहीं सह सकेंगे।

राजन्! अब मुझे वह बात भी अवश्य तुमसे कह देनी चाहिए, जिसमें कि मैं अर्जुन से घटकर हूँ। अर्जुन के धनुष की डोरी दिव्य है और तरकस भी अक्षय हैं। ख़ासकर उनके सारथी श्रीकृष्ण हैं। मेरा सारथी वैसा नहीं है। युद्ध में अजेय 'गाण्डीव' धनुष अर्जुन के पास है और मेरे पास भी दिव्य महान् 'विजय' धनुष है जो कि अर्जुन के धनुष से बढ़कर है।

अपने उक्त धनुष के बल से मैं अर्जुन से अधिक हूँ। परन्तु सब लोग जिनको सिर झुकाते हैं उन श्रीकृष्ण के सारथी होने के कारण इस मामले में अर्जुन मुझसे श्रेष्ठ हैं। यही नहीं, अर्जुन के पास अग्निदेव का दिया हुआ सुवर्ण-भूषित ऐसा दिव्य रथ है जो शस्त्र-प्रहार से काटा नहीं जा सकता। हे वीर! उनके घोड़े भी बड़े तेज़ हैं। उनकी ध्वजा दिव्य और प्रकाशयुक्त है। उस ध्वजा में भयङ्कर वानर स्थित है। इसके सिवा जगत् की सृष्टि करनेवाले कृष्णचन्द्र स्वयं उनके रथ की रक्षा करते हैं। मैं इन्हीं तीन बातों में अर्जुन से हीन हूँ। मेरा धनुष ही श्रेष्ठ है। इस पर भी मैं अर्जुन से युद्ध करने को तैयार हूँ। राजन्! तुम्हारे दल में ये जो पुरुषश्रेष्ठ शल्य हैं वे यदि मेरे सारथी बन जायँ तो तुम्हारी विजय निश्चित है। ये शल्य श्रीकृष्ण के समान वीर और घोड़े हाँकने की कला में निपुण हैं। मैं चाहता हूँ कि शल्य मेरे सारथी हों। गृद्धपक्ष-शोभित नाराच बाणों के छकड़े बराबर मेरे पीछे चलें और प्रधान-प्रधान धनुर्द्धर वीर भी, बढ़िया घोड़ों से युक्त रथों पर बैठकर, मेरे साथ ही रहें। ६० ऐसा होने पर मैं गुण, सामान और सारथी, सब बातों में अर्जुन से बढ़कर हो जाऊँगा। महावीर शल्य श्रीकृष्ण से श्रेष्ठ सारथी हैं और मैं अर्जुन से श्रेष्ठ रथी हूँ। शत्रुदमन श्रीकृष्ण जैसे अश्वविज्ञान के जानकार हैं वैसे ही महारथी शल्य भी अश्वविज्ञान में निपुण हैं। बाहुबल में कोई मद्रराज शल्य के समान नहीं है; वैसे ही कोई धनुर्द्धर अस्त्र-विद्या में मेरी बराबरी नहीं कर सकता। अगर शल्य मेरा रथ हाँकना स्वीकार कर लें तो फिर मैं रथ पर बैठकर युद्ध में अवश्य अर्जुन को परास्त कर दूँगा; क्योंकि मैं स्वयं गुण में अर्जुन से श्रेष्ठ हूँ। महाराज! मेरी यह इच्छा है और यह इच्छा पूर्ण होने पर इन्द्र सहित सब देवता भी मेरा सामना नहीं कर सकेंगे। इसका शीघ्र प्रबन्ध कीजिए। इतना कर देने से ही मानो आप सब कर चुके। फिर मैं युद्ध में जो कुछ करूँगा सो सब आप देखेंगे ही। सामने आये हुए सब पाण्डवों को मैं जीत ही लूँगा। उस समय मनुष्य-योनि पाण्डव तो कोई चीज़ ही नहीं, समरभूमि में सब देवता और दानव मिलकर भी मुझसे युद्ध नहीं कर सकेंगे।

सञ्जय कहते हैं कि वीर कर्ण के यों कहने पर दुर्योधन ने प्रसन्न होकर कर्ण की प्रशंसा ७० करके कहा—हे कर्ण! तुम जो चाहते हो वही मैं करूँगा। बढ़िया घोड़ों से युक्त, तीर भरे तरकसों से परिपूर्ण, छकड़े तुम्हारे पीछे चलेंगे, जिनमें गृद्धपक्ष-युक्त नाराच आदि बाण रक्खे होंगे। श्रेष्ठ योद्धा लोग भी सहायता करने के लिए तुम्हारे साथ ही रहेंगे। मैं, मेरे भाई, सब राजा लोग तुम्हारे साथ रहेंगे। हे महाराज! आपके प्रतापी पुत्र दुर्योधन, कर्ण से यों ७३ कहकर, मद्रराज शल्य के पास गये और उनसे यों कहने लगे।

बत्तीसवाँ अध्याय

दुर्योधन के कहने-सुनने पर शल्य का मुश्किल से
कर्ण का सारथी बनना स्वीकार करना

सञ्जय कहते हैं कि राजन् ! आपके पुत्र दुर्योधन ने मद्रराज शल्य के पास जाकर वही किया जो कर्ण ने कहा था। दुर्योधन ने महारथी शल्य को पहले प्रणाम किया, फिर विनयपूर्वक स्नेहपूर्ण स्वर में कहा—हे सत्यव्रत, हे महाभाग, हे मद्रराज ! आप शत्रुओं के सन्ताप को बढ़ानेवाले, शत्रुसेना के लिए भयङ्कर और रण में शूर सुने जाते हैं। बोलनेवालों में श्रेष्ठ हे महाराज ! आपने कर्ण की बातें सुनी ही हैं। उनका कहना है कि सब राजाओं के बीच मैं खुद आपसे प्रार्थना करूँ। हे अप्रतिम पराक्रमी, हे शत्रुपक्ष का नाश करनेवाले मद्रराज ! मैं सिर झुकाकर विनयपूर्वक आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अर्जुन के मारने और मेरे हित के लिए सब प्रकार कर्ण की रक्षा करें; जैसे कि ब्रह्मा ने सारथी होकर शङ्कर की सहायता की थी। हे सुव्रत ! आप स्नेहवश कर्ण के रथ पर सारथी होकर विराजिए। हे श्रेष्ठ महारथी ! आपको सारथी के रूप में पाकर कर्ण अवश्य मेरे शत्रुओं को जीत लेंगे। हे महाभाग ! आप श्रीकृष्ण के समान रथी और सारथी हैं। आपके सिवा और कोई कर्ण का सारथी नहीं हो सकता। जैसे सब आपत्तियों के समय श्रीकृष्ण अर्जुन की रक्षा करते हैं, वैसे ही आज आप युद्ध में कर्ण की रक्षा और सहायता कीजिए। भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, कर्ण, आप, कृतवर्मा, शकुनि, अश्वत्थामा और मैं, ये ही नव महारथी हमारी सेना के रक्षक और बल थे। युद्ध में इस तरह नव भागों की कल्पना हुई थी। उनमें महात्मा भीष्म और द्रोण अब नहीं रहे, इसलिए उनका भाग भी नहीं है। और, वे दोनों भाग्यवान् वास्तव में अपने हिस्से से अधिक शत्रुओं को मारकर दुष्कर कर्म करके मरे हैं। वे दोनों वृद्ध भी थे और शत्रुओं ने उन्हें छल से मारा भी। इस तरह कठिन कर्म करके वे दोनों महात्मा स्वर्गवासी हुए। शत्रुओं ने हमारे भी अनेक वीरों को मारा है। मेरी ओर के बहुतेरे योद्धा, यथाशक्ति विजय पाने की भारी चेष्टा करके, शत्रुओं के हाथ से मरकर स्वर्ग सिधारे हैं। हे नरेश ! इस समय मेरी सेना थोड़ी रह गई है और चुने हुए वीर बहुतायत से मारे जा चुके हैं। पहले ही थोड़े शत्रुओं ने जब अधिकांश वीरों को मारने में सफलता पाई, तब अब तो वे सहज ही सबको चौपट कर सकते हैं। महाराज ! कुन्ती के पुत्र बली, महात्मा और सत्यविक्रमी हैं। अब ऐसा कीजिए, जिसमें वे मेरी शेष सेना को न मार सकें। हे मद्रेश्वर ! महाबाहु कर्ण और आप, दोनों ही अलौकिक पुरुष, महारथी और मेरे हितचिन्तक हैं। आज महावीर कर्ण अर्जुन से युद्ध का फ़ैसला करना चाहते हैं, इसी से हमारी विजय की आशा भी प्रबल है। किन्तु कर्ण के रथ के घोड़ों की रास पकड़नेवाला पृथ्वी पर आपके समान योग्य और कोई नहीं है। इसलिए

११

महात्मा श्रीकृष्ण जैसे अर्जुन का रथ हाँकते हैं वैसे ही प्रेमभाव से आप भी कर्ण के घोड़ों की रास पकड़िए। महावीर अर्जुन, श्रीकृष्ण की सहायता से सुरक्षित रहकर, जिन अद्भुत कार्यों
२० को करते हैं उन्हें आप देख ही रहे हैं। अर्जुन पहले अन्य शत्रुओं से युद्ध करते समय इस तरह बण्टाढार नहीं कर सके; इस समय केवल श्रीकृष्ण की सहायता के बल से वे अधिकतर पराक्रम करके नित्य कौरवसेना को मार भगाते हैं। हे मद्रेश्वर! [पाण्डवों के पास थोड़ी ही सेना रह गई है,] आपके और कर्ण के हिस्से की जो शत्रुसेना रह गई है उसे आप लोग नष्ट कीजिए। सूर्यदेव जैसे अरुण के साथ उदय होकर अँधेरे को नष्ट करते हैं वैसे ही आप भी कर्ण का साथ देकर अर्जुन को यमपुर भेजिए। पाण्डव पक्ष के महारथी लोग दो बाल-सूर्यों के समान उदय हुए कर्ण और आपके तेज को देखकर भाग खड़े हों। अँधेरा जैसे अरुण और सूर्य को देखते ही दूर हो जाता है वैसे ही पाण्डव, पाञ्चाल और सृञ्जयगण आप दोनों को देखते ही नष्ट हो जायँगे। महावीर कर्ण श्रेष्ठ रथी हैं और आप भी श्रेष्ठ सारथी हैं। इसलिए श्रीकृष्ण जैसे सदा सब अवस्थाओं में अर्जुन की रक्षा करते हैं, वैसे ही आप सदा कर्ण की रक्षा करते रहें, नेक सलाह देते रहें, कर्तव्य बतलाते रहें। मुझे भरोसा है कि आप अगर मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे तो साधारण मनुष्य पाण्डव क्या चीज़ हैं, वीर कर्ण इन्द्र सहित देवताओं को भी परास्त कर सकेंगे।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कुल, ऐश्वर्य, शास्त्रज्ञान और बल का गर्व रखनेवाले मानी मद्रराज शल्य, दुर्योधन के वाक्य सुनकर, कुपित हो उठे। उनके मत्थे में बल पड़ गये। वे
३१ त्योरी तानकर बारम्बार क्रोध से लाल आँखें इधर-उधर डालते और हाथ कँपाते हुए कहने लगे—हे दुर्योधन! तुम बेधड़क मुझसे कर्ण का सारथी बनने का अनुरोध करके मेरा अपमान कर रहे हो। तुम कर्ण को मुझसे अधिक बली समझकर उसकी बड़ाई करते हो; किन्तु मैं तो उसे अपने बराबर भी नहीं गिनता। राजन्! सेना को मारने में मेरा जितना हिस्सा लगाया गया हो, उससे अधिक सेना मेरे लिए छोड़ दो। मैं सहज ही उतनी सेना को मारकर अपने राज्य को चला जाऊँ। अथवा मैं अकेला ही युद्ध करके सारी सेना मारे डालता हूँ, तुम आज्ञा भर दे दो। तुम अभी मेरी भुजाओं का बल देख लो। राजन्! तुम विश्वास रक्खो, मुझ सा आत्माभिमानी पुरुष कोई अनुचित काम नहीं कर सकता। मेरी ओर से तुम शङ्का न करो। इसलिए युद्धसभा में तुम मुझे अपमानित करने की चेष्टा मत करो। हे दुर्योधन! मेरी ये मोटी वज्र सी दृढ़ भुजाएँ, विचित्र धनुष, विषैले नाग-से भयङ्कर बाण, हवा के वेग से जानेवाले घोड़ोंवाला सजा हुआ रथ और सुवर्ण-पट्ट-विभूषित गदा देखो। राजन्! मैं चाहूँ तो अपने तेज से पृथ्वीतल को फाड़ सकता हूँ, पर्वतों को ढहा सकता हूँ और सागरों को सुखा सकता हूँ। राजन्! तुम मुझको इस तरह का महापराक्रमी और शत्रुसंहार के लिए सर्वथा समर्थ जानकर भी, समर में

शल्य, दुर्योधन के वाक्य सुनकर कुपित हो उठे। उनके मत्थे में बल पड़ गये।—पृ० २७८८

मेरी अपेक्षा हीन-वीर्य और नीच कुल में उत्पन्न, कर्ण का सारथी बनने के लिए मुझसे अनुरोध कर रहे हो। मुझे इस तरह के ओछे काम में लगाना कदापि तुम्हें उचित नहीं। मैं श्रेष्ठ होकर ४१ कभी नीच व्यक्ति का आज्ञा-पालन करने को राज़ी नहीं हो सकता। प्रीतिपूर्वक आये हुए वशवर्ती श्रेष्ठ व्यक्ति को किसी नीच प्रकृति या नीच जाति के आदमी के वशीभूत कर देनेवाला आदमी, बढ़िया और घटिया का उलट पुलट करने के कारण, बड़े भारी पाप का भागी होता है। वेद में लिखा है कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, बाहुओं से क्षत्रिय, ऊरुओं से वैश्य और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए हैं। इन चारों वर्णों के परस्पर संयोग से, अनुलोम (जैसे क्षत्रिय की स्त्री में ब्राह्मण से या वैश्य की स्त्री में क्षत्रिय से) और प्रतिलोम (जैसे ब्राह्मण की स्त्री में क्षत्रिय से या क्षत्रिय की स्त्री में वैश्य से) क्रम से, बहुत सी वर्ण-सङ्कर जातियाँ उत्पन्न हुई हैं। प्रजा का पालन और रक्षा, कर लेना और दान देना, यही क्षत्रियों के कर्म हैं। इसी तरह लोकों पर कृपा करने के लिए पृथ्वी पर ब्राह्मणों की स्थापना हुई है और यज्ञ कराना, पढ़ाना तथा विशुद्ध दान लेना ही उनके कर्म हैं। खेती, पशुपालन और धर्मानुसार दान करना वैश्यों के कर्म हैं। रह गये शूद्र सो वे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा करने के लिए हैं। सूत जाति वर्ण-सङ्कर है, और शास्त्र में उसका धर्म ब्राह्मणों और क्षत्रियों की सेवा करना ही लिखा है। क्षत्रिय को सूत की सेवा करते कभी किसी ने न देखा-सुना होगा। मैं राजर्षि-कुल में उत्पन्न और मूर्द्धाभिषिक्त हूँ, अर्थात् राजगद्दी पर विधिपूर्वक मेरा अभिषेक हुआ है। मैं महारथी कहलाता हूँ। बन्दीजन मेरी सेवा और स्तुति करते हैं। हे दुर्योधन! मैं स्वयं शत्रुसेना का नाश कर सकता हूँ। इस तरह का पूज्य प्रतापी प्रशंसित होकर मैं रण में सूतपुत्र कर्ण का सारथी नहीं बन सकता। इस ५० अपमान को सहकर मैं युद्ध नहीं कर सकता। मैं तुमसे कहता हूँ कि यह काम करने के लिए कहकर मेरा अपमान न करना। हे दुर्योधन! मैं तुमसे घर जाने के लिए अनुमति माँगता हूँ।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सभा को शोभित करनेवाले शल्य इतना कहकर, क्रोध के मारे, राज-मण्डली के बीच से उठकर शीघ्रता के साथ चल दिये। तब आपके पुत्र ने प्रेमपूर्वक बहुत सम्मान के साथ, हाथ पकड़कर, उनको रोक लिया। दुर्योधन ने सामनीति से पूर्ण, सब प्रकार कार्य को सिद्ध करनेवाले, मधुर वचन कहना शुरू किया—हे मद्रेश्वर शल्य! आपने जो कुछ कहा वह ठीक है, इसमें तनिक भी संशय नहीं। किन्तु मैं आपसे कर्ण का सारथी होने के लिए कहकर आपका अपमान नहीं कर रहा हूँ। उसमें मेरा जो अभिप्राय है सो सुनिए। हे मद्र-नरेश! न तो कर्ण आपसे बढ़कर बली या योद्धा हैं और न मुझे आपसे किसी तरह की शङ्का है। आपका नाम इसी लिए आर्तायनि है कि आपके वंश के सब पूर्वज ऋत अर्थात् सत्य के अनन्य उपासक रहे हैं। आप युद्ध में शत्रुओं के हृदय में शल्य के समान कसकते हैं, इसी से आप शल्य नाम से प्रसिद्ध हैं। हे धर्मज्ञ! आप पहले सब तरह से मेरी सहायता

करना स्वीकार कर चुके हैं, इसलिए अब मेरा कहा मानकर अपने उस वादे को पूरा कीजिए। महाराज! मैं या कर्ण, कोई भी आपसे अधिक वीर्यशाली नहीं है। मैं कर्ण को गुण (युद्धकला) में अर्जुन से श्रेष्ठ मानता हूँ। इसी तरह ये सब लोग आपको भी अश्वविज्ञान और पौरुष आदि में श्रीकृष्ण से श्रेष्ठ समझते हैं। हे नरश्रेष्ठ! कर्ण तो केवल अस्त्र-विद्या में अर्जुन से श्रेष्ठ हैं; किन्तु आप अश्वविज्ञान, सारथी के काम और बल-विक्रम में भी श्रीकृष्ण से बढ़कर हैं। हे मद्रराज! श्रीकृष्ण को जितनी घोड़ों की पहचान और जितना अश्वविज्ञान का ज्ञान है, उससे कहीं अधिक आपकी जानकारी है। ६०

यह सुनकर महावीर शल्य ने कहा—हे दुर्योधन! तुमने सब सेना के बीच मुझे देवकी-नन्दन श्रीकृष्ण से श्रेष्ठ कहा, इससे मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। मैं यशस्वी कर्ण का रथ हाँकूँगा, जिससे वे पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन से इच्छानुसार युद्ध कर सकेंगे। किन्तु मैं वैकर्तन कर्ण से एक वादा कराना चाहता हूँ। वह यह कि रथ हाँकते समय मैं कर्ण के आगे चाहे जैसी बातें करूँगा। इन्हें उसमें कुछ उज्र न होना चाहिए। सञ्जय कहते हैं—महाराज! दुर्योधन और कर्ण दोनों ने शल्य की यह शर्त मञ्जूर कर ली। ६६

तेंतीसवाँ अध्याय

त्रिपुरासुर के उपाख्यान का वर्णन

दुर्योधन ने कहा—राजन् शल्य! महातपस्वी मार्कण्डेय मुनि ने पिताजी के सामने मुझे देवासुर-युद्ध का जो इतिहास सुनाया था उसी का वर्णन, हे राजर्षि-श्रेष्ठ, मैं आपके आगे करता हूँ। आप उसे सुनकर अपने मन में विचारिए और कर्ण का रथ हाँकने में आगा-पीछा न कीजिए। पूर्व समय में देवताओं और दैत्यों ने परस्पर विजय पाने की इच्छा से घोर युद्ध किया था। वह युद्ध तारकामय-संग्राम के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय महापराक्रमी तारकासुर दैत्यों का स्वामी और नेता था। देवताओं ने उस संग्राम में दैत्यों को जीत लिया। [तारका-सुर के मारे जाने पर दैत्यों का दर्प चूर्ण हो गया और उत्साह जाता रहा। वे लोग प्राण लेकर भाग गये और पाताल में घुसकर रहने लगे।] दैत्यों के परास्त होने पर तारकासुर के तीनों पुत्र ताराक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली कठिन नियम के साथ तीव्र तप करने लगे। उन शत्रु-दमन दानवों ने ऐसा उग्र तप किया कि उनके शरीर सूखकर काँटा हो गये। वरदानी ब्रह्मा कुछ समय के बाद उनके दम, नियम, तप और समाधि से प्रसन्न होकर प्रकट हुए। सब लोकों के पितामह ब्रह्मा ने जब उनसे वर माँगने को कहा, तब दानवों ने यह वर माँगा कि संसार के सभी

प्राणी कभी उन सबको न मार सकें। ब्रह्मा ने कहा—हे असुरो, संसार में कोई भी प्राणी अमर नहीं है। यह असम्भव है कि कोई प्राणी किसी प्राणी के हाथ से न मारा जा सके। इसलिए यह इरादा छोड़कर और कोई वर माँगो, जो कि तुमको पसन्द हो। उनके वचन सुनकर तीनों भाइयों ने आपस में अच्छी तरह सलाह करके सब लोकों के ईश्वर ब्रह्मा को प्रणाम किया और कहा—हे पितामह! हम तीनों भाई अलग-अलग एक नगर बनाकर उसमें बसना चाहते हैं। वह शुभ नगर ऐसा हो कि सब जगह आकाशमार्ग होकर जा सके। [आप यह वर दीजिए कि वे तीनों पुर सब कामनाओं की वस्तुओं और समृद्धियों से पूर्ण हों, और देवता, दानव, यक्ष, राक्षस, नाग, नाना जाति के जीव और ब्रह्मवादी ब्राह्मण आदि कोई भी उन्हें नष्ट न कर सके। शस्त्र, कृत्या (जादू) और शाप से भी उनका नाश न हो। आपकी कृपा के पात्र होकर] हम तीनों भाई उन तीनों नगरों में रहकर पृथ्वी-मण्डल में विचरेंगे। इस तरह हज़ार वर्षों तक अलग-अलग सब स्थानों की सैर करके अन्त को हम तीनों भाई फिर एक जगह मिलेंगे और वे तीनों पुर एक में मिल जायँगे। भगवन्! जो प्रतापी पुरुष उस समय एक में मिले हुए उन तीनों पुरों को एक ही बाण मारकर नष्ट कर देगा, उसी के हाथ से हमारी मृत्यु होगी। हम यही वर माँगते हैं। राजन्! पितामह उन दानवों के वचन सुनकर 'तथास्तु' कहकर अपने लोक को चले गये। १०

इधर तारकासुर के तीनों पुत्र, ब्रह्मा से वरदान पाकर, परम प्रसन्न हुए। उन्होंने सलाह करके तीन पुर बनाने के लिए दैत्य-दानव-पूजित, निरामय, दैत्यों के विश्वकर्मा मयासुर से कहा। बुद्धिमान् मय दानव ने अपने तप के प्रभाव से स्वर्ग में सुवर्ण का, अन्तरिक्ष में चाँदी का और मनुष्य-लोक में लोहे का श्रेष्ठ पुर बना दिया। वे तीनों पुर सौ-सौ योजन लम्बे-चौड़े थे। उनकी चहारदीवारी ख़ूब चौड़ी, ऊँची और दृढ़ थी। उनमें बड़े-बड़े फाटक और सजे हुए बढ़िया महल बने हुए थे। उनमें चौड़ी सड़कें, बहुत से मन्दिर, अट्टालिकाएँ और अनेक प्रकार के द्वार सर्वत्र थे। महाराज! तारकासुर के तीनों पुत्रों में से प्रतापी तारकाक्ष सोने के पुर का, २०

कमलाक्ष चाँदी के पुर का और विद्युन्माली लोहे के पुर का स्वामी हुआ। इस तरह विनाश के खटके से छुटकारा पाकर उन तीनों दानवों ने अस्त्रबल से तीनों लोकों को अपने वश में कर लिया। वे दानव गर्वित होकर कहने लगे—हमारे आगे प्रजापति क्या चीज़ हैं? हमीं त्रिलोकी और सम्पूर्ण जगत् के स्वामी हैं। पहले जिन मांसाहारी अभिमानी दानवों को देवताओं ने जीतकर मार भगाया था वे जहाँ-तहाँ से, करोड़ों और अर्बुदों की संख्या में, त्रिपुर में आकर बसने और बेखटके ऐश्वर्य भोगने लगे। क्रमश: सभी प्रधान दानव त्रिपुर दुर्ग में आ गये। वे फिर निडर होकर संसार को सताने लगे। त्रिपुरवासी दानवों में से जो जब जैसी इच्छा करता था उसकी उस इच्छा को मय दानव मायाबल से तत्काल पूर्ण कर देता था।

हे मद्रेश्वर! इस तरह कुछ समय बीतने पर तारकाक्ष के पुत्र महापराक्रमी हरि नाम के दानव ने कठोर तप करके ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लिया। उन्होंने आकर वर माँगने को कहा। दानव ने हाथ जोड़कर कहा—हे देव, मैं अपने पुर में ऐसी बावली बनवाना चाहता हूँ जिसके जल में डालने से अस्त्र-शस्त्र से मरे हुए दैत्य फिर जी उठें और पहले से अधिक बलशाली हो जायँ। आपके वरदान के प्रभाव से मैं यह कठिन काम करना चाहता हूँ। कृपा करके मुझे यही वर दीजिए। महाराज! ब्रह्मा ने उस दानव को, उसकी इच्छा के अनुसार, वर दे दिया। तारकाक्ष के पुत्र बड़े वीर हरि दानव ने इस तरह दुर्लभ [illegible]कर प्रसन्नतापूर्वक अपने पुर में [illegible]सी ही मृतसञ्जीविनी बावली बनवा ली। जिस वेश और जिस रूप में जो दैत्य मारा जाता था वह, उस बावली के जल में डाले जाते ही, वैसे ही रूप

और वेश में फिर जी उठता था। उसका बल-वीर्य-वीरता आदि सब कुछ फिर वैसा ही हो जाता था। राजन्! इस तरह मृत्यु का भय न रहने के कारण त्रिपुरनिवासी दानव सब लोकों को कष्ट पहुँचाने लगे। दुष्कर तप के प्रभाव से दानवगण संग्राम में अक्षय और अमर से हो उठे। देवता भी उनसे डरने और दबने लगे।

को देखकर पृथ्वी पर सिर रखकर प्रणाम करने लगे। भगवान् रुद्र ने उनको उठाया, उनका सत्कार किया, कुशल पूछी और मुसकाते हुए पूछा—कहो-कहो, तुम लोग कैसे आये?

उनके यों पूछने और आज्ञा देने से देवताओं के चित्त स्वस्थ हुए। वे बारम्बार नमोनम: कहकर इस प्रकार शङ्कर की स्तुति करने लगे—हे प्रभो, आप देवताओं के भी पूज्य देवता और दक्ष प्रजापति के यज्ञ को नष्ट करनेवाले हैं। प्रजापति लोग आपकी स्तुति करते हैं। आप सब लोगों की स्तुति के पात्र हैं। हम लोग आपकी ही स्तुति कर रहे हैं। हे शम्भु, सब लोग आपकी स्तुति करते हैं। आप नीललोहित, रुद्र, नीलग्रीव, शूलपाणि, अमोघ, मृगनयन, श्रेष्ठ शस्त्र से युद्ध करनेवाले, पूजनीय, शुद्ध, संहार करनेवाले कालरूप, क्रथन, दुर्निवार्य, क्राथ, ब्रह्म, ब्रह्मचारी, ईशान, अप्रमेय, नियन्ता, व्याघ्र-चर्म-धारी, तपोनिरत, पिङ्ग, व्रतधारी, कृत्तिवासा, कुमार के पिता, त्रिलोचन, श्रेष्ठ शस्त्र धारण करनेवाले, शरणागत के दुःख को दूर करनेवाले, ६० ब्राह्मणद्रोही असुरों को मारनेवाले, वनस्पतियों के पति, नरों के पति, गोपति, यज्ञपति, अमितौजा और सैन्यसहित हैं। आपको बारम्बार प्रणाम है। हे देव! हम लोग मन, वाणी और काया से आपकी शरण में आये हैं। आप हम पर प्रसन्न हों, हमारी रक्षा करें।

राजन्! भगवान् भवानीपति यह स्तुति सुनकर सब देवताओं और ऋषियों पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने स्वागत और अभिनन्दन के साथ देवताओं से कहा—तुम लोग अपने हृदय से ६३ भय को दूर करो। बतलाओ, तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारा कौन सा काम करूँ?

चौंतीसवाँ अध्याय

त्रिपुर-संहार के लिए रुद्र का अभिषेक

दुर्योधन कहते हैं—हे मद्रेश्वर! महेश्वर जब इस तरह पितरों, देवताओं और ऋषियों को अभय दे चुके तब लोकपितामह ब्रह्मा ने प्रणाम और सत्कार करके शङ्कर से कहा कि हे देवदेव! [ये तीनों प्रतापी असुर, दुर्ग-स्वरूप पुरों में रहकर तीनों लोकों पर आक्रमण करते हैं और कहते हैं कि हमारे सिवा और कौन प्रजापति या ईश्वर है? इसलिए हे रुद्र, उनको शीघ्र मारिए।] आपके अनुग्रह से ही मुझे यह प्रजापति की श्रेष्ठ पदवी मिली है। उन दुष्टों पर प्रसन्न होकर मैंने उन्हें ऐसा महान् वर दिया है। हे शङ्कर, विश्व की मर्यादा का उल्लङ्घन करनेवाले उन दुष्ट दानवों को आपके सिवा और कोई युद्ध में नहीं मार सकता। हे सब प्राणियों के ईश्वर, युद्ध में आपके सिवा और कोई उन दुष्टों के सामने नहीं ठहर सकता। हे देव! ये देवता आपकी शरण में आये हैं और उन असुरों को मारने के लिए आपसे प्रार्थना कर रहे हैं। हे वर देनेवाले, इन सब पर

कृपा करके संग्राम में उन दानवों को नष्ट कीजिए। आपकी कृपा से यह सारा जगत् सुखी हो। आप सबकी रक्षा करनेवाले शरण्य हैं, इसी से हम लोग आपकी शरण में आये हैं।

ईश्वर ने कहा—हे देवताओ, मैं समझता हूँ कि तुम्हारे शत्रुओं का नाश अवश्य होना चाहिए। किन्तु उन बली देवद्रोही दानवों को मैं अकेला नहीं मार सकता। इसलिए तुमको मैं अपना आधा तेज दूँगा। तुम सब लोग मिलकर युद्ध में महाबली शत्रुओं को मार डालो। सङ्घशक्ति या एकता में बड़ा बल होता है।

देवताओं ने कहा—हे महेश्वर, उनके तेज और बल को हम देख चुके हैं। हमारी समझ में उनका तेज और बल हम सबके तेज तथा बल से दूना होगा। महादेव ने कहा—एक तो वे पापी हैं, दूसरे तुम सबको सताते हैं, इसलिए सर्वथा मारे जाने के योग्य हैं। तुम लोग मेरा आधा तेज और बल लेकर अपने शत्रुओं का संहार करो। तब फिर देवताओं ने कहा—हे भूतनाथ, हे सुरेश्वर! यह तो ठीक है; किन्तु हम लोग आपके तेज और बल के आधे अंश को धारण नहीं कर सकेंगे। इस कारण आप ही हम सबका आधा तेज और बल लेकर शत्रुओं को मारिए। १०

शङ्कर ने कहा—हे देवताओ! तुम लोग यदि मेरे आधे तेज को नहीं धारण कर सकते तो फिर मैं ही तुम लोगों का आधा तेज लेकर उन असुरों को मारूँगा। हे मद्रेश्वर, भगवान् शूल-पाणि ने इतना कहकर देवताओं से उनका आधा तेज और बल ले लिया और पहले की अपेक्षा वे अधिक तेजस्वी और महाबली हो उठे। तभी से शङ्कर महादेव के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शङ्कर ने कहा—हे देवताओ! मेरे लिए एक दिव्य रथ, रथ के घोड़े, धनुष, बाण और सारथी चाहिए। इन चीज़ों का प्रबन्ध करो तो मैं शीघ्र ही तुम्हारे शत्रु दानवों को मारूँ। सब देवताओं ने 'बहुत अच्छा' कहकर, सोचकर, संसार की सब श्रेष्ठ वस्तुओं को एकत्र करके ऐसा दिव्य रथ कल्पित किया जैसा कि विश्वकर्मा बना सकते हैं। उन्होंने पर्वत, वन, द्वीप, पुर सहित और सब प्राणियों से पूर्ण इस पृथ्वीमण्डल को ही महादेव के लिए दिव्य रथ कल्पित किया।

मन्दराचल और दानवों का घर समुद्र इस रथ का अक्ष हुआ; महानदी भागीरथी जङ्घा हुई; २० रथ का सामान (परिवार) दिशा-विदिशाएँ हुईं; नक्षत्र-पुञ्ज और धृतराष्ट्र प्रमुख दस दिग्गज ईषा हुए; सत्ययुग और स्वर्ग युगकाष्ठ हुए; भुजगराज वासुकि इस रथ के कूबर और अपस्कर हुए; हिमालय, विन्ध्याचल, सूर्य-चन्द्र और उदयाचल-अस्ताचल पहिये तथा चक्राधार हुए; चक्र-रक्षक सप्तर्षिमण्डल हुआ; गङ्गा, सरस्वती और यमुना से युक्त आकाश धुर हुआ; जल और नदियाँ बन्धन-सामग्री हुईं; दिन-रात, कला-काष्ठा, ऋतुएँ और दीप्त ग्रह अनुकर्ष (रथ के नीचे की लकड़ी) हुए; तारागण रथ के रक्षक हुए; धर्म-अर्थ-काम त्रिवेणु (रथतल्प) हुए; फल-पुष्प-शोभित ओषधि और लताएँ घण्टा हुईं; दिन और रात रथ के पूर्वापर अङ्ग हुए; महोरग (बड़े-बड़े साँप) योक्त्र हुए; संवर्त्तक मेघ (दूसरा) युग और चर्म हुए; कालपृष्ठ, नहुष, कर्कोटक, धनञ्जय और अन्यान्य

नाग घोड़ों की अयाल के बन्धन हुए; दिशा-प्रदिशा, धर्म, सत्य, तप और अर्थ घोड़ों की लगाम हुई; सन्ध्या, धृति, मेधा, स्थिति, सन्नति और ग्रह-नक्षत्र आदि से शोभित नभोमण्डल बाहरी आव-

३१ रथ हुआ; लोकपाल इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर घोड़े हुए; पूर्व अमावास्या और पूर्व पौर्णिमा, उत्तर अमावास्या और उत्तर पौर्णिमा घोड़ों की योक्तृ (साज ?) हुईं; पूर्व अमावास्या में अधिष्ठित पितृगण युगकीलक हुए; मन रथ का उपस्थ (अधिष्ठान) हुआ; सरस्वती रथ का पिछला भाग हुई; वषट्कार चाबुक हुआ और गायत्री शीर्ष-बन्धन हुई। अब विष्णु, सोम और अग्नि इन तीन महात्माओं के योग से महेश्वर का बाण कल्पित हुआ। अग्नि उस बाण का शृङ्ग (डण्डा), सोम फलक और विष्णु उसकी पैनी धार हुए। प्राचीन समय में महात्मा ईशान के यज्ञ में जो संवत्सर कल्पित हुआ था वही इस समय महादेवजी का धनुष हुआ और सावित्री प्रत्यञ्चा हुई। कालचक्र से मूल्यवान् रत्नभूषित अभेद्य दिव्य वर्म निकला। मैनाक और मेरु पर्वत ध्वजयष्टि हुए और इन्द्रधनुष तथा बिजली समेत मेघमाला हवा में फहरा रही रङ्ग-बिरङ्गी पताकाएँ होकर ऋत्विजों के बीच प्रज्वलित अग्नि की भाँति भली लगीं। इस प्रकार उस अपूर्व रथ और धनुष आदि के कल्पित होने पर देवता लोग समस्त तेज को एकत्र देखकर विस्मित हुए। उन्होंने

४० महादेवजी को इसकी सूचना दी।

हे पुरुषसिंह! शत्रुओं के लिए भय को बढ़ानेवाला वह दिव्य रथ जब बन चुका तब शङ्कर ने उस रथ पर अपने दिव्य अस्त्र-शस्त्र रक्खे। उन्होंने आकाश को ध्वजा का दण्ड बनाकर उसमें अपने बैल को स्थापित किया। उग्ररूप ब्रह्मदण्ड, कालदण्ड, रुद्रदण्ड और सब ज्वर चारों ओर उस रथ की रक्षा करनेवाले नियुक्त हुए। पुराण और इतिहास सहित ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद पृष्ठरक्षक हुए; समस्त स्तोत्र आदि, दिव्य वाक्य, विद्या और वषट्कार पार्श्वचर हुए। ॐकार रथ के सामने शोभित हुआ। छहों ऋतुओं से विचित्र संवत्सर को दिव्य धनुष बनाकर शङ्कर ने अपनी अक्षय ध्रुव छाया को ही उस धनुष की अक्षय प्रत्यञ्चा (डोरी) कल्पित किया। भगवान् रुद्र स्वयं कालरूप हैं, संवत्सर उनका धनुष हुआ और रुद्र की कालरात्रि ही उस धनुष की सुदृढ़ प्रत्यञ्चा बनी।* अथर्व और अङ्गिरा इस रथ के चक्ररक्षक हुए।

दिव्य रथ की कल्पना हो चुकने पर अव्यय यज्ञवाहन हरि विष्णु भगवान् ही वह बाण बने। बाण की गाँसी अग्नि और चन्द्रमा कल्पित हुए। राजन्! यह सम्पूर्ण जगत् अग्नोषोम (अग्नि-चन्द्र)-मय कहा गया है। भगवान् विष्णु इस जगत् भर में व्याप्त हैं। भगवान् विष्णु कोई और नहीं, महातेजस्वी शङ्कर का ही स्वरूप हैं। इसी कारण उस असह्य धनुष

---

* मन्त्रों के ज्ञाता ऋषियों ने आगे दाहनी ओर ऋग्वेद को, बाईं ओर सामवेद को, पीछे दाहनी ओर यजुर्वेद को और बाईं ओर अथर्ववेद को स्थापित किया। यज्ञ की विधि जाननेवाले ऋषियों ने इस तरह उन वेदों को घोड़ों की जगह कल्पित किया और वे यज्ञभूमि में शोभित से दिखाई पड़ने लगे।

और डोरी के स्पर्श को असुर नहीं सह सके। शङ्कर ने उस बाण में अपना तीक्ष्ण, उग्र, अत्यन्त दुःसह क्रोध स्थापित किया। भृगु और अङ्गिरा की मन्यु से उत्पन्न अत्यन्त दुःसह क्रोधाग्नि उस बाण में प्रज्वलित हो उठा। नीललोहित, धूम्रवर्ण, कृत्तिवासा, अभयदाता, तेज की ज्वालाओं से मण्डित, भव, हज़ारों सूर्यों के समान प्रज्वलित, दुर्द्धर्ष, संहारकर्त्ता, विजेता, वेद के और ब्राह्मणों के द्रोहियों को मारनेवाले, अपने अङ्गों में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले, अद्भुतदर्शन शङ्कर ने चराचर जगत् को प्रकाशित और शोभायमान कर दिया। कवच और धनुष धारण किये हुए महात्मा भीमबल, भीमरूप शङ्कर ने दिव्य रथ सुसज्जित देखकर अपने हाथ में वह चन्द्र-अग्नि-विष्णुमय दिव्य बाण लिया। भगवान् महादेव वह बाण हाथ में लेकर दैत्य-दानवों को भयविह्वल और पृथ्वी एवं आकाश को कम्पित सा करते हुए युद्ध के वेष से उस रथ पर सवार हुए। उस समय महर्षिगण उनकी स्तुति और वन्दीजन वन्दना करने लगे। नृत्य-निपुण अप्सराएँ नाचने लगीं। खड्ग, धनुष और बाण से शोभित, वरदानी देवदेव शङ्कर हँसकर कहने लगे—हे देवताओ, अब मेरा सारथी कौन होगा? ५०

६०

हे राजेन्द्र, तब देवताओं ने कहा—हे महादेव, आप जिसे कहेंगे वही आपका सारथी होगा। तब महादेव ने उन लोगों से कहा—तुम लोग आप ही विचारकर शीघ्र ऐसे पुरुष को मेरा सारथी बनाओ, जो मुझसे श्रेष्ठ हो। यह सुनकर पितामह ब्रह्मा के निकट जाकर, प्रणाम करके, महर्षियों सहित देवताओं ने उन्हें प्रसन्न किया और कहा—हे देव, आपने दानवों के नाश के लिए जो यत्न बताया था वही हमने किया। शङ्कर ने प्रसन्न होकर हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। हम लोगों ने विचित्र सामान और शस्त्रों सहित दिव्य रथ भी उनके लिए बना लिया है। हमें अब यह नहीं सूझता कि उस श्रेष्ठ रथ को चलानेवाला सारथी कौन हो। इसलिए हे देवश्रेष्ठ, कोई सारथी आप बताइए। हे देव, आप पहले जो हमारा उपकार और सहायता करने का वचन दे चुके हैं, उसे अब पूर्ण कीजिए। यह दुर्द्धर्ष श्रेष्ठ रथ सदा जुता हुआ तैयार रहनेवाला और शत्रुओं को भगानेवाला है। पिनाकपाणि शङ्कर उसके योद्धा बनाये गये हैं, जो कि दानवों को भयभीत करते हुए उनका नाश करने को उद्यत हैं। हे श्रेष्ठ रथी, यह पर्वतों सहित पृथ्वीमण्डल ही महात्मा शङ्कर का रथ है। उसके घोड़े चारों वेद हैं। नक्षत्रवंश और वरूथ आदि अङ्ग उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। अब उसमें योद्धा की रक्षा और सहायता करनेवाले सारथी की कमी है। सब देवताओं से भी श्रेष्ठ महापुरुष ही उसमें सारथी का काम कर सकता है। सब देवता तो अपने-अपने तेज के द्वारा उस रथ में—रथ के योद्धा में—कवच, शस्त्र और धनुष आदि में प्रवेश कर चुके हैं। हमें तो उस रथ के उपयुक्त श्रेष्ठ सारथी आप ही देख पड़ते हैं। प्रभो! आप सब श्रेष्ठ गुणों से युक्त और सब देवताओं से श्रेष्ठ हैं। हे देव! आप ही इन वेद-उपनिषद्-रूपी घोड़ों के वेग को रोक सकते हैं। भगवन्! आपके ७०

प्रसाद से देवताओं के शत्रु मारे जायँगे। इस तरह कहकर देवताओं ने ब्रह्माजी को साष्टाङ्ग प्रणाम किया और सारथी बनने के लिए प्रार्थना की।

अपनी जय और शत्रुओं की हार के लिए प्रसन्न कर रहे देवताओं से ब्रह्मा ने कहा—हे देवताओ! तुम्हारा कहना ठीक है। मैं महात्मा शङ्कर का सारथी बनूँगा।

भगवान् ब्रह्मा हाथ में चाबुक लेकर ज्योंही रथ पर सवार हुए त्योंही घोड़ों ने माथा झुका दिया। तब पितामह ने रास के इशारे से वेदरूप घोड़ों को उठाया और महादेवजी से बैठने को
८० कहा। इस समय देवताओं ने शङ्कर की स्तुति की। तब रथ पर सवार वरदानी शङ्कर ने मुसकुराकर देवताओं से कहा कि अब तुम असुरों को मरा हुआ ही समझो। इसलिए शोक करना छोड़ो। महादेव की बात को सर्वथा सत्य मानकर देवता परम सन्तुष्ट हुए।

भगवान् नीलकण्ठ उस अनुपम रथ पर सवार होकर, देवताओं से घिर करके, आगे बढ़े। मांसभक्षक उनके दुर्द्धर्ष गण—जो कि चिल्लाते, चारों ओर दौड़ते और नाचते थे—उनकी पूजा कर रहे थे। तपस्वी महर्षि और देवता लोग महादेवजी की विजय-कामना करने लगे। जब अभयदाता महादेव युद्ध करने को चले तब सारा जगत् और देवता प्रसन्न हुए। ऋषि लोग महादेवजी का तेज बढ़ाते हुए
९० उनकी स्तुति करने लगे। गन्धर्वगण तरह-तरह के बाजे बजाने लगे। असुरों पर चढ़ाई करने को यात्रा करते ही महादेव ने ब्रह्मा की प्रशंसा करके कहा—"हे देव, घोड़ों को हाँककर रथ को वहाँ ले चलो जहाँ पर दानव हैं। आज मैं रण में शत्रुओं को मारूँगा। तुम मेरा बाहुबल देखो।" महाराज! तब ब्रह्माजी ने आकाश में स्थित प्रबल प्रतापी दानवों के पुरों को लक्ष्य करके मन और हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़ों को हाँक दिया। बस, वे वेदरूप घोड़े चल खड़े हुए। क्षण भर में उन्होंने शिव को दैत्यों के त्रिपुर के पास पहुँचा दिया।

लोक-पूजित रथ पर सवार भवानीपति जब दानवों के जीतने को आगे बढ़े तब ध्वजाग्र में स्थित बैल ने अपने शब्द से दिशाओं को गुँजा दिया। उस भयङ्कर शब्द को सुनकर बहुत से

दैत्य तो मर गये और बहुत से युद्ध के लिए तैयार हो गये। महादेव को क्रोधित देखकर सभी प्राणी डर गये; तीनों लोक कम्पित हो गये। बड़े भयङ्कर लक्षण प्रकट हुए। सोम, अग्नि, विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र के क्षोभ से तथा उस धनुष के सञ्चालन से वह रथ रुक गया। तब उस बाण से निकलकर नारायण ने, बैल का रूप रखकर, उस रथ का उद्धार किया। रथ के रुक जाने और शत्रुओं के गरजने से पराक्रमी महादेवजी घोड़ों की पीठ और बैल के माथे पर ठहरकर सिंहनाद करते-करते दानवों के पुर को देखने लगे। उन्होंने घोड़ों के स्तन अलग करके बैल के खुरों को बीच से चीर दिया। तभी से घोड़ों के स्तन नहीं होते और बैलों (गोजाति) के खुर बीच से फटे हुए होते हैं। १००

शिव ने धनुष पर डोरी चढ़ाकर उस पर, पाशुपत अस्त्र से युक्त करके, वह बाण चढ़ाया और त्रिपुर का स्मरण किया। रुद्र जिस समय इस तरह धनुष चढ़ाकर खड़े हुए उसी समय वे तीनों पुर, जो अलग-अलग थे, एक में मिल गये। तीनों पुरों के एक में मिल जाने पर देवगण बहुत हर्षित हुए। उस समय देवगण, सिद्धगण और ऋषि लोग महेश्वर की स्तुति और जय-जयकार करने लगे। असह्य तेजवाले, अनिर्देश्य, श्रेष्ठ रूप धारण किये हुए और असुरों को मारने के लिए उद्यत शङ्कर के सामने वे तीनों पुर उसी समय एकत्र स्थित होकर प्रकट हुए। पिनाकपाणि भगवान् ने त्रिपुर को सामने देखकर अपना दिव्य धनुष खींचा और उस पर त्रैलोक्य का सारांश-स्वरूप वह विष्णुमय बाण चढ़ाकर छोड़ दिया। राजन् ! महेश्वर ने इस तरह एक ही बाण से दैत्यों सहित उस दुर्भेद्य त्रिपुर को नष्ट कर दिया। बाण के तेज की आग से वह त्रिपुर जल गया। दैत्यों के महान् आर्तनाद से गूँज रहा त्रिपुर पश्चिम सागर में गिरकर नष्ट हो गया। हे मद्रराज ! त्रैलोक्य का हित चाहनेवाले शङ्कर ने कुपित होकर इस तरह त्रिपुर सहित सब दानवों को नष्ट कर दिया। भगवान् रुद्र के क्रोध से उत्पन्न वह आग शङ्कर के "भस्म कर" यों कहने के कारण त्रिपुर को भस्म करने के बाद भी शान्त नहीं हुई और त्रिभुवन को भस्म करने लगी। प्रलयकाल की आग के समान प्रचण्ड उस आग को फिर त्रिभुवन को भस्म करने के लिए तैयार देखकर शङ्कर ने कहा—"बस, अब लोकों को भस्म न करना।" शङ्कर के यों कहते ही आग शान्त हो गई। तब महर्षियों सहित सब लोक प्रकृतिस्थ हुए। देवता और ऋषि लोग श्रेष्ठ वचनों से शङ्कर की स्तुति करने लगे। इसके उपरान्त कामना पूर्ण हो जाने से ब्रह्मा सहित सब देवता और ऋषि आदि, प्रसन्नचित्त शङ्कर की आज्ञा पाकर, अपने-अपने लोक को चले गये। १०

हे मद्रराज ! इस तरह लोक-पितामह ब्रह्मा ने देवदेव शङ्कर का रथ हाँका था। इसलिए आप भी वीर कर्ण के सारथी का काम कीजिए। गुणों में, बल में, रूप में, अस्त्रज्ञान और अन्य सब बातों में आप न केवल कर्ण से ही, बल्कि कृष्ण और अर्जुन से भी बढ़कर हैं। ये १२०

कर्ण युद्ध में शङ्कर के समान हैं, और आप भी नीतिज्ञान आदि सब बातों में ब्रह्मा के तुल्य हैं। आप दोनों मिलकर मेरे शत्रुओं को सहज में जीत सकते हैं। हे शल्य, आप वही कीजिए जिसमें कृष्ण जिनके सारथी हैं उन अर्जुन को ये कर्ण संग्राम में बलपूर्वक नष्ट कर सकें। हे महीपाल! मेरा राज्य, सुख, जीवन और कर्ण के द्वारा जय सब आपकी ही सहायता पर निर्भर है। आप मेरा हित कीजिए। हे शत्रुदमन, मेरा प्रिय करने के लिए आप कर्ण के सारथी बनिए।

हे मद्रराज, मैं एक और इतिहास आपके आगे कहता हूँ। यह इतिहास एक धर्मज्ञ ब्राह्मण ने मेरे पिता के आगे कहा था। हे शल्य, आप कारण-कार्य-प्रयोजन के तत्त्व से युक्त यह विचित्र इतिहास सुनकर मेरा कहा मान लीजिए; अधिक सोच-विचार न कीजिए। भार्गव-कुल में उत्पन्न महातपस्वी जमदग्नि ऋषि के राम (परशुराम) नाम के एक पुत्र महातेजस्वी और श्रेष्ठ गुणों से अलङ्कृत थे। उन्होंने अस्त्र प्राप्त करने के लिए शुद्धचित्त जितेन्द्रिय होकर नियमपूर्वक तीव्र तप करके महादेव को प्रसन्न किया। उनकी भक्ति और शान्ति से महादेव सन्तुष्ट हुए। लोकों का कल्याण करनेवाले शङ्कर ने उनके हृदय का भाव जानकर उनके आगे प्रकट होकर कहा—हे राम! तुम्हारा कल्याण हो। मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ और मुझे तुम्हारी अभिलाषा अच्छी तरह मालूम है। तुम अपने चित्त को पवित्र बनाओ। पवित्र होते ही मैं तुम्हें, इच्छा के अनुसार, सब अस्त्र दे दूँगा। हे भार्गव! जो व्यक्ति अयोग्य और असमर्थ होता है उसे दिव्य अस्त्र अपने तेज से भस्म कर देते हैं। ३०

शूलपाणि महात्मा शङ्कर के यों कहने पर परशुराम ने उन्हें साष्टाङ्ग प्रणाम किया और कहा—हे देवेश, मैं आपका सेवक हूँ। जब आप मुझे अस्त्र ग्रहण करने के योग्य समझिएगा तभी अस्त्र देकर कृतार्थ कीजिएगा। राजा दुर्योधन शल्य से कहते हैं—अब महात्मा भार्गव फिर तप करने लगे। उन्होंने व्रत-नियम आदि का पालन करते हुए पूजा उपहार बलि-हवन-मन्त्रपाठ आदि के द्वारा कई वर्ष तक शङ्कर की आराधना की। तब महादेवजी परशुराम पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पार्वतीजी के आगे बारम्बार परशुराम के गुणों का वर्णन करके कहा—"ये दृढ़-व्रतधारी परशुराम मेरे परम भक्त हैं।" हे शत्रुदमन शल्य! भगवान् शङ्कर ने इस तरह प्रसन्न होकर कई बार देवताओं और पितरों के आगे परशुराम के गुणों का बखान किया।

महाराज! इसी अवसर पर दैत्य महाबली हो उठे। दर्प और मोह के वश होकर वे देवताओं को सताने लगे। तब दैत्यों के संहार का निश्चय करके सब देवताओं ने शत्रुओं के विनाश का उद्योग किया; परन्तु किसी तरह वे दैत्यों को परास्त न कर सके। उस समय सब देवता उमापति महेश्वर के निकट गये और भक्तिपूर्वक उन्हें प्रसन्न करके कहने लगे—"हे देवदेव, आप हमारे शत्रुओं को मारिए।" शङ्कर ने देवताओं से उनके शत्रुओं का विनाश करने की प्रतिज्ञा की और परशुराम को बुलाकर कहा—"हे भार्गव, सब लोकों का कल्याण और मेरा प्रिय १४०

करने के लिए तुम सम्पूर्ण देवताओं के शत्रु दानवों का विनाश करो।" शिव की आज्ञा सुनकर परशुराम ने कहा—"हे देवेश, मैं तो अस्त्रविद्या नहीं जानता और दानवगण हैं अस्त्रविद्या में निपुण तथा प्रचण्ड योद्धा। फिर मैं किस तरह उन्हें मार सकूँगा?" महादेव ने परशुराम से कहा—हे भार्गव! तुम मेरी आज्ञा से जाओ, मेरी कृपा से देवताओं के शत्रुओं को मार सकोगे। मैं कहता हूँ, सब शत्रुओं को जीतकर तुम सब अस्त्रों और गुणों के अधिकारी बनोगे।

हे शल्य! शङ्कर के ये वचन सुनकर और उन्हें पूर्ण रूप से मान करके, स्वस्त्ययन आदि के उपरान्त, पराक्रमी परशुराम दानवों को मारने के लिए चल पड़े। अब भार्गव ने दर्प और बल से युक्त देवद्रोही दानवों को युद्ध के लिए ललकारकर सूचना दी कि मुझे शङ्कर ने तुम्हारे नाश के लिए भेजा है। फिर उन्हें वज्र के समान असह्य बाणों के प्रहार से ही जीत लिया। युद्ध में दानवों के प्रहारों से परशुराम घायल हो गये थे; किन्तु शङ्कर के हाथ फेरते ही उनके सब घाव अच्छे हो गये। भगवान् शङ्कर ने परशुराम के इस कार्य से प्रसन्न होकर उन्हें बहुत से वर दिये। देवदेव शूलपाणि ने प्रीतिपूर्वक परशुराम से कहा—हे भृगुनन्दन, तुमने लगातार १५० शस्त्र-प्रहार से पीड़ित होकर भी दानवों के अस्त्रों को सहकर वह काम किया है जिसे मनुष्य नहीं कर सकते। तुम्हारे इस अलौकिक कार्य से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। तुम अब अपनी इच्छा के अनुसार मुझसे सब दिव्य अस्त्र ले लो।

दुर्योधन कहते हैं—इसके बाद परशुराम ने मनमाने दिव्य अस्त्र और अन्य अनेक दुर्लभ वर शिव से पाकर उन्हें साष्टाङ्ग प्रणाम किया। उनसे आज्ञा पाकर वे अपने आश्रम को गये। महाराज! महर्षि ने इस प्राचीन इतिहास का वर्णन मेरे पिता के आगे किया था। उन्हीं महातेजस्वी परशुराम ने प्रसन्न होकर वीर कर्ण को वे सब अस्त्र दिये और धनुर्वेद बता दिया। महाराज! इन वीर कर्ण में किसी तरह का दोष नहीं है। इन्हें सूत ने पाला है, इसी से ये सूतपुत्र कहलाते हैं। परशुराम ने इन्हें जन्म से विशुद्ध जानकर ही दिव्य अस्त्र दिये हैं। मुझे तो ये कोई क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न देवकुमार से प्रतीत होते हैं। अवश्य ही कोई देवबाला या क्षत्रियकन्या इन्हें इस तरह छोड़ गई होगी, जिसमें इनके कुल का पता न चले। हे शल्य! चाहे जिस तरह देखो, ये कर्ण किसी तरह सूतकुल के लड़के नहीं जान पड़ते। आप ही सोचिए, कहीं मृगी के गर्भ से सिंह पैदा होता है? जन्म से ही कवच-कुण्डल धारण किये, विशालबाहु, सूर्य के समान तेजस्वी, शत्रुदमन कर्ण को एक साधारण सूत की स्त्री कैसे उत्पन्न कर सकती है? इनकी भुजाओं को तो देखिए, कैसी विशाल, मोटी, हाथी की सूँड़ के समान हैं। इनका चौड़ा छाता देखिए, जो संग्राम में सभी शस्त्रों का वार सहने में समर्थ है। ये परशुराम के शिष्य, प्रतापी, वीरश्रेष्ठ, दानी, वैकर्तन कर्ण कोई साधारण पुरुष नहीं हैं। १६२

तब महामति और अस्त्रविद्या में निपुण राजा दुर्योधन ने मेघ-गर्जन के समान गम्भीर स्वर से उस स्थान को प्रतिध्वनित करके फिर शल्य से कहा—हे वीर, यह तो आप जानते ही हैं कि आज वीरश्रेष्ठ कर्ण अर्जुन से युद्ध करके जय-पराजय का फ़ैसला कर डालना चाहते हैं। इसलिए आप आज कर्ण का रथ हाँकिए। कर्ण की इच्छा है कि पहले अन्य योद्धाओं को मारकर पीछे अर्जुन का वध करें। इसी लिए मैं बारम्बार आपसे उनका रथ हाँकने की प्रार्थना करता हूँ। आशा है, आप मेरे इस अनुरोध को न टालेंगे और जैसे कृष्ण सारथी बनकर अर्जुन की रक्षा करते हैं वैसे ही आप भी कर्ण के सारथी होकर सब तरह उनकी रक्षा करें।

सञ्जय कहते हैं—महारथी शल्य ने अत्यन्त प्रसन्न होकर दुर्योधन को गले से लगा ४० लिया और कहा—प्रियदर्शन महाराज, अगर आप ऐसा ही समझते हैं तो मैं आपके प्रिय हर एक काम को करने के लिए तैयार हूँ। हे भरतश्रेष्ठ! मुझे आप जिस काम को करने के योग्य समझें, उस काम को मैं सब तरह मन लगाकर करने के लिए तैयार हूँ। किन्तु युद्ध में रथ हाँकते समय, हिताभिलाषी होकर, मैं प्रिय या अप्रिय जो कुछ कर्ण से कहूँ उसे आप और कर्ण दोनों ही सहन कर लें।

कर्ण ने कहा—हे मद्रराज! लोकपितामह ब्रह्मा ने जैसे शङ्कर का हित किया था और श्रीकृष्ण जैसे अर्जुन के हितचिन्तक हैं वैसे ही आप भी हमारे हितचिन्तक रहें।

शल्य ने कहा—हे कर्ण! आर्य लोग दूसरे के द्वारा की गई अपनी निन्दा और स्तुति की भी परवा नहीं करते, तब पराई निन्दा और स्तुति के लिए तो कुछ कहना ही नहीं है। सज्जन आर्य पुरुष अपने मुँह अपनी बड़ाई और पर-निन्दा तो कभी करते ही नहीं। किन्तु हे विद्वन्! तुम्हारे विश्वास के लिए मैं इस समय अपनी प्रशंसा से युक्त यथार्थ वचन कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो। मातलि सारथी की तरह मैं इन्द्र का सारथी होने की योग्यता रखता हूँ। मैं एकाग्रता में, घोड़ों को हाँकने के कौशल में, घोड़ों के भविष्य दोष को जानने में, उस दोष को दूर करने की जानकारी में तथा अश्वचिकित्सा और अश्वविज्ञान में अपने को अद्वितीय समझता हूँ। हे वीर कर्ण! तुम जब अर्जुन से युद्ध करोगे तब मैं तुम्हारा रथ हाँकूँगा। अब तुम अपने हृदय ४८ से इस चिन्ता को दूर कर दो।

महाभारत के स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) जो सज्जन हमारे यहाँ महाभारत के स्थायी ग्राहकों में अपना नाम और पता लिखा देते हैं उन्हें महाभारत के अङ्कों पर २०) सैकड़ा कमीशन काट दिया जाता है। अर्थात् ११) प्रति अङ्क के बजाय स्थायी ग्राहकों को १) में प्रति अङ्क दिया जाता है। ध्यान रहे कि डाकखर्च स्थायी और फुटकर सभी तरह के ग्राहकों को अलग देना पड़ेगा।

(२) साल भर या छः मास का मूल्य १२) या ६), दो आना प्रति अङ्क के हिसाब से रजिस्ट्री खर्च सहित १३॥) या ६॥।) जो सज्जन पेशगी मनीआर्डर-द्वारा भेज देंगे, केवल उन्हीं सज्जनों को डाकखर्च नहीं देना पड़ेगा। महाभारत की प्रतियाँ राह में गुम न हो जायँ और ग्राहकों की सेवा में वे सुरक्षित रूप में पहुँच जायँ, इसी लिए रजिस्ट्री द्वारा भेजने का प्रबन्ध किया गया है।

(३) इसके प्रत्येक खंड के लिए अलग से बहुत सुन्दर जिल्दें भी सुनहले नाम के साथ तैयार कराई जाती हैं। प्रत्येक जिल्द का मूल्य ।॥) रहता है परन्तु स्थायी ग्राहकों को वे ॥) ही में मिलती हैं। जिल्दों का मूल्य महाभारत के मूल्य से बिलकुल अलग रहता है।

(४) स्थायी ग्राहकों के पास प्रतिमास प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही बिना विलम्ब वी० पी० द्वारा भेजा जाता है। बिना कारण वी० पी० लौटाने से उनका नाम ग्राहक-सूची से अलग कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकों को चाहिए कि जब किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करें तो कृपा कर अपना ग्राहक-नम्बर जो कि पता की स्लिप के साथ छपा रहता है और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक-नम्बर के लिखे हज़ारों ग्राहकों में से किसी एक का नाम ढूँढ़ निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और पत्र की कार्रवाई होने में देरी होती है। क्योंकि एक ही नाम के कई-कई ग्राहक हैं। इसलिए सब प्रकार का पत्र-व्यवहार करते तथा रुपया भेजते समय अपना ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

(६) जिन ग्राहकों को अपना पता सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो, अथवा पते में कुछ भूल हो, उन्हें कार्यालय को पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक-नम्बर भी लिखना चाहिए। जिससे उचित संशोधन करने में कोई दिक़्क़त न हुआ करे। यदि किसी ग्राहक को केवल एक दो मास के लिए ही पता बदलवाना हो, तो उन्हें अपने हलके के डाकख़ाने से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(७) ग्राहकों से सविनय निवेदन है कि नया आर्डर या किसी प्रकार का पत्र लिखने के समय यह ध्यान रक्खें कि लिखावट साफ़ साफ़ हो। अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़ साफ़ हिन्दी या अँगरेज़ी में लिखना चाहिए ताकि अङ्क या उत्तर भेजने में दुबारा पूछ-ताछ करने की ज़रूरत न हो। "हम परिचित ग्राहक हैं" यह सोच कर किसी को अपना पूरा पता लिखने में लापरवाही न करनी चाहिए।

(८) यदि कोई महाशय मनी-आर्डर से रुपया भेजें, तो 'कूपन' पर अपना पता-ठिकाना और रुपया भेजने का अभिप्राय स्पष्ट लिख दिया करें, क्योंकि मनीआर्डरफ़ार्म का यही अंश हमको मिलता है।

सब प्रकार के पत्रव्यवहार का पता—

मैनेजर महाभारत-विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

शुभ संवाद ! लाभ की सूचना !!

महाभारत-मीमांसा

कम मूल्य में

राव बहादुर चिन्तामणि विनायक वैद्य एम० ए०, एल्-एल० बी०, मराठी और अँगरेज़ी के नामी लेखक हैं। यह ग्रन्थ आप ही का लिखा हुआ है। इसमें १८ प्रकरण हैं और उनमें महाभारत के कर्ता (प्रणेता), महाभारत-ग्रन्थ का काल, क्या भारतीय युद्ध काल्पनिक है ?, भारतीय युद्ध का समय, इतिहास किनका है ?, वर्ण-व्यवस्था, सामाजिक और राजकीय परिस्थिति, व्यवहार और उद्योग-धन्धे आदि शीर्षक देकर पूरे महाभारत ग्रन्थ की समस्याओं पर विशद रूप से विचार किया गया है।

काशी के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् श्रीयुक्त बाबू भगवानदासजी, एम० ए० की राय में महाभारत को पढ़ने से पहले इस मीमांसा को पढ़ लेना आवश्यक है। आप इस मीमांसा को महाभारत की कुञ्जी समझते हैं। इसी से समझिए कि ग्रन्थ किस कोटि का है। इसका हिन्दी-अनुवाद प्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय पण्डित माधवरावजी सप्रे, बी० ए०, का किया हुआ है। पुस्तक में बड़े आकार के ४०० से ऊपर पृष्ठ हैं। साथ में एक उपयोगी नक़शा भी दिया हुआ है जिससे ज्ञात हो कि महाभारत-काल में भारत के किस प्रदेश का क्या नाम था।

हमारे यहाँ महाभारत के ग्राहकों के पत्र प्राय: आया करते हैं जिनमें स्थल-विशेष की शंकाएँ पूछी जाती हैं। उन्हें समयानुसार यथामति उत्तर दिया जाता है। किन्तु अब ऐसी शंकाओं का समाधान घर बैठे कर लेने के लिए हमने इस महाभारत-मीमांसा ग्रन्थ को पाठकों के पास पहुँचाने की व्यवस्था का संकल्प कर लिया है। पाठकों के पास यदि यह ग्रन्थ रहेगा और वे इसे पहले से पढ़ लेंगे तो उनके लिए महाभारत की बहुत सी समस्याएँ सरल हो जायँगी। इस मीमांसा का अध्ययन कर लेने से उन्हें महाभारत के पढ़ने का आनन्द इस समय की अपेक्षा अधिक मिलने लगेगा। इसलिए महाभारत के स्थायी ग्राहक यदि इसे मँगाना चाहें तो इस सूचना को पढ़ कर शीघ्र मँगा लें। उनके सुभीते के लिए हमने इस ४) के ग्रंथ को केवल २॥) में देने का निश्चय कर लिया है। पत्र में अपना पूरा पता-ठिकाना और महाभारत का ग्राहक-नंबर अवश्य होना चाहिए। **समय बीत जाने पर** महाभारत-मीमांसा **रिआयती मूल्य में न मिल सकेगी।** प्रतियाँ हमारे पास अधिक नहीं हैं।

मैनेजर बुकडिपो—**इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।**

आवश्यक सूचनायें

(१) हमने प्रथम खण्ड की समाप्ति पर उसके साथ एक महाभारत-कालीन भारतवर्ष का प्रामाणिक सुन्दर मानचित्र भी देने की सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में हम ग्राहकों को सूचित करते हैं कि पूरा महाभारत समाप्त हो जाने पर हम प्रत्येक ग्राहक को एक परिशिष्ट अध्याय बिना मूल्य भेजेंगे जिसमें महाभारत-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण खोज, साहित्यिक आलोचना, चरित्र-चित्रण तथा विश्लेषण आदि रहेगा। उसी परिशिष्ट के साथ ही मानचित्र भी लगा रहेगा जिसमें पाठकों को मानचित्र देख कर उपरोक्त बातें पढ़ने और समझने आदि में पूरी सुविधा रहे।

(२) महाभारत के प्रेमी ग्राहकों को यह शुभ समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कानपुर, उन्नाव, काशी (रामनगर), कलकत्ता, ग़ाज़ीपुर, बरेली, मथुरा (वृन्दावन), जोधपुर, बुलन्दशहर, प्रयाग और लाहौर आदि में ग्राहकों के घर पर ही महाभारत के अङ्क पहुँचाने का प्रबन्ध किया है। अब तक ग्राहकों के पास यहीं से सीधे डाक-द्वारा प्रतिमास अङ्क भेजे जाते थे जिसमें प्रति अङ्क तीन चार आना ख़र्च होता था पर अब हमारा नियुक्त किया हुआ एजेंट ग्राहकों के पास घर पर जाकर अङ्क पहुँचाया करेगा और अङ्क का मूल्य भी ग्राहकों से वसूल कर ठीक समय पर हमारे यहाँ भेजता रहेगा। इस अवस्था पर ग्राहकों को ठीक समय पर प्रत्येक अङ्क सुरक्षित रूप में मिल जाया करेगा और वे डाक, रजिस्टरी तथा मनीआर्डर इत्यादि के व्यय से बच जायँगे। इस प्रकार उन्हें प्रत्येक अङ्क केवल एक रुपया मासिक देने पर ही घर बैठे मिल जाया करेगा। यथेष्ट ग्राहक मिलने पर अन्य नगरों में भी शीघ्र ही इसी प्रकार का प्रबन्ध किया जायगा। आशा है जिन स्थानों में इस प्रकार का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ के महाभारतप्रेमी सज्जन शीघ्र ही अधिक संख्या में ग्राहक बन कर इस अवसर से लाभ उठावेंगे। और जहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो चुकी है वहाँ के ग्राहकों के पास जब एजेंट अङ्क लेकर पहुँचे तो ग्राहकों को रुपया देकर अङ्क ठीक समय पर ले लेना चाहिए जिसमें उन्हें ग्राहकों के पास बार बार आने जाने का कष्ट न उठाना पड़े। यदि किसी कारण उस समय ग्राहक मूल्य देने में असमर्थ हों तो अपनी सुविधानुसार एजेंट के पास से जाकर अङ्क ले आने की कृपा किया करें।

(३) हम हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जनों से एक सहायता की प्रार्थना करते हैं। वह यही कि हम जिस विराट् आयोजन में संलग्न हुए हैं आप लोग भी कृपया इस पुण्य-पर्व में सम्मिलित होकर पुण्य-सञ्चय कीजिए, अपनी राष्ट्र-भाषा हिन्दी का साहित्य-भाण्डार पूर्ण करने में सहायक हूजिए और इस प्रकार सर्वसाधारण का हित-साधन करने का उद्योग कीजिए। सिर्फ़ इतना ही करें कि अपने दस-पाँच हिन्दी-प्रेमी इष्ट-मित्रों में से कम से कम दो स्थायी ग्राहक इस वेद-तुल्य सर्वाङ्गसुन्दर महाभारत के और बना देने की कृपा करें। जिन पुस्तकालयों में हिन्दी की पहुँच हो वहाँ इसे ज़रूर मँगवावें। एक भी समर्थ व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसके घर यह पवित्र ग्रन्थ न पहुँचे। आप सब लोगों के इस प्रकार साहाय्य करने से ही यह कार्य्य अग्रसर होकर समाज का हितसाधन करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

रंगीन चित्रों की सूची

कर्ण बहुत संतुष्ट होकर अपने पहले सारथी ... ... कहने लगे ... ...
झटपट मेरा रथ तैयार करो—पृ० २८०९

छत्तीसवाँ अध्याय

कर्ण की युद्ध-यात्रा

दुर्योधन ने कहा—हे वीर कर्ण, घोड़ों के चलाने में कृष्ण से भी श्रेष्ठ ये मद्रराज शल्य वैसे ही तुम्हारा रथ हाँकेंगे, जैसे मातलि इन्द्र का रथ हाँकते हैं। तुम रथी योद्धा और शल्य सारथी, दोनों वीरश्रेष्ठ रथ पर बैठकर अवश्य ही पाण्डवों को परास्त कर सकोगे।

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! रात बीतने पर राजा दुर्योधन ने महारथी शल्य से कहा—हे मद्रराज! अब आप संग्राम में कर्ण के रथ को हाँकिए। आपके द्वारा सुरक्षित कर्ण अवश्य ही अर्जुन को जीत लेंगे। महाराज! दुर्योधन की बात मानकर महावीर शल्य अपने रथ पर बैठकर कर्ण के पास पहुँचे। उस समय महाबली कर्ण बहुत सन्तुष्ट होकर अपने पहले सारथी से बारम्बार कहने लगे—हे सूत, तुम झटपट मेरा रथ तैयार करो। तब सारथी विजयदायक और गन्धर्वनगर के समान सुसज्जित महारथ को विधिपूर्वक सब सामग्री से सजा करके ले आया, और "आपका भला हो, जय हो" यों कहकर उसने रथ तैयार होने की सूचना कर्ण को दी। वेदपाठी पुरोहित पहले ही स्वस्त्ययन, नीराजन आदि रथ के संस्कार कर चुके थे। इस समय श्रेष्ठ रथी कर्ण, सूर्यदेव की उपासना और रथ की पूजा-प्रदक्षिणा आदि करके, समीप ही स्थित मद्रराज शल्य से बोले—आप रथ पर सवार हों। तब सिंह जैसे पर्वत पर चढ़े वैसे ही महातेजस्वी शल्य कर्ण के उस

दुर्द्धर्ष, बढ़िया और विशाल रथ पर सवार हुए। उस रथ पर शल्य के सवार हो चुकने पर कर्ण भी, बिजली से शोभित मेघ के ऊपर सूर्य की तरह, उस पर बैठ गये। सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी वे दोनों महापराक्रमी एक ही रथ पर बैठकर आकाशमण्डल में एक साथ मेघ पर स्थित सूर्य और अग्नि (बिजली) के समान शोभायमान हुए। यज्ञशाला में ऋत्विक् १०

ब्राह्मण जैसे इन्द्र और अग्नि की स्तुति करते हैं वैसे ही वन्दीजन उन प्रभापुञ्ज-पूजित दोनों वीरों की स्तुति करने लगे। घोर धनुष को खींच रहे और बाणरूप किरणों से परिपूर्ण वीर कर्ण उस शल्ययुक्त रथ पर मन्दराचल पर विराजमान मण्डल-मण्डित सूर्यदेव के समान जान पड़ने लगे।

युद्ध के लिए रथ पर आरूढ़ महातेजस्वी कर्ण से अब राजा दुर्योधन कहने लगे—हे वीरश्रेष्ठ कर्ण, महाबली भीष्म और द्रोण युद्ध में जो काम नहीं कर सके हैं वही कठिन काम तुम इस समय सब धनुर्द्धर वीरों के सामने कर दिखाओ। मेरा विश्वास था कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य अवश्य ही भीम और अर्जुन को मार लेंगे; किन्तु हे वीर, महासंग्राम में उन दोनों ने वह वीर-कर्म नहीं किया। अब तुम दूसरे वज्रपाणि इन्द्र की तरह वही काम कर दिखाओ। या तो तुम धर्मराज युधिष्ठिर को जीते ही पकड़ लो, या अर्जुन, भीमसेन, २० नकुल और सहदेव को मार डालो। हे पुरुषश्रेष्ठ! जाओ, तुम्हारा कल्याण हो, तुम विजय प्राप्त करो। तुम युधिष्ठिर की सारी सेना का संहार कर डालो।

राजन्! दुर्योधन के यों कह चुकने पर कौरव दल में हज़ारों तुरही और नगाड़े बजने लगे। ऐसा जान पड़ा, मानों आकाश में मेघ गरज रहे हों। रथ पर स्थित श्रेष्ठ रथी कर्ण ने दुर्योधन की बातों को स्वीकार करके युद्धनिपुण शल्य से कहा—हे महाबाहो, मेरे घोड़ों को आगे बढ़ाकर शत्रुसेना में ले चलो। मैं अभी अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर और नकुल-सहदेव (सब पाण्डवों) को मारना चाहता हूँ। आज मैं सैकड़ों-हज़ारों कङ्कपत्रयुक्त विकट बाण लगातार बरसाऊँगा और अर्जुन मेरे बाहुबल को देखेंगे। हे शल्य, आज मैं पाण्डवों के विनाश और दुर्योधन की जय के लिए अत्यन्त तीक्ष्ण बाण चलाऊँगा।

राजन्! कर्ण के वचन सुनकर शल्य ने कहा—हे सूतपुत्र! तुम महावीर्यशाली, सब अस्त्रों के ज्ञाता, महाबली, महाधनुर्द्धर, महाभाग, महाबाहु, रण से कभी न हटनेवाले, सत्य-पराक्रमी, अजेय और साक्षात् इन्द्र के हृदय में भय का सञ्चार कर दे सकनेवाले असाधारण योद्धा पाण्डवों का अपमान कैसे कर रहे हो? हे कर्ण! तुम जिस समय वज्रपात की कड़क सा भयङ्कर, अर्जुन के गाण्डीव धनुष का, शब्द सुनोगे उस समय ऐसी बातें न कहोगे। जब भीमसेन को युद्ध में गजसेना का संहार करते—हाथियों के दाँत तोड़-तोड़कर उन्हें मार-मार-३० कर पृथ्वी पर गिराते—देखोगे तब ऐसी बातें मुँह से न निकालोगे। जब देखोगे कि संग्राम में राजा युधिष्ठिर और नकुल-सहदेव तीक्ष्ण बाण बरसाकर शत्रुओं को मारते हुए आकाश में बादलों की सी छाया फैला रहे हैं तब ऐसी बातें न करोगे। जब अन्य दुर्द्धर्ष फुर्तीले राजाओं को बाण बरसाकर कौरव-सेना का नाश करते देखोगे तब यों नहीं कहोगे।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, वीर कर्ण ने शल्य की इन बातों की परवा न करके ३३ कहा—अच्छा, अभी सब देख लेना।

सैंतीसवाँ अध्याय

कर्ण के रवाना होते समय अशकुन होने का वर्णन। कर्ण और शल्य की परस्पर कहा-सुनी

सञ्जय ने कहा—राजन्, महावीर्यशाली कर्ण को युद्ध करने के लिए तैयार देखकर चारों ओर कौरव दल के लोग प्रसन्न होकर कोलाहल करने लगे। उसके बाद दुन्दुभी भेरी आदि बाजे बजाते और गरजते हुए आपके दल के लोग मरने या मारने का निश्चय करके शिविर से निकले। कर्ण और अन्य रथी लोग प्रसन्नतापूर्वक जिस समय युद्ध के लिए चले उस समय तरह-तरह के उत्पात होने लगे। सारी पृथ्वी भयानक शब्द के साथ हिलने लगी। सूर्य आदि सातों महाग्रह युद्ध के लिए निकलते दिखाई पड़े अर्थात् वे परस्पर युद्ध करने लगे। उल्कापात होने लगा। दारुण दिग्दाह दिखाई पड़ा। वज्र गिरने लगे। भयानक आँधी चलने लगी। बहुत से मृग और पक्षी, महाभय की सूचना देते हुए, आपकी सेना के बायें भाग में दिखाई पड़ने लगे। चलते समय कर्ण के रथ के घोड़े पृथ्वी पर गिर पड़े। अन्तरिक्ष से हड्डियों की वर्षा होने लगी। सब शस्त्र आप ही आप प्रज्वलित अथवा गर्म हो उठे। आपकी सेना के सब वाहन रोने लगे। ये और अन्य बहुत से दारुण उत्पात कौरवों के विनाश की सूचना देते हुए दिखाई पड़ने लगे। किन्तु दैव-मोहित कौरवों और उनके दल के राजाओं ने इन उत्पातों का कुछ ख़याल न किया। वे लोग कर्ण की यात्रा के समय जयजयकार करने लगे। कौरवों ने समझ लिया कि बस अब पाण्डवों को जीत लिया। १०

राजन्! शत्रुदल के वीरों का संहार करनेवाले, महारथी, दानी, सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी कर्ण ने उस समय अपने से अधिक वीर्यशाली भीष्म और द्रोण के परिणाम को सोचकर, अर्जुन का वह (भीष्म-द्रोण-वध रूप) अद्वितीय दुष्कर कर्म देखकर, मान और दर्प से जलकर, क्रोध से प्रज्वलित-से होकर, बारम्बार साँसें लेते हुए इस तरह कहा—हे शल्य, रथ पर स्थित सशस्त्र मैं कुपित वज्रपाणि इन्द्र से भी नहीं डरता। भीष्म आदि प्रधान योद्धाओं को इस तरह रणभूमि में मृत्यु-शय्या पर पड़े देखकर भी मेरा धैर्य डिगनेवाला नहीं। महेन्द्र और विष्णु के तुल्य, अनिन्दित, चतुरङ्गिणी सेना का संहार करनेवाले, एक प्रकार से मारे ही न जा सकनेवाले भीष्म और द्रोण को भी शत्रुओं ने मार डाला है, यह देखकर भी इस समय मैं रण से नहीं डरता। हाँ, जीत-हार ईश्वर के हाथ है। दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले ब्राह्मण-श्रेष्ठ द्रोणाचार्य युद्ध में बली राजाओं को, सारथी-रथ-हाथी आदि सहित शत्रुओं के हाथ से मरते देखकर भी, क्यों नहीं बचा सके और सब शत्रुओं को क्यों नहीं मार सके? महायुद्ध में द्रोणाचार्य के परिणाम को सोचकर मैं सत्य कहता हूँ कि हे कौरवो, मृत्यु के समान उग्र रूपवाले अर्जुन को सिवा मेरे

तुममें से कोई भी नहीं रोक सकता। अस्त्रों के अभ्यास, एकाग्रता, बल, धैर्य, श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञान और प्रयोग, फुर्ती तथा श्रेष्ठ नीति के ज्ञान, सभी बातों में महावीर द्रोणाचार्य श्रेष्ठ थे। वे महात्मा भी जब मृत्यु से न बच सके तब, मुझे समझ पड़ता है कि, बचे हुए हम सबकी मृत्यु निकट आ पहुँची है। इस संसार में कुछ भी नित्य रहनेवाला नहीं है; क्योंकि संसार का, अर्थात् संसारी जीवों का, कर्म से नित्य सम्बन्ध है। कर्म या दैव के वश मनुष्य मरते और जन्म लेते हैं। द्रोणाचार्य जैसे अद्वितीय अजेय योद्धा भी जब मार डाले गये तब कौन पुरुष निःसंशय होकर कह सकता है कि वह कल सवेरे तक जीता रहेगा। महाराज मद्रेश्वर! शत्रुओं के हाथ से आचार्य की मृत्यु देखकर मुझे स्पष्ट जान पड़ता है कि दिव्य अस्त्र, बल, पराक्रम, सदाचार, सुनीति, श्रेष्ठ शस्त्र आदि का होना ही मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लिए यथेष्ट नहीं है। अग्नि और सूर्य के समान तेजस्वी, विष्णु और इन्द्र के समान पराक्रमी, बृहस्पति और शुक्राचार्य के समान नीतिज्ञ, अत्यन्त असह्य योद्धा गुरु द्रोण की मृत्यु का समय जब
२० आया तब उनके दिव्य अमोघ अस्त्र भी उनकी रक्षा नहीं कर सके। इससे कहना पड़ता है कि मृत्यु को रोकने का कोई उपाय नहीं है। कौरवों की और मेरे कुल की स्त्रियाँ तथा बालक शोक और दुःख से रोते और चिल्लाते हैं; राजा दुर्योधन की शक्ति क्षीण और पौरुष पराभव को प्राप्त हो चुका है। हे शल्य, इस समय युद्ध करने के सिवा और कुछ कर्तव्य मुझे नहीं सूझता। इसलिए तुम शीघ्र मुझे शत्रुसेना में ले चलो। जहाँ सत्यवादी राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, कृष्ण, सात्यकि, धृष्टद्युम्न आदि सृञ्जयगण हैं, वहीं मेरा रथ ले चलो। इन वीरों के तेज और पराक्रम के आगे मेरे सिवा कौन ठहर सकता है? हे मद्रराज, शीघ्र युद्ध के मैदान में पाण्डव-पाञ्चाल-सृञ्जय आदि के आगे मेरा रथ ले चलो। आज या तो मैं उन लोगों को मारूँगा और या, द्रोणाचार्य की तरह, उनके हाथ से मरकर यमलोक को जाऊँगा। हे शल्य, यद्यपि मेरा जी कह रहा है कि मैं भी पितामह भीष्म और द्रोण की तरह निःसन्देह मरूँगा, तथापि भागकर मित्र दुर्योधन को धोखा देना मुझे असह्य है। इसलिए मैं प्राणों का मोह छोड़कर लड़ूँगा और अन्त को द्रोणाचार्य के पीछे ही यमपुर को जाऊँगा। विद्वान् हो या मूर्ख, आयु की अवधि समाप्त होने पर, मृत्यु के हाथ से किसी का छुटकारा नहीं। इसलिए हे विज्ञ शल्य, मैं अवश्य ही अर्जुन से युद्ध करूँगा। जो भाग्य में लिखा है वह अटल है। राजा दुर्योधन ने सदा मेरे साथ अच्छा बर्ताव किया है। मैं भी उनका प्रयोजन पूरा करने की चेष्टा में प्रिय सुख-भोग और जीवन तक का त्याग करने को तैयार हूँ। यह व्याघ्र-चर्म-मण्डित, सुवर्णमय आसन से युक्त, शब्द-विहीन पहियों से शोभित, चाँदी के त्रिवेणु से अलङ्कृत, तीन खण्ड का, बढ़िया घोड़ों से युक्त दिव्य रथ मुझे परशुराम ने दिया है। हे शल्य! मेरा विचित्र धनुष, ध्वजा, गदा, उग्र बाण, चमकीली तलवार, श्रेष्ठ अन्य शस्त्र और गम्भीर शब्द से युक्त सफ़ेद

यह शङ्ख देखो। वज्रपात के समान दारुण शब्द करनेवाले, पताका और शुभ अक्षय तरकसों से शोभित, सफ़ेद घोड़ों से युक्त इस श्रेष्ठ रथ पर बैठकर मैं अर्जुन के ऊपर दृढ़ प्रहार करूँगा। सबका नाश करनेवाला मृत्यु भी सावधान होकर अगर समर में अर्जुन की रक्षा करेगा, तो भी युद्धभूमि में सामने जाकर मैं अर्जुन को मारूँगा और या पितामह भीष्म की तरह मरकर यमपुर को जाऊँगा। अधिक क्या कहूँ, अगर यमराज, वरुण, कुबेर, इन्द्र आदि सब लोकपाल भी अपने गणों के साथ मिलकर एक साथ महायुद्ध में अर्जुन की रक्षा करेंगे तो भी मैं मय उन लोकपालों के अर्जुन को परास्त करूँगा।

३०

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! रण में प्रचण्ड रूप धारण करनेवाले और युद्ध के लिए उद्यत कर्ण के, अपने मुँह अपनी प्रशंसा से पूर्ण, वचन सुनकर उनके वाक्यों के प्रति अश्रद्धा दिखलाकर पराक्रमी शल्य ने हँसकर उन्हें रोका और इस प्रकार उत्तर दिया—हे कर्ण! बस-बस, अब चुप रहो; बढ़-बढ़कर बातें और अपने मुँह अपनी बड़ाई न करो। कहाँ पुरुष-श्रेष्ठ अर्जुन, और कहाँ नराधम तुम! उनके साथ तुम्हारी तुलना नहीं हो सकती। इन्द्र के द्वारा सुरक्षित स्वर्ग के समान श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित द्वारका पुरी में घुसकर, यादव-वीरों को हराकर, श्रीकृष्ण की छोटी बहन सुभद्रा को सिवा अर्जुन के और कौन हर ला सकता था? शिकार के झगड़े में अर्जुन ने त्रिभुवन की सृष्टि करनेवाले और ईश्वरों के ईश्वर किरातरूप शङ्कर से घोर युद्ध किया और इन्द्र के समान बल-वीर्य तथा प्रभाव दिखलाया। इस दुष्कर कार्य को अर्जुन के सिवा और कौन कर सकता था? जलाने के लिए अग्नि को खाण्डव वन देते समय असुर, सुर, महानाग, मनुष्य, गरुड़, पिशाच, यक्ष, राक्षस आदि को तीक्ष्ण बाणों से परास्त करना और इस उपलक्ष्य में "विजय" नाम प्राप्त करना अर्जुन का ही काम था। उन्होंने उस समय अग्नि को यथेष्ट हवि देकर सन्तुष्ट किया था। इस काम को अर्जुन के सिवा और कोई नहीं कर सकता था। हे अधिरथ के पुत्र! स्मरण करो, जिस समय घोषयात्रा के अवसर पर बली गन्धर्वों ने कौरवों के श्रेष्ठ योद्धाओं को

हराया था और वे दुर्योधन को पकड़कर ले चले थे उस समय उन शत्रुओं को परास्त करके दुर्योधन आदि को किसने छुड़ाया था ? वह दुष्कर काम अर्जुन के सिवा और कौन कर सकता था ? उस युद्ध में सबसे पहले तुम्हीं युद्ध छोड़कर भागे थे और कौरव-श्रेष्ठ भीष्म तथा द्रोण के सामने ही गन्धर्वगण कलह-प्रिय दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र के पुत्रों को पकड़ ले चले थे। क्या तुमको स्मरण नहीं है कि उस समय गन्धर्वों को जीतकर पाण्डवों ने ही दुर्योधन आदि को छुड़ाया था। इसके उपरान्त कौरव लोग जब विराट के नगर में गो-हरण करने गये थे तब कौरवों के पास श्रेष्ठ वाहन, सेना आदि सब कुछ था; परन्तु अकेले अर्जुन ने भीष्म, द्रोण और अश्वत्थामा सहित सब कौरवों को हरा दिया तथा विराट का गो-धन बचा लिया। अगर तुम इस समय अर्जुन को मार सकते हो तो उस समय क्यों नहीं उन्हें हराया? उस समय तो और भी सुभीता था, अर्जुन अकेले ही थे। हे कर्ण! अब यह दुबारा युद्ध का अवसर उपस्थित हुआ है और इसमें तुम जीते नहीं बच सकते।
४० मैं सच कहता हूँ कि आज जो तुम शत्रु के डर से भाग नहीं खड़े हुए तो अवश्य ही मारे जाओगे।

सञ्जय कहते हैं कि कर्ण के उत्साह को नष्ट करने के लिए मद्रराज शल्य जब इस तरह अत्यन्त कठोर अप्रिय वचन कहने और शत्रु की बड़ाई करने लगे तब कौरव-सेना के सेनापति महावीर कर्ण अत्यन्त कुपित होकर कहने लगे—हे शल्य, होगा; बस चुप रहो। तुम मेरे आगे क्या अर्जुन की प्रशंसा करते हो ? अब तो मेरा और अर्जुन का युद्ध ही होनेवाला है, देख लेना। अगर आज अर्जुन संग्राम में मुझे जीत सके, तभी तुम्हारा यह कहना सच होगा।

सञ्जय कहते हैं कि 'यही सही' कहकर शल्य चुप हो रहे। उधर कर्ण भी युद्ध करने के लिए बारम्बार शल्य से कहने लगे—चलो, शीघ्र युद्धभूमि में मुझे ले चलो। शल्य सारथी का हाँका हुआ वह श्रेष्ठ रथ वेग से आगे बढ़ा। कर्ण भी अँधेरे को नष्ट कर रहे सूर्य की तरह समर के मैदान में शत्रुओं को मारते हुए चले। प्रसन्नचित्त कर्ण व्याघ्र-चर्म-मण्डित और सफ़ेद घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर पाण्डवसेना के निकट पहुँच गये। वहाँ वे शीघ्रतापूर्वक पाण्डव पक्ष
४५ के हर एक आदमी से पूछने लगे कि अर्जुन कहाँ हैं।

अड़तीसवाँ अध्याय

कर्ण का अर्जुन को दिखा सकनेवाले पुरुष को तरह-तरह
के पारितोषिक देने की घोषणा करना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! कर्ण आपकी सेना को प्रसन्न करते हुए समर में देख पड़नेवाले, पाण्डव पक्ष के, हर एक आदमी से अर्जुन को पूछने लगे। वे कहने लगे कि हे वीरो, इस समय तुममें से जो कोई मुझे अर्जुन को दिखा देगा, उसे मैं उसका मुँह-माँगा धन दूँगा।

अगर वह इस पुरस्कार को न पसन्द करे तो मैं अर्जुन को दिखा देनेवाले व्यक्ति को छकड़े भर रत्न दूँगा। यदि उसे यह भी न मन भावे तो मैं काँसे की दोहनी समेत एक सौ दुधार गायें देने को तैयार हूँ। अर्जुन को दिखा देनेवाले पुरुष को अगर इतने से सन्तोष न हो तो मैं उसे एक सौ श्रेष्ठ गाँव और काले केशोंवाली युवतियों सहित बहुमूल्य खच्चरों से युक्त बढ़िया सफ़ेद रथ दूँगा। इस पर भी अगर वह न राज़ी हो तो मैं अर्जुन को दिखा देनेवाले पुरुष को सोने का बना और छः हाथियों अथवा हाथी सरीखे छः बैलों से खींचा जानेवाला और रथ दूँगा। यह भी अगर उसे कम जँचे तो सोलह साल की नई-नवेली, गाने-बजाने में निपुण, सोने के गहने कण्ठ में पहने, रूपवती सौ स्त्रियाँ दूँगा। इतना पुरस्कार भी अगर उसे सन्तुष्ट न कर सके तो सौ हाथी, सौ गाँव, सौ रथ, सुन्दर रङ्ग के श्रेष्ठ पुष्ट गुणयुक्त विनीत (सीधे) सुशिक्षित रथ खींच सकनेवाले हज़ार घोड़े, सोने से मढ़े सींगों से शोभित और बछड़ेवाली चार सौ दुधार गायें देने को तैयार हूँ। अर्जुन का पता देनेवाले पुरुष को अगर यह भी कम जान १० पड़े तो मैं उसे सुवर्णभूषित, मणिमय आभूषणों से अलङ्कृत, नम्र, सफ़ेद रङ्ग के पाँच सौ अठारह घोड़े, और श्रेष्ठ काम्बोज देश के घोड़ों से शोभित सुवर्णमय सुसज्जित एक बहुमूल्य रथ दूँगा। अगर वह पुरुष इतने पर भी राज़ी न हो तो मैं उसे सोने से अलङ्कृत, पश्चिम-कच्छ देश में उत्पन्न, सोने के अनेक प्रकार के हौदों से शोभित, सुवर्ण की मालाओं से भूषित और गज-शिक्षा देनेवाले प्रवीण महावतों के सिखलाये छः सौ श्रेष्ठ हाथी देने को तैयार हूँ। अर्जुन को दिखानेवाला पुरुष अगर इस पर भी सन्तुष्ट न हो तो मैं उसको सुविस्तृत, धन-सम्पत्ति-पूर्ण, वन और जल के निकटवर्ती, सुसम्पन्न, जिनमें किसी प्रकार का डर नहीं ऐसे, राजभोग्य, वैश्यों के रहने के चौदह गाँव और मगध देश की नवयौवना तथा सुवर्ण के अलङ्कारों से शोभित सौ श्रेष्ठ दासियाँ देने को तैयार हूँ। इतने पर भी अगर अर्जुन का पता देनेवाला पुरुष सन्तुष्ट न होगा तो पुत्र और स्त्री के सिवा अपनी और सब सम्पत्ति उसे मैं, उसकी इच्छा के अनुसार, दे सकता हूँ। वह जो कुछ माँगेगा वही उसे दूँगा। जो कोई मुझे कृष्ण और अर्जुन का पता २० बता देगा उसे मैं, कृष्ण और अर्जुन को मारने के उपरान्त, उनका सब धन दे डालूँगा।

महाराज, इस तरह बहुत कुछ कहकर कर्ण ने समुद्र से उत्पन्न गम्भीर शब्दवाला श्रेष्ठ शङ्ख बजाया। कर्ण के ऐसे उत्साहपूर्ण वचन सुनकर भाइयों सहित राजा दुर्योधन बहुत ही प्रसन्न हुए। इसी समय रणभूमि में नगाड़े, मृदङ्ग आदि बहुत प्रकार के बाजे बजने लगे। आपकी सेना के लोग सिंहनाद करने लगे। हाथियों, घोड़ों और योद्धाओं का प्रसन्नतापूर्ण कोलाहल चारों ओर व्याप्त हो गया। इस तरह सेना को उत्साहित करके जा रहे महारथी शत्रुदमन कर्ण के, अपनी प्रशंसा से पूर्ण, वचन सुनकर शल्य ने हँसकर यों कहा। २६

उनतालीसवाँ अध्याय

शल्य का कर्ण से अप्रिय वचन कहना

शल्य ने कहा—हे सूतपुत्र कर्ण ! तुम सुवर्ण-भूषित छः हाथियों या हाथियों के तुल्य बैलों से युक्त रथ आदि कुछ भी देने की प्रतिज्ञा मत करो। तुम्हें अभी-अभी अर्जुन देख पड़ेंगे। तुम अज्ञानवश वृथा ही कुबेर की तरह धन देना चाहते हो। तुम्हें कुछ भी यत्न न करना पड़ेगा, आज अनायास ही अर्जुन को देख पाओगे। तुम मूर्खों की तरह इस समय व्यर्थ ही बहुत सा धन दान करने को उतारू हो। अपात्र अर्थात् अयोग्य पुरुष को धन देने में जो दोष उत्पन्न होते हैं उन्हें इस समय तुम समझ नहीं पाते। हे सूत, तुम इस समय जो अपार धन वृथा ही देने की प्रतिज्ञा कर रहे हो, उस धन से तुम अनेक प्रकार के बहुत से यज्ञ कर सकते हो। इसलिए अच्छा होगा कि तुम उस धन को, व्यर्थ नष्ट न करके, यज्ञ आदि सत्कार्यों में लगाओ। मोह के वश होकर तुम वृथा ही कृष्ण और अर्जुन को मार डालने की इच्छा करते हो। हमने आज तक युद्ध में गीदड़ के हाथों सिंहों का वध होना नहीं सुना। हे कर्ण! तुम वही चाहते हो जो हो नहीं सकता। मेरी समझ में तुम्हारा कोई हितैषी मित्र नहीं है। तुम आग में कूद रहे हो; अगर तुम्हारे मित्र होते तो वे अवश्य तुमको रोकते। मुझे जान पड़ता है कि अब तुम्हारा अन्तकाल निकट आ गया है; क्योंकि अब तुम्हें यह ज्ञान नहीं रहा कि क्या करना चाहिए, और क्या नहीं करना चाहिए। जीवन की इच्छा रखनेवाला कौन पुरुष तुम्हारी तरह ऐसे असङ्गत वचन मुँह से निकालेगा ? गले में भारी शिला बाँधकर, दोनों हाथों से तैरकर, समुद्र के पार जाना या पहाड़ की चोटी पर से कूदना और तुम्हारा यह मनोरथ एक सा ही है। तुम अगर कुशल चाहते हो तो मोर्चा बाँधकर, सारी सेना और सब श्रेष्ठ योद्धाओं से सुरक्षित रहकर, अर्जुन से युद्ध करो। हे कर्ण ! मैं किसी तरह के द्रोह के मारे यह नहीं कहता। तुम्हारे और राजा दुर्योधन के भले ही के लिए कहता हूँ। अगर
१० तुम जीना चाहते हो तो मेरी बात मान लो।

कर्ण ने कहा—हे शल्य ! मैं अपने बाहुबल के भरोसे युद्ध में अर्जुन को खोज रहा हूँ। तुम मित्र बने हुए शत्रु हो और इसी से यों कहकर मुझे डराना या दहलाना चाहते हो। किन्तु इस समय मनुष्य की कौन कहे, वज्र हाथ में लिये साक्षात् इन्द्र भी मुझे मेरे इस विचार से विचलित नहीं कर सकते।

सञ्जय कहते हैं कि कर्ण के ये वचन सुनकर, उन्हें और भी कुपित करने के लिए, मद्रराज शल्य कहने लगे—हे कर्ण ! जब अर्जुन की प्रत्यञ्चा से छूटे हुए वेगगामी तीक्ष्ण बाण तुम्हारे पीछे दौड़ेंगे, जब वीर अर्जुन दिव्य धनुष लेकर कौरवसेना को सन्ताप पहुँचाते हुए तीक्ष्णतर

बाणों से तुम्हें व्याकुल करने लगेंगे तब तुम्हें, अपनी इन बातों के लिए, पछताना पड़ेगा। माता की गोद में लेटा हुआ बालक जैसे चन्द्रमा को पकड़ने के लिए मचलता है वैसे ही, हे सूतपुत्र, तुम भी मोह के वश होकर रथ पर स्थित तेजस्वी अर्जुन को जीतने की इच्छा प्रकट कर रहे हो। हे कर्ण! तुम मूढ़ हो, इसी से अर्जुन के साथ युद्ध करने को तैयार हो और वास्तव में तुम्हारी यह इच्छा मानों शङ्कर के त्रिशूल को सब अङ्गों पर फेरना, अर्थात् आप अपनी मौत बुलाना, है। अर्जुन के शस्त्र बहुत ही तीक्ष्ण और कर्म अत्यन्त अद्भुत हैं। उनसे युद्ध करना सहज नहीं है। जैसे किसी क्रुद्ध सिंह को कोई हिरन का बच्चा, चञ्चलतावश, धृष्टता के साथ लड़ने को ललकारे वैसे ही तुम इस समय अर्जुन को युद्ध के लिए खोज रहे हो। हे सूतपुत्र, तुम महावीर्यशाली राजकुमार सिंहसम पराक्रमी अर्जुन को युद्ध के लिए मत बुलाओ। उनको तुम्हारा बुलाना वैसा ही है जैसे कोई गीदड़ मांस खाकर, तृप्त होकर, युद्ध करने के लिए सिंह को ललकारे। उनके सामने जाकर तुम अवश्य मारे जाओगे। तुम क्षुद्र ख़रगोश होकर हल के समान दाँतोंवाले, बड़ी सूँड़ से शोभित, महागजराज के समान अर्जुन को युद्ध के लिए बुलाते हो। अथवा यों कहो कि तुम बाल-सुलभ चञ्चलता के मारे महाविषैले, क्रोधान्ध, बिल में पड़े हुए काले साँप को लकड़ी से छेड़ रहे हो। हे कर्ण! तुम मूढ़ गीदड़ की तरह कुपित केसरी-वीर अर्जुन पर आक्रमण करने की इच्छा से गरज रहे हो। जैसे साधारण साँप पक्षिराज वेगशाली गरुड़ को लड़ने के लिए ललकारे वैसे ही तुम अर्जुन से लड़ना चाहते हो। महाजलाशय, जल-जन्तुओं से भयानक और चन्द्रोदय के समय उमड़ रहे महासागर को तुम नाव के बिना हाथों से ही तैरकर पार कर जाना चाहते हो। तुम छोटे से बछड़े की तरह होकर उस भारी साँड़ से भिड़ना चाहते हो, जिसका स्वर नगाड़े के समान है, सींग बहुत पैने हैं और स्वभाव भी मरकहा है। महाशब्द करनेवाले महामेघ के समान बाणरूप जल बरसानेवाले नरश्रेष्ठ अर्जुन के मुक़ाबले में तुम क्षुद्र मेढ़क की तरह टर-टर कर रहे हो। जैसे घर का पला हुआ कुत्ता वन में स्थित सिंह को देखकर भूँके, वैसे ही तुम पुरुषसिंह अर्जुन से लाग-डाँट प्रकट कर रहे हो। हे कर्ण! गीदड़ का नियम होता है कि वह ख़रगोशों के बीच में बसकर तब तक अपने को ही सिंह समझता है जब तक सिंह को नहीं देख पाता। वैसे ही हे राधेय, तुम भी जब तक रणभूमि में शत्रुदमन पुरुषसिंह अर्जुन को नहीं देख पाते तब तक अपने को सिंह सा समझ रहे हो। तुम जब तक श्रीकृष्ण और अर्जुन को सूर्य और चन्द्रमा के समान एक ही रथ पर स्थित नहीं देखते तभी तक अपने को सिंह समझते हो। जब तक युद्ध में तुमको गाण्डीव धनुष की ध्वनि नहीं सुन पड़ती तभी तक तुम जितना चाहे बक लो। रथ, शङ्ख और धनुष के शब्द से दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित कर रहे और सिंह की तरह गरज रहे अर्जुन को सामने देखते ही तुम दुम दबाकर गीदड़ बन जाओगे। हे कर्ण, तुम सदा के

२०

३०

गीदड़ हो और अर्जुन सदा से सिंह रहे हैं। हे मूढ़, वीर से द्वेष रखने की प्रवृत्ति के कारण तुम गीदड़ जान पड़ रहे हो। चूहे और बिलाव में, कुत्ते और बाघ में, गीदड़ और सिंह में तथा ख़रगोश और हाथी में बल का जितना अन्तर है उतना ही अन्तर तुममें और अर्जुन में है। झूठ और सच, विष और अमृत जिस तरह संसार में प्रसिद्ध हैं, उसी तरह तुम और अर्जुन भी जगत् में अपने कर्मों से प्रसिद्ध हो। ३५

चालीसवाँ अध्याय

कर्ण-कृत शल्य की निन्दा

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, महातेजस्वी शल्य ने जब इस तरह कर्ण का तिरस्कार किया तब शल्य के वाक्य-बाणों से व्यथित कर्ण ने कुपित होकर कहा—हे शल्य, गुणी पुरुष ही गुणी के गुणों को जान सकता है, गुणहीन पुरुष नहीं जानता। तुम सदा से गुणशून्य ठहरे, फिर कैसे दूसरे के गुणों को जानोगे? हे शल्य! अर्जुन के दिव्य अस्त्र, क्रोध, वीर्य, धनुष, बाण आदि को जितना मैं जानता हूँ, उतना तुम नहीं जान सकते। वैसे ही सब क्षत्रियों के शिरोमणि महात्मा कृष्ण के माहात्म्य को भी मैं तुमसे अधिक ही जानता हूँ। मैं अर्जुन के पराक्रम को जानता हूँ और अर्जुन मेरे पराक्रम को जानते हैं। अर्जुन के और अपने पराक्रम को जानकर ही मैं उनको युद्ध के लिए ललकार रहा हूँ। मेरे पास तरकस में यह सुन्दर पुङ्ख से शोभित, रक्त पीनेवाला, बड़ा तीक्ष्ण बाण है। इसे बहुत दिन से चन्दनचूर्ण में रखकर मैं पूजता आया हूँ। यह ज़हरीला, उग्र, झुण्ड के झुण्ड मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों को मारनेवाला, कवच और हड्डी तक को तोड़ डालनेवाला और सर्पाकार है। मैं कुपित होकर इस घोर बाण से महापर्वत सुमेरु को भी तोड़-फोड़ सकता हूँ। मैं सच कहता हूँ कि अर्जुन अथवा कृष्ण के सिवा और किसी के ऊपर कभी मैं यह बाण नहीं छोड़ सकता। हे शल्य, मैं परम कुपित होकर कृष्ण और अर्जुन के ऊपर इसी बाण से प्रहार करूँगा और यह काम मेरे योग्य होगा। १० वृष्णि-वीरों की लक्ष्मी का आधार कृष्ण हैं और सब पाण्डवों की विजय का आधार वीर अर्जुन हैं। इन दोनों महारथियों के सामने जाकर कौन वीर जीता लौट सकता है? किन्तु मेरे अहोभाग्य देखो कि वे दोनों ही पुरुषसिंह एक रथ पर स्थित होकर मुझ अकेले से युद्ध करेंगे। बुआ और मामा के लड़के अर्जुन और कृष्ण दोनों में ही धागे और मणि के समान मेल है। तुम आज उन दोनों को मेरे हाथ से मरते देखोगे। हे शल्य! अर्जुन का गाण्डीव धनुष और वानर की ध्वजा तथा कृष्ण का सुदर्शन चक्र और गरुड़ की ध्वजा कायरों के मन में त्रास उत्पन्न करती है; किन्तु मुझे उन्हें देखकर हर्ष ही होता है। तुम बड़े मूढ़,

दुष्प्रकृति और महायुद्धों से अनभिज्ञ हो। इसी से इस समय डरकर ऐसी असङ्गत बातें कह रहे हो। हे कुदेश में उत्पन्न, तुम किसी कारण से ही उन दोनों की इतनी प्रशंसा कर रहे हो। मैं आज समर में उन दोनों को मार करके तुम्हें भी भाई-बन्धुओं सहित मारूँगा। हे पाप-देश में उत्पन्न, दुर्मति, क्षुद्र, क्षत्रियाधम! तुम मित्र होते हुए भी शत्रु की तरह क्या बारम्बार कृष्ण और अर्जुन से मुझे डरा रहे हो? मैं अपने बल को जानता हूँ और इसी लिए कृष्ण तथा अर्जुन से नहीं डरता। वे दोनों या तो आज मुझे मारेंगे और या मैं ही उनको मारूँगा। हे कुदेशी, तुम चुप रहो। मैं अकेला ही ऐसे-ऐसे हज़ार कृष्णों और सौ अर्जुनों से युद्ध कर सकता हूँ। १९

हे मूढ़ शल्य! स्त्री, बालक, बूढ़े सब लोग प्रायः क्रीड़ा के अवसरों पर दुर्मति मद्रक जनों के विषय में जो विचार रखते और कहते हैं, और ब्राह्मणों ने राजाओं की सभाओं में उनके बारे में जो कुछ कहा है उन्हीं गाथाओं को मैं तुम्हारे आगे कहता हूँ। उन्हें सुनकर या तो चुप रहो और या उत्तर दो। उनका कहना है कि मद्र देश का निवासी मित्रद्रोही होता है, अन्य प्रदेश के लोगों से जलता है, उसकी बात का क्या ठिकाना! मद्रक नराधम, नीच, दुरात्मा, झूठा और उग्र होता है। हमने सुना है कि मद्रकों में सभी तरह के दोष होते हैं। वे लोग जन्म से ही दुष्कर्मों में लिप्त रहते हैं। मद्र देश में पिता, पुत्र, मामा, माता, सास, ससुर, दामाद, बेटी, भाई, नाती, बन्धु-बान्धव, दास, दासी, वयस्य, अभ्यागत आदि सब छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष परस्पर जान-बूझकर, अनजान की तरह, इच्छानुसार रमण करते हैं। असभ्य मद्र-देशवासियों के घरों में सदा मछलियाँ खाई जाती हैं और सत्तू खाये जाते हैं। वे निषिद्ध मांस खाकर कड़ी मदिरा पीकर रोते हैं, हँसते हैं, वाहियात गीत गाते हैं और काम के वश होकर रमण करते हैं। कुछ लोग काम-भोग के सम्बन्ध में अण्ड-बण्ड बकते हैं। भला उनमें धर्म की स्थिति कहाँ से हो सकती है? मद्र देश के लोग घमण्डी और शास्त्र-विरुद्ध अशुभ कर्म करने में प्रसिद्ध हुआ करते हैं। मद्रक से न तो मित्रता ही करे और न शत्रुता ही। उस देशवालों में मिलनसारी नहीं होती। मद्र-देश-निवासी सदा मलिन और अशुचि रहता है। मद्र देशवालों में मैत्री और गान्धार देशवालों में पवित्रता का अत्यन्त अभाव होता है। ३०

हे मद्राधिप, विष झाड़नेवाले लोग विच्छू के [या और किसी के] विष से मूर्च्छित व्यक्ति को झाड़ते समय जिन शब्दों को कहते हैं वे बहुत ही सच देख पड़ते हैं। विष झाड़ने-वाले लोग झाड़ते समय कहते हैं कि "जैसे, राजा जिस यज्ञ का याजक (आचार्य) हो उसमें दी हुई आहुतियाँ व्यर्थ हो जाती हैं, जैसे शूद्र को पढ़ानेवाला ब्राह्मण पराभव को प्राप्त होता है, जैसे ब्रह्मद्रोही लोग संसार में नीचा देखते हैं और जैसे मद्र देश के निवासी की सङ्गति और मैत्री से मनुष्य पतित होता है, अगर ये बातें सच हैं तो, वैसे ही हे वृश्चिक, तेरा भी विष नष्ट हो जाय।" हे शल्य, मैंने स्वयं इस आथर्वण मन्त्र से विष को शान्त करके मन्त्र की

सचाई आज़माई है। [इससे यही सिद्ध है कि मद्र देश के लोग बड़े नीच और कुकर्मी होते हैं, उनसे मित्रता करना या उनका साथ करना अत्यन्त हानिकारक है।] अगर इसका कुछ उत्तर हो तो दो, नहीं तो मेरी बात सुनो।

हे मद्रराज, तुम्हारे देश की स्त्रियाँ मदिरा के नशे में चूर हो बेपर्द होकर नाचती हैं। वे व्यभिचार करती हैं और मनमाने पुरुष से रमण करती हैं। उन्हीं मद्रकों की सन्तान के मुँह से धर्म की बात कैसे निकल सकती है? वे ऊँट और गधे की तरह खड़े-खड़े पेशाब करती हैं। उन धर्मभ्रष्ट निर्लज्ज स्त्रियों के पुत्र होकर तुम कैसे धर्म का बखान कर रहे हो? मद्र देश की स्त्री से सुवीरक (काञ्जिक) कोई माँगता है तो वह नहीं देना चाहती और नितम्बों में हाथ मारकर कहती है कि सुवीरक मुझे अत्यन्त प्रिय है, उसे मुझसे कोई न माँगे। मैं पुत्र अथवा पति दे सकती हूँ, लेकिन काञ्जिक मदिरा नहीं दे सकती। मद्र देश की स्त्रियाँ गोरी, निर्लज्ज, बहुत भोजन करनेवाली, लम्बी-चौड़ी, कम्बल ओढ़नेवाली और प्रायः गन्दी होती हैं। वे नित्य अशुद्ध रहती हैं। मद्र देश के नर-नारी एँड़ी से चोटी तक कुकर्म से भरपूर होते हैं। उनके इस तरह के अनेक दोषों को मैं बता सकता हूँ। मैं या अन्य लोग तुम मद्र-देश-वासियों के दोषों को जानते हैं। पापमय देशों में उत्पन्न मद्रक और सिन्धु-सौवीर देश के लोग म्लेच्छ हैं; वे धर्म के विषय में अनभिज्ञ होते हैं। वे धर्म को कैसे जान सकते हैं? क्षत्रिय का मुख्य धर्म हमने यही सुना है कि युद्ध में लड़ता हुआ मारा जाय। सज्जन लोग ऐसे ही क्षत्रिय की प्रशंसा करते हैं। मैं रण में मरकर स्वर्ग की इच्छा करता हूँ। अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा के बीच मरना ही मुझे इष्ट है। मैं बुद्धिमान् राजा दुर्योधन का प्रिय और माननीय मित्र हूँ। मेरे प्राण और धन सब उन्हीं के लिए हैं। हे पाप-देश में उत्पन्न, यह स्पष्ट है कि तुमको पाण्डवों ने फोड़ लिया है; इसी से तुम शत्रु की तरह ऐसी बातें कहकर मुझे उत्साहहीन करना चाहते हो। किन्तु याद रक्खो, तुम सरीखे सैकड़ों पुरुष भी ऐसी बातें करके मुझे संग्राम से विमुख नहीं कर सकते, जिस तरह धर्मात्मा पुरुष को नास्तिक लोग धर्मपथ से विचलित नहीं कर सकते। गर्मी से पीड़ित मृग की तरह तुम ख़ूब विलाप कर लो और डर के मारे सूख जाओ। मैं क्षत्रियधर्म को दृढ़ रूप से ग्रहण किये हुए हूँ, मुझे तुम डरा नहीं सकते। मेरे गुरु परशुराम ने युद्ध से न लौटनेवाले वीरों की जो गति मुझसे कही है उसे स्मरण करके मैं दृढ़ होकर युद्ध करूँगा। मैं पुरूरवा के उत्तम वंश में उत्पन्न और श्रेष्ठ क्षत्रियों के समान आचरण करने को उद्यत हूँ। मैं अवश्य अपने मित्रों की रक्षा और शत्रुओं का नाश करूँगा। हे शल्य, त्रिलोकी में मुझे ऐसा कोई नहीं देख पड़ता जो मेरे इस विचार को बदल सके। इसलिए यह जानकर तुम चुप रहो। डर के मारे क्यों वृथा बहुत बक रहे हो? हे अधम मद्रक! मैं अब तक तुमको मारकर मांसाहारी जीवों को खिला देता; किन्तु तीन कारणों से ऐसा नहीं करता।

एक तो मुझे मित्र दुर्योधन का काम सिद्ध करना है, दूसरे क्षमा करने का वचन दे चुका हूँ, तीसरे ऐसा करने में निन्दा होगी। इन्हीं तीन कारणों से तुम अब तक जीवित हो। किन्तु हे शल्य, अब फिर जो ऐसे वचन मुँह से निकालोगे तो मैं अभी इस वज्रतुल्य गदा से तुम्हारा सिर तोड़ दूँगा। हे कुदेश के राजा, वीरगण आज देखेंगे और सुनेंगे कि कृष्ण और अर्जुन को मैंने मार डाला या उन्होंने मुझे मार गिराया। महाराज, वीर कर्ण यों कहकर शल्य से बेधड़क हो फिर कहने लगे कि अर्जुन के पास मेरा रथ ले चलो। ५६

इकतालीसवाँ अध्याय

हंस और कौए का उपाख्यान

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! युद्ध के लिए उद्यत कर्ण के ये वचन सुनकर, उनका उपहास करने के लिए, मद्रराज शल्य [हंस और कौए के उपाख्यान की कल्पना करके, हंस से अर्जुन की और कौए से कर्ण की तुलना करते हुए] कहने लगे—हे सूतपुत्र! मैं धर्मात्मा, समर से न हटनेवाले, यज्ञतत्पर, मूर्द्धाभिषिक्त नरेशों के वंश में उत्पन्न हुआ हूँ और ख़ुद भी धर्म-परायण हूँ। इस समय तुम्हारी दशा शराबी की सी देख पड़ती है। मैं मित्रभाव से तुम्हें आज होश में लाना चाहता हूँ। सब तरह से तुम्हारे ऊपर घटित होनेवाला यह हंस-काक का उपाख्यान मैं तुम्हारे आगे कहता हूँ। हे कुलाधम कर्ण, उसे सुनकर फिर जो समझ में आवे सो करना। हे कर्ण, मुझे याद नहीं आता कि मैंने तुम्हारे साथ क्या दुर्व्यवहार किया है, जिसके लिए तुम मुझ निरपराध को मारना चाहते हो। देखो, मैं इस समय तुम्हारा सारथी हूँ, विशेषकर राजा दुर्योधन का जिसमें हित हो वही करना और सुझाना मेरा कर्तव्य है। इसी कारण तुम्हारे हित और हानि को मैं तुम्हें बतलाऊँगा। अब तक मैंने जो कुछ कहा है सो भी इसी ख़याल से। जब मैं इस रथ का रक्षक हूँ तब मेरा कर्तव्य है कि पृथ्वी के सम और विषम स्थलों पर दृष्टि रक्खूँ, अपने रथी के सबल या निर्बल होने पर ध्यान दूँ तथा रथी और घोड़ों की थकन और खेद का ख़याल रक्खूँ। इन बातों के सिवा शस्त्रों का ज्ञान, पशु और पक्षी आदि के शब्दों से सूचित होनेवाले शुभाशुभ शकुनों की पहचान, भारी या हलके बोझ की जानकारी, शल्य (घाव आदि) की प्रतिक्रिया अर्थात् चिकित्सा, अस्त्रयोग, युद्ध और शुभाशुभ निमित्तों का ज्ञान आदि सब आवश्यक बातों पर ध्यान देना मेरा कर्तव्य है। हे कर्ण, इसी लिए मैं तुमको बारम्बार समझा रहा हूँ। अब मैं एक और दृष्टान्त कहता हूँ, जिससे तुमको मालूम हो जायगा कि तुम अर्जुन का सामना नहीं कर सकते। १०

हे कर्ण, समुद्र के किनारे किसी धर्मात्मा राजा के राज्य में एक धन-धान्य-सम्पन्न, यज्ञ-निरत, दानी, क्षमाशील, अपने धर्म का प्रतिपालक, पवित्रहृदय और सब प्राणियों पर दया

रखनेवाला वैश्य रहता था। उस वैश्य के बहुत पुत्र थे। वे उसे बहुत प्रिय थे। उन बहुत से यशस्वी कुमारों के यहाँ एक कौआ भी पला हुआ था, जो उन्हीं की जूठन खाता था। वे वैश्य के लड़के अपनी जूठन का मांस, भात, दही, दूध, खीर, शहद, घी आदि उत्तम पदार्थ खिलाकर उस कौए को पालने लगे। जूठन खानेवाला वह कौआ उन वैश्यकुमारों के पास रहते-रहते धीरे-धीरे मोटा-ताज़ा हो गया। उसको गर्व भी हो आया। वह अपने समान और अपने से श्रेष्ठ पक्षियों को भी तुच्छ समझने और उनका अपमान करने लगा।

इसी बीच में समुद्र के किनारे बहुत से प्रसन्नचित्त दूरगामी, गरुड़ के समान उड़नेवाले, मानस-सरोवर में रहनेवाले पक्षिराज हंस आये। उस समय हंसों को देखकर वे वैश्य-बालक उस कौए से कहने लगे—हे काक, तुम्हीं सब पक्षियों में श्रेष्ठ हो। देखो, ये हंस आकाशमार्ग में बहुत दूर पर उड़ते चले आ रहे हैं। तुम इतनी दूर उड़ सकते हो तो क्यों नहीं उड़ते? हे कर्ण, उन अल्प बुद्धिवाले वैश्य-कुमारों ने इस तरह झूठी प्रशंसा की तो मूर्खता और दर्प के कारण कौए ने उसे सत्य ही समझ लिया। जूठन खाकर गर्वित हुआ वह कौआ उन श्रेष्ठ गति से जानेवाले हंसों के पास जाकर मूर्खतावश यह जानने की चेष्टा करने लगा कि उनमें कौन प्रधान हंस है। उस दुर्बुद्धि पक्षी ने उन दूर उड़नेवाले हंसों में जिसे श्रेष्ठ समझा उसे ललकारकर वह कहने लगा कि हे हंसश्रेष्ठ, आओ, मैं तुम्हारे साथ उड़ना चाहता हूँ। हे सूतपुत्र, वे सब २० हंस काक के ये वचन सुनकर हँसने लगे। मूर्खतावश बहुत बककर अपनी प्रशंसा कर रहे काक से वे हंस कहने लगे—अरे कौए, तू बड़ा मूर्ख है जो हमारी बराबरी करना चाहता है। हम मानस-सरोवर के निवासी हंस, अपनी इच्छा के अनुसार, सारे पृथ्वी-मण्डल में विचरते हैं। बहुत दूर तक उड़कर जा सकने के कारण हम पक्षियों में पूज्य माने जाते हैं। अरे तू क्षुद्र काक

वैश्य बालक इस कौवे से कहने लगे······देखो यह हंस आकाश-मार्ग में बहुत दूर पर उड़ते चले आ रहे हैं। तुम इतनी दूर उड़ सकते हो तो क्यों नहीं उड़ते ?—पृ० २८१८

होकर दूर उड़ने की शक्ति रखनेवाले बली चक्राङ्ग हंस को, उड़ने के लिए, क्या समझकर ललकारता है ? तू ही बता, तू हंसों के साथ कैसे उड़ेगा ?

तब क्षुद्र जाति होने के कारण अधिक बकबक और अपनी बड़ाई करनेवाले मूढ़ कौए ने वारम्वार हंसों की निन्दा करके इस तरह उत्तर दिया—हे हंसो, मैं सौ प्रकार की विचित्र गतियाँ जानता हूँ और हर एक गति से सौ योजन तक जा सकता हूँ। मैं तुम्हारे सामने ही उड्डीन, अवडीन, प्रडीन, डीन, निडीन, सण्डीन, तिर्यक्डीन, विडीन, परिडीन, पराडीन, सुडीन, अतिडीन, अभिडीन, महाडीन, निर्डीन, डीनडीन, सण्डीनोड्डीनडीन, डीनविडीन, सम्पात, समुदीर्ण, व्यतिरिक्तक, बहुत सी निकुलीनका (पल्टे), गतागत और प्रतिगत आदि अनेक प्रकार की गतियों से उड़कर तुमको अपना बल दिखाऊँगा। बतलाओ, इनमें से किस गति से मैं आकाश में उड़ूँ ? निराधार आकाशमार्ग में जिन गतियों से पक्षी उड़ते हैं उनमें से किस गति से तुम मेरे साथ उड़ोगे—आपस में निश्चय करके शीघ्र कहो। ३०

कौए की ढिठाई पर हँसकर एक हंस ने जो कुछ कहा वह सुनो। हे कर्ण, उस हंस ने कहा—हे काक, तुम तो भई बड़े उस्ताद हो, सौ गतियाँ जानते हो और उन्हीं गतियों से उड़ोगे। लेकिन मैं तो वही एक गति जानता हूँ जिसे सब पक्षी जानते हैं और उसी गति से उड़ूँगा। यह सुनकर गर्वित कौए ने कहा—अच्छी बात है, तुम जो एक गति जानते हो उसी से उड़ो। हे सूतपुत्र, इसी बीच में वहाँ और भी कुछ पक्षी आकर जमा हो गये थे। वे सब कौए का उपहास करते हुए कहने लगे—यह हंस केवल एक गति जानता है और तुम सौ गतियाँ जानते हो ! फिर यह तुमको कैसे जीत सकेगा, तुम्हीं इसको हरा दोगे।

इसके बाद वह फुरतीला और बली कौआ तथा हंस दोनों पक्षी परस्पर लाग-डाँट के साथ आकाशमार्ग में उड़ने लगे। समुद्र के ऊपर आकाश में काक तो तेज़ी से अपनी सैकड़ों गतियाँ दिखाता हुआ उड़ने लगा, किन्तु हंस अपनी उसी एक धीमी गति से उड़ रहा था। कौए की विचित्र गतियों को देखकर अन्य कौए बहुत प्रसन्न हुए। वे काँव-काँव करके हर्ष प्रकट करने लगे। हंस और कौए अपनी-अपनी जय मनाते हुए अप्रिय शब्द करते और एक दूसरे को हँसते थे। सब पक्षी वृक्षों के ऊपर से और स्थल से उड़कर देखते और शाखाओं पर बैठ जाते थे। थोड़ी देर के लिए कौए की अपेक्षा हंस की चाल धीमी पड़ गई। इसलिए हंसों को हँसते हुए कौए कहने लगे—देखो, जो प्रधान हंस कौए के साथ उड़ा था वह पिछड़ा जा रहा है। ३७

कौओं के मुँह से अपनी निन्दा सुनकर वह हंस, समुद्र के ऊपर होकर, पश्चिम दिशा की ओर वेग से आगे बढ़ा। हे कर्ण, इधर वह काक पहले ही तेज़ी दिखाने के कारण थक गया था। अनेक जल-जन्तुओं से पूर्ण भयानक सागर के ऊपर पहुँचकर वह कौआ अचेत सा हो गया और डर के मारे व्याकुल हो उठा। थका हुआ कौआ विश्राम के लिए सागर के

भीतर वृक्षयुक्त द्वीपों को खोजने लगा। वह सोचने लगा कि थक जाने के कारण मैं इस सागर में न जाने कहाँ गिर पड़ूँगा और डूब मरूँगा। हे कर्ण! महासागर तो बड़े-बड़े जलजन्तुओं का निवास-स्थान और भयानक है। वह आकाश के ही समान अपार है। वह इतना गहरा और विस्तृत है कि बुद्धिमान् और बली मनुष्य भी यों सागर के पार नहीं जा सकते और उसकी थाह या किनारा नहीं पाते, तब उस क्षुद्र काक में इतनी शक्ति कहाँ? हंस ने वेग से दूर पहुँचकर, मुड़कर, उस कौए की ओर देखा। वह थक जाने के कारण बेदम हो रहा था। जान पड़ता था कि अब गिरा तब गिरा। आगे बढ़ने की शक्ति रहने पर भी हंस ठहर गया और कौए के आने की प्रतीक्षा करने लगा। हंस ने देखा कि कौए की चाल बिलकुल धीमी पड़ गई है, वह किसी तरह उड़ नहीं सकता और बेदम होकर गिरा पड़ता है। तब सज्जनों के आचरण को स्मरण करके, डूब रहे कौए को उबारने के लिए, हंस ने कहा—हे काक, तुम बारम्बार अपनी बहुत सी गतियों का बखान करके मेरी निन्दा करते हुए उड़े थे। तुम कह रहे थे कि किसी तरह तुम थक नहीं सकते। किन्तु इस समय तुम्हारे पङ्ख और चोंच बार-बार पानी में डूब रही है। बताओ तो सही, यह कौन सी गति है? हे काक! आओ, शीघ्र आओ, मैं तुम्हारे आने की राह देख रहा हूँ। ५०

शल्य कहते हैं—हे कर्ण! हंस के व्यंग्य वचन सुनकर वह उड़ने से थका हुआ, पानी में डूब रहा, कौआ हंस से अपनी जान बचाने के लिए शरणागत होकर कहने लगा—हे हंस, हम कौए तो काँव-काँव किया करते हैं, हम भला विचित्र गतियों को क्या जानें? मुझे बचा लो, यह कहकर कौआ पानी में डूबने लगा। समुद्र में डूबते हुए कौए को देखकर हंस बोला— ६० तुम तो सैकड़ों गतियाँ जानने की डींग मारते थे, उसको याद करो। उतनी गतियों के जानकार होकर तुम समुद्र में कैसे गिर गये! बड़े अचरज की बात है। इस पर कौए ने दुःखित होकर उड़ते हुए हंस से कहा—हे हंस, मैं जूठन खाकर पुष्ट हुआ था और [कुजाति होने

के कारण] दर्प के वश होकर [बालकों के बहकाने से] अपने को गरुड़ के समान बली समझने लगा था। मैं अहङ्कार के मारे सब पक्षियों को अपने से हीन समझता था, उसी का यह फल आज मिल गया। अब मैं तुम्हारी शरण में हूँ। [थक जाने के कारण न तो मैं उड़ सकता हूँ और न अपने प्राण बचा सकता हूँ।] कृपा कर इस आपत्ति से मुझे उबारो। अगर मैं जीवित रहकर अपने घर पहुँच सकूँगा तो, सच कहता हूँ कि, फिर कभी किसी साधारण पक्षी का भी अपमान न करूँगा।

इस तरह अचेत होकर कौआ जब करुण और दीन स्वर से विलाप करने लगा और काँ-काँ शब्द करके बेबसी के साथ समुद्र में डूबने लगा तब उस दुरात्मा पर हंस को दया आ गई। जल से भीगे, अचेत, अधमरे, काँप रहे कौए को हंस ने कृपापूर्वक पैरों से उठाकर अपनी पीठ पर बिठा लिया। कौए को लादे हुए हंस वहीं पर लौट आया जहाँ से दोनों पक्षी, होड़ लगा करके, उड़े थे। [हंस को अपनी विजय के कारण तनिक भी गर्व नहीं हुआ।] वह उस कौए को उसके स्थान पर छोड़कर कहने लगा—हे काक, अब कभी इस तरह का साहस न करना। यों उपदेश देकर शीघ्रगामी हंस यथेष्ट स्थान को चले गये। ७०

हे सूतपुत्र, जूठन खाकर पले हुए अभिमानी कौए ने इस तरह हंस से हार जाने पर बल और वीर्य का घमण्ड छोड़ दिया और शान्त भाव धारण कर लिया। वैश्य-बालकों के बीच जूठन खाकर पले हुए उस मूर्ख कौए की तरह तुम भी दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र के पुत्रों के टुकड़े खाकर पले हो। भीष्म आदि कौरवों और द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि महारथियों के बल से तुम अब तक सुरक्षित रहे। अपने समान और अपने से श्रेष्ठ बली पराक्रमी योद्धाओं का अपमान करने की तुम्हारी आदत है; किन्तु यह तुम्हारी मूर्खता है। यदि तुम ऐसे ही बली थे तो विराट नगर में जब अर्जुन अकेले ही थे तब तुमने क्यों नहीं उन्हें जीत लिया ? उस समय तो अर्जुन ने, सिंह जैसे गीदड़ों को मार भगावे वैसे ही, तुम सबमें से एक-एक को और एक साथ सबको हरा दिया था। तुम सब महारथी मिलकर भी अकेले अर्जुन का कुछ नहीं कर सके। उस समय तुम्हारी यह सब वीरता और पराक्रम कहाँ चला गया था? समर में जब अर्जुन ने तुम्हारे भाई को तुम्हारे आगे ही मार डाला तब कौरवों के सामने ही सबसे पहले तुम भाग खड़े हुए थे। द्वैतवन में गन्धर्वों ने जब आक्रमण किया था तब स्त्रियों सहित कौरवों को छोड़कर तुम्हीं पहले भागे थे। उस समय अर्जुन ने ही रण में चित्रसेन आदि गन्धर्वों को मारकर, हराकर, भाइयों सहित दुर्योधन को बन्धन से छुड़ाया था। उसके बाद कौरवों की भरी सभा में परशुराम और व्यासदेव ने अर्जुन और श्रीकृष्ण के प्रभाव का वर्णन किया था, सो भी तुम सुन चुके हो। भीष्म और द्रोण तुम्हारे और सब राजाओं के सामने बारम्बार कहते रहे हैं कि श्रीकृष्ण और अर्जुन को कोई भी नहीं मार सकता। हे कर्ण, मैं किन-किन बातों में अर्जुन

को तुमसे श्रेष्ठ बताऊँ ? ब्राह्मण जैसे सभी बातों में अन्य वर्णों से श्रेष्ठ होते हैं वैसे ही अर्जुन
८० भी सभी बातों में तुमसे श्रेष्ठ हैं। तुम अभी बढ़िया रथ पर स्थित पुरुषसिंह श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखोगे। मैं मित्र भाव से तुमको समझाता हूँ कि जैसे हंस की शरण में जाकर कौए ने अपने प्राण बचाये थे वैसे ही तुम भी अर्जुन और श्रीकृष्ण के शरणागत होकर अपनी रक्षा करो। हे कर्ण, जब तुम एक ही रथ पर स्थित पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखोगे तब ऐसी घमण्ड की बातें मुँह से न निकालोगे। जब अर्जुन अपने सैकड़ों तीक्ष्ण बाणों से तुम्हारे इस दर्प को चूर्ण करेंगे तब तुम्हें मालूम होगा कि तुममें और अर्जुन में कितना अन्तर है। हे कर्ण, मैं फिर कहता हूँ कि तुम मूर्खतावश उन पुरुषसिंह अर्जुन और श्रीकृष्ण को तुच्छ मत समझो जो अपने बल और पराक्रम के कारण देवताओं, असुरों और मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं। वे चन्द्र और सूर्य के समान हैं, और तुम जुगनू के समान हो। यह मैं ही नहीं कहता, बल्कि पृथ्वी भर पर वे चन्द्र-सूर्य समझे जाते हैं और तुम जुगनू। हे सूतपुत्र, यह जानकर तुम श्रीकृष्ण और अर्जुन
८७ का अपमान न करो, चुप रहो। तुम अपनी अधिक प्रशंसा व्यर्थ कर रहे हो।

बयालीसवाँ अध्याय

कर्ण और शल्य का संवाद

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, शल्य के ऐसे अप्रिय वचन सुनकर वीर कर्ण क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने कहा—हे शल्य, कृष्ण और अर्जुन जैसे और जितने हैं सो मैं खूब जानता हूँ। अर्जुन के रथ को हाँकनेवाले कृष्ण के बल-विक्रम और सारथी के काम में उनकी निपुणता को तथा अर्जुन के बल और दिव्य अस्त्रों को मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। इस सम्बन्ध में मुझे जितना ज्ञान है उतना तुमको नहीं। मैं उन श्रेष्ठ योद्धा कृष्ण और अर्जुन से निडर होकर युद्ध करूँगा; किन्तु गुरु महात्मा परशुराम और अन्य एक श्रेष्ठ ब्राह्मण ने मुझे जो शाप दे रक्खे हैं उनकी याद इस समय मुझे बहुत ही व्यथित कर रही है। पहले मैं दिव्य अस्त्र सीखने के लिए, ब्राह्मण ब्रह्मचारी के वेष से, गुरु परशुराम के पास रहकर अस्त्र-शिक्षा प्राप्त करने लगा था। हे शल्य, [एक दिन महात्मा परशुरामजी मेरी जाँघ पर सिर रखकर सो गये।] इन्द्र ने अर्जुन का हित करने के लिए, मेरी शिक्षा में विघ्न डालने के इरादे से, एक उग्र कीड़े का रूप रखकर मेरी जाँघ में काट खाया। फल यह हुआ कि मेरी जाँघ से रक्त बह चला। गुरु की नींद में बाधा पड़ेगी तो वे कोप करके शाप दे देंगे, इस डर के मारे मैं चुपचाप वैसा ही बैठा रहा, तनिक भी नहीं हिला-डुला। दम भर में गुरु की आँख खुली। उन्होंने मेरी जाँघ से रक्त निकलते देखा। ऐसी व्यथा में भी मुझे धैर्य के साथ बैठा हुआ देखकर गुरु

को, मेरे ब्राह्मण होने में, सन्देह हुआ। उन्होंने मुझसे कहा—तू ब्राह्मण तो है नहीं। सच बता, कौन है? हे मद्रराज, तब मैंने सच-सच कह दिया कि मैं सूत के यहाँ पला हूँ और सूत ही हूँ। यह सुनकर महात्मा परशुराम ने कुपित होकर मुझे शाप दे दिया। उन्होंने कहा—हे सूत, तूने ब्राह्मण बनकर मुझे धोखा देकर, मुझसे जो ब्रह्मास्त्र प्राप्त किया है उसको, काम पड़ने पर, मृत्यु के समय तू भूल जायगा। हे मूढ़, ब्राह्मण और क्षत्रिय के सिवा इस ब्रह्मास्त्र का अधिकारी दूसरा नहीं हो सकता। हे शल्य, इस घोर युद्ध के समय उस अस्त्र को मैं भूल गया हूँ और भरतवंशियों का यह भयङ्कर युद्ध हो रहा है जिसमें बड़े-बड़े वीर मारे जायँगे। श्रेष्ठ धनुर्धारी, फुर्तीले, भयङ्कर, असह्य पराक्रमी, सत्यप्रतिज्ञ अर्जुन को मैं युद्ध में जीता न छोड़ूँगा। १०

हे शल्य, माना कि परशुराम का दिया हुआ वह अस्त्र काम न देगा तो भी कोई चिन्ता नहीं। मेरे पास एक और बड़ा उग्र अस्त्र (सर्परूप बाण) है। उसी अस्त्र से मैं युद्धभूमि में असंख्य शत्रुओं का नाश करूँगा। प्रतापी, बलवान्, अस्त्रविद्या में निपुण, उग्र धनुर्द्धर, अमित वेगशाली, क्रूर, शूर, रौद्ररूप, शत्रुनाशन वीरवर अर्जुन को मैं उसी अस्त्र से युद्ध में मारूँगा। महाजलराशि, वेगशाली, अप्रमेय, अपार और मानों सब पृथ्वीवासियों को डुबाने के लिए घोर शब्द से गरज रहे सागर के समान आगे बढ़ रहे अर्जुन को मैं तट-भूमि की तरह आज रोकूँगा। मनुष्यों में श्रेष्ठ और वीरों के प्राण हरनेवाले मर्मभेदी असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसा रहे श्रेष्ठ योद्धा अर्जुन से आज मैं घोर युद्ध करूँगा। महाबली, श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञाता, समुद्र के समान दुर्द्धर्ष, उग्र और बाणवर्षा के जल में वीर राजाओं को डुबा रहे अर्जुन को आज मैं तटभूमि की तरह अपने बाणों से विमुख कर दूँगा। इसमें सन्देह नहीं कि अर्जुन दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता तथा शत्रुसेना का संहार करनेवाले हैं और सब देवता तथा दैत्य भी अगर मिलकर आवें तो वे भी अर्जुन को हरा नहीं सकते। देखना, उन्हीं अर्जुन

से मैं आज घोर युद्ध करूँगा। निर्भय, मानी अर्जुन आज युद्ध की इच्छा से मेरे सामने आवेंगे और मेरे ऊपर दिव्य अस्त्रों की वर्षा करेंगे। उनके अस्त्र-शस्त्रों को मैं अपने अस्त्रों से नष्ट करके, श्रेष्ठ बाणों से उन्हें मारकर, रथ से नीचे गिरा दूँगा। आज युद्ध में अर्जुन सूर्य के समान प्रचण्ड और प्रज्वलित होकर सब ओर शत्रुसेना का संहार करेंगे और मैं मेघ की तरह बाण बरसाकर उन्हें ढक लूँगा। धुएँ की ध्वजावाले प्रज्वलित अग्नि के समान राजाओं को अपने पराक्रम की ज्वाला में भस्म कर रहे तेजस्वी अर्जुन को आज मैं, मेघ की तरह, बाणवर्षा के जल से शान्त कर दूँगा। जिसकी दृष्टि में विष होता है और जो देखकर ही भस्म कर देता है उस तीक्ष्ण दाँतवाले अग्नितुल्य घोर विषैले साँप के समान कौरवसेना को भस्म

२० कर रहे महानाग अर्जुन को मैं आज अपने भयानक भल्ल बाणों से मार डालूँगा। प्रबल वेग से चल रही उग्र आँधी की तरह वीरों का नाश करते हुए आगे बढ़ रहे असहनशील क्रुद्ध अर्जुन को आज मैं हिमालय की तरह अटल होकर रोकूँगा। युद्ध में निपुण, विचित्र गतियों से रथ चलवाकर युद्ध कर रहे, श्रेष्ठ वीर, पृथ्वी भर के धनुर्द्धरों में अद्वितीय अर्जुन को आज मैं युद्ध में मारूँगा। जिन महावीर ने धनुष हाथ में लेकर अपने बाहुबल से सारी पृथ्वी को जीतकर दिग्विजय किया था, जिनके समान योद्धा और कोई नहीं है, जो पृथ्वी भर के योद्धाओं को अकेले ही नष्ट कर सकते हैं, उन्हीं वीर-शिरोमणि अर्जुन से आज मैं युद्ध करूँगा। जिन वीर अर्जुन ने खाण्डव-दहन के समय देवगण सहित सभी प्राणियों को परास्त किया था उनसे मेरे सिवा और कौन मनुष्य युद्ध की इच्छा और युद्ध करके अपने प्राणों की रक्षा कर सकता है? अर्जुन मानी, अस्त्रनिपुण, लगातार युद्ध करके भी न थकनेवाले, फुरतीले, दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता और शत्रुसेना का संहार करनेवाले हैं। उन अतिरथी अर्जुन के सिर को आज मैं तीक्ष्ण बाणों से काटकर पृथ्वी पर गिरा दूँगा। हे शल्य, आज मैं अर्जुन से अवश्य लड़ूँगा, फल चाहे जो हो। या तो अर्जुन मुझे मारेंगे और या मैं विजय प्राप्त करूँगा। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इन्द्र-सदृश अर्जुन से मेरे सिवा और कोई मनुष्य अकेला नहीं लड़ सकता। क्षत्रियों की सभा में मैं ही अर्जुन के पौरुष का वर्णन कर सकता हूँ। हे मूर्ख, तुम क्या हँस-हँसकर मेरे आगे अर्जुन के पौरुष का बखान कर रहे हो? तुम अत्यन्त अप्रिय वचन कहनेवाले, निष्ठुर, क्षुद्र, क्षमारहित और क्षमा करनेवाले पर आक्षेप करनेवाले मूढ़ हो। यद्यपि मैं तुम ऐसे सैकड़ों को मार सकता हूँ तो भी अपने कार्य और प्रतिज्ञा के अनुरोध से क्षमा करता हूँ। यह क्षमा करने का ही समय है। हे पापकर्मा शल्य, मूढ़ की तरह तुम मुझे विचलित करने के लिए अर्जुन की प्रशंसा और मेरा अपमान कर रहे हो। मैं तुमसे सरल भाव रखता हूँ और तुम मुझसे कुटिल व्यवहार करते हो। तुम मित्रद्रोही हो; क्योंकि सात पग एक साथ चलने से ही सज्जनों में मित्रता हो जाती है। यह बहुत ही दारुण समय उपस्थित है। राजा दुर्योधन स्वयं युद्धभूमि में

उपस्थित हैं। मैं उन्हीं का कार्य सिद्ध करने के लिए उन अर्जुन से युद्ध करूँगा जिनके ऊपर जय-पराजय निर्भर है। अथवा यों कहो कि मैं तो दुर्योधन का कार्य सिद्ध करना चाहता हूँ और तुम उन अर्जुन की प्रशंसा करके मुझे डराना चाहते हो, जो कि तुम्हारे अत्यन्त स्नेही नहीं हैं, अर्थात् तुम हमारे पक्ष में रहकर भी शत्रुपक्ष के साथ सहानुभूति और स्नेह दिखा रहे हो। मित्र शब्द जिन धातुओं से बन सकता है, उन धातुओं के सब अर्थ राजा दुर्योधन के प्रति मुझमें विद्यमान हैं अर्थात् स्नेह, अभिनन्दन, प्रीति, हित की चाह, रक्षा करना, मान करना और देखकर हर्ष होना, यही मित्रता के कार्य हैं; और दुर्योधन के साथ मेरे व्यवहार में ये सब कार्य प्रकट हैं। ऐसे ही शत्रु शब्द जिन धातुओं से बन सकता है, उन धातुओं के सब अर्थ मेरे प्रति तुममें विद्यमान हैं। काटना, शासन करना, कमज़ोर करना या तुच्छ समझना, हिंसा, विषाद-वैर आदि शत्रु के कार्य हैं और तुम मेरे प्रति व्यवहार में इन सब भावों को प्रकट कर रहे हो। हे शल्य ! दुर्योधन के भले के लिए, तुम्हारे सन्तोष के लिए, अपने यश, विजय और धर्म की प्राप्ति के लिए मैं यत्नपूर्वक कृष्ण और अर्जुन से युद्ध करूँगा। तुम आज मेरे अद्भुत कर्म और ब्राह्म, ऐन्द्र, वारुण आदि दिव्य अस्त्रों के प्रभाव को देखना। जैसे हाथी से हाथी भिड़ता है वैसे ही आज मैं उग्र वीर्यवाले अर्जुन से युद्ध करूँगा और उनके ब्राह्म, दिव्य, मानुष आदि अस्त्रों को अपने अस्त्रों से व्यर्थ करूँगा। अगर युद्ध के समय विषम भूमि में मेरे रथ का पहिया न धँस जायगा तो मैं अवश्य आज अर्जुन को जीता न छोड़ूँगा। वे मन में दिव्य ब्रह्मास्त्र को जपते हुए [कुपित होकर चाहे जितने बाण बरसावें पर] मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं दण्डपाणि यमराज, पाशपाणि वरुण, गदापाणि कुबेर, वज्रपाणि इन्द्र और अन्य कोई भी शस्त्र हाथ में लेकर शत्रुभाव से आक्रमण करने को आ रहे देवता से नहीं डरता। हे शल्य ! सच जानो, मैं अर्जुन या कृष्ण किसी वैरी से नहीं डरता। आज उन दोनों से मेरा घोर युद्ध होगा। ३० ३८

हे मद्रराज ! मुझे केवल उस ब्राह्मण के शाप का डर है जिसने कहा था कि युद्ध में, प्राण-सङ्कट के समय, पृथ्वी में तेरे रथ का पहिया धँस जायगा। ये ब्राह्मण सर्वथा सुख या दुःख देने की सामर्थ्य रखते हैं, इसी लिए ब्राह्मण के इस शाप का मुझे बड़ा डर है। बात यह हुई थी कि मैं एक समय निर्जन वन में बाण चलाने का अभ्यास कर रहा था। वहाँ [योग्यहेति] ब्राह्मण की, अग्निहोत्र की, गाय का बछड़ा चर रहा था। मेरा घोर बाण, बिना जाने, उस बछड़े को लग गया और उससे वह मर गया। यह देख उस ब्राह्मण ने कुपित होकर शाप देते हुए कहा—तुमने यहाँ मेरी, अग्निहोत्र की, गाय का बछड़ा मार डाला है इसलिए जब तुम शत्रु से युद्ध कर रहे होगे, प्राण-सङ्कट का समय उपस्थित होगा, तब तुम्हारे रथ का पहिया गढ़े में गिरकर फँस जायगा। [तुम जिससे युद्ध करने के लिए लाग-डाँट रखते हो और जिसे जीतने के लिए यह सब अभ्यास करते हो, उसी शत्रु के हाथ से तुम्हारी मृत्यु होगी।] हे शल्य, तब मैंने

तरह-तरह से उस ब्राह्मण को प्रसन्न करने का यत्न किया। मैंने उसको एक हज़ार गायें, छः सौ बैल, एक सौ दासियाँ, बड़े-बड़े दाँतोंवाले सात सौ गजराज, सैकड़ों दास-दासी, चौदह हज़ार सफ़ेद बछड़ेवाली काली गायें आदि बहुत कुछ देना चाहा, पर वह किसी तरह प्रसन्न न हुआ। मैंने हाथ जोड़कर अन्त को उससे कहा कि महानुभाव, आपको मैं अपना सर्वस्व देने को तैयार हूँ, प्रसन्न होकर अपना शाप वापस कर लीजिए। इस पर मुझे रोककर उस ब्राह्मण ने कहा कि हे सूत! मैं जो कह चुका सो कह चुका, मेरी बात किसी तरह मिथ्या नहीं हो सकती। मेरे मिथ्या कथन का बुरा फल सब प्रजा को भोगना पड़ेगा, उससे प्रजा का नाश होगा और मुझे पाप लगेगा। धर्म की रक्षा के ख़याल से मैं, लोभ में पड़कर, अपने वचन को मिथ्या नहीं कर सकता। तुम मुझसे मिथ्या बुलवाकर

ब्रह्मगति को नष्ट करने का यत्न न करो। यह मेरा शाप तुम्हारे इस पाप का प्रायश्चित्त होगा। मेरे शाप को तीनों लोकों में कोई टाल नहीं सकता।

हे शल्य, तुमने बार-बार आक्षेप करके मुझे तुच्छ ठहराया, इसी से मैंने मित्र-भाव से यह अपने शाप का हाल तुमसे कह दिया। मेरे कहने का मतलब यह है कि मैं अर्जुन से नहीं डरता। ५० हाँ, इस शाप के कारण मुझे डर लग रहा है। अब चुप रहकर ज़रा अपने दोषों को सुनो।

तेंतालीसवाँ अध्याय

कर्ण के कटु वचन

सञ्जय कहते हैं कि शत्रुदलदलन कर्ण ने शल्य को रोककर फिर उनसे कहा—हे शल्य! मुझे डराने और धमकाने के लिए तुमने उपहासपूर्वक जो हंस-कौए का क़िस्सा गढ़कर सुनाया है, उसे मैं तुम्हारा प्रलाप ही समझता हूँ। तुम इस तरह की बातें कहकर केवल वाणी से

मुझे डरा नहीं सकते। कहता तो हूँ कि अगर इन्द्र सहित सब देवता भी युद्ध करने के लिए मेरे सामने आवें और युद्ध करें तो भी मैं डर नहीं सकता, फिर अर्जुन और कृष्ण हैं क्या चीज़, जिनसे मैं डरूँगा? मैं महायुद्ध में विशुद्ध क्षत्रियोचित कर्म अर्थात् युद्ध करनेवाला हूँ। तुम और किसी को इस तरह भले ही डरा दो, किन्तु मैं नहीं विचलित हो सकता। नीच का बल यही कड़वे कठोर वचन कहना है, जैसे वचन तुम मुझसे कह रहे हो। हे दुर्मति, तुम मेरे गुणों का वर्णन नहीं कर सकते, इसी से इस तरह निन्दा कर रहे हो। लेकिन ख़ूब याद रक्खो, कर्ण इस संसार में डरने के लिए नहीं उत्पन्न हुआ; यश, विजय और पराक्रम के लिए ही कर्ण का जन्म हुआ है। हे शल्य! सच समझो, तुम जो ऐसे दुर्वचन कहने पर भी मेरे हाथ से नहीं मारे गये उसके तीन कारण हैं—मेरी सहनशीलता, सौहार्द और मित्र राजा दुर्योधन के अभीष्ट-साधन का ख़याल। इस समय राजा दुर्योधन का बहुत बड़ा कार्य आ पड़ा है, वह मुझे करना है, और उसमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है; इसी लिए अब तक तुम जी रहे हो। दूसरे, पहले मैं वादा कर चुका हूँ कि तुम जो कुछ अप्रिय भी कहोगे तो उसे मैं क्षमा करूँगा; इस कारण भी तुम अब तक जी रहे हो। तीसरे, एक साथ रहने के कारण तुम मेरे मित्र भी हो चुके हो। तुम्हें मारना मित्रद्रोह होगा, जो कि महापातक है। इस कारण भी तुम अब तक जीवित हो। अगर तुम ऐसे हज़ार शल्य भी मेरे विरुद्ध हों, तो भी मैं अकेला ही शत्रुओं को जीतने का दावा रखता हूँ। ९

चवालीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र की सभा में बटोही ब्राह्मण से सुना हुआ शल्य के देश का लोकाचार सुनाकर कर्ण का निन्दा करना

शल्य ने कहा—हे कर्ण, मर रहा मनुष्य जैसे अण्ट-शण्ट बकता है वैसे ही तुम अपने शत्रुओं के बारे में बक रहे हो। तुम ऐसे हज़ार कर्ण भी युद्ध में उनको नहीं जीत सकते।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, इस प्रकार कठोर वचन कह रहे शल्य की बातों के उत्तर में कर्ण ने दूने कठोर वचन कहना शुरू किया—हे मूढ़ शल्य, महाराज धृतराष्ट्र के आगे ब्राह्मणों के मुँह से मद्र देश के लोगों के बारे में जो कुछ मैंने सुना है सो मैं तुमसे कहता हूँ, एकाग्र होकर सुनो। धृतराष्ट्र की सभा में ब्राह्मण लोग अनेक देशों के वृत्तान्त, प्राचीन राजाओं के इतिहास और विविध विचित्र कथाएँ कहा करते थे। एक बूढ़े ब्राह्मण ने अनेक प्राचीन कथाएँ कहते-कहते वाह्लीक और मद्र देश के रहनेवालों की निन्दा करते हुए यह कहा था—महाराज! हिमालय, गङ्गा, यमुना, सरस्वती और कुरुक्षेत्र के बाहर तथा सिन्धु नद और उसकी

पाँच शाखा-नदियों के बीच में बसनेवाले जो धर्मबहिष्कृत अपवित्र वाह्लीकगण हैं उन्हें दूर से ही छोड़ देना चाहिए। उनका सङ्ग करना या उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना अनुचित है। गोवर्द्धन (जहाँ गायें कटती हैं) नामक वटवृक्ष और सुभद्र नाम का चत्वर कलियुग का द्वार या निवासस्थान है। राजन्, मैं इन दोनों को याद रक्खे हुए हूँ। एक गूढ़ और आवश्यक कार्य के कारण मुझे, कुछ दिन, वाह्लीक देश में रहना पड़ा था। वहाँ उनके साथ रहने से ही उनका सब हाल मुझे मालूम हुआ है। शाकल (सियालकोट ?) नाम का नगर (मद्र देश की राजधानी), आपगा नाम की नदी और जर्तिका नाम के वाह्लीकगण, इनके आचरण निन्दित हैं। वे गुड़ की बनी मदिरा पीते हैं, लहसुन में पका हुआ निषिद्ध मांस, भुने जव के सत्तू और अपूप (पूड़े) खाते हैं। स्त्रियाँ मदिरा
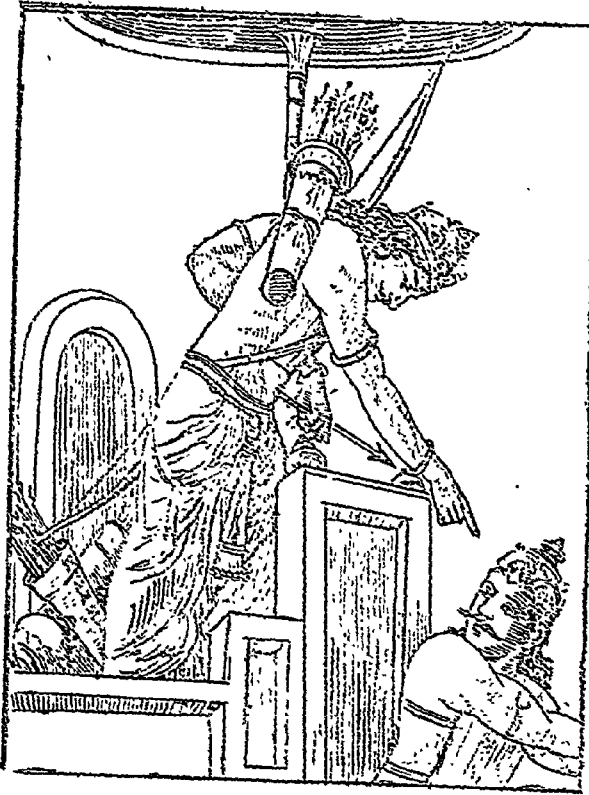
१०

के नशे में चूर होकर, नगर के बाज़ार आदि खुले स्थानों में, बेपर्द नाचती और गाती हैं। वे माला-चन्दन आदि नहीं धारण करतीं। गधे और ऊँट की तरह चिल्लाकर भोंडे गीत गाती हैं। वहाँ की प्रायः सभी स्त्रियाँ इच्छानुसार व्यभिचार करती हैं; इस काम में वे अपने-पराये पुरुष का विचार नहीं रखतीं। पुरुषों से आनन्दपूर्वक कामोद्दीपक बातें करती हैं। वे पतित स्त्रियाँ उत्सवों में मदिरा पी-पीकर—परस्पर कुत्सित शब्द कहकर—गाती, नाचती और गालियाँ देती हैं। हे शल्य, वाह्लीक देश की किसी दुष्ट स्त्री का पति एक समय कुरुजाङ्गल देश में था। उसने विदेश-वास से कुछ उदास और अपने देश को जाने के लिए उत्सुक होकर जो कहा था सो मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। उसने कहा—अवश्य ही वह गोरी सुन्दरी, महीन कम्बल पहने हुए प्रिया मुझ परदेशी को स्मरण करती हुई शयन कर रही होगी और मैं यहाँ कुरुजाङ्गल में पड़ा हुआ हूँ! हाय, मैं कब शतद्रु और रमणीय इरावती नदी के पार जाकर अपने देश में पहुँचूँगा और कम्बल-मृगचर्म-धारिणी, माथे की ऊँची हड्डीवाली, गोरी, मैनसिल के समान उज्ज्वल आँख के कोयोंवाली, माथा गाल और ठुड्डी में काजल लगानेवाली, प्यारी-प्यारी सुन्दरी स्त्रियों को देखूँगा।

वाह्लीक देश में शाकल नाम के बड़े नगर में एक राक्षसी हर कृष्णपक्ष की चौदस को दुन्दुभी बजा कर गाती है। पृष्ठ—२८२१
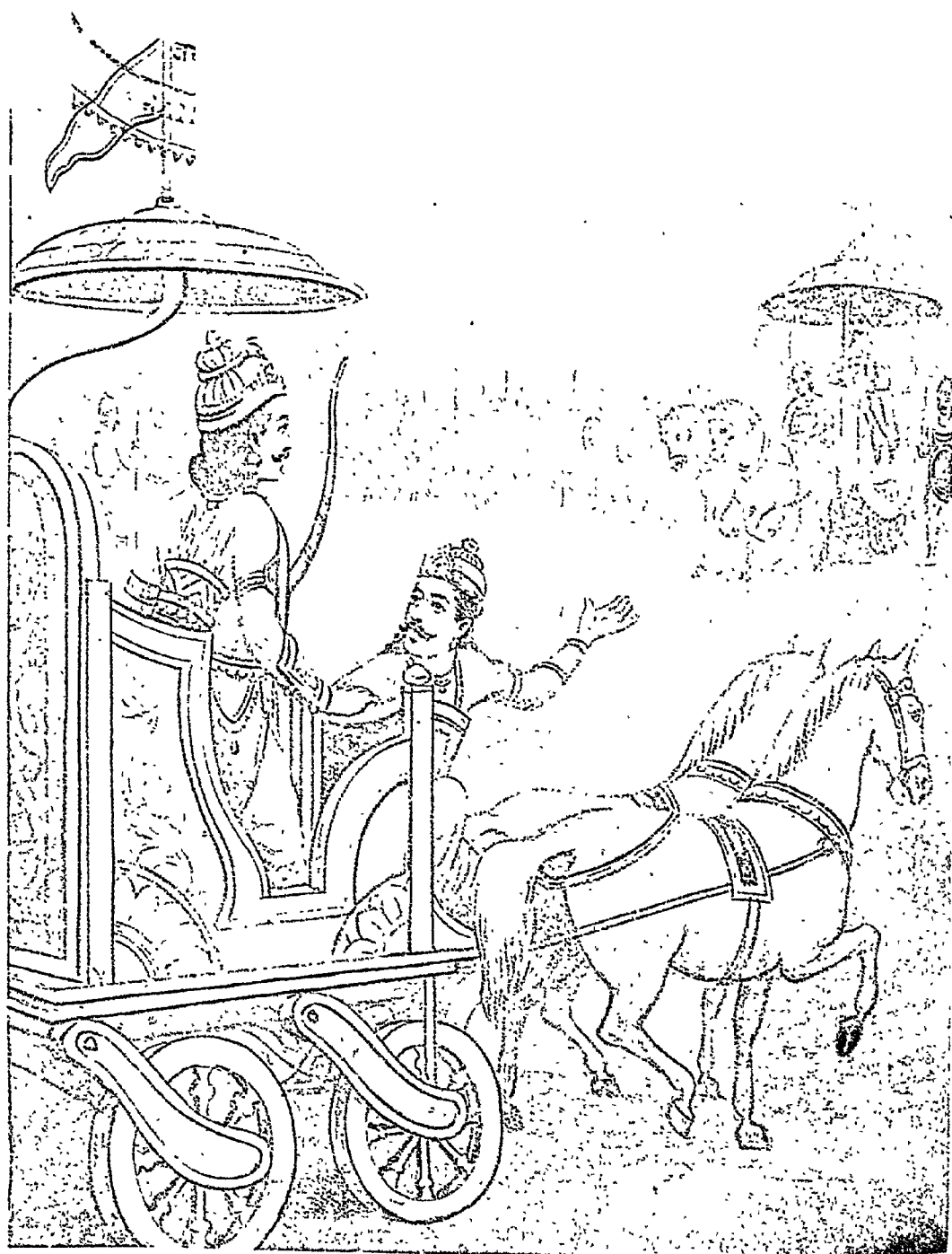
धर्मात्मा पुरुषों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर युद्ध करने को खड़े हैं। पृष्ठ—२८२१

मैं अपने देश में गधे, ऊँट और खच्चर आदि की सवारियों पर जानेवाले नर-नारियों को देखूँगा और मृदङ्ग-ढोल-शङ्ख-मर्दल आदि बाजों के शब्द सुनूँगा। शमी, पीलू और करीर वृक्षों के वनों की सुखदायक राहों में हम सब यात्री लोग पूड़े, सत्तू और मट्ठे आदि को खाकर सुखी होंगे। २० मार्ग में मदिरा आदि पीने से कामवश होकर हम लोग स्त्रियों को नग्न करके उनसे रमण करेंगे। महाराज! वाह्लीकगण ऐसे दुराचारी और दुरात्मा होते हैं। कौन सहृदय धर्मात्मा पुरुष उनके बीच में, घड़ी भर भी, रह सकता है?

हे शल्य, तुम उन्हीं वाह्लीकों के राजा हो और इसी कारण उनके पुण्य-पाप के छठे अंश के हिस्सेदार हो। उस ब्राह्मण ने कुरु-सभा में वाह्लीक देश के लोगों का ऐसा ही चरित्र बतलाया था। इतना ही नहीं, उस ब्राह्मण ने और जो कुछ कहा था, वह भी मैं तुमको सुनाता हूँ। उसने कहा कि हे महाराज, वाह्लीक देश में शाकल (स्यालकोट ?) नाम के बड़े नगर में एक राक्षसी हर कृष्ण पक्ष की चौदस को दुन्दुभी बजाकर इस तरह गाती है कि अहा! मैं अब फिर कब शाकल नगर में सुसज्जित होकर, निषिद्ध मांस और गौड़ी मदिरा से तृप्त होकर, बृहती गोरी नारियों के साथ वाहेयिक सङ्गीत गाऊँगी? कब प्याज़ डालकर पकाये गये मेष-मांस को खाऊँगी? जिन लोगों ने सूअर, मुर्गे, ..., गधे, भेंड़ और ऊँट का मांस नहीं खाया उनका जन्म ही वृथा है। हे शल्य, शाकल नगर में बालक-बूढ़े-जवान सभी मदिरा-पान से मत्त होकर पीलुका वनों में इसी तरह के गीत गाते हैं। तब फिर उनमें धर्म कहाँ से हो सकता है? ३०

हे शल्य, कौरवों की सभा में अन्य एक ब्राह्मण ने आकर जो कुछ तुम लोगों के सम्बन्ध में कहा था, वह भी सुन लो। उसने कहा कि हिमालय के बाहर जहाँ अनेक पीलु-वन हैं और शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता और सिन्धु, ये छः महानदियाँ बहती हैं वह आरट्ट नाम का वाह्लीक स्थान है। वहाँ की बस्तियों में आर्य पुरुषों को न बसना चाहिए। सुना जाता है कि ब्राह्मण, देवता और पितर उन धर्मभ्रष्ट, संस्कारहीन आरट्ट-देश-निवासी वाह्लीकों की दी हुई पूजा आदि को नहीं ग्रहण करते; क्योंकि वे पतित, दासतुल्य और यज्ञ न करनेवाले होते हैं। कुरुसभा में उस विद्वान् ब्राह्मण ने यह भी कहा था कि वे घृणाशून्य वाह्लीक देश के निवासी कुत्तों के चाटे हुए लकड़ी और मिट्टी के पात्रों में सत्तू और मदिरा खाते-पीते हैं। वे लोग मेष, ऊँट, गधी आदि का दूध दही आदि भी खाते हैं। वे किसी के अन्न और दूध को नहीं छोड़ते। उनमें किसी के पिता का पता नहीं है। इसलिए विद्वान् पुरुष को आरट्ट देश के निवासी वाह्लीकों का संसर्ग कभी न रखना चाहिए।

हे शल्य, कुरुसभा में उस ब्राह्मण ने वाह्लीकों के सम्बन्ध में और जो कुछ मेरे आगे कहा था वह भी मैं तुमसे कहता हूँ। उसने कहा था कि जो मनुष्य 'युगन्धर' स्थान में ऊँट आदि का अपेय दूध पीता है, 'अच्युत स्थल' में रहता है और 'भूतिलय' में स्नान करता है,

४० उसे कैसे स्वर्ग प्राप्त हो सकता है ? जहाँ पर्वत से निकलकर पाँच नदियाँ बहती हैं, उन आरट्ट वाह्लीक देशों में आर्य पुरुष को दो दिन भी न रहना चाहिए; क्योंकि उतने ही समय में वह धर्मभ्रष्ट पतित हो जाता है। वहाँ की विपाशा नदी में 'वाह' और 'हीक' नाम के दो पिशाच रहते हैं। वाह्लीकगण उन्हीं की सन्तान हैं। उन्हें प्रजापति ने नहीं उत्पन्न किया। अत- एव वे हीनयोनि पिशाचपुत्र कैसे विविध श्रेष्ठ धर्मों को जान सकते हैं? धर्महीन कारस्कर, माहिषक, कालिङ्ग, केरल, कर्कोटक, वीरक आदि मदिरा पीकर उन्मत्त होनेवाली, वाह्लीक देश की जातियों से सर्वथा किसी तरह का सम्बन्ध न रखना चाहिए। महोलूखलमेखला नाम की कोई राक्षसी तीर्थों में घूमती हुई वाह्लीक देश में पहुँची थी और यह उसी का कथन है। तीर्थ-यात्रा के प्रसङ्ग में उक्त ब्राह्मण एक रात को आरट्ट देश में रहा था; वहीं उस राक्षसी से उसने यह हाल सुना था। इस देश में जो अभागे ब्राह्मण रहते हैं वे न तो वेद ही पढ़ते हैं और न यज्ञ-हवन आदि करते हैं। आरट्ट देश है, वाह्लीक नाम के जन हैं, वहीं के लोगों का ऐसा आचरण है। वाह्लीकों की तरह प्रस्थल, मद्र, गान्धार, खश, वसाति, सिन्धु और सौवीर देशों में भी म्लेच्छप्राय धर्मभ्रष्ट लोग रहते हैं और उनमें भी ये सब दुराचार ४७ प्रचलित हैं। ये सब अत्यन्त निन्दित हैं।

पैंतालीसवाँ अध्याय

कर्ण के कटु वचन और दुर्योधन का दोनों को शान्त करना

कर्ण ने कहा—हे शल्य ! तुम्हारे आगे जो कुछ मैंने कहा वह तुम सुन चुके, अब और जो कुछ कहता हूँ वह भी ध्यान देकर सुनो। कुछ दिन हुए, एक ब्राह्मण मेरे यहाँ अतिथि रूप से आकर ठहरे थे। उन्होंने हमारे यहाँ के सदाचार को देखकर सन्तुष्ट होकर कहा कि मैं अकेला बहुत समय तक हिमवान् पर्वत के शिखर पर रहा हूँ और मैंने घूम-फिरकर अनेक प्रकार के धर्मों का पालन करनेवाले बहुत से देशों की सैर भी की है। मैंने कहीं लोगों को धर्म और सनातन सदाचार के विरुद्ध आचरण करते नहीं देखा। वेद के ज्ञाता ऋषियों के बताये धर्म- मार्ग पर सभी लोग चलते हैं। इस तरह विविध धर्मों के अनुगामी और सत्य-सनातन वेदोक्त धर्म के माननेवाले देशों में घूमता-फिरता मैं जब वाह्लीक देश में पहुँचा तब सुना कि वहाँ क्रमशः [दुष्कर्म और दुराचरण के कारण] पतित होते-होते ब्राह्मण से क्षत्रिय, फिर वैश्य, फिर शूद्र और फिर नाई होता है। इसके बाद फिर ब्राह्मण और द्विज होकर वहीं दास पद को प्राप्त होता है। वाह्लीक देश का यही उलटा क्रम है। वहाँ ब्राह्मण के एक कुल में एक ही भाई ब्राह्मण होता है, अन्य भाई इच्छानुसार कर्म करते हैं और क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि

वहां की विपासा नदी में 'वाह' और 'हीक' नाम के दो पिशाच रहते हैं। पृ० २८३०, ४४वां अध्याय।

की श्रेणी में चले जाते हैं। गान्धार, मद्रक और वाह्लीकगण तेज से हीन, दुराचारी, वर्णसङ्कर और ओछी तबीयत के होते हैं। मैंने सारी पृथ्वी पर घूमकर वाह्लीक देश में ही यह धर्मसङ्कर और वर्णसङ्कर का वृत्तान्त देखा-सुना है।

हे शल्य, इसके सिवा और एक मनुष्य से जो मैंने वाह्लीक देश के लोगों का कुत्सित वृत्तान्त सुना है वह भी तुमसे कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो। पूर्व समय में आरट्ट देश के डाकू किसी सती कुमारी को पकड़ लाये और अधर्मपूर्वक उन्होंने उसका धर्म नष्ट किया। तब उस कुमारी ने उन्हें शाप दिया कि हे नराधम दुष्टो! मैं बाला और भाइयोंवाली हूँ, तुम अधर्मपूर्वक मुझपर बलात्कार करते हो, इस कारण मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि तुम्हारे घरों की स्त्रियाँ व्यभिचारिणी हुआ करेंगी। मेरे इस घोर शाप से तुम्हारा कभी छुटकारा नहीं होगा। हे शल्य, इसी कारण आरट्ट देशवालों में यह प्रथा है कि लड़का धन का उत्तराधिकारी नहीं होता, भानजा ही होता है। [उन्हीं अधर्मी दुराचारी आरट्टदेशीयों के पुण्य-पाप के छठे अंश के भागी तुम कैसे धर्म का बखान कर सकते हो ?] कुरु, पाञ्चाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोसल, काशि, अङ्ग, कलिङ्ग, मगध, चेदि आदि देशों के निवासी भाग्यशाली पुण्यात्मा पुरुष ही धर्म को जानते हैं। आर्यावर्त के बाहर और भारत के सीमा-प्रान्त में रहनेवाले वाह्लीक तथा मद्र आदि देशों के म्लेच्छप्राय लोगों को छोड़कर और-और देशों के निवासी आर्यों के सदाचार और धर्म को जानते हैं। मत्स्य, पाञ्चाल, कुरु, शाल्व, नैमिष, चेदि आदि देशों के असभ्य असाधु पुरुष भी प्राचीन धर्म के विषय को जानते हैं। केवल कुटिल हृदयवाले शठ मद्र और पञ्चनद देशों के लोग ही धर्म-विरोधी तथा दुराचारी होते हैं। हे मद्रराज, यह सब जानकर जहाँ धर्म की बातें हों वहाँ तुम सदा चुप रहा करो; क्योंकि तुम ऐसी ही दुराचारी प्रजा के रक्षक और राजा होने के कारण उसके पुण्य और पाप के छठे हिस्से के हिस्सेदार हो।

१०

अथवा तुम उन लोगों के केवल पाप के ही छठे हिस्से के हिस्सेदार हो; क्योंकि उनकी रक्षा करने का—उनको अधर्म से बचाने का—तुम कुछ यत्न नहीं करते। जो राजा प्रजा की रक्षा करता है वही उसके पुण्य के छठे अंश का भागी होता है। पहले सत्ययुग में सब लोकों के पितामह ब्रह्मा अन्यान्य देशों में सनातन धर्म का सम्मान और सब वर्णों को अपने-अपने धर्म में स्थित देखकर बहुत प्रसन्न हुए; किन्तु पञ्चनद-आरट्ट-वाह्लीक आदि देशों के निवासियों का धर्म अर्थात् आचरण अत्यन्त कुत्सित देखकर उन्होंने बारम्बार उन्हें धिक्कार दिया। जब ब्रह्माजी ने पुण्यमय सत्ययुग में भी वाह्लीकों को कुकर्म में प्रवृत्त और दुराचारी देखकर उनके आचरण की निन्दा की तब तुम्हें इस समय चुप ही रहना चाहिए। धर्म के सम्बन्ध में व्यर्थ बक-बक करना तुम जैसे धर्महीन देश के राजा को नहीं सोहता। २१

हे शल्य, मैं फिर जो तुमसे कहता हूँ वह एकाग्र होकर सुनो। पहले कल्माषपाद नामक राक्षस यह कहते-कहते कि "क्षत्रिय का मल भिक्षा माँगना है, ब्राह्मण का मल वेद न पढ़ना और ब्रह्मचर्य न रखना है, पृथ्वी का मल वाह्लीक देश है और स्त्रियों का मल मद्र देश की स्त्रियाँ हैं" एक सरोवर में डूब रहा था। इसी समय किसी राजा ने आकर उसे बाहर निकाला और उससे वही राक्षस-बाधा दूर करनेवाला मन्त्र पूछा। तब उस राक्षस ने कहा—राजन्, किसी मनुष्य को राक्षस की बाधा हो या विष चढ़ा हो तो उसकी चिकित्सा उन मन्त्रों को पढ़कर करनी चाहिए, जिनका भाव यह है कि "पापी और धर्माधर्म का विचार न करनेवाले लोग मनुष्य जाति का मल हैं, औष्ट्रिक लोग उन म्लेच्छप्राय धर्माधर्म-विचार-शून्यों का मल हैं, नपुंसक लोग उन औष्ट्रिकों का मल हैं और यज्ञ करानेवाले क्षत्रिय उन बर्बरों (हिजड़ों) का मल हैं। इस समय तू अगर हमको (या इस मनुष्य को) नहीं छोड़ेगा तो तुझको यज्ञ करानेवाले क्षत्रिय और मद्रक लोगों के पाप का भागी होना पड़ेगा।" हे शल्य, इस मन्त्र के सब वचन सत्य हैं। हे मद्रराज, पाञ्चालगण ब्राह्म-धर्म का और कौरवगण सत्य-धर्म का अनुष्ठान करते हैं। मत्स्य और शूरसेन देशों के निवासी याग-यज्ञ इत्यादि करते हैं। पूर्व दिशा के देशों के निवासी दासों (शूद्रों) के धर्म का आचरण करते हैं। दक्षिण दिशा के देशों के लोग धर्मद्रोही होते हैं। वाह्लीक देश के लोग चोर-डाकू होते हैं और सुराष्ट्र देश के लोग वर्णसङ्कर [या धर्मसङ्कर] के दोष से दूषित होते हैं। कृतघ्नता, पराया धन हर लेना, मदिरापान, गुरु-स्त्री-गमन, भ्रूणहत्या, कठोर वचन बोलना, गो-वध करना, रात को घर छोड़कर पराई स्त्री और पराये धन की तलाश में निकलना, पराये वस्त्र (अथवा वस्तु) का उपयोग, ये सब पाप जिनके नित्य के कर्म हैं उन आरट्ट देश में उत्पन्न पञ्चनदवासियों के लिए इससे बढ़कर और क्या अधर्म हो सकता है? उन्हें सैकड़ों बार धिक्कार है! हे शल्य! कुरु, पाञ्चाल, नैमिष और मत्स्य देश के लोग सनातन वेदोक्त धर्म को जानते और मानते हैं। और, उत्तर

दिशा में स्थित अङ्ग, मगध आदि देशों के वृद्ध लोग धर्म के स्वरूप को पूर्ण रूप से न जानने पर भी शिष्टाचार और सदाचार के अनुगामी होते हैं। ३०

हे शल्य! अग्नि आदि देवगण पूर्व दिशा में, पितृगण और पुण्यात्मा शुभ कर्म करनेवाले यमराज दक्षिण दिशा में, बली वरुणदेव सुरों का पालन करते हुए पश्चिम दिशा में और भगवान् सोम ब्राह्मणों सहित उत्तर दिशा में रहते और उक्त दिशाओं की रक्षा करते हैं। राजन्! राक्षस और पिशाच हिमालय की, यक्ष-गुह्यकगण गन्धमादन गिरि की और सनातन भगवान् विष्णु सभी प्राणियों की रक्षा करते हैं। [मतलब यह कि नैर्ऋत्य कोण के वाह्लीक आदि देशों की रक्षा विष्णु भगवान् साधारणतः वैसे ही करते हैं जैसे मेघ सर्वत्र बरसते हैं। जैसे अन्य देशों में विशिष्ट देवता का अनुग्रह है, वैसे वाह्लीक आदि उक्त देशों में विशेष रूप से देवानुग्रह नहीं देख पड़ता।] मगध देश के लोग इशारे से बात समझ जाते हैं, कोशल देश के लोग देखने से बात समझ जाते हैं, कुरु-पाञ्चाल देश के लोग आधी बात कहने से सारी बात जान लेते हैं और शाल्व (दाक्षिणात्य) लोग पूरी बात कहने से उसे समझ सकते हैं। पहाड़ों के विषम स्थानों में रहनेवाले पहाड़ी लोग पाषाण की तरह जड़ और अत्यन्त निर्बोध होते हैं। शिवि भी ऐसे ही होते हैं। यवनगण सर्वज्ञ और विशेषकर शूर होते हैं; किन्तु यवन और म्लेच्छ लोग सब जानने पर भी अपने पूर्वजों के बताये हुए धर्म-सङ्केत को ही मानते हैं, वैदिक धर्म को नहीं मानते। अन्य लोग बिना बताये अपने हित अर्थात् धर्म को नहीं जानते। वाह्लीकगण मारे-पीटे से समझते हैं अथवा यों कहो कि हित की बात बतानेवाले के विरोधी अर्थात् गुरु-द्रोही होवे हैं। और, मद्र देश के लोग ऐसे मूढ़ होते हैं कि किसी तरह नहीं समझते। हे शल्य, तुम वही मद्र देश के मूढ़ मनुष्य हो। इसलिए चुप रहो, उत्तर देने की चेष्टा न करो। मद्र देश पृथ्वी के सब देशों का मल है। तुम अगर चुप नहीं रहोगे तो मैं पहले सेना और पुत्रों सहित तुम्हीं को मारूँगा; कृष्ण और अर्जुन से पीछे निपटता रहूँगा।

कर्ण के ये कटु वचन सुनकर मद्रराज शल्य ने कहा—हे कर्ण, तुम जिनके राजा हो उन अङ्ग देश के लोगों में मर रहे पीड़ित व्यक्ति को छोड़ देने की और स्त्री-पुत्र आदि को बेच डालने की चाल प्रचलित है। महापराक्रमी भीष्म ने रथी अतिरथी आदि की गणना के समय तुम्हारे जिन दोषों को बतलाया था उनका स्मरण करके क्रोध न करो, शान्त होओ। हे कर्ण! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और सती साध्वी स्त्रियाँ सर्वत्र सभी देशों में होती हैं। मर्द मर्दों से सब जगह हँसी-दिल्लगी करके मनोरञ्जन करते हैं। कामी और लम्पट भी सब जगह होते हैं। शराबी भी सर्वत्र देख पड़ते हैं। हर एक देश में मैथुन और व्यभिचार भी होता है। हे कर्ण! पराये दोषों का बखान करने में सभी निपुण हुआ करते हैं; किन्तु प्रायः लोग अपने दोषों को नहीं जानते और अगर जानते भी हैं तो उनका ख़याल नहीं करते। अपने-अपने धर्म का पालन, ४०

दुष्टों का दमन और शिष्टों की रक्षा करनेवाले राजा भी सब जगह हैं। धर्मात्मा पुरुष भी सर्वत्र हैं। हे कर्ण, यह बिलकुल असम्भव है कि किसी एक देश के सभी मनुष्य पापी हों। असल बात यह है कि मनुष्य अपने आगे देवताओं को भी कुछ नहीं समझते।

सञ्जय कहते हैं—महाराज, इसी समय राजा दुर्योधन ने उन दोनों को परस्पर झगड़ते देखकर मित्र भाव से समझाकर कर्ण को और नम्रता से शल्य को शान्त किया। इस तरह दुर्योधन के मना करने पर कर्ण और शल्य दोनों चुप होकर शत्रुओं का नाश करने के लिए तैयार ४८ हुए। कर्ण ने हँसकर शल्य से रथ आगे बढ़ाने के लिए कहा।

छियालीसवाँ अध्याय

व्यूह-रचना का वर्णन और शल्य तथा कर्ण का संवाद

सञ्जय ने कहा—महाराज, अब रणनिपुण महातेजस्वी कर्ण ने देखा कि पाण्डवों ने ऐसे व्यूह को बाँधा है जो दृढ़ता में अद्वितीय और शत्रुसेना के आक्रमण को व्यर्थ करनेवाला है। उस व्यूह के रक्षक वीर धृष्टद्युम्न हैं। तब कर्ण ने भी कुपित होकर अपनी सेना में व्यूह की रचना की। रथों के शब्द, सिंहनाद और बाजों के शब्द से पृथ्वीतल को कँपाते हुए वे शत्रु-सेना की ओर बढ़े। इन्द्र जैसे असुरसेना का संहार करें वैसे ही वे पाण्डवसेना का नाश करते हुए युधिष्ठिर को पीड़ित करके उनके वाम भाग में पहुँचे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! भीमसेन के बाहुबल से सुरक्षित, देवताओं से भी न जीते जा सकनेवाले धृष्टद्युम्न आदि पाण्डवपक्ष के महाधनुर्द्धर वीरों के विरुद्ध महावीर कर्ण ने किस तरह अपनी सेना का मोर्चा बाँधा? हे सञ्जय! मेरी सेना के पक्ष और प्रपक्ष में कौन-कौन कवचधारी वीर विभागपूर्वक स्थित हुए? पाण्डवों ने किस व्यूह की रचना की? यह दारुण युद्ध किस तरह हुआ? जिस समय कर्ण ने युधिष्ठिर पर आक्रमण किया उस समय वीरवर अर्जुन कहाँ थे? क्योंकि अर्जुन के पास रहते कोई भी युधिष्ठिर पर हमला नहीं कर सकता। जिन अर्जुन ने पहले खाण्डव-दाह के समय अकेले ही सब प्राणियों को परास्त कर दिया था उनके सामने कर्ण के सिवा और कौन जीवन की इच्छा रखनेवाला योद्धा ठहर सकता है?

सञ्जय ने कहा—राजन्! जिस तरह व्यूहों की रचना हुई, युधिष्ठिर पर आक्रमण के समय अर्जुन जहाँ गये थे और अपने-अपने पक्ष में एकत्र होकर जिन-जिन वीरों ने जिस तरह १० जैसा संग्राम किया, सो सब मैं आपसे कहता हूँ, सुनिए। महाबली कृपाचार्य, यादवश्रेष्ठ कृतवर्मा और मगध देश के योद्धा वीर आपके व्यूह में दक्षिण पक्ष में स्थित हुए। निर्मल प्रास हाथ में लिये घुड़सवारों की सेना के साथ शकुनि और उलूक आदि महारथी उनके प्रपक्ष में

स्थित होकर उनकी रक्षा करने लगे। गान्धार देश के निडर योद्धा, दुर्जय पहाड़ी वीर, जो कि टीड़ीदल के समान असंख्य और पिशाचों के समान भयानक आकार के थे, उनकी सहायता करने को उपस्थित थे। युद्धप्रिय संशप्तकगण की सेना के चौबीस हज़ार रथी योद्धा, जो युद्ध से हटना जानते ही नहीं, व्यूह के वाम भाग की रक्षा कर रहे थे। आपके पुत्रों के साथ रह-कर श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारने की इच्छा रखनेवाले काम्बोज, शक और यवनगण अपने साथ रथ, घोड़े, पैदल आदि लिये हुए कर्ण की आज्ञा से वाम भाग के वीरों की रक्षा के लिए खड़े थे और अर्जुन सहित महाबली श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए ललकार रहे थे। उसके बाद सेना के अगले भाग में विचित्र कवच, अङ्गद आदि आभूषण और माला धारण किये हुए महारथी कर्ण स्थित थे और व्यूह के द्वार की रक्षा कर रहे थे। कुपित सुसज्जित वृषसेन आदि कर्ण के पुत्र, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पिता की सहायता करने के लिए, वहीं पर उपस्थित थे। इस तरह सेना का सञ्चालन और रक्षा कर रहे वीर कर्ण अत्यन्त सुशोभित हो रहे थे। सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी, महाबाहु, पिङ्गलोचन, प्रियदर्शन, दुःशासन सेना को साथ लेकर व्यूह के पिछले भाग की रक्षा करने लगे। उनकी सेना के बीच स्वयं महाबाहु राजा दुर्योधन स्थित थे। विचित्र अस्त्र कवच आदि से सुशोभित सब भाई उनके चारों ओर उपस्थित थे। २० मद्र और केकय देश के सब शूर योद्धा उनकी रक्षा करने के लिए वहीं पर मौजूद थे। उनके बीच में राजा दुर्योधन, देवमण्डली के बीच में इन्द्र के समान, शोभित हो रहे थे। अश्वत्थामा, अन्य कौरव वीर और बरस रहे बादलों के समान मदोन्मत्त हाथियों पर सवार म्लेच्छगण उस रथसेना के पीछे-पीछे चले। ध्वजा, वैजयन्ती, चमकीले श्रेष्ठ शस्त्र आदि से शोभित सवारों से वे हाथी वृक्षयुक्त पहाड़ों के समान शोभायमान हो रहे थे। समर से न हटनेवाले असंख्य वीर सिपाही हाथों में पट्टिश खड्ग आदि शस्त्र लिये हुए उन हाथियों के आसपास, चरणरक्षक के रूप में, जा रहे थे। इस प्रकार कर्ण का बनाया वह महाव्यूह सुसज्जित घुड़सवारों, हाथियों के सवारों और रथों से देवताओं तथा दैत्यों के व्यूह के समान शोभायमान हुआ। बृहस्पति की बताई हुई विधि से कर्ण ने उस व्यूह की रचना की थी। व्यूह के भीतर स्थित सेना उत्साह से नृत्य सा करती हुई शत्रुओं के मन में भय का सञ्चार कर रही थी। युद्ध करने की इच्छा रखनेवाले हाथी, घोड़े और रथ उस व्यूह के पक्ष और प्रपक्ष से निकल रहे थे।

महाराज, उधर राजा युधिष्ठिर ने सेना के अगले भाग में कर्ण को स्थित देखकर शत्रु-नाशन अद्वितीय वीर अर्जुन से कहा—भाई! वह देखो, पराक्रमी कर्ण ने युद्ध करने के लिए यह पक्ष-प्रपक्षयुक्त महाव्यूह बनाकर खड़ा किया है। उस व्यूह में सब शत्रुसेना के वीर युद्ध ३० के लिए उपस्थित हैं। अब तुम ऐसा उपाय करो कि यह शत्रुओं की सेना हम लोगों को परास्त न कर सके। धर्मराज युधिष्ठिर ने अर्जुन को जब यह आज्ञा दी तब उन महावीर ने

हाथ जोड़कर नम्रता के साथ कहा—महाराज, आप बहुत ठीक कह रहे हैं। मैं अभी इसका उचित उपाय करता हूँ। मैं वही उपाय करता हूँ जिससे यह शत्रुसेना मारी जाय और

इसके प्रधान सेनापति कर्ण को भी मैं मारूँगा।

युधिष्ठिर ने कहा—हे वीर अर्जुन, तुम कर्ण को मारो और भीमसेन दुर्योधन का वध करें। इसी तरह वृषसेन से नकुल, शकुनि से सहदेव, दुःशासन से शतानीक, कृतवर्मा से सात्यकि, अश्वत्थामा से पाण्ड्य और शेष शत्रुसेना के वीरों से शिखण्डी और द्रौपदी के पाँचों पुत्र युद्ध करें। मैं स्वयं महात्मा कृपाचार्य से युद्ध करूँगा। मतलब यह कि मेरे पक्ष के ये सब योद्धा अपने प्रतिद्वन्द्वी शत्रु को मारने का यत्न करें।

सञ्जय कहते हैं—महाराज, वीरवर अर्जुन ने धर्मराज की बात मानकर अपने व्यूह की रचना की। सब वीरों को यथास्थान भेजकर, ख़ुद सेना के अगले भाग में उपस्थित होकर, वे शत्रुओं के नाश का प्रयत्न करने लगे। [महाराज, अर्जुन व्यूह के दक्षिण भाग में और भीमसेन वाम भाग में स्थित हुए। सात्यकि, द्रौपदी के पुत्र और स्वयं महाराज युधिष्ठिर, ये लोग अपनी-अपनी सेना साथ लेकर व्यूह के अगले भाग में स्थित हुए। इस तरह शत्रुसेना के मुक़ाबले में अपनी सेना का व्यूह बनाकर अर्जुन ने धृष्टद्युम्न और शिखण्डी को उसकी रक्षा का भार सौंप दिया। वह चतुरङ्गिणी सेना से युक्त घोररूप महाव्यूह बहुत ही शोभायमान हुआ।]

राजन्! पहले ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न वैश्वानर अग्नि जिस रथ के घोड़े हुए थे, जिसे देवगण ब्रह्म से सम्बन्ध रखनेवाला जानते थे और जिस पर क्रमशः ब्रह्मा, ईशान, इन्द्र और वरुण सवार हुए थे, उसी रथ पर उस समय श्रीकृष्ण और अर्जुन सवार होकर शत्रुसेना का संहार करने के लिए युद्धभूमि में पहुँचे। मद्रराज शल्य ने उस अद्भुत रथ को देखकर

४० [कौरव-सेना के बीच कर्ण का तिरस्कार करते हुए] कहा—हे कर्ण, लो, वह रथ आ गया जिसमें सफ़ेद घोड़े जुते हुए हैं, जिसके सारथी श्रीकृष्ण हैं और जिस रथ का सामना सारी

सेना मिलकर भी नहीं कर सकती। उस रथ की घरघराहट मेघों के गर्जन के समान हो रही है। हे कर्ण, जिन्हें तुम पूछते थे वही ये अर्जुन शत्रुओं को मारते-काटते चले आ रहे हैं। ये अर्जुन और श्रीकृष्ण ही हैं। देखो, धूल उड़कर आकाश तक छा गई है। रथ के पहियों की धमक से पृथिवी काँपती सी है। तुम्हारी सेना की तरफ़ आँधी चढ़ती आ रही है। मांस-भक्षी प्राणी चिल्ला रहे हैं और मृग भयानक शब्द कर रहे हैं। यह बुरा असगुन तो देखो कि मेघ जैसे भारी केतु ने सूर्य को ढक लिया है। देखो, चारों ओर हज़ारों पशुओं के झुण्ड, सूर्य के सामने मुख करके, दारुण शब्द कर रहे हैं। हज़ारों कङ्क, गिद्ध आदि पक्षी एकत्र होकर सूर्य की ओर देखते और घोर शब्द से परस्पर भाषण करते हैं। यह असगुन भी घोर अमङ्गल की सूचना दे रहा है।

हे कर्ण, सफ़ेद घोड़ों से युक्त तुम्हारे इस महारथ की पताकाएँ आप ही आप जल रही हैं और भारी ध्वजा काँप रही है। तुम्हारे रथ के, गरुड़ के समान वेग से जानेवाले, बड़े बली, भारी डीलडौल के घोड़े काँप रहे हैं, जो कि अभी आकाश में उड़ने के लिए तैयार से जान पड़ते थे। हे कर्ण, इन उपद्रवों से यह प्रतीत होता है कि आज के युद्ध में अवश्य ही हज़ारों वीर राजा लोग मारे जायेंगे। उधर शत्रुदल में बजाये जा रहे असंख्य शङ्खों, मृदङ्गों और नगाड़ों का शब्द चारों ओर सुनाई पड़ रहा है, जिससे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हे कर्ण! उस ओर मनुष्यों, हाथियों, घोड़ों, रथों आदि के विविध शब्दों को और प्रत्यञ्चा, तलत्राण, बाण आदि के विचित्र ध्वनि को सुनो। कारीगरों की बनाई, सोने और चाँदी से युक्त वस्त्रों से निर्मित, किङ्किणी-शोभित, सोने के चन्द्र-तारागण की आभा से अलङ्कृत ये रङ्ग-बिरङ्गी पताकाएँ अर्जुन के रथ में हवा से हिलती हुई मेघमण्डल में बिजली के समान शोभित दिखाई पड़ रही हैं। शत्रुसेना में पाञ्चाल वीरों के, देवताओं के विमान से, रथों में शोभायमान भारी ध्वजाएँ ज़ोर की हवा लगने से कण-कण शब्द कर रही हैं। वह देखो, वीर अपराजित अर्जुन हम लोगों पर प्रहार करने को आ रहे हैं। उनकी ध्वजा के अगले भाग में शत्रुओं के लिए भयानक वानर बैठा दिखाई पड़ रहा है। ५०

महापराक्रमी श्रीकृष्ण अर्जुन के तेज़ घोड़ों को हाँक रहे हैं; श्रीकृष्ण के शङ्ख, चक्र, गदा, ६० शार्ङ्ग धनुष और कौस्तुभ मणि की श्रेष्ठ शोभा दिखाई पड़ रही है। अर्जुन के श्रेष्ठ गाण्डीव धनुष का घोर शब्द हृदय को दहला रहा है और उस धनुष से छूटे हुए तीक्ष्ण असंख्य बाण तुम्हारी सेना को चौपट कर रहे हैं। वह देखो, युद्ध से न भागनेवाले वीर क्षत्रियों के, लाल-लाल आँखों से शोभित, पूर्णचन्द्र-सदृश मुख कट-कटकर पृथ्वी पर गिर रहे हैं। विशुद्ध सुगन्ध तथा चन्दन से शोभित और शस्त्र ताने हुए वीरों के बेलन-से हाथ लगातार कट-कटकर गिर रहे हैं। घोड़े अपने सवारों समेत मर-मरकर पृथ्वी पर गिर रहे हैं। उनकी जीभें और आँखें निकल आई हैं। पर्वत-शिखर सरीखे बड़े-बड़े हाथी अर्जुन के बाणों से बेतरह घायल होकर चल रहे पर्वतों के समान इधर-उधर भाग रहे हैं। पुण्य क्षीण होने पर स्वर्गवासी जैसे विमानों सहित नीचे गिरते हैं वैसे ही रण में मारे गये राजाओं के गन्धर्वनगर-सदृश बड़े-बड़े रथ समरभूमि में गिर रहे हैं। सिंह जैसे हज़ारों मृगों में हलचल मचा देता है वैसे ही महावीर अर्जुन कौरवसेना को अत्यन्त व्याकुल कर रहे हैं। वह देखो, महावीर पाण्डवगण और उनके योद्धा लोग समर-भूमि में दौड़-दौड़कर कौरव पक्ष के हाथी, घोड़े, रथी और पैदल आदि को व्याकुल करते हुए प्रधान-प्रधान वीरों का संहार कर रहे हैं। हे कर्ण! वह देखो, अर्जुन फिर अपने शत्रु वीर संशप्तकों की ओर जा रहे हैं और घोर रूप से उनका बण्टाढार कर रहे हैं। मेघों से छिपे हुए सूर्य की तरह अर्जुन तो नहीं देख पड़ते; किन्तु उनकी ध्वजा का अगला भाग देख पड़ता है और प्रत्यञ्चा का शब्द सुनाई पड़ रहा है। हे कर्ण, आज तुम उन अर्जुन को देखोगे जिनके सारथी श्रीकृष्ण हैं और जो शत्रुओं को युद्ध में मार रहे होंगे। एक ही रथ पर सवार अर्जुन और ७० श्रीकृष्ण को लाल-लाल आँखें किये आज देखना। जिनके सारथी श्रीकृष्ण हैं और जिनका धनुष गाण्डीव है उन्हें तुम मार लोगे तो हमारे राजा हो जाओगे।

मद्रराज शल्य के ये वचन सुनकर महावीर कर्ण कुपित होकर कहने लगे—शल्य! वह देखो, वीर संशप्तकगण क्रोधान्ध होकर चारों ओर से अर्जुन को घेर रहे हैं और इस समय मेघों के बीच छिपे हुए सूर्य के समान अर्जुन नहीं दिखाई पड़ते। अवश्य ही संशप्तकगण अर्जुन को मार डालेंगे।

शल्य ने कहा—हे कर्ण, वरुण को जल से अथवा आग को ईंधन से कौन नष्ट कर सकता है? हवा को हाथ से पकड़ना और समुद्र को पी जाना जैसे सर्वथा असम्भव है वैसे ही, मेरी समझ में, युद्ध में अर्जुन को जीतना भी है। युद्ध में इन्द्र आदि देवता और सब दानव भी मिलकर अर्जुन को नहीं जीत सकते। अगर तुम केवल मुँह से अर्जुन के मारने की बात कह-कर सन्तोष प्राप्त करना चाहते हो तो कर लो। मनोरथ चाहे जो करो, किन्तु याद रक्खो, युद्ध में अर्जुन को कोई किसी तरह नहीं जीत सकता। चाहे कोई हाथों से पृथ्वी को उठा ले, चाहे क्रुद्ध होकर संसार के सब जीवों को भस्म कर डाले, और चाहे स्वर्ग से सब देवताओं को नीचे गिरा दे, लेकिन समर में अर्जुन को कोई किसी तरह नहीं जीत सकता।

वह देखो, कुपित वीरश्रेष्ठ महाबाहु भीमसेन पुराने वैर को याद करके जय प्राप्त करने के लिए संग्रामभूमि में, दूसरे सुमेरु की तरह, खड़े हुए शत्रुओं पर प्रहार कर रहे हैं। वह धर्मात्मा ८१ पुरुषों में श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिर युद्ध करने को खड़े हैं। ये शत्रुओं को जीतनेवाले हैं और इन्हें शत्रु-गण सहज में नहीं परास्त कर सकते। वह अश्विनीकुमारों के अंश से उत्पन्न, महारथी, युद्ध में दुर्जय पुरुषसिंह नकुल और सहदेव सामने खड़े हैं। ये पाँच पर्वतों के समान और भीमसेन तथा अर्जुन के तुल्य बली द्रौपदी के पाँचों पुत्र युद्ध के लिए तैयार खड़े हैं। ये धृष्टद्युम्न आदि महाबलशाली वीर द्रुपद के पुत्र युद्ध के लिए उद्यत हैं। इन्द्र-सदृश पराक्रमी यादव-श्रेष्ठ सात्यकि युद्ध की इच्छा से, कुपित काल की तरह, हमारी ओर चले आ रहे हैं। महाराज, दोनों वीर इस तरह बातचीत कर ही रहे थे कि दोनों सेनाएँ उमड़ी हुई गङ्गा और यमुना की तरह परस्पर भिड़ गईं। ८७

सैंतालीसवाँ अध्याय

युद्ध का आरम्भ

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, दोनों पक्ष की सेनाएँ जब व्यूह बना करके परस्पर भिड़ गईं तब संशप्तकगण ने अर्जुन से और पाण्डवों ने कर्ण से किस तरह युद्ध किया? तुम वर्णन करने में निपुण हो, इसलिए सब वृत्तान्त विस्तार के साथ कहो। युद्ध में वीरों के पराक्रम को सुनने से मुझे तृप्ति नहीं होती।

सञ्जय ने कहा—महाराज, इधर आपके पुत्र के हित के लिए कर्ण ने शत्रुसेना का नाश करने को अपनी सेना का व्यूह बनाया और उधर, उसे देखकर, उसके प्रति अवज्ञा का भाव प्रकट

करते हुए अर्जुन ने कौरवों का अनिष्ट करने को अपनी सेना में व्यूह की रचना की। चतु-रङ्गिणी सेना का वह घोर व्यूह धृष्टद्युम्न सहित बहुत ही शोभायमान हुआ। चन्द्र और सूर्य के समान तेजस्वी, धनुष हाथ में लिये और कबूतर के रङ्ग के अवलक घोड़ों से युक्त रथ पर विराजमान वीर धृष्टद्युम्न साक्षात् काल के समान जान पड़ने लगे। उनके पास युद्ध के लिए उत्साहित द्रौपदी के पुत्र, बढ़िया कवच पहनकर, चन्द्रमा के आसपास तारागण के समान स्थित हुए। उनके साथ उनके अनुगामी और भी अनेक वीर तथा सैनिकगण थे।

महाराज, इस तरह सेना का व्यूह बन जाने पर रणभूमि में संशप्तकों को युद्ध के लिए तैयार देखकर कुपित अर्जुन अपना गाण्डीव धनुष घुमाते हुए उन्हीं की ओर चले। अर्जुन को मारकर विजय पाने और या मर जाने का निश्चय करके वीर संशप्तकगण, भारी सेना साथ लिये हुए, अर्जुन की ओर चले। असंख्य हाथी, घोड़े, रथ, पैदल आदि से परिपूर्ण और अत्यन्त क्रुद्ध वह संशप्तकसेना अर्जुन की ओर वेग से बढ़ी। वेग से बाणवर्षा करके पीड़ित कर रहे अर्जुन पर संशप्तकगण चारों ओर से घोर आक्रमण करने लगे। जैसे निवातकवच दानवों के साथ १० अर्जुन का युद्ध हुआ था, वैसे ही उस समय संशप्तकगण के साथ उनका घोर संग्राम होने लगा। अर्जुन अपने तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं के हज़ारों हाथियों, घोड़ों, रथों, ध्वजाओं, पैदलों, हाथियों के सवारों, धनुषों, बाणों, खड्गों, चक्रों, परश्वधों, शस्त्र सहित उठे हुए हाथों, विविध शस्त्रों और सिरों को काट-काटकर गिराने लगे। पातालतल-तुल्य सैन्यरूप महाभँवर में अर्जुन को डूबा हुआ समझकर संशप्तकगण आनन्द से सिंहनाद करने लगे। क्रुपित रुद्र जैसे पशुओं का संहार करें वैसे ही वीर अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर पहले सामने के शत्रुओं को मारा, फिर दाहने-बायें और पीछे जाकर फुर्ती के साथ चारों ओर से उनका नाश करना शुरू किया।

इसी समय दूसरी ओर पाञ्चाल, चेदि, सृञ्जय आदि देशों के वीरों और सैनिकों से कौरव-गण भी दारुण युद्ध करने लगे। असंख्य रथों पर एक साथ प्रहार करनेवाले कृपाचार्य, कृत-वर्मा, शकुनि आदि वीर भी उत्साहित सेना को साथ लेकर कोसल, काशी, मत्स्य, करूष, केकय, शूरसेन आदि देशों के श्रेष्ठ शूरों से घोर युद्ध करने लगे। उनका वह भयङ्कर युद्ध पापों को दूर करनेवाला और क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जातियों के वीरों के लिए धर्म, स्वर्ग तथा यश का देनेवाला था।

उधर महाराज दुर्योधन भी अपने भाइयों सहित, मद्र देश के और कौरवदल के श्रेष्ठ वीरों से सुरक्षित होकर, आगे बढ़े और पाण्डव, पाञ्चाल, चेदिगण और सात्यकि के साथ युद्ध २० कर रहे महारथी कर्ण की रक्षा और सहायता करने लगे। महापराक्रमी कर्ण भी तीक्ष्ण बाणों से पाण्डवों और पाञ्चालों की महती सेना को मथकर और श्रेष्ठ वीरों को विमुख कर धर्मराज युधि-ष्ठिर को पीड़ित करने लगे। कर्ण ने हज़ारों शत्रुओं के शस्त्र, वस्त्र शरीर आदि छिन्न-भिन्न करके उन्हें यशस्वी और स्वर्गवासी बनाकर अपने पक्ष के लोगों को अत्यन्त आनन्दित किया।

हे भरतकुलश्रेष्ठ, इस तरह कौरव और सृञ्जयगण हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों का संहार करनेवाला, देवासुर-संग्राम के समान, घोर युद्ध करने लगे। २३

अड़तालीसवाँ अध्याय

युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज, अपने सामने धृष्टद्युम्न सहित सब पाण्डवों और पाञ्चालों को युद्ध के लिए उपस्थित देखकर वैरियों का नाश करनेवाले कर्ण पाञ्चाल-सेना की ओर वेग से बढ़े। विजयी पाञ्चालगण भी वेग से आ रहे कर्ण की ओर बढ़े, जैसे हंस मानस सर की ओर जाते हैं। उस समय दोनों ओर, हृदय को हिलानेवाला, हज़ारों शङ्खों का शब्द सुनाई पड़ा। दोनों ओर नगाड़े बजने लगे और उनका दारुण शब्द प्रतिध्वनित हो उठा। अनेक प्रकार के बाणों के चलने का शब्द, हाथियों, घोड़ों और रथों का शब्द तथा वीरों का सिंहनाद चारों ओर गूँज उठा। वृक्ष-पर्वत-समुद्र-सहित पृथ्वी, वायुमण्डल और मेघों सहित आकाश-मण्डल तथा सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्र-तारा-गण-सहित अन्तरिक्ष स्पष्ट ही चक्कर खाता हुआ सा जान पड़ने लगा। उस भयङ्कर शब्द से सब प्राणी व्यथित हो गये और जो क्षुद्र जीव थे, वे सब तो प्रायः मर ही गये।

इसी बीच में कर्ण अत्यन्त क्रुद्ध होकर, बारम्बार अस्त्रों का प्रयोग करके, बाण बरसाकर वैसे ही पाण्डवों की सेना का नाश करने लगे जैसे इन्द्र दानव-सेना का संहार करें। कर्ण ने पाण्डवसेना के भीतर घुसकर बाण बरसाये और प्रभद्रकगण के श्रेष्ठ सतहत्तर योद्धाओं को मार डाला। फिर श्रेष्ठ महारथी कर्ण ने तीक्ष्ण पचीस बाणों से पाञ्चालसेना के पचीस प्रधान १० योद्धाओं को मार गिराया। इसके उपरान्त शत्रुओं के शरीरों को चीरनेवाले सुवर्णपुङ्खयुक्त

नाराच बाणों से चेदिदेश के हज़ारों वीरों का संहार कर डाला। इस तरह समर में अलौकिक कर्म कर रहे कर्ण को पाञ्चाल देश के अनेक रथी योद्धाओं ने चारों ओर से घेर लिया। महावीर कर्ण ने फुर्ती से धनुष पर पाँच दुःसह बाण चढ़ाकर उनसे भानुदेव, चित्रसेन, सेनाबिन्दु, तपन और शूरसेन नाम के पाञ्चाल देश के पाँच वीरों को मार डाला। इस तरह कर्ण जब पाञ्चाल देश की सेना का संहार करने लगे तब उक्त सेना में घोर हाहाकार मच गया। इसी समय हाहाकार कर रहे पाञ्चाल वीरों को कर्ण फिर तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। पाञ्चाल-सेना के दस महारथियों ने कर्ण को घेरा और कर्ण ने शीघ्र ही उन्हें भी यमपुर भेज दिया। कर्ण के प्रिय पुत्र, युद्ध में दुर्जय, सुषेण और सत्यसेन कर्ण के रथ के चक्ररक्षक थे। वे भी प्राणों का मोह छोड़कर युद्ध करने लगे। कर्ण के बड़े पुत्र महारथी वृषसेन, पिता के पृष्ठभाग की रक्षा करते हुए, उनके पीछे जा रहे थे।

तब महावीर धृष्टद्युम्न, सात्यकि, भीमसेन, जनमेजय, शिखण्डी, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, २० वीर प्रभद्रकगण, नकुल, सहदेव और चेदि, केकय, पाञ्चाल तथा मत्स्य देश के कवचधारी वीर योद्धा लोग कर्ण को मारने के लिए उनकी ओर दौड़े। वर्षा में पर्वत पर जैसे मेघ जल की धारा बरसाते हैं वैसे ही ये सब वीर पाण्डवसेना का संहार कर रहे कर्ण के ऊपर लगातार असंख्य शस्त्र और तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। तब कर्ण के वीर पुत्र और आपके पक्ष के अन्य सब योद्धा, कर्ण की सहायता और रक्षा करने के लिए, आगे बढ़े और पाण्डवपक्ष के वीरों को रोकने लगे। महावीर सुषेण ने एक भल्ल बाण से भीमसेन का धनुष काट डाला और उनकी छाती में सात नाराच मारकर घोर सिंहनाद किया। तब महावीर भीमसेन ने अत्यन्त कुपित होकर उसी दम दूसरा धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई। फिर तीक्ष्ण बाण से सुषेण का धनुष काटकर

उनको बड़े ही विकट दस बाण मारे। इसके बाद अत्यन्त तीक्ष्ण तिहत्तर बाणों से कर्ण को घायल करके दस बाण कर्ण के पुत्र सत्यसेन को मारे। फिर उनके सब इष्ट-मित्रों के सामने

ही सत्यसेन के घोड़े, रथ, शस्त्र, ध्वजा आदि को छिन्न-भिन्न करके एक क्षुरप्र बाण से सत्यसेन का सिर काट डाला। सत्यसेन का वह पूर्ण चन्द्र के समान मुख से शोभित सिर, डण्डी से टूटे हुए कमल के समान, पृथ्वी पर गिर पड़ा और तब भी उसकी शोभा नष्ट नहीं हुई।

महाराज, वीर भीमसेन इस तरह कर्ण के पुत्र को मारकर फिर आपकी सेना के वीरों को पीड़ित करने लगे। उन्होंने कृपाचार्य और कृतवर्मा का धनुष काट डाला और उन्हें भी तीक्ष्ण बाण मारे। दुःशासन को तीन और शकुनि को छः बाण मारकर उलूक और उनके भाई पतत्रि को उन्होंने रथहीन कर दिया। इसके बाद "हे सुषेण, तू मरा" यों कहते हुए भीमसेन ने एक भयानक बाण छोड़ा; किन्तु कर्ण ने बीच में ही उस बाण को काटकर भीमसेन को तीन तीक्ष्ण बाण मारे। भीमसेन ने और एक अत्यन्त तीक्ष्ण विकट बाण लेकर सुषेण के ऊपर छोड़ा। पुत्र की रक्षा करने के लिए कर्ण ने उस बाण को भी काट डाला और फिर, शत्रु को मारने के इरादे से, क्रुद्ध होकर भीमसेन को लगातार तिहत्तर बाण मारे। महावीर सुषेण ने दूसरा श्रेष्ठ दृढ़ धनुप लेकर नकुल की छाती और हाथों में पांच बाण मारे। नकुल ने तीक्ष्ण बीस बाण सुषेण को मारकर ज़ोर से सिंहनाद किया, जिससे कर्ण की छाती दहल गई। तब महारथी सुषेण ने नकुल को दस बाण मारकर एक क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला। अत्यन्त क्रुद्ध नकुल ने दूसरा धनुप लेकर सुषेण को नव बाण मारे और बाणों से सब दिशाओं को पूर्ण करके तीन भल्ल बाणों से उनके दृढ़ धनुष के तीन टुकड़े कर डाले। फिर सुषेण के सारथी को मार डाला और सुषेण को और तीन बाण मारे। इससे सुषेण को भी क्रोध चढ़ आया। उन्होंने दूसरा धनुप लेकर नकुल को साठ और सहदेव को सात तीक्ष्ण बाण मारे। इस प्रकार एक दूसरे को मार डालने के लिए फुर्ती के साथ बाण चला रहे वे वीर देवासुर-युद्ध के समान घोर संग्राम करने लगे। ३० ४०

सात्यकि ने वृपसेन के सारथी को तीन बाणों से मार डाला। इसके बाद एक भल्ल बाण से उनका धनुष काटकर सात बाणों से घोड़ों को मार डाला। फिर एक बाण से ध्वजा काटकर उनकी छाती में तीन बाण मारे, जिससे वे मूर्च्छित हो गये। सात्यकि के बाणों से रथ, सारथी, घोड़े, ध्वजा और धनुष से रहित वृपसेन दम भर में होश में आ गये और ढाल-तलवार लेकर सात्यकि को मारने के लिए दौड़े। दौड़े आ रहे वृपसेन की ढाल-तलवार को सात्यकि ने दस वाराहकर्ण बाणों से काट डाला। दुःशासन ने जब वृपसेन को रथ और शस्त्र से हीन देखा तब उन्हें रथ पर बिठाकर वे अलग हटा ले गये। वीर वृपसेन अन्य रथ पर बैठकर फिर युद्धस्थल में आ गये। महारथी वृपसेन ने द्रौपदी के पुत्रों को तिहत्तर, सात्यकि को पाँच, भीमसेन को चौंसठ, सहदेव को पाँच, नकुल को तीस, शतानीक को सात, शिखण्डी को दस और धर्मराज को सौ बाण मारे। उन्होंने इस तरह इन सबको

और जय चाहनेवाले अन्य श्रेष्ठ वीरों को पीड़ित किया। इसके बाद दुर्द्धर्ष वृषसेन युद्धभूमि में फिर कर्ण के पृष्ठ भाग की रक्षा करने लगे। इसी बीच में सात्यकि ने नव नवीन लोहमय

नाराच बाणों से दुःशासन के घोड़ों, सारथी और रथ को नष्ट कर दिया और उनके मस्तक में तीन तीक्ष्ण बाण मारे। दुःशासन विधिपूर्वक सुसज्जित अन्य रथ पर बैठकर पाण्डवों के साथ युद्ध करते हुए कर्ण की सेना को उत्साहित करने लगे।

५०

इसी बीच में धृष्टद्युम्न ने दस, द्रौपदी के पुत्रों ने तिहत्तर, सात्यकि ने सात, भीमसेन ने चौंसठ, सहदेव ने सात, नकुल ने तीस, शतानीक ने सात, शिखण्डी ने दस, धर्मराज ने सौ और अन्य जय चाहनेवाले श्रेष्ठ वीरों ने असंख्य बाण मारकर युद्धस्थल में कर्ण को पीड़ित किया। शत्रुदमन कर्ण ने भी अपने रथ से इधर-उधर घूमकर इनमें से हर एक को दस-दस बाण मारे। महाराज, उस समय हम लोग कर्ण के अस्त्रबल और अद्भुत पराक्रम को देखकर दङ्ग रह गये। कोई यह नहीं देख पाता था कि वे कब तरकस से बाण निकालते और कब छोड़ते हैं; केवल यही देख पड़ता था कि वे कुपित होकर बाण बरसा रहे हैं। उनके बाणों से शत्रुओं के झुण्ड मर-मरकर पृथ्वी पर गिरते नज़र आते थे। सूर्य की किरणों के समान सर्वत्र फैल रहे उनके हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से सब दिशाएँ व्याप्त हो गईं। आकाश, अन्तरिक्ष और पृथ्वी, सभी स्थान तीक्ष्ण बाणों से परिपूर्ण हो गये। उस जगह का आकाश लाल रङ्ग के बादलों से छाया हुआ सा प्रतीत हो रहा था। धनुष हाथ में लिये कर्ण रणभूमि में नृत्य सा कर रहे थे। जिन लोगों ने जितने बाण कर्ण को मारे थे, उनसे तिगुने बाण उनको कर्ण ने मारे। इसके बाद फिर उन्होंने सबको हज़ारों बाणों से पीड़ित करके सिंहनाद किया। मय घोड़े-रथ-सारथी-ध्वजा-छत्र आदि के सब वीर बाणों से ढक गये। उन्होंने विमुख होकर कर्ण को सेना में घुसने का अवकाश दे दिया।

६०

बाण-वर्षा से उन महाधनुर्द्धरों को पीड़ित करके शत्रुनाशन कर्ण हाथियों के दल में घुस पड़े। वहाँ रण से न हटनेवाले चेदि देश के तीन सौ रथी योद्धाओं को तीक्ष्ण बाणों से मार-

कर वीर कर्ण युधिष्ठिर के पास पहुँचे और उन्हें पीड़ित करने लगे। तब शिखण्डी, सात्यकि, भीमसेन आदि पाण्डवदल के वीर योद्धा, युधिष्ठिर को अपने बीच में करके, कर्ण से बचाने की चेष्टा करने लगे। उधर आपके पक्ष के महाधनुर्द्धर शूर पुरुष भी यत्नपूर्वक सब ओर से कर्ण की रक्षा करने लगे। उस समय रणभूमि में चारों ओर विविध बाजे बजने लगे; वीर क्षत्रिय उत्साहपूर्वक सिंहनाद करने लगे। तब फिर निडर कौरव और पाण्डव युद्ध करने लगे। उधर युधिष्ठिर आदि पाण्डव थे और इधर कर्ण आदि हम सब थे। ६७

उनचासवाँ अध्याय

कर्ण का युधिष्ठिर को परास्त करके उपहास करना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर कर्ण अपने साथ हज़ारों रथों, हाथियों, घोड़ों, पैदलों को लिये हुए आगे बढ़े और शत्रुसेना को चीर करके युधिष्ठिर की ओर चले। अविचलित वीर कर्ण शत्रुओं के चलाये हुए हज़ारों तरह के शस्त्रों को उग्र बाणों से काटकर उन्हें घायल करने और मारने लगे। कर्ण ने शत्रुओं के सिर, बाहु, जङ्घा आदि अङ्ग काटना शुरू किया। उनमें से कुछ तो मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े और कुछ घायल होकर भाग खड़े हुए। सात्यकि के उत्साहित करने से फिर द्रविड़ और निषाद देश के पैदल योद्धा, कर्ण को मारने की इच्छा से, उनकी ओर दौड़े। किन्तु कर्ण के बाणों ने एक साथ उनके हाथ, सिर और शिरस्त्राण काट डाले और वे कटे हुए साखू के वन की तरह पृथ्वी पर बिछ गये। इस तरह युद्ध में मरे हुए उन हज़ारों वीरों के यश से सब दिशाएँ व्याप्त हो गईं और लोथों से रणभूमि पट गई।

पाण्डवों और पाञ्चालों ने कुपित काल के समान कर्ण को रणभूमि में स्थित देखकर वैसे ही सामने आकर रोका, जैसे रोग को मन्त्र और दवाएँ रोकती हैं। किन्तु जैसे अत्यन्त असाध्य व्याधि मन्त्र, औषध, क्रिया आदि को न मानकर बढ़ती ही जाती है वैसे ही कर्ण भी उन सबको विचलित और विमुख करके युधिष्ठिर के निकटवर्ती होने लगे। इसके उपरान्त राजा की रक्षा के लिए घोर प्रयत्न कर रहे पाण्डवों, पाञ्चालों तथा केकय देश के वीरों ने कर्ण को आगे बढ़ने से रोका और ब्रह्मज्ञानी पुरुष भी जैसे मृत्यु को नहीं टाल सकता वैसे ही कर्ण उनको लाँघकर आगे नहीं बढ़ सके। तब उन वीरों के द्वारा रोके गये निकटवर्ती शत्रुनाशन वीर कर्ण से, क्रोध के कारण लाल आँखें किये हुए, महाराज युधिष्ठिर कहने लगे—हे कर्ण, हे १० वृथादर्शी सूतपुत्र! मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। तुम सदा बलवान् अर्जुन से युद्ध करने की लाग-डाँट रखते हुए, दुर्योधन की सम्मति से, हमें सताने की चेष्टा करते हो। तुममें जितना बल और वीर्य है, पाण्डवों के प्रति विद्वेष भाव है, सो सब अपने पौरुष के अनुसार प्रकट करो; उसमें किसी तरह की कमी न होने पावे। मैं महारण में अभी तुम्हारे युद्ध के शौक़ को मिटा दूँगा।

महाराज, अब राजा युधिष्ठिर ने कर्ण को लोहमय, सुवर्णपुङ्खयुक्त, दस बाण मारे। शत्रुदमन महाधनुर्द्धर कर्ण ने भी हँसकर उनको दस वत्सदन्त बाण मारे। इस तरह अनादर का भाव प्रकट करके कर्ण ने जब प्रहार किया तब धर्मपुत्र युधिष्ठिर, घी की आहुति पड़ने से अग्नि की तरह, क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। उनके शरीर से ज्वालाएँ निकलने लगीं और वे प्रलयकाल में सृष्टि को भस्म करने के लिए उद्यत दूसरे संवर्त-अग्नि के समान दिखाई पड़ने लगे। अब राजा ने कर्ण को मार डालने के लिए सुवर्णमण्डित धनुष खींचकर उस पर, पर्वतों को भी विदीर्ण करनेवाला, एक तीक्ष्ण यमदण्ड-सदृश बाण चढ़ाया। युधिष्ठिर ने पूरे ज़ोर से कानों तक खींचकर वह बाण छोड़ा। बड़े वेग से युधिष्ठिर का छोड़ा हुआ वह भयानक बाण वज्रपात के समान दारुण शब्द करता हुआ चला और एकाएक महारथी कर्ण के वामपार्श्व को छेदकर निकल
२० गया। उस प्रहार से पीड़ित महाबाहु कर्ण घबरा गये। उनका शरीर शिथिल पड़ गया; उनके हाथ से धनुष छूट पड़ा। वीर कर्ण मुर्दे की तरह निश्चल होकर शल्य के आगे गिर पड़े। अर्जुन की प्रतिज्ञा के ख़याल से युधिष्ठिर ने, मौक़ा पाकर भी, फिर कर्ण के ऊपर वार नहीं किया। कर्ण का उतरा हुआ चेहरा और यह पीड़ित दशा देखकर कौरवों की सेना में हाहाकार मच गया। राजा के पराक्रम को देखकर पाण्डवदल के लोग उछलने, किलकारियाँ मारने और सिंहनाद करने लगे। दम भर में महापराक्रमी कर्ण को होश आ गया। उन्होंने क्रूर भाव से राजा युधिष्ठिर को मारने का विचार किया। सुवर्ण-मण्डित विजय नाम का धनुष चढ़ाकर महारथी कर्ण राजा

युधिष्ठिर के ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। चन्द्रमण्डल के आसपास स्थित पुनर्वसु नक्षत्र के दो तारों के समान, युधिष्ठिर के रथ के चक्ररक्षक, पाञ्चाल वीर चन्द्रदेव और दण्डधार को उन्होंने दो क्षुरप्र बाणों से मार डाला। युधिष्ठिर ने फिर कर्ण को तीस, सुषेण और सत्यसेन को तीन-तीन, शल्य को नब्बे और फिर कर्ण को तिहत्तर बाण मारकर उनकी रक्षा करनेवाले सहायक
३० वीरों को तीन-तीन बाण मारे। तब कर्ण ने हँसकर, धनुष चढ़ाकर, एक भल्ल बाण से युधिष्ठिर

के शरीर को चीर करके फिर अत्यन्त तीक्ष्ण साठ बाण मारे और सिंहनाद किया। यह देख-कर पाण्डव-पक्ष के सब वीर कुपित होकर, युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिए, कर्ण के ऊपर बाण बरसाने लगे। महावीर सात्यकि, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रकगण, नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपाल का पुत्र, और करूप, मत्स्य, केकय, काशी और कोशल देशों के सब वीर एकत्र होकर एक साथ कर्ण के ऊपर प्रहार करने लगे। पाञ्चाल देश के वीर जनमेजय भी कर्ण को तीक्ष्ण बाण मारने लगे। रथों, हाथियों, घोड़ों आदि पर सवार पाण्डवदल के अन्यान्य वीर पुरुष भी चारों ओर से सूतपुत्र को घेरकर, उन्हें मार डालने के विचार से, उनके ऊपर अनेक प्रकार के उग्र शस्त्र और वत्सदन्त, विपाठ, क्षुरप्र, चटकामुख,

वाराहकर्ण, नाराच, नालीक आदि विविध असंख्य बाण बरसाने लगे।

राजन्, इस प्रकार हमला होने पर महातेजस्वी कर्ण ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। उनके असंख्य बाणों से सब दिशाएँ परिपूर्ण हो उठीं। वे अग्नि के समान प्रचण्ड होकर चारों ओर पाण्डव-सेना को भस्म करते हुए विचरने लगे। उनके बाण ही ज्वालाओं के समान थे और बल-वीर्य ही उनकी आँच थी, जिसके मारे कोई उनके पास नहीं पहुँच सकता था और वे दुर्द्धर्ष हो रहे थे। [तब पाण्डव दल के सब वीर कर्ण के ऊपर महास्त्रों की वर्षा करने लगे। उन अस्त्रों को व्यर्थ करके] कर्ण ने मुसकाकर युधिष्ठिर का धनुष काट डाला। इसके बाद पल भर में नब्बे तीक्ष्ण बाण मारकर राजा युधिष्ठिर के सुवर्णमण्डित रत्न-जटित कवच के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। वह रत्नचित्र कवच जब पृथ्वी पर गिरा तब ऐसा जान पड़ा जैसे बिजली और सूर्य की किरणों से युक्त कोई मेघ का टुकड़ा हवा के झोंके से गिर रहा हो। युधिष्ठिर के शरीर से अलग होकर गिर रहा वह कवच रात्रि के समय मेघहीन नक्षत्र-मण्डित आकाश-मण्डल के समान प्रतीत हुआ। उस समय कर्ण के बाणों से कवच कट जाने के कारण राजा का शरीर ख़ून से तर और घायल हो गया। युधिष्ठिर ने एक प्रज्वलित अग्नि के समान भयङ्कर शक्ति कर्ण के ऊपर चलाई। ४०

कर्ण ने उस शक्ति को राह में ही सात भल्ल बाणों से काटकर गिरा दिया। धर्मराज ने फिर फुर्ती दिखाकर कर्ण के दोनों हाथों में, हृदय में और ललाट में चार तीक्ष्ण तोमर मारकर प्रसन्नता-पूर्वक सिंहनाद किया। कर्ण की देह से रक्त निकल आया और वे क्रुद्ध सर्प की तरह फुफकारने लगे। उन्होंने तत्काल युधिष्ठिर के सारथी और पृष्ठरक्षक को मारकर उनकी ध्वजा, तरकस और रथ को तिल-तिल करके काट डाला और तीन बाण युधिष्ठिर को भी मारे। तब कर्ण के प्रहार से पीड़ित राजा युधिष्ठिर काली पूँछवाले सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर रणभूमि से जाने लगे। वे कर्ण के सामने नहीं ठहर सके। उस समय महारथी कर्ण, पाण्डवपक्ष के सब वीरों को परास्त करके, जल्दी से महाराज युधिष्ठिर के पास पहुँच गये। उन्होंने वज्र, छत्र, अंकुश, मत्स्य, कच्छप, शङ्ख, ध्वजा आदि शुभ लक्षणों से युक्त अपना हाथ धर्मराज के कन्धे पर रख दिया। इस तरह धर्मराज के स्पर्श से स्वयं पवित्र होकर कर्ण ने उन्हें जीवित ही पकड़ लेना चाहा। वे उस समय धर्मराज का वध भी कर सकते थे; किन्तु कुन्ती को जो वर दे चुके थे उसका ख़याल करके उन्होंने वह विचार नहीं किया।

५०

महाराज, शल्य ने कर्ण को युधिष्ठिर को पकड़ लेने के लिए उतारू देखकर मना किया और कहा—हे कर्ण, तुम इन महाराज को पकड़ने का साहस मत करो; नहीं तो ये तुरन्त कुपित होकर तुमको और मुझे भी भस्म कर डालेंगे। राजन्, तब कर्ण ने वह विचार छोड़ दिया और तिरस्कार तथा उपहास के भाव से वे कहने लगे—हे युधिष्ठिर, क्षत्रियकुल में उत्पन्न और क्षत्रिय-धर्म का पालन करनेवाला पुरुष कभी महायुद्ध में प्राणों की रक्षा करने के लिए शत्रु के आगे से नहीं भाग सकता। मैं समझता हूँ, तुम्हें क्षत्रियों के धर्म का ज्ञान नहीं है। तुम ब्राह्मणोचित कर्म—स्वाध्याय और यज्ञ आदि—करते रहते हो और उसी को अच्छी तरह जानते हो। इसी से मैं कहता हूँ कि युद्ध और वीरों का सामना मत करो। अब कभी युद्ध में न जाना और वीरों को अप्रिय वचन न सुनाना। अथवा और लोगों से वैसे वचन कहना; मुझ सरीखे वीरों

से न कहना। मेरे जैसे लोगों से युद्ध में कटु वचन कहने से यह और अन्य प्रकार के अपमान भी सहने पड़ेंगे। हे धर्मराज, अपने घर को अथवा जहाँ पर कृष्ण और अर्जुन हैं वहाँ जाओ। कर्ण तुमको समर में कभी न मारेगा।

इस तरह कहकर और धर्मराज को छोड़कर महाबली कर्ण वैसे ही पाण्डव-सेना का संहार करने लगे जैसे वज्रपाणि इन्द्र असुरसेना को चौपट करें। नरपति युधिष्ठिर लज्जित होकर शीघ्र ही वहाँ से भाग गये। चेदि, पाण्डव, पाञ्चालगण और महारथी सात्यकि, द्रौपदी के पुत्र, नकुल और सहदेव आदि सब योद्धा भी युधिष्ठिर को विमुख देखकर उनके पीछे चलते हुए। युधिष्ठिर की सेना को और योद्धाओं को रण से विमुख देखकर महावीर कर्ण प्रसन्नतापूर्वक कौरवों के साथ उनका पीछा करते हुए चले। उस समय कौरवों की सेना में भयानक धनुष चढ़ाने का शब्द, सिंहनाद और भेरी-शङ्ख-मृदङ्ग आदि बाजे बजने का शब्द गूँज उठा। महाराज, युधिष्ठिर श्रुतिकीर्ति के रथ पर सवार हो गये। कर्ण का पराक्रम और उनके बाणों से अपनी सेना का विचलित होना देखकर, क्रुद्ध होकर, धर्मराज ने कहा—वीरो, देख क्या रहे हो? इन शत्रुओं को मारते क्यों नहीं? ६०

तब पाण्डवपक्ष के महारथी भीमसेन आदि वीर, धर्मराज की आज्ञा पाकर, आपके पुत्रों पर आक्रमण करने को दौड़ पड़े। रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों का और तने हुए तथा गिर रहे शस्त्रों का भयङ्कर शब्द चारों ओर गूँज उठा। "आओ, सामने आओ, दौड़ो और जल्दी प्रहार करो" इस तरह कह-कहकर योद्धा लोग परस्पर प्रहार करने लगे। आकाश-मण्डल में बाणों की वर्षा ने मेघ की घटा का सा अँधेरा कर दिया। बाणों से घायल वीर लोग परस्पर प्रहार करने लगे। एक दूसरे के प्रहार से जिनके अङ्ग-भङ्ग हो गये हैं ऐसे राजा लोग, ध्वजा-पताका-घोड़े-सारथी-रथ-शस्त्र आदि से हीन होकर, मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। वन- ७० शोभित पहाड़ों के शिखर जैसे वज्रपात से फट-फटकर गिरें वैसे ही सवारों सहित बड़े-बड़े हाथी

और घोड़े घायल होकर मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। कवच सहित शरीर और दिव्य आभूषण जिनके छिन्न-भिन्न हो गये हैं ऐसे पैदल योद्धा, शत्रुवीरों के बाणों से, मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उस समय समरभूमि रणमत्त वीरों के, विशाल लाल लोचनों से शोभित चन्द्र और अरविन्द के समान मुखमण्डलवाले, कटे हुए सिरों से पट गई। सवारों सहित हज़ारों घोड़े, रथियों के बाणों से मरे हुए हाथी और असंख्य पैदल योद्धा मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। स्वर्ग में भी पृथ्वी के ही समान कोलाहल सुन पड़ रहा था। विमानों पर अप्सराएँ गा-बजा रही थीं और जो वीर सम्मुख-युद्ध में मारे जाते थे उन्हें तत्काल दिव्य विमानों पर चढ़ा-चढ़ाकर स्वर्ग को ले जाती थीं। यह अचम्भा देखकर, स्वर्गलोक पाने की इच्छा से, वीर क्षत्रियगण प्रसन्नता और उत्साह के साथ शीघ्रतापूर्वक एक दूसरे को मारने और मरने लगे। रथी रथियों से, हाथियों के सवार हाथियों के सवारों से, घुड़सवार घुड़सवारों से और पैदल पैदलों से भिड़कर विचित्र युद्ध कर रहे थे।

महाराज, इस तरह घोर संग्राम में असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों का नाश होने लगा। उस समय इतनी धूल उड़ी कि अँधेरा हो गया और उस अँधेरे में अपने पक्ष का या शत्रुपक्ष का जो सामने पड़ जाता था उसी पर लोग प्रहार करते थे; क्योंकि वे पहचान ही नहीं पाते थे कि यह अपने दल का है या पराये दल का। उस घड़ी वीरगण भिड़ गये और परस्पर केश पकड़कर दाँतों से, नखों से और घूँसों से प्रहार करने लगे। कोई-कोई शस्त्र न रहने पर
८० कुश्ती ही लड़ने लगे। इस तरह देह और सब पापों को नष्ट करनेवाला धर्मसङ्गत तुमुल संग्राम होने पर मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि के शरीरों से निकले हुए रक्त की भयानक महानदी बह चली। उसमें गिरे हुए मृत हाथी, घोड़े और मनुष्य बह चले। मांस और रक्त की कीच से परिपूर्ण वह महाघोर नदी कायरों के लिए बड़ी भयानक थी। विजय की इच्छा रखनेवाले वीर, हाथियों पर बैठकर, उस नदी के पार जाने की चेष्टा कर रहे थे। कुछ लोग उसमें ग़ोता खाकर फिर ऊपर उभर आते थे। उनके अङ्ग, कवच, वस्त्र, शस्त्र सब ख़ून से तर और लाल हो जाते थे। हे भरतश्रेष्ठ, उस भीषण नदी में कोई नहा गया, कोई ग़ोता खाकर रक्त पी गया और कोई डूबकर मर ही गया। उस समय हमें असंख्य रथ, हाथी, घोड़े, मनुष्य, शस्त्र, कवच और आभूषण उस नदी में गिरते और बहते दिखाई पड़ रहे थे। उस रक्त से हमें अन्तरिक्ष, आकाश, पृथ्वी और सब दिशाएँ लाल ही लाल दिखाई देने लगीं। उस रक्त के फैल रहे गन्ध, स्पर्श, रस, भयानक रूप और प्रवाह-शब्द से प्रायः सारी सेना उदास हो उठी। भीमसेन आदि वीरगण पहले ही इस प्रकार कौरवसेना का नाश कर चुके थे; इस समय फिर सात्यकि आदि वीर आक्रमण करते हुए दौड़े। उन वीरों के असह्य वेग और आक्रमण को न सह सकने के कारण आपके पुत्रों की सारी सेना युद्ध छोड़कर भाग खड़ी हुई। हाथी, घोड़े,

रथ और पैदल सब इधर-उधर भागने लगे। शत्रुओं के बाणों से विमर्दित आपकी सेना कवच-हीन और बे-सिलसिले होकर खड्ग-धनुष आदि शस्त्रों को फेंककर, वन में सिंह से पीड़ित हाथियों के झुण्ड की तरह, इधर-उधर भागने लगी। ६२

पचासवाँ अध्याय

भीमसेन और कर्ण का संग्राम

सञ्जय ने कहा—महाराज, उस समय अपनी सेना और योद्धाओं को पाण्डवों के पराक्रम से भागते देखकर ज़ोर से पुकार-पुकारकर राजा दुर्योधन ने उन्हें लौटाने की बारम्बार चेष्टा की; परन्तु कोई भी नहीं लौटा। तब व्यूह के पक्ष, प्रपक्ष आदि से कौरवदल के अनेक सशस्त्र महारथी योद्धा निकल पड़े। वे भीमसेन पर आक्रमण करने लगे। दुर्योधन के भाइयों सहित सब कौरवों को भागते देखकर कर्ण ने मद्रराज से कहा—हे शल्य, मुझे भीमसेन के रथ के पास ले चलो। तब शल्य ने हंस के रङ्ग के सफ़ेद घोड़ों को भीमसेन के रथ की ओर हाँक दिया। शल्य के हाँके हुए वे घोड़े भीमसेन के रथ के पास तुरन्त पहुँच गये। कर्ण को आते देखकर क्रुद्ध भीमसेन ने उनको मार डालने का इरादा कर लिया। उन्होंने वीर सात्यकि

और धृष्टद्युम्न से कहा—तुम लोग महाराज युधिष्ठिर की रक्षा करो। दुष्ट कर्ण ने, दुर्योधन की प्रसन्नता के लिए, महाराज का कवच छिन्न-भिन्न कर दिया और मेरे सामने ही उन्हें पकड़ने का यत्न किया था। वे किसी तरह उस विषम सङ्कट से बच गये। उसका मुझे बड़ा ही दुःख है। मैं इस समय कर्ण को मारकर अथवा इसके हाथ से स्वयं मरकर उस दुःख को दूर करूँगा। मैं सच कहता हूँ, इस घोर संग्राम में यही होगा। हे वीरो, मैं इस समय धरोहर की तरह महाराज को तुम्हें सौंपता हूँ। तुम लोग सावधान होकर धर्मराज की रक्षा करना। राजन्, महाबाहु भीमसेन यों कहकर महासिंहनाद से सब दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुए कर्ण की ओर लपके। ११

युद्ध में प्रसन्न होनेवाले भीमसेन को शीघ्रता के साथ आते देखकर मद्रराज शल्य ने कहा—हे कर्ण ! वह देखो, महाबाहु भीमसेन अत्यन्त कुपित होकर हम लोगों की ओर आ रहे हैं। ये इस समय अवश्य ही चिरकाल से सञ्चित क्रोध को तुम पर, आक्रमण करके, निकालना चाहते हैं। इस समय इनका रूप प्रलयकाल के दारुण अग्नि के समान भयङ्कर जान पड़ता है। महावीर अभिमन्यु और राक्षस घटोत्कच के मरने पर भी इनका ऐसा भयानक रूप मैंने नहीं देखा। इस समय कुपित भीमसेन तीनों लोकों के वीरों को एक साथ ही नष्ट कर सकते हैं।

सञ्जय कहते हैं—राजन्, वीर शल्य कर्ण से इस तरह कह ही रहे थे कि क्रोध से प्रज्व-लित महाबली भीमसेन वहाँ पहुँच गये। युद्ध की इच्छा से आये हुए भीमसेन को देखकर वीर कर्ण ने हँसकर शल्य से कहा—हे मद्रराज ! तुमने भीमसेन के बारे में जो कुछ कहा, वह २० सब सच है। ये शूर, धीर, क्रोधी, महाबली और प्राणों की परवा न रखकर युद्ध करते हैं। ये युद्ध करने में कभी नहीं थकते। अज्ञातवास में विराट राजा के यहाँ रहते समय इन्होंने, द्रौपदी का प्रिय करने के लिए, गुप्त रूप से केवल बाहुबल के सहारे महाबली कीचक को और उसके भाइयों को मार डाला था। आज इस समय वही भीमसेन क्रुद्ध होकर युद्ध करने को उद्यत हैं। दण्डपाणि यमराज से भी युद्ध करने में ये पीछे नहीं हट सकते। बहुत दिनों से मेरी यह इच्छा है कि समर में अर्जुन या तो मुझे मारें या मैं उनको मारूँ। आज इस समय भीमसेन का सामना होने से मुझे अपने उस मनोरथ के पूर्ण होने में सन्देह जान पड़ता है। मैं भीमसेन को अगर मार डालूँगा या रथहीन कर दूँगा तभी अर्जुन मुझसे युद्ध करने आवेंगे और उसी को मैं अच्छा समझूँगा। हे शल्य, शीघ्र बतलाओ इस समय तुम्हारी क्या राय है।

शल्य ने कहा—हे कर्ण, तुम इस समय महापराक्रमी भीमसेन के साथ युद्ध करो। इनको परास्त कर चुकने पर अवश्य ही अर्जुन तुमसे लड़ने आवेंगे और इस तरह तुम्हारी बहुत दिन की इच्छा आज पूरी होगी, यह मैं सच कहता हूँ। अब फिर कर्ण ने कहा—हे शल्य ! इस समय या ३० तो अर्जुन को मैं मारूँगा, या वही मुझे मार डालेंगे। महाराज ! महारथी कर्ण यों कहकर, युद्ध के लिए दृढ़ निश्चय करके, शल्य से भीमसेन के निकट रथ ले चलने के लिए कहने लगे।

सञ्जय कहते हैं—राजन्, तब वीरवर शल्य शीघ्र ही कर्ण का रथ वहाँ पर ले गये जहाँ महाधनुर्द्धर भीमसेन आपकी सेना को मारकर भगा रहे थे। कर्ण और भीमसेन का समागम होने पर रणस्थल में तुरही और भेरी आदि हज़ारों बाजे बजने लगे। महाबली भीमसेन अत्यन्त कुपित होकर तीक्ष्ण नाराच बाणों से आपकी दुर्द्धर्ष सेना को चारों ओर भगाने लगे। अब कर्ण और भीम दोनों वीर भयानक संग्राम करने लगे। भीमसेन दम भर में सहज ही कर्ण के सामने वेग से आ गये। कर्ण ने भी उन्हें आते देखकर, कुपित होकर, पहले उनकी छाती में एक नाराच बाण मारा; फिर वे उन पर बाणों की वर्षा करने लगे। महावीर भीमसेन भी कर्ण

के बाणों से अत्यन्त घायल हो चुकने पर उनके ऊपर असंख्य बाण बरसाने लगे। अब भीम ने ताककर कर्ण को तीक्ष्ण नव बाण मारे। कर्ण ने तीक्ष्ण बाण मारकर भीमसेन के धनुष के, बीच से काटकर, दो टुकड़े कर दिये। भीमसेन का धनुष काटकर कर्ण ने उनकी छाती में, सब प्रकार के आवरणों को तोड़ डालनेवाला, तीक्ष्ण नाराच बाण मारा। भीमसेन ने दूसरा धनुष हाथ में लेकर कर्ण के सब मर्मस्थलों में तीक्ष्ण बाण मारे और ऐसा घोर सिंहनाद किया, जिससे पृथ्वी और आकाश तक काँप उठा। तब कर्ण ने वैसे ही भीमसेन को पचीस नाराच बाण मारे, जैसे कोई वन में मस्त हाथी को जलती हुई लकड़ियाँ मारे। उन बाणों से शरीर छिन्न-भिन्न हो जाने के कारण भीमसेन क्रोध से विह्वल हो उठे; उनकी आँखों में ख़ून उतर आया। उन्होंने कर्ण के वध की इच्छा से धनुष पर महावेगयुक्त और बड़े-बड़े पहाड़ों को भी तोड़ सकनेवाला महाविकट बाण चढ़ाया। फिर बलपूर्वक कानों तक खींचकर कुपित भीमसेन ने वह बाण छोड़ा। उनके हाथ से छूटा हुआ वह बाण, वज्रपात के समान घोर शब्द करता हुआ, वज्र की ही तरह वेग से कर्ण की छाती में लगा। वज्र जैसे पर्वत को फाड़ डाले, वैसे ही उस बाण ने कर्ण के हृदय को फाड़ दिया। हे कुरुश्रेष्ठ, भीमसेन के प्रहार से सेनापति कर्ण बेहोश होकर रथ पर गिर पड़े। उन्हें अचेत देखकर वीर शल्य झटपट वहाँ से रथ को हटा ले गये। इस तरह कर्ण के परास्त होने पर दुर्योधन की सेना चारों ओर भागने लगी। महाराज, पूर्व समय में इन्द्र ने जैसे असुरों की सेना को भगाया था वैसे ही बली भीमसेन भी कर्ण को हराकर कौरव-सेना को मारने और भगाने लगे। ४१ ४८

इक्यावनवाँ अध्याय

भीमसेन और कर्ण का फिर युद्ध और दुर्योधन के कई
भाइयों का मारा जाना। संकुल युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, भीमसेन ने यह बड़ा दुष्कर काम किया कि महाबाहु कर्ण को रथ पर अचेत कर दिया। दुर्योधन बारम्बार मुझसे यही कहा करता था कि कर्ण अकेले ही सब पाण्डवों और सृञ्जयों को मार डालेगा। उस समय कर्ण को भीमसेन से यों परास्त हुआ देखकर दुर्योधन ने क्या किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज, राजा दुर्योधन ने कर्ण को महायुद्ध से विमुख देखकर अपने भाइयों से कहा कि तुम लोग अभी जाकर अथाह सङ्कट-सागर में डूबे हुए कर्ण को उबारो। राजन्! तब आपके सब पुत्र बड़े भाई की यह आज्ञा पाकर, पतङ्गे जैसे आग की ओर चलें वैसे ही, भीमसेन को मारने के विचार से कुपित होकर उनकी ओर दौड़ पड़े। महापराक्रमी,

कवच पहने और पाश तरकस आदि धारण किये हुए श्रुतर्वा, दुर्धर, क्राथ, विवित्सु, विकट, सम, नन्द, उपनन्द, दुष्प्रधर्ष, सुबाहु, वातवेग, सुवर्चा, धनुर्ग्राह, दुर्मद, जलसन्ध, शल और सह, ये आपके पुत्र अनेक रथी योद्धाओं के साथ आगे बढ़े और चारों ओर से भीमसेन को घेरकर उनके ऊपर तरह-तरह के विकट बाण बरसाने लगे। आपके पुत्रों के प्रहार से पीड़ित पराक्रमी
११ पाण्डव ने शीघ्रता के साथ उनके पाँच सौ रथ नष्ट करके पचास रथी योद्धाओं को मार डाला। उन्होंने एक भल्ल बाण से विवित्सु का कुण्डलमण्डित शिरस्त्राणशोभित पूर्णचन्द्रतुल्य सिर काट-कर पृथ्वी पर गिरा दिया। आपके और सब पुत्र शूर विवित्सु की मृत्यु देखकर भीमसेन पर आक्रमण करने को दौड़े। तब भीमसेन ने अन्य दो भल्ल बाणों से देवकुमार-तुल्य आपके अन्य दो पुत्रों विकट और सह—को मार डाला। वे दोनों आँधी से उखड़े हुए बड़े वृक्षों की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। अब भीमसेन ने शीघ्र ही एक तीक्ष्ण नाराच बाण से क्राथ को मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया आपके धनुर्द्धर वीर पुत्रों के मारे जाने पर कौरव-सेना में घोर हाहाकार मच गया। इस प्रकार सेना में हलचल होने पर महाबली भीमसेन ने फिर नन्द और उपनन्द को मार डाला। तब आपके बचे हुए पुत्रगण कालान्तक के समान भयङ्कर भीमसेन को देखकर विह्वल होकर भागने लगे।

महाराज, आपके पुत्रों की मृत्यु
२० देखकर कर्ण बहुत ही दुःखित हुए। उन्होंने फिर अपने रथ को भीमसेन के सामने ले चलने के लिए शल्य से कहा। शल्य के हाँके हुए वे घोड़े वेग से भीमसेन के रथ के पास पहुँच गये। तब भीमसेन और कर्ण दोनों घोर संग्राम करने लगे। महाराज, उस समय उन दोनों महारथियों को भिड़ते देखकर मैं सोचने लगा कि इस घोर संग्राम का परि-णाम क्या होगा। इसके उपरान्त युद्ध में निपुण भीमसेन आपके पुत्रों के सामने ही वीरवर कर्ण के ऊपर पैने बाणों की वर्षा करने लगे। श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले कर्ण ने भी क्रोधान्ध होकर नत्र लोहमय भल्ल बाणों से भीमसेन को घायल कर दिया। भीम-पराक्रमी

भीमसेन ने कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर, कान तक खींचकर, सात बाण उनको मारे। कर्ण ने भी कुपित सर्प की तरह फुफकारकर भीमसेन पर इतने बाण बरसाये कि वे उनमें छिप गये। महाबली भीमसेन भी कौरवों के सामने ही महारथी कर्ण को बाण-वर्षा से ढककर घोरतर सिंहनाद करने लगे। महावीर कर्ण भीमसेन के बाणों की चोट से अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने दृढ़ता के साथ धनुष पकड़-कर भीमसेन को दस बाण मारे और एक तीक्ष्ण भल्ल से उनका धनुष काट डाला। तब भीमसेन ने कर्ण को मार डालने के इरादे से एक सुवर्ण-पत्र-भूषित, दूसरे यमदण्ड के समान भयानक, परिघ लेकर कर्ण के ऊपर फेंका और सिंहनाद किया। कर्ण ने भी तत्काल विषैले सर्प-सदृश असंख्य बाणों से उस वज्र के समान शब्द करते आ रहे बेलन के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

३०

तब महावीर भीमसेन ने मज़बूती से धनुष पकड़कर शत्रुदलन कर्ण को बाणों से छिपा दिया।

राजन्, इसके बाद एक दूसरे को मार डालने के लिए उद्यत वाली और सुग्रीव की तरह महावीर कर्ण और भीमसेन पहले से भी अधिक घोर संग्राम करने लगे। महारथी कर्ण ने कान तक धनुष की डोरी खींचकर तीन बाणों से भीमसेन को घायल किया। कर्ण के बाणों से बहुत ही घायल होने के कारण भीमसेन क्रोध के मारे काँपने लगे। उन्होंने कर्ण के शरीर को चीरनेवाला एक घोर बाण धनुष पर चढ़ाकर छोड़ा। वह बाण कर्ण के कवच को तोड़कर शरीर को फोड़कर, बाँबी में घुसनेवाले साँप की तरह, पृथ्वी में घुस गया। इस बाण की चोट से वीर कर्ण बहुत व्यथित और विह्वल हो उठे; वे भूकम्प के समय पहाड़ की तरह काँपने लगे। इसके बाद उन्होंने अत्यन्त क्रोध करके भीमसेन को पचीस तीक्ष्ण नाराच बाणों से घायल करके अन्य असंख्य बाणों से पीड़ित किया। फिर एक बाण से उनकी ध्वजा काटकर गिरा दी और एक भल्ल बाण से उनके सारथी को भी मार डाला। इस प्रकार दम भर में भीमसेन का धनुष और रथ काटकर वे हँसने लगे। तब महाबाहु भीमसेन गदा हाथ में लेकर ४०

उस टूटे हुए रथ के ऊपर से तुरन्त कूद पड़े। हवा जैसे शरद् ऋतु के मेघ को उड़ा देती है वैसे ही वे उस गदा के प्रहार से कौरव-सेना को मारने और भगाने लगे। इसके बाद भीम ने हल के समान बड़े-बड़े दाँतोंवाले और शत्रुसेना पर प्रहार करनेवाले सात सौ हाथियों को कुपित होकर एकाएक मारा और भगाया। मर्मस्थलों की जानकारी रखनेवाले बली भीम उन हाथियों के दन्तवेष्टन, नेत्र, कपोल, मस्तक आदि स्थानों में और मर्मस्थलों में वेग से गदा प्रहार करने लगे। उनके भयानक प्रहारों से अत्यन्त भयविह्वल होकर वे हाथी पहले तो इधर-उधर भागे; किन्तु जब उनके सवारों ने उनको सँभाला और उत्तेजित किया, तब वे फिर भीमसेन के सामने आये और मेघमण्डल जैसे सूर्य को छिपा लें वैसे ही उन्होंने चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया। तब शत्रु-दल-दलन भीमसेन ने उस गदा की मार से वैसे ही उन सात सौ हाथियों को मार-मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया जैसे इन्द्र ने वज्र के प्रहार से पहाड़ों को चूर-चूर कर डाला था। अब भीमसेन ने फिर शकुनि के साथ के महाबलशाली बावन हाथियों को मार डाला। फिर कौरवपक्ष की सेना को पीड़ित कर रहे वीर पाण्डव ने फुर्ती के साथ शत्रुपक्ष के ५० कुछ अधिक सौ रथों और सैकड़ों पैदलों को नष्ट कर दिया। राजन्, इधर इस तरह महाबाहु भीमसेन पीड़ित कर रहे थे और उधर सूर्य का तेज सता रहा था। इन दोनों कारणों से आपकी सेना, आग में डाले गये चमड़े की तरह, संकुचित और नष्ट होने लगी। उस समय आपकी सेना भीमसेन के डर से विह्वल होकर चारों ओर भागने लगी।

इसी समय और पाँच सौ कवचधारी रथी योद्धा बाण बरसाते हुए भीमसेन की ओर चले। महाबली भीमसेन ने, विष्णु जैसे असुरों का संहार करें वैसे ही, उन ध्वजा-पताका और शस्त्र आदि से सज्जित वीरों को गदा के प्रहार से चूर्ण कर दिया। तब शकुनि की आज्ञा से शक्ति-ऋष्टि-प्रास आदि शस्त्र हाथों में लिये हुए तीन हज़ार घुड़सवार योद्धा भीमसेन पर आक्रमण करने चले। शत्रुनाशन भीम ने उन घुड़सवारों के पास जाकर, तरह-तरह के पैंतरे दिखाकर, उसी गदा से सबको चूर्ण कर डाला। चारों ओर से मारे जा रहे वे वीर वैसा ही शब्द और आर्तनाद करने लगे जैसा शब्द पत्थरों से तोड़े जा रहे बाँसों या नरकुलों के वन में होता है। इस तरह शकुनि के तीन हज़ार चुने हुए घुड़सवारों को मारकर वीर भीमसेन दूसरे रथ पर सवार हुए और कर्ण के सामने पहुँचे।

उधर वीर कर्ण राजा युधिष्ठिर के ऊपर बाण बरसाने लगे। उन्होंने धर्मराज के सारथी को मार गिराया। अपनी सेना को भागते देखकर कुपित कर्ण कङ्कपत्र बाण बरसाते हुए वेग ६० से धर्मराज की ओर चले। कर्ण का रथ देखकर धर्मराज डर के मारे भाग खड़े हुए। महावीर कर्ण भी, युधिष्ठिर पर बरसाये गये बाणों से आकाश और पृथ्वी को व्याप्त करते हुए, उनका पीछा करने लगे। यह देखकर कुपित बली भीमसेन कर्ण के ऊपर बाण बरसाने लगे। शत्रुओं

को पीड़ित करनेवाले महारथी कर्ण लौट पड़े और भीमसेन को तीक्ष्ण बाण मारने लगे। उधर सत्यविक्रमी सात्यकि, भीमसेन की सहायता करने के लिए, आगे बढ़े और अपने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को व्यथित करने लगे। महारथी कर्ण, सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर भी, भीमसेन से युद्ध करने लगे। उस समय वे दोनों वीर परस्पर भिड़कर लगातार बाण बरसाने लगे। उनके क्रौञ्च पक्षी की पीठ के समान लाल रङ्ग के बाण चारों ओर फैल जाने से सारा आकाश लाल ही लाल दिखाई पड़ने लगा। बाणों से सब दिशा-उपदिशाएँ और सूर्य की प्रभा तक छिप गई। दोपहर के समय तप रहे सूर्य का तीक्ष्ण तेज कर्ण और पाण्डव की बाण-वर्षा में छिप गया। इसी समय पाण्डवों को फिर आक्रमण करते और शकुनि, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, कर्ण, कृपाचार्य आदि

को उनसे भिड़ते देखकर कौरवों की सेना युद्ध करने को लौट पड़ी। उमड़ रहे समुद्र के समान उस लौट रही सेना में तीव्र और भयानक कोलाहल होने लगा। दोनों पक्ष की सेनाओं के वीर योद्धा भिड़कर एक दूसरे की ओर देखते हुए प्रहार करने लगे। उस दोपहर के समय ऐसा घोर युद्ध हुआ कि वैसा युद्ध हम लोगों ने न तो पहले कभी देखा था और न सुना था। एक ओर की सेना दूसरी ओर की सेना के निकट पहुँचकर वैसे ही वेग से आगे बढ़ने लगी जैसे जल का समूह सागर की ओर बढ़ता है। दोनों ओर से चल रहे असंख्य बाणों का शब्द गरज रहे सागर की लहरों के शब्द की तरह सुनाई पड़ने लगा। दोनों सेनाएँ वेग से बढ़कर दो नदियों की तरह एक में मिल गईं।

७१

अब भारी यश प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले कौरव और पाण्डव दल के लोग घोर संग्राम करने लगे। दोनों पक्ष के पराक्रमी शूर गरज-गरजकर, अपने विपक्षियों के नाम ले-लेकर, लगातार तरह-तरह की बातें कह रहे थे। जिसके पिता या माता के कुल में कर्म अथवा स्वभाव का जो दोष या व्यङ्ग्य था उसे उसका प्रतिपक्षी युद्ध में सुनाता था। इस तरह उन शूरों को परस्पर

तर्जन-गर्जन करते और कलङ्क खोलते देखकर मुझे तो निश्चय हो गया कि अब ये जीते नहीं बच सकते; परस्पर कट-मर जायँगे। उन महातेजस्वी कुपित वीरों के रूप देखकर मेरे मन में तीव्र भय का सञ्चार हुआ कि आज इसका परिणाम क्या होगा। महाराज! महारथी कौरव और ८१ पाण्डव, विजय की इच्छा करके, परस्पर बाणों से शरीरों को छिन्न-भिन्न करने लगे।

बावनवाँ अध्याय

संकुल युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज, तब वे परस्पर विजय की इच्छा रखनेवाले बद्ध-वैर क्षत्रियगण एक दूसरे को मारने और मरने लगे। उस भयङ्कर संग्राम में परस्पर वीरों के चलाये हुए गदा,

परिघ, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल और भुशुण्डी आदि शस्त्र तथा असंख्य बाण पतङ्गों की तरह चारों ओर गिरने लगे। हाथी हाथियों को, घोड़े घोड़ों को, रथी रथियों को और पैदल पैदलों को मारने लगे। हाथियों के सवार उनके सवारों को मारने लगे। इसी तरह घोड़ों के सवार घुड़सवारों को, पैदल योद्धा लोग हाथियों, रथों और घोड़ों को, और हाथियों के झुण्ड रथों, घोड़ों और पैदलों को शीघ्रता के साथ बढ़कर मारने और रौंदने लगे। उस महारण में मारे जा रहे और परस्पर पुकार रहे शूरों के प्रहार से वह रणभूमि पशुओं की वध्यभूमि की तरह भयङ्कर दिखाई पड़ने लगी। वह रणभूमि, रक्त से तर होने के कारण, वर्षा ऋतु में वीरबहूटियों से परिपूर्ण पृथ्वी के समान जान पड़ने लगी। जैसे कोई युवती कुसुम के रङ्ग से रँगे हुए कपड़े पहन १० करके शोभित हो वैसे ही वह रणभूमि रक्त से तर होने के कारण जान पड़ती थी। वीरों के मस्तक, बाहु, ऊरु आदि अङ्गों और कुण्डल, निष्क आदि आभूषणों, कवचों और शरीरों के ढेर के ढेर चारों ओर लगातार गिर रहे थे। दोनों पक्ष के हाथी परस्पर दाँतों के प्रहार से विदीर्ण

और रक्त से तर होकर उस पर्वत के समान शोभायमान हो रहे थे, जिससे गेरू बह रही हो। कोई-कोई हाथी घुड़सवारों के चलाये और ताने हुए तोमरों को सूँड़ से छीनकर तोड़ डालने लगे। कुछ हाथियों के कवच नाराच बाणों से कट गये थे और वे शरद् ऋतु के आगमन में मेघों से शून्य पर्वतों के समान शोभा को प्राप्त हो रहे थे। हाथियों के शरीरों में अनेक सुवर्णपुङ्ख-युक्त बाण आकर लगे थे। इससे वे उल्काओं से प्रदीप्त शिखरवाले पर्वतों के समान जान पड़ते थे। कोई-कोई पर्वताकार हाथी हाथियों के किये हुए प्रहार से भी नहीं विचलित हुए, और जिनके पक्ष कट गये हों उन पर्वतों के समान अपने स्थान पर डटे खड़े रहे। कुछ हाथी बाणों की मार और व्रणों की पीड़ा से व्यथित होकर भागने लगे। कुछ हाथी दाँतों और मस्तकों के बल

पृथ्वी पर गिर पड़े। कुछ हाथी पृथ्वी पर बैठ गये और सिंह की तरह गरजकर भयङ्कर शब्द करने लगे। कुछ हाथी इधर-उधर चक्कर खाने लगे और कुछ आर्त्तनाद करने लगे। २० सोने के गहनों से सजे हुए घोड़े बाणों की चोट से पीड़ित होकर गिर पड़े, मर गये और इधर-उधर भागने लगे। क्लेश से पीड़ित बहुत से घोड़े पृथ्वी पर गिरकर तड़पने लगे। बाणों और तोमरों से पीड़ित होकर बहुत से घोड़े तरह-तरह की चेष्टाएँ करने लगे। बहुत से मारे गये मनुष्य पृथ्वी पर गिरकर आर्त्तनाद करने लगे। अन्य बहुत से मनुष्य अपने बान्धवों और पिता-पितामहों को देखकर आर्त्तनाद करने लगे। कुछ लोग अपने शत्रुओं को भागते देखकर एक दूसरे के प्रसिद्ध नाम-गोत्र आदि लेने लगे। महाराज, वीरों के सोने के गहनों से भूषित कटे हुए हाथ इधर-उधर तड़पते, उठते और गिरते थे। रण में कटकर गिरे हुए अनेक हाथ, पाँच मुखवाले साँपों की तरह, वेग से उछलते और लोटते थे। वे चन्दन-चर्चित खून से तर हाथ सोने की ध्वजाओं के समान, साँपों के फणों के समान, शोभायमान हो रहे थे।

राजन्, इस तरह चारों ओर घोर संकुल युद्ध होने लगा और योद्धा लोग आपस में ही मार-पीट करने लगे। चारों ओर शस्त्र चलने से एक तो यों ही किसी को अपने-पराये

का ख़याल नहीं था, उस पर धूल उड़ने से बेतरह अँधेरा छा गया जिससे किसी को बिलकुल ही अपने या पराये की पहचान नहीं रही। महाराज, उस भयानक संग्राम में चारों ओर कई रक्त की ३० नदियाँ बह निकलीं। उनमें मस्तक ही पत्थर की जगह थे। केश ही सेवार और घास के समान जान पड़ते थे। हड्डियाँ मछलियों की जगह थीं। धनुष-बाण-गदा आदि शस्त्र छोटी-छोटी डोंगियों के समान बह रहे थे। मांस और रक्त की उनमें कीच थी। ऐसी अत्यन्त दारुण और रक्त के प्रवाह को बढ़ानेवाली नदियाँ चारों ओर वीरों ने बहा दीं। वे घोर नदियाँ सबको यमपुर पहुँचानेवाली, कायरों को डरानेवाली और शूर पुरुषों के हर्ष को बढ़ानेवाली थीं। वीर योद्धाओं को डुबानेवाली उन नदियों को देखकर क्षत्रियों के भी मन में भय उत्पन्न होने लगा। मांसाहारी जीव और राक्षस आदि उन नदियों के किनारे आनन्द से नाच रहे थे। उन नदियों ने रणभूमि को यमपुर के समान महाभयानक बना दिया। चारों ओर अगणित कबन्ध उठ खड़े हुए। भूतगण मांस और रक्त से तृप्त हो गये। रक्त पीकर, चर्बी खाकर, मेदा-मज्जा-बसा-मांस आदि से तृप्त और उन्मत्त मांसाहारी काक गिद्ध बगले आदि जीव इधर-उधर उड़ रहे थे। राजन्! उस दारुण युद्ध में दुस्त्यज प्राणों के डर को छोड़कर, योद्धाओं के व्रत का ख़याल करके, वीर क्षत्रियगण निडर होकर युद्ध कर रहे थे। बाण-शक्ति आदि शस्त्रों से दुर्गम और मांसाहारी जीवों से परिपूर्ण उस रणभूमि में शूर लोग अपना पौरुष प्रकट करते हुए इधर-उधर विचर रहे थे। योद्धा लोग चारों ओर अपने, और पिताओं के, नाम-गोत्र आदि सुना-सुनाकर शक्ति तोमर पट्टिश आदि शस्त्रों से परस्पर प्रहार कर रहे थे। महाराज, इस तरह संग्राम ने जब घोर रूप धारण किया तब पाण्डवों से पीड़ित कौरवों की सेना, समुद्र ४२ में टूट गई नाव के समान, खिन्न हो गई।

तिरपनवाँ अध्याय

अर्जुन का संशप्तकगण से युद्ध

सञ्जय ने कहा—महाराज! क्षत्रियों का नाश करनेवाला ऐसा महाघोर संग्राम जिस समय हो रहा था उसी समय जहाँ पर महाबली अर्जुन संशप्तकगण, कोशलगण और नारायणी सेना का संहार कर रहे थे वहाँ रण-भूमि में गाण्डीव धनुष का महाभयानक शब्द बारम्बार सुनाई पड़ रहा था। जय की इच्छा रखनेवाले क्रोधी संशप्तकगण चारों ओर से बारम्बार अर्जुन के मस्तक पर बाणों की वर्षा कर रहे थे। महावीर अर्जुन सहज ही उस शस्त्रवर्षा को हृदय पर झेलते हुए शत्रुसेना में घुसे और उनके श्रेष्ठ रथी योद्धाओं को चुन-चुनकर मारने लगे। कङ्कपत्रयुक्त तीक्ष्ण बाणों से उन रथी योद्धाओं की मण्डली को मथकर वीर अर्जुन महारथी सुशर्मा

के पास पहुँचे। उस समय सुशर्मा और उसके साथी संशप्तकगण फिर अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। इसी बीच में सुशर्मा ने अर्जुन को दस बाण मारकर श्रीकृष्ण के दाहने हाथ में तीन पैने बाण मारे। इसके बाद सुशर्मा ने अर्जुन की ध्वजा में एक भल्ल बाण मारा। वह विश्वकर्मा का बनाया हुआ, ध्वजा में स्थित, वानर सुशर्मा के प्रहार से क्रुद्ध होकर गरजने और नृत्य सा करने लगा। इससे सारी सेना डरकर व्याकुल और चेष्टाहीन सी हो गई। वह निश्चेष्ट सेना अनेक पुष्पों से युक्त गन्धर्वों के उपवन के समान जान पड़ने लगी। राजन्, दम भर के बाद होश में आकर वे सब योद्धा चारों ओर से अर्जुन के ऊपर वैसे ही बाण बरसाने लगे, जैसे मेघ पर्वत पर जलधारा बरसाते हैं। उन्होंने अर्जुन के रथ की गति रोक करके उसे अपने रथों के घेरे में कर लिया। उन कुपित संशप्तकों ने यह विचार कर लिया कि अर्जुन के घोड़ों को, रथ को, पहियों को और रथ के ईषादण्ड को प्रचण्ड आक्रमण से नष्ट कर दें। कुछ साहसी संशप्तकों ने रथ पर चढ़कर श्रीकृष्ण और अर्जुन को पकड़ लेना चाहा। सिंहनाद कर रहे कुछ योद्धाओं ने पास जाकर श्रीकृष्ण की भुजाएँ पकड़ लीं और कुछ ने आनन्द के साथ रथ पर स्थित अर्जुन को पकड़ लेने की चेष्टा की। दुष्ट हाथी जैसे अपने महावत और सवारों को पटक देता है वैसे ही महाबाहु श्रीकृष्ण ने अपनी देह को झटककर उन सबको रथ के नीचे गिरा दिया। महारथी संशप्तकों से घिरे हुए अर्जुन ने अपने रथ को रुका हुआ और उन योद्धाओं में से कुछ को आक्रमण के लिए दौड़ते तथा कुछ को रथ पर चढ़ते देखकर, कुपित होकर, कुछ को तो नीचे गिरा दिया और तनिक भी घबराये बिना, निकट से युद्ध करने के लायक, छोटे बाणों से अनेक वीरों को मार गिराया। १०

अर्जुन ने इस तरह उन शत्रुओं को मारकर, मुसकराकर, कहा—हे कृष्णचन्द्र! असंख्य संशप्तकगण, रथों का घेरा डालकर, घोर दुष्कर्म करने को तैयार थे। मेरे सिवा और कोई क्षत्रियश्रेष्ठ पृथ्वी पर ऐसा नहीं है जो इनसे अपने को बचा सकता। २०

राजन्, महातेजस्वी अर्जुन ने अब अपना देवदत्त नामक शङ्ख बजाया। श्रीकृष्ण ने भी पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। उन दोनों शङ्खों के शब्द से आकाश और पृथ्वी परिपूर्ण हो उठी। उस शङ्खध्वनि को सुनकर संशप्तक-सेना भयभीत और विचलित होकर भाग खड़ी हुई। तब अर्जुन ने नागास्त्र छोड़ा जिससे नागों ने प्रकट होकर संशप्तकों के पैर पकड़ लिये। उक्त अस्त्र के प्रभाव से संशप्तकगण जहाँ के तहाँ खड़े रह गये। दिव्य अस्त्रों के जानकार अर्जुन ने इस तरह उन्हें चेष्टाहीन करके उसी तरह मारना शुरू किया जिस तरह, तारकासुर को मारने के समय, इन्द्र ने असुरों को मारा था। इस तरह मारे जा रहे शत्रुओं ने अर्जुन के रथ को छोड़ दिया। कुछ लोगों ने अस्त्र-शस्त्र फेंक दिये। उस समय अर्जुन उन नागास्त्र से निश्चल शत्रुओं को सहज ही मार-मारकर गिराने लगे।

महाराज, नागपाश में बँधी हुई अपनी सेना को देखकर महारथी सुशर्मा ने चटपट गरुड़ास्त्र
३० का प्रयोग किया। उस अस्त्र के प्रभाव से असंख्य गरुड़ प्रकट हो गये और उन्होंने सभी नागों
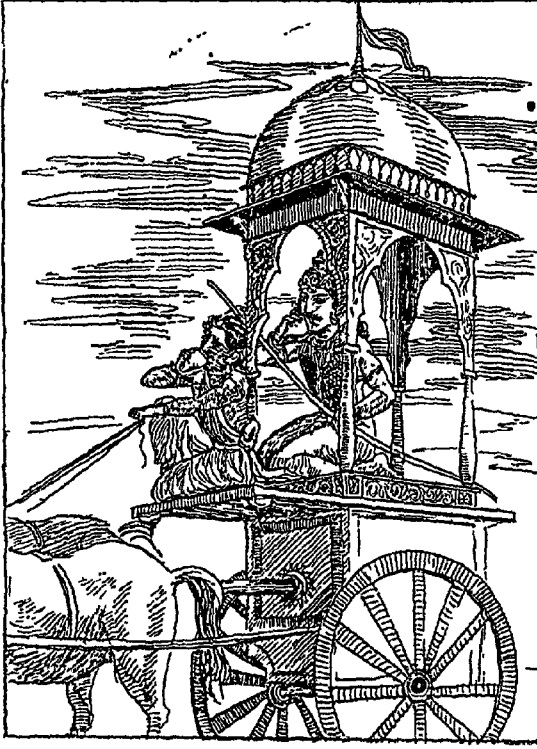
को खा लिया। बचे हुए नाग, आकाशचारी गरुड़ों को देखकर, डर के मारे भाग खड़े हुए। सूर्य जैसे मेघों के आवरण से छूटें वैसे ही सब सैनिक नागास्त्र से छुटकारा पाकर अर्जुन के रथ पर विविध शस्त्रों की वर्षा करने लगे। अब अर्जुन अपने पैने बाणों से उस शस्त्रवर्षा को व्यर्थ करके फिर उन योद्धाओं का नाश करने लगे। यह देखकर महारथी सुशर्मा अत्यन्त कुपित हो उठा। उसने एक विकट बाण तानकर अर्जुन की छाती में मारा; उसके बाद और भी तीन बाण कस-कसकर मारे। उन बाणों की गहरी चोट से व्यथित होकर अर्जुन रथ के ऊपर बैठ गये; उन्हें मूर्च्छा आ गई। अर्जुन की यह दशा देख, उन्हें मरा हुआ जानकर, कौरवपक्ष के योद्धा "अर्जुन मारे गये" कहकर ज़ोर से चिल्लाने और ख़ुशी मनाने लगे। कौरव-सेना में शङ्ख, भेरी आदि बहुत से बाजे बजने लगे और योद्धा लोग सिंहनाद करने लगे।

अर्जुन क्षण भर में होश में आ गये। अब उन्होंने दिव्य ऐन्द्र अस्त्र छोड़ा। उस अस्त्र के प्रभाव से अर्जुन के धनुष से अपने आप हज़ारों बाण निकलने लगे। वे बाण सब ओर जाकर शत्रुसेना के रथ, हाथी, घोड़े, पैदल आदि को सैकड़ों-हज़ारों की संख्या में एक साथ
४० मारकर गिराने लगे। इस तरह सेना का नाश होते देखकर सब संशप्तकगण और नारायणी सेना के गोपालगण डर गये। उस समय उनमें ऐसा कोई न था जो अर्जुन के सामने ठहरता या उन पर प्रहार करता। महारथियों के सामने ही महाबाहु अर्जुन आपकी सेना को चौपट करने लगे और वे महारथी पराक्रमहीन निश्चेष्ट-से होकर सब देखते रहे। राजन्, उस समय महारथी अर्जुन युद्ध में दस हज़ार योद्धाओं को मारकर, बिना धुएँ की प्रचण्ड आग के समान, अपने तेज से प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने अपने सामने उपस्थित चौदह हज़ार पैदलों, दस हज़ार रथियों और तीन हज़ार हाथियों को मार डाला। तब मरने से बचे हुए संशप्तक फिर,

मरने या विजय प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय करके, अर्जुन को चारों ओर से घेरने लगे। हे भरत-कुल-तिलक, उस समय फिर शूर अर्जुन आपके पक्ष के वीरों के साथ घोर संग्राम करने लगे। ४६

चौवनवाँ अध्याय

संकुल युद्ध

सञ्जय ने कहा—महाराज! तब कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि और भाइयों सहित राजा दुर्योधन पाण्डवों के डर से पीड़ित अपनी सेना की दुर्दशा देखकर आगे बढ़े और प्रवाह के वेग से समुद्र में टूटकर डूब रही नाव के समान अपनी सेना को उबारने का यत्न करने लगे। दम भर में कायरों के मन में डर और वीरों के मन में उत्साह बढ़ानेवाला घोर युद्ध होने लगा। कृपाचार्य के छोड़े हुए बाणों ने टीड़ीदल की तरह सृञ्जय-सेना को छा लिया। तब शिखण्डी क्रुद्ध होकर कृपाचार्य की ओर दौड़े और उनके चारों ओर घोर बाणों की वर्षा करने लगे। दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य ने उस बाण-वर्षा को व्यर्थ करके शिखण्डी को दस बाण मारे। शिखण्डी ने क्रुद्ध होकर सीधे जानेवाले सात बाण कृपाचार्य को मारे। उन बाणों से अत्यन्त घायल होकर महारथी कृपाचार्य क्रोधान्ध हो उठे। उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से शिखण्डी के घोड़े, सारथी और रथ को नष्ट कर दिया। तब महारथी शिखण्डी उस बिना घोड़ों के रथ से कूदकर, ढाल-तलवार लेकर, फुर्ती के साथ कृपाचार्य की ओर दौड़े। महारथी कृपाचार्य ने उन्हें एकाएक शीघ्रता के साथ आते देखकर, तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करके, राह में ही रोक दिया। राजन्! उस समय हम लोग, जल के ऊपर शिलाओं के तैरने के समान, यह १० अद्भुत दृश्य देखने लगे कि महावीर शिखण्डी कृपाचार्य के बाणों से निश्चेष्ट होकर आगे नहीं बढ़ सके। इसी समय महारथी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी को कृपाचार्य के बाणों से पीड़ित और परास्त देखकर, कृपाचार्य की ओर वेग से दौड़े। महावीर कृतवर्मा, धृष्टद्युम्न को कृपाचार्य के रथ की ओर जाते देखकर, उन पर आक्रमण करने चले। तब राजा युधिष्ठिर भी पुत्रों के साथ सेना सहित कृपाचार्य के रथ की ओर जाने लगे। यह देखकर महावीर अश्वत्थामा ने उनको रोका। राजा दुर्योधन ने भी फुर्ती के साथ बढ़ रहे नकुल और सहदेव को बाण-वर्षा से रोककर उन पर आक्रमण किया। कर्ण ने आगे बढ़ रहे भीमसेन और उनके सहायक कारूष, कैकय और सृञ्जयगण को अपने बाणों से रोका। फिर घोर युद्ध होने लगा। शिखण्डी को मानो भस्म ही कर डालेंगे, इस तरह कृपाचार्य फुर्ती के साथ उनके ऊपर बाण बरसाने लगे। महा-बली शिखण्डी अपना खड्ग घुमाकर कृपाचार्य के छोड़े सुवर्ण-भूषित बाणों को काटने लगे। तब कृपाचार्य ने फुर्ती के साथ अपने बाणों से शिखण्डी की शतचन्द्र-विभूषित ढाल काट डाली।

यह देखकर सब लोग चिल्लाने और हाहाकार करने लगे। ढाल न रहने पर शिखण्डी केवल खड्ग ही लिये कृपाचार्य की ओर दौड़े और जिसकी मौत आ गई हो वह आतुर व्यक्ति
२० जैसे मृत्यु के वश में हो, वैसे ही वे कृपाचार्य के क़ब्ज़े में आ गये।

महाराज! इसी समय महाबली चित्रकेतु के पुत्र सुकेतु, शिखण्डी को कृपाचार्य के बाणों से छिन्न-भिन्न और पीड़ित देखकर, शीघ्र ही विविध बाणों से कृपाचार्य को पीड़ित करते हुए उनके रथ के समीप पहुँचे। उस समय द्विजवर कृपाचार्य को सुकेतु से लड़ने में उलझे देखकर उनके आगे से शिखण्डी भाग गये। महावीर सुकेतु ने क्रम से नव, सत्तर और तीन बाण कृपाचार्य को मारे। फिर उनका बाण-युक्त धनुष काटकर उनके सारथी के मर्मस्थल में एक बाण मारा। यह देखकर कृपाचार्य अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने दूसरा दृढ़ धनुष हाथ में लेकर सुकेतु के मर्मस्थलों में तीस बाण मारे। उन बाणों से महावीर सुकेतु बहुत ही व्याकुल हो गये और भूकम्प के समय जैसे वृक्ष काँपते हैं वैसे ही व्यथा के मारे रथ पर काँप उठे। इसी अवसर में कृपाचार्य ने एक क्षुरप्र बाण से उनका कुण्डलों से अलङ्कृत, पगड़ी और शिरस्त्राण से भूषित मस्तक काट डाला। सुकेतु का सिर, बाज़ के पञ्जे से छूटे हुए मांस-पिण्ड की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसके बाद उनका कबन्ध भी प्राणहीन होकर रथ से नीचे गिर गया। महाराज,
३० सुकेतु के मारे जाने पर उनके सैनिक डर के मारे कृपाचार्य को छोड़कर इधर-उधर भाग गये।

हे राजेन्द्र, इधर महारथी कृतवर्मा महाबली धृष्टद्युम्न को रोककर उत्साह के साथ "ठहरो-ठहरो" कहकर तर्जन-गर्जन करने लगे। उस समय मांस के लिए कुपित होकर लड़ रहे दो श्येन पक्षियों की तरह महावीर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्न घोर संग्राम करने लगे। धृष्टद्युम्न ने क्रुद्ध होकर कृतवर्मा की छाती में नव बाण मारकर उन्हें पीड़ित किया। महारथी कृतवर्मा ने, धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित होकर, इतने बाण बरसाये कि उनसे धृष्टद्युम्न का रथ मय घोड़ों के ढक गया। रथ पर स्थित धृष्टद्युम्न कृतवर्मा के बाणों से घायल होकर, जल-धारा बरसा रहे बादलों के बीच में आ गये सूर्य की तरह, अदृश्य हो गये। किन्तु वे कुछ ही समय में अपने सुवर्ण-भूषित बाणों से उस बाण-जाल को काटकर अविचलित भाव से कृतवर्मा पर बाण बरसाने लगे। समर-विशारद कृतवर्मा ने भी अपने हज़ारों बाणों से अकस्मात् आई हुई उस बाण-वर्षा को व्यर्थ कर दिया। सेनापति धृष्टद्युम्न अपनी बाण-वर्षा को रुकते देखकर कुपित हो उठे। उन्होंने कृतवर्मा को रोककर एक भल्ल बाण से उनके सारथी को मार डाला। राजन्, महाबली धृष्टद्युम्न इस तरह वीर्यशाली शत्रु को पराजित करके अपने बाणों से कौरवों को पीड़ित करने लगे। पराक्रमी कौरव लोग भी सिंहनाद करते हुए उनकी
४२ ओर दौड़े और फिर घोर युद्ध होने लगा।
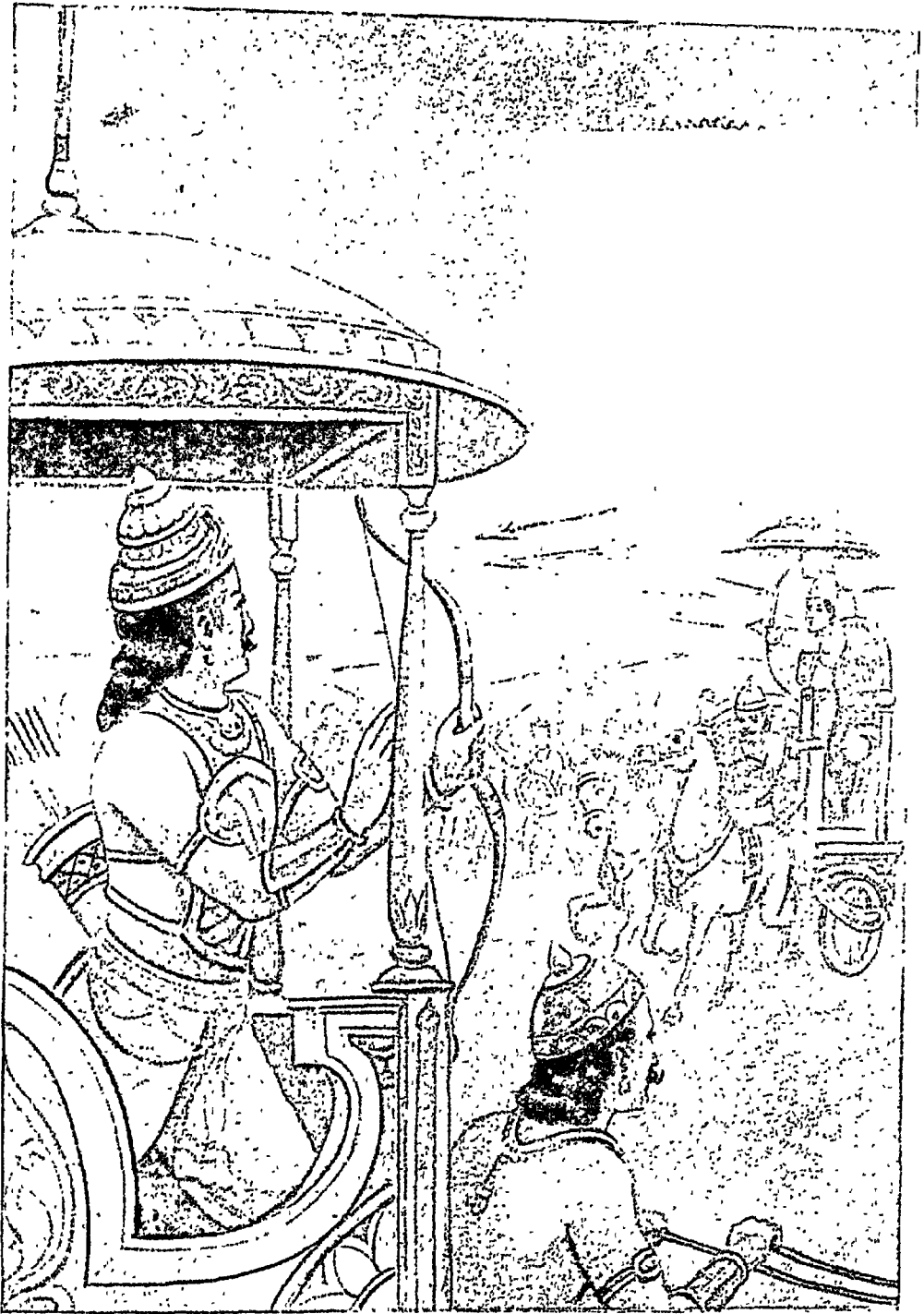
हे राजेन्द्र, इधर महारथी कृतवर्मा धृष्टद्युम्न को रोक कर गर्जन तर्जन करने लगे। पृ०—२८६४
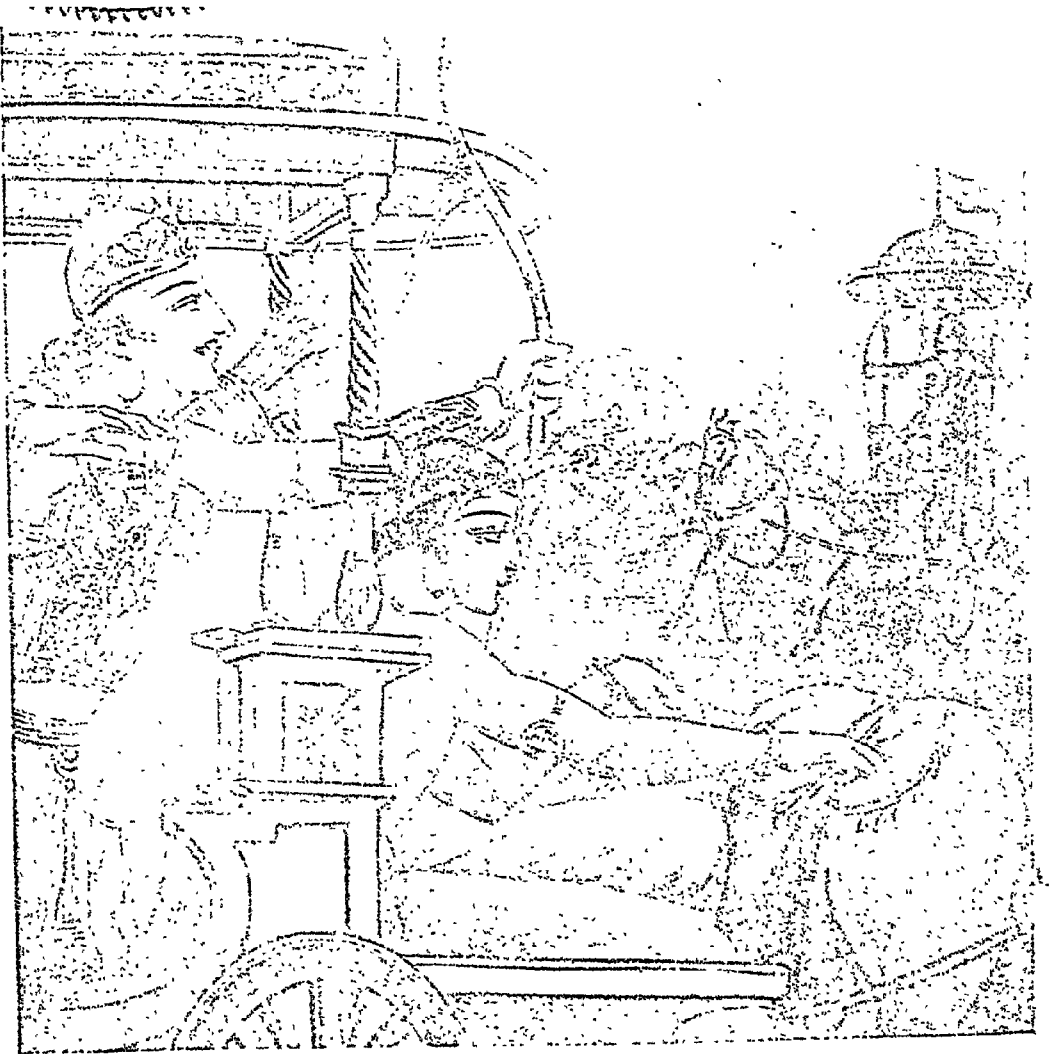
अर्जुन सफ़ेद घोड़ों से युक्त और कृष्ण-संचालित रथ पर बैठकर .... कौरव-सेना को मथने लगे। पृ०—२८८६

पचपनवाँ अध्याय

अश्वत्थामा का युधिष्ठिर को परास्त करना

सञ्जय ने कहा—राजन् ! उधर महावीर अश्वत्थामा युधिष्ठिर को, सात्यकि और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों से, सुरक्षित देखकर फुर्ती के साथ बाण बरसाने और तरह-तरह से अपनी शिक्षा और अभ्यास की निपुणता दिखलाने लगे। वे प्रसन्नतापूर्वक धर्मराज के पास पहुँच गये। दिव्य मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित अस्त्रों से उन्होंने धर्मराज के रथ को और आकाशमण्डल को व्याप्त कर दिया। उस समय और कुछ भी नहीं देख पड़ता था, उस लम्बी-चौड़ी रणभूमि में अश्वत्थामा के बाण ही बाण नज़र आते थे। सुवर्ण-मण्डित बाणों का ऊपर चँदोवा सा तन गया। आकाशमण्डल में इतने बाण छा गये कि जान पड़ने लगा, बादलों की घटा घिर आई है। आकाशचारी प्राणी आकाश में उड़ नहीं सकते थे। यह देखकर हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस समय संग्राम-प्रिय सात्यकि, धर्मराज युधिष्ठिर और अन्य योद्धा लोग अश्वत्थामा की फुर्ती देखकर आश्चर्य से दङ्ग रह गये। कोई किसी तरह पराक्रम करके भी अश्वत्थामा को न रोक सका। सब राजा लोग दोपहर में तप रहे प्रचण्ड सूर्य के समान तेजस्वी अश्वत्थामा की ओर आँख भरकर देखने में भी असमर्थ हो रहे थे।

इस तरह अपनी सेना को मरते देखकर पाण्डवपक्ष के वीरों से नहीं रहा गया। तब सात्यकि, धर्मराज युधिष्ठिर, पाञ्चालगण और द्रौपदी के पाँचों पुत्र मृत्यु का डर छोड़कर अश्वत्थामा की ओर दौड़े। वीरश्रेष्ठ सात्यकि ने पहले अश्वत्थामा को सत्ताईस बाण मारे और फिर सुवर्ण-खचित सात बाणों से उनको घायल किया। इसके बाद धर्मराज ने तिहत्तर, प्रतिविन्ध्य ने सात, श्रुतकर्मा ने तीन, श्रुतकीर्ति ने सात, सुतसोम ने नव, शतानीक ने सात और अन्यान्य वीरों ने असंख्य बाण मारकर एक साथ ही चारों ओर से अश्वत्थामा पर आक्रमण कर दिया। उनके बाणों की मार से महावीर अश्वत्थामा अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे और छोड़े गये

११

भयानक साँप की तरह बारम्बार साँसें लेने लगे। उन्होंने भी सात्यकि को पचीस, श्रुतकीर्ति को नव, सुतसोम को पाँच, श्रुतकर्मा को आठ, प्रतिविन्ध्य को तीन, शतानीक को नव, धर्मराज को पाँच और अन्य वीरों को दो-दो बाण मारे। इसके सिवा उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से श्रुतकीर्ति का धनुष काट डाला। श्रुतकीर्ति ने दूसरा धनुष लेकर पहले अश्वत्थामा को तीन बाण मारे और फिर असंख्य पैने बाणों से उन्हें पीड़ित करना शुरू किया। अश्वत्थामा ने असंख्य बाण बरसाकर पाण्डवसेना को बाणों से पाट दिया, फिर हँसकर धर्मराज का धनुष काट डाला २० और उनको तीन बाण भी मारे। धर्मराज ने फ़ौरन् दूसरा धनुष लेकर अश्वत्थामा की छाती और हाथों में सत्तर बाण मारे। सात्यकि ने भी क्रोधान्ध होकर एक तीक्ष्ण अर्धचन्द्र बाण से अश्वत्थामा का धनुष काट डाला और भयानक सिंहनाद किया। अश्वत्थामा ने झटपट शक्ति के प्रहार से सात्यकि के सारथी को रथ से गिरा दिया। फिर तुरन्त दूसरा धनुष लेकर वे सात्यकि को बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे। सारथी न रहने से सात्यकि के रथ के घोड़े इधर-उधर भागने लगे। तब युधिष्ठिर आदि वीरगण अश्वत्थामा के ऊपर बड़े वेग से लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर अश्वत्थामा भी उन वेग से आ रहे बाणों को हँसते-हँसते सहने लगे। आग जैसे घास-फूस को जलावे वैसे ही सूर्य-सदृश वीर अश्वत्थामा भी बाणों की आग से पाण्डव-सेना को भस्म करने लगे। तिमि नाम का बड़ा मच्छ जैसे नदी के अगले भाग में हलचल मचा दे वैसे ही महाबाहु अश्वत्थामा भी पाण्डव-सैन्य-सागर को मथने और अत्यन्त पीड़ित करने लगे। उस समय दुर्योधन ने अश्वत्थामा का अद्भुत पराक्रम देखकर समझ लिया ३० कि अब पाण्डव मार डाले गये।

इसी समय युधिष्ठिर कुपित होकर फुर्ती के साथ महारथी अश्वत्थामा से कहने लगे—हे आचार्यपुत्र! [मैं तुमको योद्धाओं में श्रेष्ठ, बली, अस्त्रज्ञ, कृती, फुरतीला और पराक्रमी जानता हूँ। किन्तु तुम अगर अपना यह बल धृष्टद्युम्न को दिखलाओ तो हम लोग तुम्हें बलवान् और कृतविद्य जानें। समर में शत्रु-

नाशन धृष्टद्युम्न को देखकर तुम्हारा यह बल नहीं देख पड़ेगा।] आज जब तुम मुझे ही मारने के लिए उद्यत हो तब कहना पड़ता है कि तुममें प्रीति और कृतज्ञता नाम लेने को भी नहीं है। देखो तप, दान और अध्ययन ही तो ब्राह्मण के प्रधान कर्म हैं। धनुष धारण करना क्षत्रिय का धर्म है। तुम तप, शम, दम, आदि अपने कर्मों को छोड़कर क्षत्रियों का काम कर रहे हो इसलिए अवश्य ही ब्राह्मणों में अधम हो। ब्राह्मणकुल में जन्म लेकर भी ऐसे आछे कर्म करने के कारण तुम नाममात्र के ब्राह्मण हो। हे महाबाहो, मैं तुम्हारे सामने ही युद्ध में कौरवों को परास्त करूँगा, तुम मनमाना हत्याकाण्ड कर लो।

राजन्, धर्मराज के ये उचित और यथार्थ वचन सुनकर महावीर अश्वत्थामा चुप रहे, कुछ भी नहीं बोले। कुपित अश्वत्थामा हँसकर फिर युधिष्ठिर और उनकी सेना पर बाणों की वर्षा करने लगे। जिस तरह कुपित अन्तक (मृत्यु) प्रजा का नाश करे उसी तरह अश्वत्थामा शत्रुसेना का संहार करने लगे। महाराज युधिष्ठिर अश्वत्थामा के बाणों की वर्षा से पीड़ित होकर उनके आगे नहीं ठहर सके। वे अपनी विशाल सेना को छोड़कर उनके सामने से अन्यत्र चले गये। उनके हट जाने पर अश्वत्थामा मार-काट करने लगे। महाराज! धर्मराज भी अश्वत्थामा को छोड़कर, जनसंहाररूप क्रूर कर्म के लिए उद्यत होकर, आपकी सेना के अन्य भाग में पहुँचे। ३९

छप्पनवाँ अध्याय

संकुल युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज, दूसरी ओर स्वयं सेनापति कर्ण क्रुद्ध होकर चेदि और केकय देश की सेनाओं सहित धृष्टद्युम्न और भीमसेन को बाण-वर्षा से रोकने लगे। भीमसेन के सामने ही वीर कर्ण चेदि, करूप और सृञ्जय देश की सेना का नाश करने लगे। तब महावीर भीमसेन महारथी कर्ण को छोड़कर क्रोध से, सूखी घास को जला रही आग की तरह, प्रज्वलित होकर कौरव-सेना में घुसे और उसका नाश करने लगे। महारथी कर्ण भी समर में पाञ्चाल, केकय और सृञ्जयसेना के हज़ारों योद्धाओं का संहार करने लगे। महाराज, इस तरह एक तरफ़ संशप्तकगण को अर्जुन, दूसरी ओर कौरवों को भीमसेन और तीसरी तरफ़ पाञ्चालों को वीर कर्ण नष्ट करने लगे। आपकी ही कुमन्त्रणा के कारण इन तीन अग्नितुल्य प्रचण्ड महारथियों की बाण-रूप आग से भस्म हो रहे सब क्षत्रिय समर में नष्ट होने लगे।

हे राजेन्द्र, उधर आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर नव बाणों से नकुल को और उनके घोड़ों को घायल किया। फिर एक क्षुरप्र बाण से सहदेव के रथ की सुवर्ण-मण्डित ध्वजा काट डाली। तब कुपित होकर नकुल ने सात और सहदेव ने पाँच बाण दुर्यो-

धन को मारे। दुर्योधन ने भी कुपित होकर उन महाधनुर्द्धर यमज (जुड़िये) भाइयों की छाती में पाँच-पाँच बाण मारकर दो भल्ल बाणों से उनके बाणयुक्त धनुष काट डाले। फिर
११ बलपूर्वक तीन-तीन बाण मारकर उन्हें पीड़ित किया। तब देव-कुमार-तुल्य महावीर नकुल और सहदेव ने चटपट इन्द्रधनुष के समान अन्य धनुष लेकर दुर्योधन के ऊपर वैसे ही बाण बरसाना शुरू किया, जैसे महामेघ पर्वत के ऊपर जल बरसाते हैं। राजा दुर्योधन ने भी क्रोध से विह्वल होकर उक्त दोनों पाण्डवों को बाण-वर्षा से छा दिया। उस समय यही देख पड़ता था कि दुर्योधन का धनुष मण्डलाकार घूम रहा है और उससे हज़ारों बाण निकल रहे हैं। दुर्योधन ने दम भर में सूर्य की किरणों के समान असंख्य बाणों से दिशाओं को व्याप्त कर दिया। इस प्रकार समरभूमि और आकाशमण्डल बाणों से परिपूर्ण हो जाने पर राजा दुर्योधन का रूप यमराज के समान दिखाई पड़ने लगा। महाराज, उस समय आपके पुत्र का अद्भुत पराक्रम देखकर सब महारथियों ने समझा कि नकुल और सहदेव अब मौत के मुँह में पहुँच गये।

राजन्, तब पाण्डवों के सेनापति महारथी धृष्टद्युम्न फुर्ती से राजा दुर्योधन का सामना करने पहुँचे। महारथी नकुल-सहदेव को पीछे करके वीर धृष्टद्युम्न आपके पुत्र को अपने
२० बाणों से पीड़ित करने लगे। असहनशील दुर्योधन ने भी हँसकर धृष्टद्युम्न को पहले पचीस और फिर पैंसठ तीक्ष्ण बाण मारे। फिर एक पैने क्षुरप्र बाण से धृष्टद्युम्न का बाणयुक्त धनुष बीच से काट डाला। इस तरह अंगुलित्राण सहित धृष्टद्युम्न का धनुष काटकर दुर्योधन ने सिंहनाद किया। अब शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न ने वह धनुष फेंककर नया सुदृढ़ धनुष हाथ में लिया। उस समय उनकी आँखों से ख़ून सा बरसने लगा और वे अग्नि के समान प्रज्वलित हो उठे। घायल महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्न उस समय बहुत ही शोभित हो रहे थे। उन्होंने दुर्योधन को मार डालने के विचार से, फुफकार रहे कुपित साँपों के समान, पन्द्रह नाराच बाण उनको मारे। वे कङ्कपत्रशोभित बाण राजा के सुवर्ण-शोभित कवच को तोड़कर उन्हें घायल करते हुए वेग से पृथ्वी में घुस गये। धृष्टद्युम्न के बाणों से राजा दुर्योधन कवचहीन, अत्यन्त घायल और व्यथित हो उठे। वे ख़ून से तर होकर वसन्त में फूले हुए ढाक के पेड़ के समान शोभायमान हुए। महावीर दुर्योधन ने क्रुद्ध होकर एक भल्ल बाण से धृष्टद्युम्न का धनुष काट
३० डाला और उनकी भौंहों के बीच में दस विकट बाण मारे। मधु के लोभी भौंरे जैसे फूले हुए कमल की शोभा बढ़ाते हैं, वैसे ही दुर्योधन के चलाये हुए सुतीक्ष्ण नाराच धृष्टद्युम्न के मुख को सुशोभित करने लगे। धृष्टद्युम्न ने वह कटा हुआ धनुष फेंक दिया और फ़ौरन् दूसरा धनुष तथा सोलह भल्ल बाण हाथ में लिये। उन्होंने पाँच बाणों से दुर्योधन के सारथी और घोड़ों को मारकर एक बाण से धनुष काट डाला और शेष दस बाणों से उनके सुसज्जित रथ, छत्र, शक्ति, गदा, खड्ग और ध्वजा के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। विचित्र मणिमय नागयुक्त सुवर्ण के अङ्गद

और कुरुपति की ध्वजा को छिन्न-भिन्न देखकर सब नरपतियों को बड़ा विस्मय हुआ। सब भाइयों ने देखा कि उनके भाई का रथ, कवच, शस्त्र, ध्वजा आदि सब कुछ नष्ट हो गया है। तब वे अपने भाई की रक्षा करने लगे। इसी बीच में धृष्टद्युम्न के सामने ही निडर दण्डधार दुर्योधन को, अपने रथ पर बिठाकर, उस स्थान से हटा ले गये।

अन्य और असहनशील कर्ण सात्यकि से युद्ध कर रहे थे। धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित राजा दुर्योधन की रक्षा करने के लिए वे सात्यकि को छोड़कर उग्र बाणोंवाले, द्रोणाचार्य के मारनेवाले, धृष्टद्युम्न के सामने पहुँचे। जैसे कोई हाथी अपने प्रतिद्वन्द्वी हाथी की जाँघों में दाँतों की चोट करे वैसे ही कर्ण के प्रहारों से घायल सात्यकि भी बाण-वर्षा करते हुए कर्ण का पीछा करते चले। दुर्योधन सहित सब राजा लोग कुपित होकर उस समय महायुद्ध करने लगे। कर्ण और धृष्टद्युम्न भी भिड़ गये। पाण्डवों के और हमारे पक्ष का कोई भी वीर युद्ध से अलग नहीं हुआ। कर्ण फुर्ती के साथ पाञ्चालों की सेना में जा घुसे। उस समय दोपहरी थी। दोनों ओर असंख्य हाथी, घोड़े, रथ और मनुष्य नष्ट होने लगे। महाराज, विजय चाहनेवाले पाञ्चालगण शीघ्रतापूर्वक चारों ओर से कर्ण पर आक्रमण करने के लिए वैसे ही दौड़ पड़े जैसे सायङ्काल में पक्षियों के झुण्ड अपने निवासस्थान, किसी बड़े वृक्ष, की ओर बसेरा करने को जाते हैं। क्रुद्ध कर्ण भी आगे बढ़कर पाञ्चाल-सेना के प्रधान-प्रधान योद्धाओं को मारने लगे। तब व्याघ्रकेतु, सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, शुक्र, दुर्जय, रोचमान और सिंहसेन, इन आठ वीरों ने बहुत से रथों के साथ कर्ण को घेर लिया। इन आठों पाञ्चाल वीरों को महाबाहु कर्ण ने आठ ही तीक्ष्ण बाणों से मार गिराया। प्रतापी कर्ण ने फिर युद्ध में निपुण कई हज़ार योद्धाओं को मारकर गिरा दिया। अब उन्होंने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापि, भद्र, दण्ड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंहकेतु, रोचमान; महारथी शलभ तथा चेदि देश के अन्य अनेक महारथियों को कुपित होकर मार डाला। इन वीरों को मार रहे, खून से तर, कर्ण दूसरे रुद्र के समान भयानक देख पड़ते थे। महाराज, युद्धभूमि में कर्ण के बाणों की चोट खाये हुए बड़े-बड़े हाथी डर-कर चिल्लाते हुए भागे, जिससे समरभूमि में भारी हलचल मच गई। कर्ण के बाणों से घायल होकर गजराज, वज्र से फटे हुए पहाड़ों की तरह, शब्द करते हुए पृथ्वी पर गिरने लगे। चारों ओर गिर रहे हाथियों, घोड़ों, मनुष्यों और टूटे हुए रथों से रण-भूमि व्याप्त हो गई।

४०

५०

उस समय कर्ण ने जैसा अद्भुत काम किया वैसा भीष्म, द्रोण, या आपके पक्ष का कोई योद्धा नहीं कर पाया। मृगों में जैसे निर्भय सिंह विचरता है वैसे ही वीर कर्ण पाञ्चाल-सेना में, उसका नाश करते हुए, विचर रहे थे। कर्ण ने हाथियों, घोड़ों, रथों और मनुष्यों को बहुत बड़ी संख्या में मार गिराया। जैसे डरे हुए मृगों को सिंह चारों ओर भगाता है, वैसे ही वीर कर्ण भी पाञ्चालों के रथियों को भगाने लगे। सिंह के सामने पहुँचकर जैसे मृग नहीं जीते

बचते वैसे ही कर्ण के सामने आये हुए पाञ्चालगण जीते नहीं बच सके। आग के ऊपर गिर-कर जैसे पतिङ्गे जलते हैं वैसे ही कर्णरूप आग के पास जाकर सृञ्जयगण भस्म होने लगे। अकेले कर्ण ने चेदि, केकय और पाञ्चाल देश के योद्धाओं में घुसकर, अपना नाम सुनाकर, ६० बहुत से शूरों को मार गिराया। महाराज, कर्ण का पराक्रम देखकर मुझे जान पड़ा कि वे पाञ्चाल देश के एक भी योद्धा को युद्ध में जीता नहीं छोड़ेंगे।

युद्ध में कर्ण के हाथों इस तरह असंख्य पाञ्चालों का नाश होते देख राजा युधिष्ठिर कुपित होकर इसी समय उनकी ओर वेग से चले। तब महावीर धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सहदेव, नकुल, जनमेजय, सात्यकि, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और प्रभद्रकगण तथा अन्यान्य बहुत से पाण्डव-पक्ष के वीर योद्धा आगे बढ़े और चारों ओर से कर्ण को घेरकर उन पर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। गरुड़ जैसे साँपों पर आक्रमण करे वैसे ही अकेले कर्ण ने सम्पूर्ण चेदि, पाञ्चाल और पाण्डव आदि पर आक्रमण किया। तब कर्ण के साथ वे लोग देवासुर-संग्राम के समान घोर युद्ध करने लगे। सूर्य जैसे अन्धकार को नष्ट करते हैं वैसे ही अकेले कर्ण, तनिक भी विचलित न होकर, एकत्र होकर बाण बरसा रहे उन धनुर्द्धर वीरों को मारने, भगाने और परास्त करने लगे।

हे राजेन्द्र! इधर कर्ण पाण्डवों से युद्ध कर रहे थे, उधर भीमसेन भी यमदण्डतुल्य भीषण बाणों से चारों ओर कौरव-सेना का नाश करने लगे। महाधनुर्द्धर भीमसेन अकेले ही असंख्य बाह्लीक, केकय, मत्स्य, वसाति, मद्रक और सिन्धु देश के योद्धाओं के ७० साथ युद्ध करने लगे। जिनके सवार मारे जा चुके हैं ऐसे बड़े-बड़े हाथी मर्मस्थलों में भीमसेन के बाण लगने से मर-मरकर, अधमरे होकर, पृथ्वी पर गिरने लगे। उनके गिरने से पृथ्वी काँप उठती थी। जिनके सवार मारे जा चुके हैं ऐसे घोड़े और अनेक पैदल सिपाही, भीमसेन के बाणों से शरीर छिन्न-भिन्न होने पर मरकर, मुँह से ख़ून उगलते हुए, समर-शय्या पर सोने लगे। हज़ारों रथी योद्धा, भीमसेन के डर से, विह्वल हो उठे। उनके हाथों से शस्त्र गिर पड़े; भीमसेन

के बाणों की चोट से मर-मरकर वे धरती पर गिरने लगे। उस समय भीमसेन के बाणों से जिनके शरीर छिन्न-छिन्न हो गये हैं ऐसे असंख्य घुड़सवारों, हाथियों और हाथियों के सवारों, सारथियों, रथियों, घोड़ों और पैदलों की लाशों से समर-भूमि पट गई। भीमसेन के डर से दुर्योधन के सैनिक विह्वल, निष्प्रभ, निरुत्साह, दीन और निश्चेष्ट होकर जहाँ के तहाँ खड़े थे और शरद् ऋतु में निश्चल महासागर के समान सारी सेना जान पड़ती थी। राजन्, दोनों पक्ष के योद्धा परस्पर एक दूसरे के प्राण ले रहे थे। यद्यपि वे रक्त से भीग रहे थे; उनके चारों ओर रक्त ही रक्त देख पड़ता था तो भी वे परस्पर मारते-मरते हुए एक दूसरे पर आक्रमण करने को चले ही जा रहे थे। इस तरह एक ओर कुपित कर्ण पाण्डव-सेना को और दूसरी ओर भीमसेन कौरव- ८० सेना को मारते और भगाते हुए अपूर्व शोभा को प्राप्त हो रहे थे।

त्रिगर्तदेशीय संशप्तक-सेना का संहार करके विजयी अर्जुन ने कहा—हे जनार्दन, मुझसे युद्ध करनेवाली यह संशप्तक-सेना मेरे प्रहारों से पीड़ित होकर छिन्न-भिन्न हो गई है। संशप्तक-सेना के ये महारथी मेरे बाणों को नहीं सह सकते और सिंह के गर्जन को न सह सकनेवाले मृगों की तरह अपने साथियों समेत भाग रहे हैं। उधर महारण में सृञ्जयसेना भी कर्ण के बाणों से पीड़ित और ध्वस्त-व्यस्त हो रही है। वह देखो, बुद्धिमान् महारथी कर्ण राजसेना के बीच सबका नाश करते हुए विचर रहे हैं; क्योंकि उनके रथ की हस्तिकक्ष्या-चिह्नित ध्वजा फह-राती देख पड़ती है। ये सब महारथी मिलकर भी कर्ण को नहीं जीत सकते। आप तो कर्ण के पराक्रम को अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप त्रिगर्त-सेना को छोड़-कर वहीं पर मेरा रथ ले चलें, जहाँ महारथी कर्ण हमारी सेना को मारकर भगा रहे हैं। हे कृष्णचन्द्र! मुझे तो यही पसन्द है, आगे आप जैसा ठीक समझें वैसा करें। महाराज, तब श्रीकृष्ण ने हँसकर कहा—ठीक है अर्जुन, तुम शीघ्र कौरव-सेना में चलो।

हे भरत-कुल-श्रेष्ठ, श्रीकृष्ण के द्वारा सञ्चालित अर्जुन के रथ के सफ़ेद घोड़े वेग से अर्जुन को लेकर कौरव-सेना के भीतर घुसे। उन सोने के गहनों से सजे, वेगशाली और श्रीकृष्ण के हाँके घोड़ों के प्रवेश करते ही कौरवों की सेना तितर-बितर होने लगी। अर्जुन का वह कपि- ९० चिह्नित ध्वजा से युक्त रथ मेघ-गर्जन-तुल्य त्रासजनक शब्द करता हुआ, आकाश में विमान की तरह, कौरव-सेना के बीच जाने लगा। उसमें अनेक पताकाएँ हवा के वेग से फहरा रही थीं। कुपित और लाल नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण तथा अर्जुन उस महासेना को चीरते हुए घुस पड़े। यज्ञ करानेवाले ब्राह्मण जब अश्विनीकुमारों को विधिपूर्वक बुलाते हैं तब वे जैसे यज्ञस्थल में आ जाते हैं, वैसे ही युद्ध-निपुण श्रीकृष्ण और अर्जुन भी बुलाये जाने से समर-यज्ञ में आ गये। महावन में तलशब्द से क्रुद्ध हुए दो मस्त हाथियों के समान वे नरश्रेष्ठ कुपित हो उठे। रथों और घोड़ों की सेना को मथकर महावीर अर्जुन, पाशपाणि मृत्यु के समान, आपकी सेना में विचरने लगे।

हे भारत, उस समय अर्जुन को कौरव-सेना के भीतर पराक्रम प्रकट करते देखकर दुर्योधन ने फिर संशप्तकों को उन पर आक्रमण करने के लिए उकसाया।

राजन्, तब संशप्तक-सेना के महारथी लोग एक हज़ार रथ, तीन सौ हाथी, चौदह हज़ार घोड़े और दो लाख प्रसिद्ध लक्ष्यवेधी शूर धनुर्द्धर पैदल साथ लेकर चारों ओर से बाण-वर्षा करके अर्जुन को समाच्छन्न करते हुए उनके समीप आये। संशप्तकों के बाणों से छिपे जा रहे अर्जुन ने पाशपाणि अन्तक के समान अत्यन्त भयानक उग्र रूप धारण किया। संश-
१०१ प्तकगण का संहार करते समय अर्जुन का रूप दर्शनीय हो उठा। उन्होंने दम भर में बिजली के समान चमकीले सुवर्ण-भूषित बाणों से आकाश को ऐसा परिपूर्ण कर दिया कि तनिक सा भी स्थान ख़ाली नहीं रहा। वे बाण आकाश भर में असंख्य साँपों के समान जान पड़ते थे। अर्जुन सभी ओर सुवर्णपुङ्ख, घोर, सन्नतपर्वयुक्त बाण छोड़ रहे थे। उनके तलशब्द से पृथ्वी, आकाश, सब दिशाएँ, समुद्र और पर्वत फटते से जान पड़ने लगे।

महारथी अर्जुन दस हज़ार राजाओं को मारकर फुर्ती के साथ संशप्तकों के प्रपक्ष की ओर चले। प्रपक्ष की रक्षा काम्बोजगण कर रहे थे। दानवों को जैसे इन्द्र नष्ट करें वैसे ही अर्जुन भल्ल बाणों से शत्रुसेना को चौपट करने लगे। मारने को आ रहे शत्रुओं के शस्त्रों, हाथों और मस्तकों को अर्जुन भल्ल बाणों से काट-काटकर गिराने लगे। शत्रुओं के अङ्ग-प्रत्यङ्ग और शस्त्र कट-कटकर ऐसे गिरने लगे, जैसे घोर आँधी से टूटी डालियोंवाले वृक्ष गिर पड़ें। हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों को नष्ट कर रहे अर्जुन के ऊपर सुदक्षिण (काम्बोज) का
१० छोटा भाई बाण बरसाने लगा। अर्जुन ने दो अर्धचन्द्र बाणों से उसके परिघ-तुल्य दोनों हाथों को काटकर पूर्णचन्द्र के समान मुखवाला उसका सिर भी क्षुर बाण से काट डाला। अब सुदक्षिण का छोटा भाई ख़ून से तर होकर, वज्रप्रहार से फटे हुए मैनसिल के पहाड़ के शिखर की तरह, वाहन की पीठ पर से नीचे गिर पड़ा। लोगों ने देखा कि वह बड़े डील-डौल का कमलनयन, प्रियदर्शन, सुदक्षिण का छोटा भाई, सोने के खम्भे की तरह, फटे हुए सुमेरु पर्वत के शिखर की तरह, गिर पड़ा।

महाराज, इसके बाद फिर घोर युद्ध होने लगा। उस समय संग्राम करनेवालों की अनेक प्रकार की दशाएँ होने लगीं। काम्बोज, यवन और शक देश के घुड़सवार अर्जुन के बाणों से विदीर्ण और ख़ून से तर हो गये, जिससे सब रणभूमि रक्तमयी प्रतीत होने लगी। इसी समय घोड़ों और सारथी से हीन रथी, सवारों से हीन घोड़े, महावतों से ख़ाली हाथी और बिना हाथियों के महावत एक दूसरे का नाश करने लगे।

जिस समय अर्जुन क्रुद्ध होकर पक्ष-प्रपक्ष के वीरों का नाश कर रहे थे उस समय महारथी अश्वत्थामा सुवर्ण-भूषित धनुष और सूर्य-किरण-सदृश तीक्ष्ण बाण लिये हुए अर्जुन के सामने

आये। क्रोध से मुख फैलाकर लाल-लाल आँखें निकाले दौड़ रहे दण्डपाणि यम के समान उग्र रूप धारण किये हुए अश्वत्थामा युद्ध करने लगे। उनके चलाये हुए बाण चारों ओर फैलने लगे और उनसे रथ पर स्थित श्रीकृष्ण और अर्जुन भी ढक गये। प्रतापी अश्वत्थामा ने सैकड़ों तीक्ष्ण बाण मारकर श्रीकृष्ण और अर्जुन को समर में अचेत सा कर दिया। यह देखकर सब चराचर प्राणी हाहांकार करने लगे। उस समय सिद्ध और चारणगण, चराचर की रक्षा करनेवाले, श्रीकृष्ण और अर्जुन को बाणों में छिपते और विह्वल होते देखकर यह सोचते हुए चारों ओर से आने लगे कि "आज किस तरह संसार का भला होगा"। महाराज, अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को बाण-वर्षा से ढककर जैसा पराक्रम दिखलाया वैसा पराक्रम मैंने पहले और किसी का नहीं देखा था। उस समय मुझे, सिंहनाद के समान शत्रुओं के लिए भयानक, अश्वत्थामा की प्रत्यञ्चा का शब्द बारबार सुनाई पड़ने लगा। वे जब बाईं और दाहनी ओर बाण-जाल बरसाकर युद्धस्थल में विचरने लगे तब उनके धनुष की डोरी मेघ के भीतर चमक रही बिजली के समान शोभा को प्राप्त हुई। महाराज, उस समय उनका शरीर ऐसा दुर्निरीक्ष्य हो उठा कि यशस्वी अर्जुन अत्यन्त फुर्तीले और दृढ़हस्त होने पर भी अश्वत्थामा को देखकर मोहित हो गये; उन्हें अपना पराक्रम नष्ट सा प्रतीत होने लगा।

१२०

महाराज, महावीर अर्जुन और अश्वत्थामा के ऐसे भयानक संग्राम में अश्वत्थामा का बल अधिक और अर्जुन का पराक्रम न्यून देखकर श्रीकृष्ण अत्यन्त कुपित हो उठे। बारम्बार साँसें लेकर, मानों भस्म कर देंगे इस तरह, वे अश्वत्थामा और अर्जुन की ओर देखने लगे। अब उन्होंने प्रेमपूर्वक कहा—हे अर्जुन, आज मैं तुम्हारे बारे में यह बड़ा आश्चर्य देख रहा हूँ कि युद्ध में अश्वत्थामा तुमको दबाये लेते हैं। आज क्या तुम्हारा पराक्रम और बाहुबल घट गया है? तुम्हारे हाथ या रथ में क्या गाण्डीव धनुष नहीं है? तुम्हारी मुट्ठी क्या ढीली पड़ गई है? तुम्हारी भुजाओं में कोई चोट तो नहीं लगी है? आज जो मैं अश्वत्थामा को रण-

३०

स्थल में तुमसे अधिक पराक्रम दिखलाते देख रहा हूँ, इसका कारण क्या है? हे अर्जुन, इस समय अश्वत्थामा को गुरु-पुत्र समझकर टाल जाना सर्वथा अनुचित और हानिकर है।

हे राजेन्द्र, श्रीकृष्ण के यों कहने पर अर्जुन ने सावधान होकर जल्दी से चौदह भल्ल बाण तरकस से निकाले और उनसे अश्वत्थामा का धनुष, ध्वजा, छत्र, पताका, रथ, शक्ति, गदा १४० आदि काटकर उनके कन्धे में अनेक वत्सदन्त बाण मारे। उस प्रहार से मूर्च्छित होकर अश्वत्थामा ध्वजा का डण्डा पकड़कर टिक गये। उन्हें अर्जुन के बाणों से पीड़ित और अचेत देखकर, अर्जुन के कवल से उनको बचाने के लिए, सारथी उन्हें रणस्थल से हटा ले गया। उस अवसर में अर्जुन फिर, दुर्योधन के सामने ही, हज़ारों की संख्या में कौरव-सेना का नाश करने लगे। महाराज, यह आपकी कुमन्त्रणा का ही फल है कि इस तरह समर में कौरव मारे गये। इस प्रकार महावीर अर्जुन संशप्तकों को, भीमसेन कौरवों को और वीर कर्ण पाञ्चालों को विनष्ट करने लगे। सेनाओं के तीनों भागों में घोर युद्ध होने लगा। महाराज, वीर-विनाश-कारी युद्ध के समय रणभूमि में असंख्य कबन्ध उठने लगे। हे भरतश्रेष्ठ, उस समय धर्मराज युधिष्ठिर १४७ कर्ण के बाणों की वेदना से विह्वल होकर रणस्थल से कोस भर पर चले गये।

सत्तावनवाँ अध्याय

दुर्योधन का सेना को उत्साहित करना

सञ्जय कहते हैं कि हे राजेन्द्र, इसी समय राजा दुर्योधन कर्ण के पास आ गये। उन्होंने मद्रराज शल्य तथा अन्य महारथियों की ओर देखकर और विशेष रूप से कर्ण को सम्बोधन करके कहा—मित्र कर्ण, आपसे ही यह क्षत्रिय के लिए प्रार्थनीय, धर्मस्वरूप, अपने समान वीर्यशाली शत्रु के साथ युद्ध करने का अवसर मिला है। इस प्रकार का युद्ध क्षत्रियों के लिए सुखदायक होता है। यह युद्ध उपस्थित होने से शूरों के लिए स्वर्ग का द्वार अपने आप खुल गया है। इस समय पाण्डवों को युद्ध में मारकर या तो निष्कण्टक पृथ्वी का राज्य सदा करोगे, अथवा शत्रुओं के हाथ से मारे जाकर वीरों के योग्य उत्तम लोकों में पहुँचोगे और वहाँ सुख भोगोगे। दोनों तरह लाभ ही है।

महाराज, दुर्योधन के ये वचन सुनकर प्रधान-प्रधान क्षत्रिय योद्धा लोग ऊँचे स्वर से सिंहनाद करने और बाजे बजाने लगे। तब अश्वत्थामा आपके योद्धाओं को और भी अधिक आनन्दित करते हुए बोले—हे क्षत्रियो, सारी सेना के और तुम लोगों के सामने हथियार डाले हुए मेरे पूज्य पिता को धृष्टद्युम्न ने मार डाला है। मैं उसे सहन नहीं कर सकता। इसलिए पिता की हत्या का बदला लेने और मित्र दुर्योधन का हित करने को मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि धृष्टद्युम्न

को मारे बिना शरीर से कवच नहीं उतारूँगा। अगर मैं यह प्रतिज्ञा पूरी न कर सकूँ तो मुझे स्वर्ग न मिले। मैं निश्चित रूप से कहता हूँ कि अर्जुन, भीमसेन, या जो कोई धृष्टद्युम्न की रक्षा करने को मुझसे युद्ध करेगा उसे मैं अपने बाणों से विनष्ट करूँगा। १०

अश्वत्थामा के यों प्रतिज्ञा करने पर सारी कौरव-सेना एकत्र होकर पाण्डवों की ओर और पाण्डव-सेना कौरवों की ओर बढ़ने लगी। अब दोनों पक्ष के रथी-महारथी भिड़ गये और प्रलयकाल के समान प्रहार और जनसंहार शुरू हो गया। युद्ध में मार-काट शुरू होने पर आकाश में देवगण सहित सब प्राणी जमा हो गये। अप्सराएँ भी श्रेष्ठ वीरों को निहारती हुई जमा होने लगीं। प्रसन्नचित्त होकर रण में अद्भुत कर्म कर रहे श्रेष्ठ वीरों पर सुगन्धित फूल-माला-रत्न आदि बरसाकर, सुगन्ध फैलाकर, अप्सराएँ उन्हें उत्साहित करने लगीं। अनुकूल वायु श्रेष्ठ सुगन्ध लेकर चलने लगा और योद्धाओं को आमोदित करने लगा। सुगन्धित वायु लगने से आह्लादित होकर योद्धा लोग परस्पर लड़कर गिरने लगे। उस समय रणस्थल दिव्य माला, सुवर्ण-पुङ्ख-चित्रित बाणजाल और योद्धाओं की लोथों आदि से परिपूर्ण होकर नक्षत्र-माला से अलंकृत आकाशमण्डल के समान शोभायमान होने लगा। वीरों के धनुष और प्रत्यञ्चा के शब्द, रथों की घरघराहट और सिंहनाद से गूँज रहे रणस्थल को देवता गन्धर्व आदि आकाश-चारी लोगों के साधुवाद ने प्रतिध्वनित कर दिया। १७

अट्ठावनवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का अर्जुन को रणभूमि की दशा दिखलाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उस समय महावीर भीमसेन, अर्जुन और कर्ण के कुपित होने पर चारों ओर राजा लोग घोरतर युद्ध करने और मरने लगे। उधर अश्वत्थामा और अन्यान्य महारथियों को परास्त कर अमित-पराक्रमी अर्जुन महामति कृष्णचन्द्र से कहने लगे—हे महाबाहो, वह देखिए, पाण्डव-सेना चारों ओर भाग रही है। वीर कर्ण भी हमारे पक्ष के महारथियों को पीड़ित कर रहे हैं। इस समय मुझे न तो कहीं धर्मराज युधिष्ठिर देख पड़ते हैं, न उनके रथ की ध्वजा ही देख पड़ती है। दो हिस्से दिन बीत चुका है, केवल एक भाग बाकी है। विशेषकर इस समय कौरवपक्ष के वीरों में से कोई भी मुझसे युद्ध नहीं करता। इसलिए अब आप, मेरा प्रिय करने के लिए, मुझे युधिष्ठिर के समीप ले चलिए। मैं भाइयों सहित धर्मराज युधिष्ठिर को सकुशल देखकर फिर शत्रुओं से युद्ध करूँगा। राजन्, श्रीकृष्ण ने शीघ्रता के साथ युधिष्ठिर के पास पहुँचने के लिए रथ हाँक दिया।

उस समय राजा युधिष्ठिर, और महारथी सृञ्जयगण, मारने या मरने का दृढ़ निश्चय करके, कौरवों के साथ घोर युद्ध कर रहे थे। महात्मा श्रीकृष्ण उस युद्धभूमि में असंख्य वीरों का

विनाश देखकर अर्जुन से कहने लगे—हे अर्जुन ! वह देखो, दुर्योधन की दुष्ट नीति के कारण
१० पृथ्वी पर भरत-वंश का तथा अन्य अनेक राजाओं का कैसा दारुण संहार हो रहा है ! वह देखो,

मरे हुए धनुर्द्धर योद्धाओं के सोने से मढ़ो पीठवाले धनुष, बहुमूल्य तरकस, सुवर्ण-पुङ्ख-शोभित बाण, केंचुल छोड़े हुए साँपों के समान चमकीले नाराच बाण, हाथीदाँत की मूठ से शोभित खड्ग, स्वर्णजटित कवच, स्वर्णमय प्रास, सुवर्ण-भूषित शक्तियाँ, सुवर्ण-पत्रों से बँधी भारी गदाएँ, सुवर्णालंकृत ऋष्टियाँ, सुवर्ण-भूषित पट्टिश, स्वर्णदण्डयुक्त परशु, लोहे के कुन्त, भारी मूसल, विचित्र शतघ्नी, विपुल परिघ, चक्र, तोमर आदि असंख्य शस्त्र इधर-उधर पड़े हुए हैं। विजयाभिलाषी वीर यद्यपि हाथों में शस्त्र पकड़े मरे पड़े हैं तथापि जीवित से जान पड़ते हैं। वह देखो, हज़ारों योद्धा पड़े हैं, जिनके अङ्ग गदाओं की चोट से चूर्ण हो गये हैं और मूसलों के प्रहार से मस्तक फट गये हैं। हाथी घोड़े रथ आदि ने ऊपर से जाकर उन्हें कुचल डाला है। हे शत्रुदमन ! बाण, शक्ति, ऋष्टि, पट्टिश, घोरतर लोह-निर्मित परिघ, कुन्त, परशु और घोड़ों की टापों से छिन्न-भिन्न तथा खून
२० से लथपथ मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीरों से समरभूमि व्याप्त हो रहो है। वह देखो, वीरों के सुवर्णालंकृत केयूर-शोभित तलत्र-युक्त चन्दन-चर्चित कटे हुए हाथ, अंगुलित्रयुक्त अँगूठी आदि से शोभित हथेलियाँ और उँगलियाँ, हाथियों की सूँड़ के समान जाँघें, अतिउत्तम चूड़ामणि और कुण्डलों से अलंकृत मस्तक जहाँ-तहाँ पड़े हुए रणस्थल को शोभित कर रहे हैं। जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग कट-फट गये हैं ऐसे, खून से तर, अनेक कबन्ध चारों ओर उठने से यह रणभूमि शान्ताग्नि-शोभित यज्ञस्थली के समान प्रतीत हो रही है। वह देखो, स्वर्ण-किङ्किणी-जालमण्डित असंख्य श्रेष्ठ रथ इधर-उधर अनेक जगह से टूटे-फूटे पड़े हैं। बाणों की चोट खाये, खून से तर, घोड़े मरे पड़े हैं। उनकी आँतें निकल आई हैं। वह देखो, अनुकर्ष, उपासङ्ग, विविध ध्वजा-पताका, तरकस, महारथियों के महाशङ्ख और सफ़ेद चामर आदि सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा है। वे पर्वताकार बड़े-बड़े हाथी मरे पड़े हैं; उनकी जीभें बाहर निकल आई हैं।

महाराज, महात्मा श्रीकृष्ण अर्जुन से यों कहते हुये युधिष्ठिर की ओर जाने लगे। पृ० २८७७

विचित्र वैजयन्ती, मारे गये हाथी-घोड़े, हाथियों के हौदे, विचित्र कम्बल, फटे हुए विचित्र सुवर्ण-रत्न-मण्डित आसन, टूटकर गिरे हुए और हाथियों के पैरों-तले आ जाने से चूर्ण हुए बड़े-बड़े घण्टे तथा वैदूर्य-मणि की मूठवाले अंकुश आदि इधर-उधर बेशुमार पड़े हैं। घुड़सवारों के हाथ के जड़ाऊ कोड़े, विचित्र मणि-मण्डित सुवर्ण-शोभित घोड़ों की काठियाँ, ज़ीनें और रंकुचर्म के मुलायम आसन आदि इधर-उधर नज़र आते हैं। राजाओं की चूड़ामणियाँ, विचित्र सुवर्ण की मालाएँ, छत्र, चामर, व्यजन आदि बिखरे पड़े हैं। वह देखो, सुन्दर कुण्डल-युक्त, चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान कान्तियुक्त और श्मश्रु-शोभित वीरों के अलङ्कृत सिर कटे पड़े हैं। देखो, चारों ओर रक्त की कीच ही नज़र आती है। वह देखो, चारों ओर असंख्य अधमरे आदमी पड़े कराह रहे हैं और उनके इष्ट-मित्र, अस्त्र-शस्त्र रखकर, बारम्बार आँसू बहाते रोते और उनकी सेवा करते हैं। बहुत से विजयाभिलाषी क्रुद्ध योद्धा, मरे हुए या अधमरे वीरों को बाणों से ढककर, अन्य वीरों से युद्ध करने के लिए तेज़ी से जा रहे हैं। बहुत से योद्धा युद्ध के लिए दौड़े जाते हैं; किन्तु अपने सजातीय इष्ट-मित्रों को घायल अचेत देखकर लौट पड़ते हैं। कुछ घायल व्यक्ति पानी माँग रहे हैं और उनके भाई-बन्धु पानी लेने दौड़े जा रहे हैं। कुछ योद्धा जल ले आये तो जलप्रार्थी मरकर अचेत पड़ा मिला। यह देखकर वे वहीं जल फेंककर, खेद करते हुए, फिर युद्ध के लिए जा रहे हैं। देखो, कुछ तो जल पी रहे हैं और कुछ जल पीते ही मरकर गिर पड़े हैं। देखो, कुछ बन्धुवत्सल योद्धा लोग अपने प्रिय मित्रों को अचेत देख उनसे लिपटकर रो रहे हैं। कुछ योद्धा यद्यपि घायल होकर गिर पड़े हैं, तथापि दाँतों से ओठ चबाते हुए भौंहें टेढ़ी किये महारण को देख रहे हैं। ३० ४१

महाराज, महात्मा श्रीकृष्ण अर्जुन से यों कहते हुए युधिष्ठिर की ओर जाने लगे। अर्जुन भी धर्मराज को देखने के लिए अत्यन्त उत्सुक होने के कारण श्रीकृष्ण से बारम्बार तेज़ी से रथ हाँकने के लिए कहने लगे। तब श्रीकृष्ण जल्दी घोड़ों को हाँकते हुए फिर अर्जुन को समर-भूमि दिखाकर धीरे से कहने लगे—वह देखो, कौरवपक्ष के राजा लोग युधिष्ठिर की ओर वेग से जा रहे हैं। महावीर कर्ण भी युद्धस्थल में प्रज्वलित आग के समान प्रचण्ड हो रहे हैं। महाधनुर्द्धर भीमसेन युद्धभूमि में वेग से हमला कर रहे हैं। वह देखो, पाञ्चालों, सृञ्जयों और पाण्डवों के अग्रवर्ती योद्धा धृष्टद्युम्न आदि वीर उनके पीछे जा रहे हैं। देखो, पाण्डव-सेना घोर युद्ध करके कौरव-सेना को पीड़ित कर रही है और कौरव-सेना व्याकुल तथा विह्वल होकर भाग रही है। महावीर कर्ण रण से भागी हुई कौरव-सेना को रोकने का यत्न कर रहे हैं। वह देखो, इन्द्र के समान पराक्रमी और शस्त्रधारी वीर पुरुषों के मुखिया अश्वत्थामा, यम के समान रूप धारण करके, युद्ध करने जा रहे हैं। उनको रोकने के लिए महारथी धृष्टद्युम्न वेग से जा रहे हैं। वह देखो, सृञ्जयगण संग्राम में मारे जा रहे हैं।

महाराज, इस तरह श्रीकृष्ण ने अर्जुन को संग्रामभूमि का सब हाल सुना दिया। उधर महाघोर युद्ध फिर छिड़ गया। दोनों पक्ष के सैनिक, जीवन का मोह छोड़कर, सिंहनाद करते हुए युद्ध करने लगे। हे नरनाथ, आपकी कुमन्त्रणा से ही उस समय दोनों पक्ष के वीर योद्धा मारे जाने लगे। ५२

उनसठवाँ अध्याय

संकुल युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज, महावीर कर्ण आदि कौरव और युधिष्ठिर प्रमुख पाण्डव निडर होकर फिर युद्ध के लिए परस्पर भिड़ गये। उस समय कर्ण और पाण्डवगण परस्पर, यमराज्य को बढ़ानेवाला, लोमहर्षण संग्राम करने लगे। उस घोरतर युद्ध में रक्त के प्रवाह बह चले और महाशूर संशप्तकगण भी मरते-मरते बहुत थोड़े बच रहे। महावीर धृष्टद्युम्न, पाण्डव-गण और अन्यान्य महारथी राजा लोग मिलकर कर्ण पर आक्रमण करने को चले। महावीर कर्ण ने उन जय पाने की इच्छा रखनेवाले वीरों को उत्साह और हर्ष के साथ आते देखकर, पर्वत जैसे प्रबल जल-प्रवाह को रोक लेता है वैसे ही, उनकी गति रोक दी। जल-प्रवाह जैसे पहाड़ से टकराकर चारों ओर बिखर जाता है वैसे ही वे महारथी कर्ण तक पहुँचकर पीछे हटने लगे। हे भरतश्रेष्ठ, वीरगण जी खोलकर युद्ध करने लगे। महावीर धृष्टद्युम्न कुपित होकर कर्ण को एक आनतपर्व विकट बाण मारकर "ठहर तो जा, खड़ा तो रह" कहकर तर्जन-गर्जन करने लगे। महारथी कर्ण ने भी क्रुद्ध होकर, अपना विजय नामक धनुष चढ़ाकर, धृष्टद्युम्न के विषैले साँप-सदृश बाणों और धनुष को काट डाला और फिर उनको नव पैने बाण मारे। कर्ण के धनुष से छूटे हुए वे बाण धृष्टद्युम्न का सुनहरा कवच काटकर, शरीर में घुसकर, खून से तर होकर बीरबहूटियों के समान शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने वह कटा हुआ धनुष फेंककर और एक धनुष हाथ में लिया और पैने सत्तर बाणों से कर्ण को घायल करके अपनी फुर्ती दिखलाई। शत्रुदलन कर्ण भी क्रुद्ध होकर विषैले साँप-सदृश बाणों से धृष्टद्युम्न को पीड़ित करने लगे। उधर से धृष्टद्युम्न तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को घायल करने लगे। तब उन्होंने क्रोध करके एक सुवर्ण-भूषित, यमदण्ड के समान उग्र, बाण धृष्टद्युम्न के ऊपर छोड़ा। उस समय महावीर सात्यकि ने कर्ण के छोड़े हुए उस भयानक बाण को, धृष्टद्युम्न के सामने आते देखकर, फुर्ती के साथ कई बाण मारकर मार्ग में ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। यह देख-कर कर्ण के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने सात्यकि को बाणों से पीड़ित करके उनको सात नाराच बाण मारे। महावीर सात्यकि भी सुवर्ण-भूषित बाणों से कर्ण को घायल करने १०

लगे। महाराज, इस तरह वे दोनों वीर देखने और सुननेवालों के मन में डर पैदा करनेवाला महाघोर विचित्र युद्ध करने लगे। महारथी कर्ण और सात्यकि का वह अद्भुत युद्ध और रण-कौशल देखकर सबके रोंगटे खड़े हो गये।

राजन्, इसी अवसर में शत्रुओं को परास्त करनेवाले अश्वत्थामा शत्रुशमन धृष्टद्युम्न के निकट जाकर अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहने लगे—अरे ब्राह्मण की हत्या करनेवाले क्षत्रियाधम, ज़रा मेरे सामने खड़ा तो रह। आज तू मेरे हाथ से जीता नहीं बच सकता। हे नरनाथ, इस तरह बारम्बार कह रहे अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ महाघोर तीक्ष्ण बाणों से धृष्टद्युम्न को छा दिया। पहले समर में द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्न को देखकर अपनी मृत्यु समझकर जैसे उदास हो गये थे, वैसे ही अश्वत्थामा इस समय धृष्टद्युम्न को अपने लिए मृत्युस्वरूप जान पड़े। वे भी, यह सोचकर कि मुझे कोई शस्त्र से नहीं मार सकता, वेग से प्रलय के समय काल की तरह अश्वत्थामा की ओर चले। अश्वत्थामा भी धृष्टद्युम्न को सामने पाकर क्रोध से बारम्बार साँसें लेते हुए उनकी ओर वेग से दौड़े। [बड़े-बड़े धनुष हाथ में लिये हुए] वे दोनों वीर एक दूसरे को देखकर ही क्रोध से विह्वल हो गये थे। तब महाप्रतापी अश्वत्थामा ने निकटवर्ती धृष्टद्युम्न को सम्बोधन करके कहा—हे अधम पाञ्चाल, आज मैं तुझे जीता न छोड़ूँगा। तूने रण में मेरे पिता को मारकर जो पाप किया है उसका फल आज तुझे मिलेगा। अगर अर्जुन तेरी रक्षा न करेंगे, अथवा तू घबराकर मेरे सामने से भाग न जायगा तो मैं सच कहता हूँ, तुझे मारे बिना न छोड़ूँगा। २०

हे राजेन्द्र, यह सुनकर प्रतापी धृष्टद्युम्न ने उत्तर दिया—हे द्रोणपुत्र, युद्ध में यत्न कर रहे तेरे रण-प्रिय पिता को जिसने उत्तर दिया है और उनका सिर काटा है वह यह मेरा खड्ग ही तेरी इन बातों का उत्तर देगा। मैंने तेरे ब्राह्मणाधम पिता को मारा है और इस समय युद्ध में तुझ पापरूप को भी मैं पराक्रम-पूर्वक मारूँगा। महाराज, क्रोधान्ध धृष्टद्युम्न ने यों कहकर अश्वत्थामा को एक तीक्ष्ण बाण मारा। तब अश्वत्थामा भी अत्यन्त कुपित होकर धृष्टद्युम्न के चारों ओर

तीक्ष्ण बाण बरसाकर उन्हें पीड़ित करने लगे। उस समय अश्वत्थामा के असंख्य बाणों से सब दिशाएँ, आकाश-मण्डल और योद्धा लोग अदृश्य हो गये। महावीर धृष्टद्युम्न भी, कर्ण के सामने ही, समर की शोभा बढ़ानेवाले अश्वत्थामा को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। कर्ण अकेले ही पाण्डवों, पाञ्चालों, द्रौपदी के पाँचों पुत्रों, युधामन्यु, उत्तमौजा, सात्यकि और अन्य हज़ारों योद्धा आदि को चारों ओर बाण बरसाकर विमुख करने लगे। इसी बीच में धृष्टद्युम्न ने सब योद्धाओं के सामने ही एक तीक्ष्ण बाण से अश्वत्थामा का धनुष काट डाला। तब अश्वत्थामा ने दूसरा धनुष हाथ में लिया और कई विषैले साँप-सदृश बाण लेकर उनसे दम भर में धृष्टद्युम्न के धनुष, शक्ति, गदा, ध्वजा, रथ आदि के टुकड़े-टुकड़े करके सारथी और घोड़ों को मार ४० डाला। इस तरह घोड़े, रथ, सारथी, धनुष आदि के न रहने पर वीर धृष्टद्युम्न तीक्ष्ण ढाल-तलवार लेकर रथ से उतरने लगे। वे रथ से उतरने भी नहीं पाये कि अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ भल्ल बाणों से शतचन्द्रयुक्त प्रकाशमान खड्ग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। महाबाहु धृष्टद्युम्न को इस तरह अश्वत्थामा की फुर्ती से निःशस्त्र होते देखकर सबको बड़ा अचरज हुआ।

महाराज! धृष्टद्युम्न का रथ टूट गया, सारथी नहीं रहा, घोड़े मर गये, धनुष और खड्ग आदि शस्त्र भी नहीं रहे, शस्त्रों और अस्त्रों से उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग सब छिन्न-भिन्न हो गये; किन्तु महारथी अश्वत्थामा घोर यत्न करके भी उन्हें बाण से नहीं मार सके। अश्वत्थामा जब किसी तरह बाणों से अपने शत्रु धृष्टद्युम्न का वध नहीं कर सके तब वे, रथ से उतरकर, धनुष रखकर, बड़ा खड्ग हाथ में लेकर वेग से दौड़े। उस समय वे नागराज पर झपट रहे गरुड़ के समान शोभा को प्राप्त हुए। यह देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! देखो-देखो, धृष्टद्युम्न को मार डालने के लिए अश्वत्थामा घोर यत्न कर रहे हैं और ये निःसन्देह धृष्टद्युम्न को मार डालेंगे। इसलिए मृत्यु के मुख में पड़े हुए के समान अश्वत्थामा के चङ्गुल में फँसे हुए धृष्टद्युम्न को शीघ्र बचाओ। राजन्, महात्मा श्रीकृष्ण ने अब तेज़ी के साथ घोड़ों को उसी ओर हाँक दिया जहाँ अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न

पर झपट रहे थे। वे चन्द्रमा के समान सफ़ेद घोड़े श्रीकृष्ण का इशारा पाते ही, मानों आकाश को पी लेंगे इस तरह, अश्वत्थामा के रथ की ओर दौड़ चले। ५०

अमित-पराक्रमी अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को आते देखकर धृष्टद्युम्न को मारने के लिए और भी शीघ्रता से घोर प्रयत्न किया। अर्जुन ने देखा कि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न को पकड़कर खींच रहे हैं। तब उन्होंने महारथी अश्वत्थामा के ऊपर अनेक तीक्ष्ण बाण छोड़े। अर्जुन के गाण्डीव धनुष से निकले हुए वे विकट बाण, बिल में साँप की तरह, अश्वत्थामा के शरीर में वेग से प्रवेश करने लगे। अर्जुन के उन बाणों से प्रतापी अश्वत्थामा अत्यन्त घायल और विह्वल हो उठे। तब वे धृष्टद्युम्न को छोड़कर अपने रथ पर चले गये और धनुष लेकर अर्जुन को बाण मारने लगे। इसी अवसर में वीर सहदेव शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न को अपने रथ पर बिठाकर युद्धस्थल से हटा ले गये।

उधर अर्जुन भी बाणों से अश्वत्थामा को पीड़ित करने लगे। तब अश्वत्थामा ने क्रोध से अधीर होकर उनकी छाती और हाथों में बाण मारना शुरू किया। इसी समय अर्जुन ने अश्वत्थामा को ताककर, क्रुद्ध होकर, दूसरे कालदण्ड के समान एक उग्र नाराच बाण छोड़ा। अर्जुन का वह नाराच महातेजस्वी ब्राह्मण के कन्धे में जाकर लगा। उस प्रहार से महारथी अश्वत्थामा विह्वल होकर रथ पर बैठ गये। उन्हें मूर्च्छा आ गई। यह देखकर उनका सारथी फ़ौरन् उन्हें रणभूमि से हटा ले गया। इसी समय महावीर कर्ण क्रोध से विह्वल होकर अपना विजय नामक धनुष खींचने और बारम्बार अर्जुन को देखकर उनसे द्वैरथ युद्ध करने की इच्छा प्रकट करने लगे। उधर अश्वत्थामा को पीड़ित और धृष्टद्युम्न को प्राण-सङ्कट से मुक्त देखकर विजयी पाञ्चालगण चिल्लाकर आनन्द प्रकट करने लगे। पाण्डवसेना में सिंहनाद होने लगा और हज़ारों बढ़िया बाजे बजने लगे। इस तरह यह अद्भुत युद्ध हुआ। हे राजेन्द्र, इधर अर्जुन कर्ण की चेष्टाओं पर ध्यान न देकर श्रीकृष्ण से कहने लगे—हे मित्र, अब आप संशप्तकों की सेना में मेरा रथ ले चलिए। उनका नाश करना ही मेरा सबसे प्रधान काम है। अर्जुन के वचन सुनकर महात्मा श्रीकृष्ण, उच्च ध्वजा से शोभित और मन तथा हवा के समान वेग से चलने-वाला, रथ लेकर संशप्तक-सेना की ओर चले। ६० ६७

साठवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का अर्जुन से यह कहना कि कौरवगण धर्मराज को पकड़ने का उद्योग कर रहे हैं

सञ्जय कहते हैं कि हे नरेन्द्र, महात्मा श्रीकृष्ण इसी समय कहने लगे—हे अर्जुन! वह देखो, कौरवपक्ष के महाबली धनुर्द्धर मिलकर, मार डालने के लिए, तुम्हारे भाई धर्मराज का पीछा कर रहे हैं। रणदुर्मद बड़े पराक्रमी पाञ्चालगण [चेदि और मत्स्य देश के वीरगण] युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिए उनके पीछे वेग से जा रहे हैं। हाथी, घोड़े, रथ और पैदल ये धर्मराज

को पकड़ने के लिए वैसे ही उनके पीछे जा रहे हैं, जैसे धन-लाभ की इच्छा रखनेवाले लोग किसी राजा के पास जाते हैं। अमृत-हरण की चेष्टा कर रहे दानवों को जैसे अग्नि और इन्द्र ने रोका था वैसे ही पराक्रमी भीमसेन और सात्यकि, युधिष्ठिर के पीछे जा रही, कौरवसेना को रोक रहे हैं। किन्तु उधर महारथियों की संख्या अधिक होने के कारण कौरवसेना उन दोनों वीरों को लाँघकर, वर्षाऋतु में समुद्रगामी जल-प्रवाह के समान, आगे बढ़ी जा रही है। वह देखो, सारी पृथ्वी का राजा कवचधारी दुर्योधन रथ-सेना लेकर युधिष्ठिर का पीछा कर रहा है। उसके साथ महाधनुर्द्धर, बली, सब शस्त्रों के युद्ध में निपुण, विषैले नागतुल्य, उसके भाई भी सिंहनाद करते, शङ्ख बजाते और धनुषों के शब्द करते जा रहे हैं। इस समय युधिष्ठिर दुर्योधन के वश में आ गये हैं, इसलिए उन्हें मैं मृत्यु के मुख में पहुँचा हुआ या अग्नि में गिरा हुआ समझता १० हूँ। दुर्योधन की सेना इस समय ऐसी सुसज्जित है कि इन्द्र भी उससे अपनी रक्षा नहीं कर सकते। हे धनञ्जय, फुर्ती के साथ लगातार बाण बरसा रहे कुपित यमतुल्य तेजस्वी वीर महारथी दुर्योधन के वेग को रण में कौन व्यक्ति सँभाल सकता है? महाबली दुर्योधन, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कर्ण ऐसे योद्धा हैं कि अपने बाणों से पर्वतों को भी फोड़ सकते हैं। हे अर्जुन, कर्ण ने रण-निपुण युधिष्ठिर को विमुख कर दिया है। महाबली धृतराष्ट्र-पुत्रों के साथ वीर कर्ण अवश्य ही रण में युधिष्ठिर को पीड़ित कर सकता है। इन सबके साथ जिस समय राजा युधिष्ठिर युद्ध कर रहे थे उस समय कर्ण और अन्य महारथियों ने प्रहार करके उन्हें पीड़ित किया था। भरतश्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर उपवास करने से यों ही दुर्बल हो रहे हैं। वे ब्राह्मण का बल क्षमा रखते हैं। क्षत्रिय का बल, निष्ठुरता, उनमें नहीं है। शत्रुतापन युधिष्ठिर, कर्ण से युद्ध करके, प्राण-संशय को प्राप्त हो गये हैं। हे धनञ्जय! जब महाबली भीमसेन बार-बार गरज रहे हैं और संग्राम में विजयी शत्रुओं के सिंहनाद तथा शङ्खनाद को सह रहे हैं तब तो राजा युधि- २० ष्ठिर जीवित नहीं जान पड़ते। वह देखो, पापबुद्धि सूतपुत्र बारम्बार "युधिष्ठिर को मारो" कहकर महाबली कौरवों को उत्तेजित कर रहा है। ये सब महारथी महाराज युधिष्ठिर का पीछा कर रहे हैं और उन्हें स्थूणाकर्ण, पाशुपत आदि अस्त्रों से पीड़ित कर रहे हैं।

जब महाधनुर्द्धर पाञ्चाल और पाण्डवगण, जल में डूबते हुए व्यक्ति को उबारने के लिए दौड़ रहे बली पुरुषों की तरह, धर्मराज के पीछे दौड़े जा रहे हैं तब अवश्य ही दुर्द्धर्ष राजा युधिष्ठिर शत्रुओं के बाणों से अत्यन्त व्यथित और मृतप्राय हो रहे हैं। अब उनके रथ की ध्वजा नहीं देख पड़ती। या तो वह कर्ण के बाणों में छिप गई है या कटकर गिर पड़ी है। वह देखो, मस्त हाथी जैसे कमल-वन को रौंदे वैसे ही महाबलशाली कर्ण—नकुल, सहदेव, सात्यकि, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, भीमसेन, शतानीक, पाञ्चालगण और महारथी चेदिगण के सामने ही—पाण्डवसेना को नष्ट कर रहा है। हे अर्जुन! वह देखो, तुम्हारे महारथी लोग अपने-अपने रथों को कैसे वेग

से दौड़ा रहे हैं। कर्ण के बाणों की चोट से विह्वल होकर बड़े-बड़े हाथी आर्तनाद करते हुए दसों दिशाओं में भाग रहे हैं। वह देखो, सूतपुत्र की हस्तिकक्ष्याचिह्नित ध्वजा इधर-उधर घूम रही है। वह कर्ण हज़ारों बाण छोड़कर पाण्डवों की रथ-सेना को मारता हुआ भीमसेन के रथ की ओर वेग से जा रहा है। महारथी पाञ्चालगण कर्ण के बाणों से पीड़ित होकर, इन्द्र के वज्र से विदलित असुरों के समान, विचलित हो रहे हैं और प्राण लेकर चारों ओर भाग रहे हैं। वह देखो, वीर कर्ण इस समय पाण्डवों, पाञ्चालों और सृञ्जयों को परास्त करके चारों ओर देख रहा है। जान पड़ता है, वह तुम्हें ही खोज रहा है। वह देखो, कर्ण इस समय बारम्बार धनुष का शब्द करके शत्रुओं को परास्त करने के कारण परम प्रसन्न होकर देवगण के बीच में स्थित इन्द्र के समान शोभायमान हो रहा है। वह देखो, कर्ण का पराक्रम देखकर कौरवगण सिंहनाद करते हुए पाण्डवों और सृञ्जयों के अन्तःकरण में भय का सञ्चार कर रहे हैं। पराक्रमी कर्ण हमारी सेना को बहुत ही डरवा करके कौरवसेना से कह रहा है—"हे वीरो, तुम लोग शीघ्र दौड़कर आक्रमण करो, तुम्हारा भला हो। ये सृञ्जय-पाञ्चालगण तुम्हारे आगे से जीते न लौट सकें। तुम्हारे पीछे हम लोग भी आते हैं।" हे अर्जुन, कर्ण कौरवसेना को प्रोत्साहन देकर बाण बरसाता हुआ उसके पीछे-पीछे जा रहा है। हे धनञ्जय! देखो, चन्द्रमा के उदय से उदयाचल की जैसे शोभा होती है वैसे ही सौ तीलियोंवाले सफ़ेद छत्र से कर्ण की शोभा हो रही है। यह वीर धनुष चढ़ाकर विषैले नाग-तुल्य बाण बरसाता हुआ तुम्हारी ओर टेढ़ी नज़र से देख रहा है। अब यह इसी ओर आवेगा। हे पार्थ! तुम्हारी वानर-चिह्नित ध्वजा देखकर वह वीर युद्ध की इच्छा से, आग में कूदने को उद्यत पतङ्ग की तरह, मरने को इसी ओर आ रहा है। कर्ण को अकेला देखकर, उसकी रक्षा के लिए, दुर्योधन अपनी रथ-सेना लेकर उसके साथ ही आ रहा है। अतएव इस समय तुम राज्य, यश और सुख प्राप्त करने के लिए यत्नपूर्वक इन सबके साथ कर्ण को मारो। हे अर्जुन, तुम और कर्ण देवराज तथा दैत्यराज की तरह जब निडर होकर युद्ध करोगे तब तुमको और कर्ण को अत्यन्त क्रोध के साथ भिड़ते देखकर दुष्ट दुर्योधन कुछ न कर सकेगा। हे भरतश्रेष्ठ! इस समय तुम अपनी योग्यता और धर्मात्मा युधिष्ठिर के प्रति धर्षणारूप कर्ण का अपराध देखकर, आर्यजनोचित युद्ध का निश्चय करके, रथयूथप कर्ण का सामना करो। हे अर्जुन! वह देखो, महातेजस्वी बली पाँच सौ प्रधान रथी योद्धा, पाँच हज़ार हाथी, दस हज़ार घोड़े और लाखों पैदल एक दूसरे की रक्षा करते हुए तुम्हारी ओर आ रहे हैं। इस समग्र सेना का सञ्चालन महारथी अश्वत्थामा कर रहे हैं। तुम इस रथ-सेना को अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करके प्रसिद्ध बली कर्ण के सामने पहुँचो। वेग से कर्ण के सामने जाकर अपना अतुल पराक्रम दिखलाओ। वह देखो, कुपित कर्ण पाञ्चाल-सेना की ओर वेग से जा रहा है। उसके रथ की ध्वजा धृष्टद्युम्न के रथ के सामने देख पड़ती है।

३२

४१

५०

हे अर्जुन, मैं इस समय तुमको प्रिय समाचार सुनाता हूँ। वह देखो, महाराज युधिष्ठिर कुशल-पूर्वक स्थित हैं। वह देखो, महाबाहु भीमसेन—सात्यकि और सृञ्जयगण के साथ—पलटकर कौरवसेना के अगले भाग में पहुँच गये हैं। भीमसेन और वीर पाञ्चालगण पैने बाणों से कौरवों का नाश कर रहे हैं। भीमसेन के वेग और विविध बाणों से पीड़ित होकर दुर्योधन की सेना रणभूमि से भाग रही है। खेत कट जाने पर पृथ्वी जैसे उजड़ी हुई देख पड़ती है वैसे ही खून से तर इस कौरव-सेना का रूप दीन देख पड़ता है। विषैले साँप-सदृश क्रुद्ध भीमसेन के लौट पड़ने से ही कौरव-सेना भाग रही है। वह देखो, तारा चन्द्र और सूर्य के चिह्नों से युक्त सफ़ेद, लाल, पीले, हरे और काले रङ्ग की अनेक पताकाएँ और छत्र टूट-फूटकर इधर-उधर गिर रहे हैं। सोने,

६०

चाँदी और अन्य धातुओं की चमकीली तरह-तरह की ध्वजाएँ गिर रही हैं। हाथी और घोड़े भाग रहे हैं। जमकर युद्ध करनेवाले पाञ्चाल-वीरों के विविध बाणों से मर-मरकर रथी लोग रथों से गिर रहे हैं। कौरव-पक्ष के ही सवारों से ख़ाली हाथियों, घोड़ों और रथों पर बैठकर पाञ्चालगण कौरवों पर हमला करने जा रहे हैं। भीमसेन के बाहुबल का आश्रय पाकर ये पुरुषसिंह, प्राणों का मोह छोड़कर, शत्रुओं की दुर्द्धर्ष सेना को विमर्दित कर रहे हैं। वह देखो, पाञ्चालगण गरजते हैं, शङ्ख बजाते हैं और बाणों से शत्रुओं को मारते हुए उनकी ओर बढ़ रहे हैं। यह स्वर्गलाभ का माहात्म्य देखो कि पाञ्चालगण पराक्रम-पूर्वक कौरवों को मारते हुए जा रहे हैं। वे स्वयं शस्त्रहीन हैं तो सशस्त्र शत्रुओं के शस्त्र छीनकर उन्हीं से शत्रुओं पर अचूक वार करते और गरजते हैं। वे शत्रुओं के सिर और हाथ आदि को काट-काटकर

७०

गिरा रहे हैं। पाञ्चाल-सेना के रथी, गजारोही और घुड़सवार सभी प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। हंसों की श्रेणी जैसे मानस-सरोवर से निकलकर गङ्गा में घुसती है वैसे ही पाञ्चालगण बड़े वेग से कौरवसेना में घुस रहे हैं। साँड़ों को रोकने के लिए जैसे साँड़ बल प्रकट करें वैसे ही कृपाचार्य, कर्ण आदि कौरवों के मित्र योद्धा लोग पराक्रम-पूर्वक पाञ्चालों को रोकने का प्रयत्न कर

रहे हैं [, फिर भी वे नहीं रुकते और कौरव-सेना को मार-मारकर गिरा रहे हैं]। कौरव-पक्ष के लोगों को, हज़ारों की संख्या में, धृष्टद्युम्न आदि वीर मार रहे हैं। सिंहनाद करते हुए भीमसेन शत्रु-सेना पर बाण बरसा रहे हैं, जिससे कौरवों की सेना के चेहरे उतर गये हैं। अधिकांश शत्रु-सेना नष्ट और उत्साहहीन हो गई है। रथी और हाथियों-घोड़ों के सवार डरकर भाग रहे हैं।

वह देखो, नाराच बाण मारकर भीमसेन हाथियों को विदीर्ण कर रहे हैं और वे हाथी, इन्द्र के वज्र से फटे हुए पर्वतों के शिखरों की तरह, पृथ्वी पर गिर रहे हैं। भीमसेन के तीक्ष्ण बाण शरीर में घुसने से अनेक हाथी विह्वल हो उठे हैं और अपनी ही सेना को रौंदते हुए भाग रहे हैं। शत्रुओं को परास्त करने की प्रसन्नता से महावीर भीमसेन बारम्बार सिंहनाद कर रहे हैं। यह निषादों का राजा श्रेष्ठ हाथी पर बैठकर भीमसेन की ओर झपटता आ रहा है और ८० दण्डपाणि यमराज की तरह क्रुद्ध होकर बारम्बार भीमसेन के ऊपर तोमर फेंक रहा है। गरज रहे निषाद-राज के दोनों हाथ भीमसेन ने काट डाले और अग्नि के तुल्य दस उग्र नाराच बाणों से उसको मार गिराया। अब उसके साथी वीरों के और अनेक हाथी भीमसेन की ओर आ रहे हैं; वे हाथी नीले मेघ के समान हैं। उन हाथियों के सवार भीमसेन पर शक्तियों और तोमरों की वर्षा कर रहे हैं। भीमसेन ने पैने बाण मारकर हाथियों के ऊपर की ध्वजाएँ, सात-सात टुकड़े करके, गिरा दीं और दस-दस नाराच बाणों से एक-एक हाथी को मार डाला। हे अर्जुन, इन्द्र के समान कुपित भीमसेन के लौटकर इस तरह संहार करने पर अब कौरवों का वह सिंहनाद नहीं सुनाई पड़ता। दुर्योधन की तीन अक्षौहिणी सेना मिलकर आक्रमण कर रही थी, उसे कुपित भीमसेन ने अकेले ही तहस-नहस कर दिया। दोपहर के सूर्य के समान तप रहे भीमसेन की ओर राजा लोग आँख भरकर देख भी नहीं सकते। भीमसेन के बाणों से पीड़ित शत्रुदल के योद्धा, सिंह के सताये मृगों के समान, व्याकुल हो रहे हैं।

सञ्जय कहते हैं—राजन्, श्रीकृष्ण के मुँह से भीमसेन के किये हुए दुष्कर कर्म का वृत्तान्त सुनकर महाबाहु अर्जुन स्वस्थ हुए और बचे हुए संशप्तकों को फिर नष्ट करने लगे। अर्जुन के प्रहार से विह्वल होकर बहुत से तो भाग गये और बहुत से मरकर, इन्द्रलोक में जाकर, इन्द्र के अतिथि हुए। अर्जुन फिर दुर्योधन की चतुरङ्गिणी सेना को मारने लगे। ९२

इकसठवाँ अध्याय

वीरों का द्वन्द्व-युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, जब भीमसेन और युधिष्ठिर लौटकर युद्ध करने लगे और पाण्डवों तथा सृञ्जयों के हाथ से मेरी सेना मारी जाने लगी अर्थात् इस तरह दुर्योधन की सेना आनन्द-रहित होकर भाग खड़ी हुई तब कौरवों ने क्या किया? सब वृत्तान्त कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! महाप्रतापी कर्ण महाबाहु भीमसेन को देखकर, क्रोध से लाल आँखें करके, उनकी ओर वेग से चले। आपकी सेना को, विमुख होकर भीमसेन के आगे से, भागते देखकर महारथी कर्ण ने बड़ी कोशिश करके रोका। कौरव-सेना को सिलसिले से स्थापित करके वीर कर्ण फिर पाण्डवों की ओर बढ़े। तब पाण्डव-दल के महारथी लोग भी धनुष बजाते और बाण बरसाते कर्ण की ओर चले। भीमसेन, सात्यकि, शिखण्डी, जनमेजय, बलवान् धृष्टद्युम्न, प्रभद्रकगण और पाञ्चालगण अत्यन्त क्रुद्ध होकर चारों ओर से विजयलाभ की इच्छा से कौरव-सेना पर आक्रमण करने लगे। कौरव-पक्ष के महारथी भी शत्रु-पक्ष के महा-रथियों को मार डालने के विचार से पाण्डव-सेना की ओर वेग से बढ़े। उस समय असंख्य १० ध्वजाओं से शोभित दोनों ओर की चतुरङ्गिणी सेना का स्वरूप अद्भुत दिखाई पड़ने लगा।

शिखण्डी कर्ण से भिड़ गये। बहुत सी सेना साथ लिये धृष्टद्युम्न आपके पुत्र दुःशासन से युद्ध करने लगे। नकुल वृषसेन से, धर्मराज युधिष्ठिर चित्रसेन से, सहदेव उलूक से, सात्यकि शकुनि से, अर्जुन महारथी अश्वत्थामा से, द्रौपदी के पुत्र दुर्योधन के भाइयों से, युधामन्यु कृपा-चार्य से, उत्तमौजा कृतवर्मा से और भीमसेन अकेले ही असंख्य सेना सहित आपके अनेक पुत्रों से युद्ध करने लगे। तब भीष्म का वध करनेवाले शिखण्डी अपने प्रतिद्वन्द्वी, निडर होकर समरभूमि में विचर रहे, कर्ण पर बाण-वर्षा करने लगे। शिखण्डी के बाणों की चोट से क्रोध के मारे कर्ण के ओठ फड़कने लगे। उन्होंने अपने को रोकनेवाले शिखण्डी की भौंहों के बीच में तीन बाण मारे। ललाट में लगे हुए उन तीन बाणों से शिखण्डी तीन शिखरोंवाले चाँदी के पर्वत की तरह शोभायमान हुए। कर्ण ने बाण मारकर जब बहुत गहरी चोट पहुँचाई तब अत्यन्त क्रुद्ध होकर शिखण्डी ने तीक्ष्ण नब्बे बाणों से कर्ण को घायल किया। प्रतापी कर्ण ने तीन बाणों से शिखण्डी के सारथी और घोड़ों को मारकर एक क्षुरप्र बाण से उनके रथ की २० ध्वजा भी काट डाली। शत्रुदलन क्रुद्ध शिखण्डी ने बिना घोड़ों के रथ पर से कूदकर कर्ण के ऊपर भयङ्कर शक्ति फेंकी। कर्ण ने तीन बाणों से उस शक्ति को काट डाला और शिखण्डी को नव उग्र बाण मारे। शिखण्डी बहुत ही घायल और विह्वल होने के कारण कर्ण के सामने नहीं ठहर सके; उनके बाणों से बचते हुए वे भाग गये। तब महारथी कर्ण पाण्डव-सेना को वैसे ही मारने और गिराने लगे जैसे प्रबल आँधी रुई के ढेर को उड़ा ले जाती है।

उधर दुःशासन पराक्रमी धृष्टद्युम्न को रोककर बाणों से पीड़ित करने लगे। धृष्टद्युम्न ने कोप करके दुःशासन की छाती में तीन बाण मारे। वीर दुःशासन ने भी एक सुवर्णपुङ्ख भल्ल बाण धृष्टद्युम्न के बायें हाथ में मारा। तब असहनशील धृष्टद्युम्न ने दुःशासन को बहुत ही घोर बाण मारा। उन्होंने फुर्ती के साथ धृष्टद्युम्न के उस बाण को तीन बाणों से राह में ही काट डाला और दूसरे सत्रह कनक-भूषित भल्ल बाण धृष्टद्युम्न के दोनों हाथों और वक्षःस्थल में

मारे। तब धृष्टद्युम्न ने क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से दुःशासन का धनुष ही काट डाला। यह देखकर सैनिकगण ज़ोर से चिल्लाने लगे। दुःशासन ने हँसते-हँसते फ़ौरन् दूसरा धनुष ३० लेकर धृष्टद्युम्न के ऊपर चारों ओर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। दुःशासन के बाणों से धृष्टद्युम्न को समाच्छन्न और पीड़ित देखकर सब योद्धाओं, सिद्धों और अप्सराओं को बड़ा विस्मय हुआ। हम लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा कि सिंह जैसे महागज को आगे न बढ़ने दे, वैसे ही दुःशासन ने महारथी धृष्टद्युम्न को रोक लिया। लाख चेष्टा करके भी धृष्टद्युम्न आगे न बढ़ सके। महाराज! पाञ्चाल, पाण्डव और सृञ्जयगण अपने सेनापति धृष्टद्युम्न को अवरुद्ध देखकर, उनकी सहायता करने के लिए, चतुरङ्गिणी सेना लेकर उधर ही वेग से बढ़े और दुःशासन को हराने की चेष्टा करने लगे।
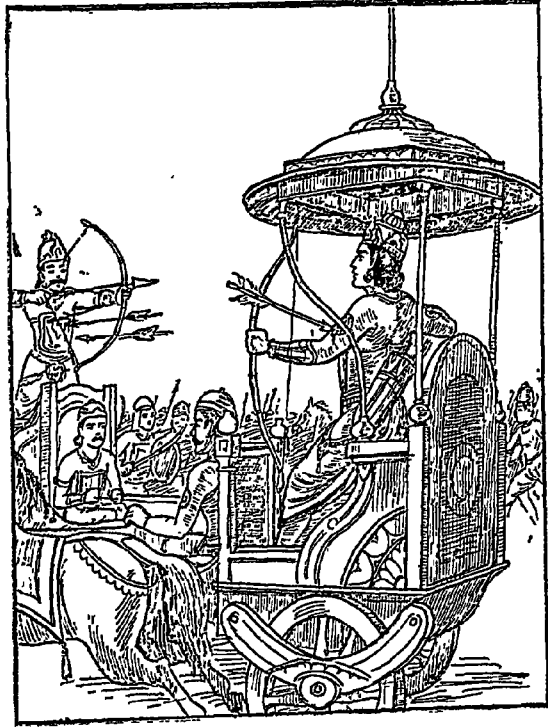
उस समय दोनों ओर के योद्धा भिड़कर, सब प्राणियों के लिए भयानक, घोर युद्ध करने लगे।

दूसरी ओर, अपने पिता कर्ण के पास स्थित, शूर वृषसेन ने सामने उपस्थित नकुल को क्रमशः पाँच और तीन लोहमय उग्र बाण मारे। तब वीर नकुल ने हँसकर वृषसेन के हृदय में एक तीक्ष्ण नाराच बाण मारा। प्रबल शत्रु के बाण की गहरी चोट खाकर वृषसेन ने नकुल को बीस और नकुल ने वृषसेन को पाँच बाण मारे। अब वे दोनों पराक्रमी असंख्य बाण बरसाकर परस्पर पीड़ित करने लगे। इसी बीच में कौरवों की सेना भाग खड़ी हुई। महाबली कर्ण दुर्योधन की सेना को भागते देखकर, उसके पीछे जाकर, उसे बलपूर्वक लौटाने और ठहराने की चेष्टा करने लगे। कर्ण के लौटने पर वीर नकुल कौरवों की ओर दौड़े। तब वृषसेन भी नकुल को छोड़- ४० कर फिर अपने पिता कर्ण के रथचक्र की रक्षा करने लगे।

उधर महाबली सहदेव क्रुद्ध उलूक को रोकने लगे। सहदेव ने उलूक के सारथी और चारों घोड़ों को मार डाला। तब उस टूटे हुए रथ से कूदकर उलूक जल्दी से त्रिगर्त-सेना के भीतर घुस गया। इसी समय महाबली सात्यकि ने शकुनि को तीक्ष्ण धारवाले बीस बाणों से घायल करके हँसते-हँसते एक भल्ल बाण से उनकी ध्वजा काट डाली। वीर शकुनि ने भी अत्यन्त

क्रोध करके बाणों से सात्यकि का कवच तोड़कर सुवर्णमयी ध्वजा भी काट डाली। तब सात्यकि ने शकुनि को कई तीक्ष्ण बाण मारकर उनके सारथी को तीन बाणों से पीड़ित किया। फिर फुर्ती के साथ बाणों से शकुनि के रथ के घोड़ों को मार डाला। हे नरश्रेष्ठ, शकुनि जल्दी से उस रथ से कूदकर उलूक के रथ पर चढ़कर सात्यकि के आगे से भाग गये। महावीर सात्यकि भी बड़े वेग से कौरव-सेना की ओर बढ़े। सात्यकि के बाणों से कौरवों की सेना ऐसी पीड़ित हुई कि युद्ध छोड़कर चारों ओर भागने और मुर्दों की तरह पृथ्वी पर गिरने लगी। ५०

राजा दुर्योधन संग्राम में भीमसेन को रोकने की चेष्टा करने लगे। वीर भीमसेन ने क्रोध करके पल भर में उनके रथ, सारथी, ध्वजा और घोड़ों को नष्ट कर दिया। यह देखकर पाण्डव-सेना को अपार आनन्द हुआ। दुर्योधन डर के मारे भीमसेन के आगे से भाग गये। तब सब कौरव-सेना एकत्र होकर भीमसेन को मार डालने के लिए उनकी ओर चली और योद्धा लोग बेतरह सिंहनाद करने लगे। वीर युधामन्यु ने कृपाचार्य को तीक्ष्ण बाणों से घायल करके उनका धनुष काट डाला। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने क्रुद्ध होकर दूसरा धनुष हाथ में लेकर युधामन्यु के छत्र, ध्वजा और सारथी को नष्ट कर दिया। महाबली युधामन्यु, डर के मारे, स्वयं रथ हाँकते हुए उनके आगे से भाग खड़े हुए।

मेघ जैसे पहाड़ पर जल बरसावे, वैसे ही महाबली उत्तमौजा कृतवर्मा को बाणों से पीड़ित करने लगे। उस समय वे दोनों वीर अपूर्व युद्ध करने लगे। कृतवर्मा ने सहसा उत्तमौजा को छाती में घायल कर दिया। इससे वे मूर्च्छित होकर रथ पर बैठ गये। यह देखकर उनका सारथी रथ लेकर रणभूमि से भाग गया। अब सारी कौरव-सेना भीमसेन की ओर वेग से बढ़ी। दुःशासन और शकुनि गज-सेना से भीमसेन को घेरकर उन पर क्षुद्रक बाणों से प्रहार करने लगे। तब भीमसेन क्रुद्ध दुर्योधन को बाणवर्षा से हटा करके गज-सेना की ओर वेग से दौड़े। वीर भीमसेन गज-सेना को सहसा आते देखकर क्रुद्ध होकर दिव्य अस्त्र का प्रयोग करने लगे। वज्र से इन्द्र जैसे असुरों का संहार करें वैसे ही वे हाथियों पर हाथियों को ६०

पटककर और बाण मारकर गज-सेना को चौपट करने लगे। टीड़ियाँ जैसे वृक्ष पर छा जाती हैं वैसे ही हाथियों का संहार कर रहे भीमसेन के बाणों से अन्तरिक्ष व्याप्त हो गया। आँधी जैसे घनघटा को छिन्न-भिन्न कर डाले वैसे ही भीमसेन वेग से, एकत्र हुए, हज़ारों हाथियों को मारने लगे। सुवर्ण-जाल और मणि-मोती आदि से शोभित वे हाथी बिजली सहित मेघों के समान रणभूमि में शोभायमान हो रहे थे। भीमसेन के बाणों से मारे जा रहे वे हाथी चारों ओर चिल्लाते हुए भागने लगे। कुछ के हृदय फट गये और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। गिरे और गिर रहे सुवर्ण-भूषित उन हाथियों से वह रणभूमि ऐसी जान पड़ती थी जैसे बड़े-बड़े पर्वत फट-फटकर वहाँ गिर पड़े हों। रत्नों से शोभित प्रकाशमान हाथियों के सवार योद्धा रणभूमि में, पुण्य क्षीण होने पर गिरे हुए, ग्रहों के समान जान पड़ते थे। भीमसेन के बाणों से जिनके मस्तक, कपोल, सूँड़ आदि अङ्ग-प्रत्यङ्ग कट-फट गये हैं ऐसे सैकड़ों हाथी भागने लगे। कुछ ७० पर्वताकार हाथियों के अङ्गों में बाण घुस जाने से रक्त बह रहा था और वे, बह रही धातुओं से चित्रित पहाड़ों की तरह, डर के मारे भाग रहे थे। धनुष को चढ़ा रहे भीमसेन की विशाल भुजाएँ चन्दन और अगुरु से भूषित थीं और महासर्पों के समान दिखाई देती थीं। उनकी प्रत्यञ्चा के और तल के वज्रपात-सदृश भयानक शब्द को सुनकर डर के मारे बड़े-बड़े हाथी मल-मूत्र त्याग करते हुए भागने लगे। महाराज, सब प्राणियों का नाश कर रहे रुद्र के समान भीमसेन ने अकेले ही ऐसा अद्भुत कर्म कर दिखाया। ७४

बासठवाँ अध्याय

संकुल युद्ध

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ! अब प्रबल प्रतापी अर्जुन सफ़ेद घोड़ों से युक्त और कृष्ण-सञ्चालित रथ पर बैठकर, आँधी जैसे महासमुद्र को मथ डाले वैसे ही, असंख्य घुड़सवारों से परिपूर्ण कौरव-सेना को मथने लगे। इस समय अर्जुन को उधर उलझे हुए और युधिष्ठिर की ओर से असावधान देखकर राजा दुर्योधन कुपित होकर, आधी सेना साथ लेकर, अपनी सेना की ओर आ रहे अमर्षपूर्ण राजा युधिष्ठिर को घेरने के लिए बढ़े। दुर्योधन ने युधिष्ठिर के समीप जाकर उनको तिहत्तर क्षुरप्र बाण मारे। युधिष्ठिर ने भी क्रोध से विह्वल होकर दुर्योधन को तीस भल्ल बाण मारे। इसी समय सब कौरव धर्मराज को पकड़ लेने के लिए वेग से दौड़े। शत्रुओं के दुष्ट भाव को जानकर महावीर नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना लेकर युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिए तेज़ी से उनकी ओर चले। भीमसेन भी कौरवों के महारथियों को युद्ध में विमर्दित करते हुए, शत्रुओं से घिरे राजा युधिष्ठिर की रक्षा करने को, दौड़े। तब महाबली कर्ण उन अस्त्रों के ज्ञाता पाण्डव-पक्ष के वीरों को वेग से आते देखकर,

बाण बरसाकर, रोकने की चेष्टा करने लगे। वे वीर भी लगातार नाराच और तोमर बरसाने
११ लगे; किन्तु किसी तरह कर्ण को विमुख नहीं कर सके।

उधर सहदेव शीघ्र वहाँ पहुँचकर लगातार बाण बरसाने लगे। उन्होंने दुर्योधन को बीस बाण मारे। सहदेव के बाणों से अत्यन्त घायल और ख़ून से तर राजा दुर्योधन, पर्वताकार मदमत्त गजराज के समान, शोभा को प्राप्त हुए। यह देखकर वीर कर्ण क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने वेग से आगे बढ़कर तीक्ष्ण बाणों से पाञ्चालों और पाण्डवों की सेना को मारना शुरू कर दिया। धर्मराज की वह विशाल सेना कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भागने लगी। कर्ण के अस्त्र-प्रभाव से धनुष से लगातार बाण निकल रहे थे। उनके धनुष से भल्ल बाण एक के बाद एक छूट रहे थे; उनकी क़तार सी बँध गई थी। अन्तरिक्ष में बाणों के परस्पर रगड़ने से आग पैदा हो गई। कर्ण ने शत्रुओं के शरीरों को भेदनेवाले, वेगगामी, असंख्य बाणों से दसों दिशाओं को व्याप्त कर दिया और उनसे शत्रुओं को मारना शुरू किया। अपने दिव्य अस्त्र का प्रभाव दिखाते और धनुष को नचाते हुए कर्ण की, लाल चन्दन से चर्चित और सुवर्ण-मणिमय आभूषणों से अलङ्कृत, बलपूर्ण विशाल भुजाएँ बहुत ही शोभित
२० हो रही थीं। हे राजेन्द्र, महावीर कर्ण बाणों से चारों ओर के वीरों को मोहित करके बारम्बार धर्मराज को पीड़ित करने लगे। बाणों से अन्धकार छा जाने के कारण उस युद्ध ने बड़ा ही घोर रूप धारण किया। तब धर्मपुत्र ने भी क्रुद्ध होकर कर्ण को पचास तीक्ष्ण बाण मारे और आपकी सेना को विविध तीक्ष्ण कङ्कपत्र-शोभित भल्ल आदि बाणों से तथा शक्ति, ऋष्टि, मूसल आदि शस्त्रों से नष्ट करना शुरू कर दिया। इस तरह युधिष्ठिर जब कौरव-सेना का संहार करने लगे तब आपके सैनिक घोर हाहाकार करने लगे। उस समय धर्मराज जिधर क्रोधपूर्ण क्रूर दृष्टि से देखते थे उधर ही सेना छिन्न-भिन्न होकर भाग खड़ी होती थी।

तब असहनशील कर्ण अत्यन्त क्रुद्ध होकर धर्मराज की ओर झपटे। क्रोध से उनके ओठ फरकने लगे। वे नाराच, अर्धचन्द्र, वत्सदन्त आदि तरह-तरह के तीक्ष्ण बाणों से धर्मराज को पीड़ित करने लगे। युधिष्ठिर भी कर्ण के ऊपर स्वर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। कर्ण ने हँसकर कङ्कपत्र बाण मारे और तीन भल्ल बाण मारकर धर्मराज की छाती में घाव कर दिया।
३० इस प्रहार से धर्मराज अत्यन्त विह्वल और पीड़ित होकर रथ पर बैठ गये और अपने सारथी से बारम्बार कहने लगे कि शीघ्र रथ को हाँक ले चलो। सब राजा लोग और आपके पुत्रगण "धर्मराज को पकड़ लो—पकड़ लो" कहकर चिल्लाते हुए चारों ओर से दौड़ पड़े। तब पाञ्चालों सहित केकय देश के सत्रह सौ योद्धा कौरव-सेना के वीरों को रोकने लगे। हे भारत, इस तरह वह
३४ जन-नाशक युद्ध होते समय महाबली भीमसेन और दुर्योधन फिर परस्पर भिड़ गये।

तिरसठवाँ अध्याय

कर्ण के बाणों से पीड़ित धर्मराज का विश्राम करने के लिए अपने शिविर में जाना

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! तब पराक्रमी कर्ण, सेना के अगले भाग में स्थित, केकय देश के महाधनुर्द्धर महारथियों को मारने लगे। कर्ण ने अपने को रोकने का यत्न कर रहे केकयों के पाँच सौ रथियों को क्षण भर में मार गिराया। कर्ण को युद्ध में अजेय और उनके पराक्रम को असह्य जानकर पीड़ित हो रहे केकय देश के योद्धा, आश्रय के लिए, भीमसेन के पास भागे। महाराज, महावीर कर्ण इस तरह बाण बरसाकर उस रथ-सेना को छिन्न-भिन्न करके अकेले ही युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए दौड़े। उस समय बाणों से अत्यन्त पीड़ित अचेतप्राय धर्मराज धीरे-धीरे अपने शिविर को जा रहे थे और नकुल-सहदेव इधर-उधर उनकी रक्षा करते हुए चल रहे थे। दुर्योधन का हित करने की इच्छा से कर्ण वेग से राजा युधिष्ठिर के पास पहुँचे। उन्होंने उनको तीन बाण मारे। अब युधिष्ठिर ने भी कर्ण की छाती में बाण मारे। फिर सारथी को तीन और घोड़ों को चार बाण मारे। धर्मराज के चक्ररक्षक नकुल और सहदेव, अलग-अलग, कर्ण के ऊपर बाण बरसाने लगे। कर्ण कहीं राजा का वध न कर डालें, यह सोचकर वे जी-जान से युधिष्ठिर की रक्षा और कर्ण को रोकने का यत्न करने लगे। पराक्रमी कर्ण ने तीक्ष्ण धार के दो भल्ल बाण नकुल और सहदेव को मारे और फिर सफ़ेद रङ्ग के काली पूँछवाले बढ़िया घोड़ों को, जो युधिष्ठिर के रथ में लगे थे, मार डाला। अब कर्ण ने हँसकर एक भल्ल बाण से युधिष्ठिर का शिरस्त्राण काट डाला। इसी तरह नकुल के रथ के घोड़ों को भी मारकर एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से उनके रथ की धुरी और धनुष काट डाला। घोड़े मर गये, रथ टूट गये, शरीर भी अत्यन्त छिन्न-भिन्न हो गया, तब युधिष्ठिर और नकुल दोनों भाई फुर्ती से सहदेव के रथ पर चले गये। अब मद्रराज शल्य दोनों भानजों को रथहीन, दुर्दशाग्रस्त और प्राण-सङ्कट में पड़े देखकर कृपापूर्वक, उनके बचाव के विचार से, कहने लगे—हे कर्ण ! आज तुमको धनञ्जय से युद्ध करना है, फिर तुम धर्मराज से क्यों भिड़ रहे हो? इस तरह औरों से लड़ने में तुम्हारे शस्त्र-अस्त्र बाण आदि घट जायँगे, कवच नष्ट हो जायगा, तरकस ख़ाली हो जायँगे, तुम्हारे घोड़े और सारथी भी मेहनत करते-करते थक जायँगे और तुम भी शत्रुओं के प्रहारों से पीड़ित हो जाओगे; उस समय अर्जुन के सामने जाकर क्या उपहास के पात्र बनोगे? १०

राजन्, शल्य ने यों कहकर कर्ण को रोकना चाहा तथापि कुपित कर्ण ने न माना। वे बारम्बार तीक्ष्ण बाणों से युधिष्ठिर और नकुल-सहदेव को पीड़ित करने लगे। तब शल्य ने हँसकर, रथ पर स्थित और युधिष्ठिर को मार डालने पर तुले हुए, कर्ण से फिर कहा—हे कर्ण, धर्मराज को मारने से तुम्हें क्या मिलेगा? राजा दुर्योधन ने जिनके वध के लिए आज तक तुम्हारा सम्मान किया है उन अर्जुन को मारो तो एक बात भी है। वह सुनो, वर्षाकाल के मेघ के २०

गर्जन के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन के शङ्खों का शब्द सुनाई पड़ रहा है और रह-रहकर अर्जुन का धनुष भयानक शब्द कर रहा है। कर्ण, देखो, वीर अर्जुन बाणवर्षा से श्रेष्ठ योद्धाओं को मारते हुए हमारी सारी सेना का संहार कर रहे हैं। तुम उन्हें ढूँढ़कर उनसे युद्ध करो। शूर अर्जुन की पृष्ठ-रक्षा युधामन्यु और उत्तमौजा कर रहे हैं। सात्यकि बाँयें पहिये की और धृष्टद्युम्न दाहिने पहिये की रक्षा में नियुक्त हैं। उधर देखो, बली भीमसेन राजा दुर्योधन से युद्ध कर रहे हैं। हम सबके सामने भीमसेन राजा दुर्योधन को न मार डालें, इसका उपाय सबसे पहले करो। देखो, रणनिपुण भीमसेन दुर्योधन को मार डालने का उद्योग कर रहे हैं। इस समय अगर दुर्योधन उनके हाथ से बच जायँ तो इसे मैं बड़ा अचम्भा समझूँगा। इसलिए पहले तुम, प्राण-सङ्कट में पड़े हुए, दुर्योधन की रक्षा करो। नकुल, सहदेव या राजा युधिष्ठिर को मारकर क्या करोगे?

यह सुनकर और सचमुच रण में दुर्योधन को भीमसेन के ग्रास में पड़े हुए देखकर कर्ण ने युधिष्ठिर, नकुल और

३० सहदेव को छोड़ दिया। वे तेज़ी के साथ दुर्योधन की रक्षा करने को चले। शल्य ने भी आकाश को उड़े से जा रहे घोड़ों को तेज़ हाँक दिया। कर्ण के वहाँ से चल देने पर बाणों से घायल धर्मराज भी सहदेव के, शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त, रथ पर बैठकर भाइयों के साथ अत्यन्त लज्जित भाव से शिविर में पहुँचे और रथ से उतरकर तुरन्त बिस्तर पर लेट गये। चिकित्सकों ने उनके शरीर से सब शल्य निकालकर घावों पर ओषधियाँ लगा दीं। शरीर के शल्य निकल जाने पर भी हृदय का शल्य, अर्थात् कर्ण से परास्त होने का खेद, उन्हें अत्यन्त पीड़ित करने लगा।

उन्होंने सहदेव और नकुल से कहा—भाइयो, वीर भीमसेन मेघ की तरह गरजकर युद्ध कर रहे हैं, इसलिए तुम चटपट उनके पास उनकी सहायता करने को जाओ। युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर नकुल-सहदेव तुरन्त, तेज़ घोड़ों से युक्त अन्य रथ पर बैठकर, भीमसेन और अर्जुन

३७ के पास पहुँचे। अब वे अपनी सेना के साथ होकर शत्रुओं का संहार करने लगे।

चौंसठवाँ अध्याय

अर्जुन और अश्वत्थामा का युद्ध

सञ्जय ने कहा—राजन्, महाबली अश्वत्थामा असंख्य रथों के साथ एकाएक वहाँ पर आ गये, जहाँ वीर अर्जुन शत्रु-सेना का संहार कर रहे थे। श्रीकृष्ण सहित अर्जुन ने अश्वत्थामा को, आते देखकर, वैसे ही रोक दिया जैसे तट-भूमि समुद्र के वेग को रोकती है। तब पराक्रमी अश्वत्थामा कुपित होकर श्रीकृष्ण और अर्जुन को बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे। यह देखकर महारथी कौरवगण अत्यन्त विस्मित हो उठे। महावीर अर्जुन ने हँसकर दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया। अस्त्र-निपुण अश्वत्थामा ने, अस्त्र के प्रभाव से, उस अस्त्र को शान्त कर दिया। उस समय अश्वत्थामा को परास्त करने के लिए अर्जुन ने जितने अस्त्र छोड़े उन सबको अश्वत्थामा ने व्यर्थ कर दिया। हे भरतश्रेष्ठ! उस घोर अस्त्र-युद्ध के समय महाबाहु अश्वत्थामा, मुँह फैलाये हुए साक्षात् काल के समान, भयङ्कर प्रतीत होने लगे। उन्होंने सीधे और शीघ्र जानेवाले बाणों से दसों दिशाओं को व्याप्त करके श्रीकृष्ण के दाहने हाथ में तीन विकट बाण मारे। तब महावीर अर्जुन ने फुर्ती से अश्वत्थामा के घोड़ों को मारकर रणभूमि में चतुरङ्गिणी सेना के रक्त से एक महानदी बहा दी। अश्वत्थामा के अनुगामी असंख्य रथों समेत रथी, अर्जुन के गाण्डीव धनुष से निकले हुए बाणों से, नष्ट होने लगे। अश्वत्थामा ने भी अर्जुन की तरह जन-संहार करके रक्त की भयावनी नदी बहा दी। ११

राजन्, इस प्रकार जब दोनों महारथी परस्पर घोर संग्राम करने लगे तब दोनों ओर के योद्धा लोग मर्यादा-हीन युद्ध करते हुए इधर-उधर विचरने लगे। वीर अर्जुन ने रथों को सारथी और घोड़ों से हीन, घोड़ों को सवारों से ख़ाली और हाथियों को सवारों तथा महावतों से ख़ाली करके असंख्य सेना को मारना शुरू कर दिया। अर्जुन के बाणों से मर-मरकर बड़े-बड़े रथी गिरने लगे। घोड़ों के जोत कट गये, वे इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। अर्जुन का यह अद्भुत और भयानक कार्य देखकर अश्वत्थामा शीघ्रता के साथ विजयी अर्जुन के सामने आये। सुवर्ण-मण्डित धनुष चढ़ाकर, अर्जुन के चारों ओर असंख्य बाण बरसाकर, उन्होंने कठोरता से उनके हृदय में एक उग्र बाण मारा। उस बाण की गहरी चोट से महारथी अर्जुन विह्वल हो उठे। उन्होंने भी चारों ओर असंख्य विकट बाणों से अश्वत्थामा को पीड़ित करके बलपूर्वक उनका धनुष काट डाला। वीरश्रेष्ठ अश्वत्थामा ने एक वज्र-सदृश भीषण लोहे का परिघ (बेलन) लेकर अर्जुन के ऊपर फेंका। उन्होंने हँसकर फ़ौरन् वह स्वर्णपट्ट-भूषित परिघ काट डाला। वह विकट बेलन अर्जुन के बाणों से कटकर, वज्र से विदीर्ण पर्वत की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़ा। २०

तब महारथी अश्वत्थामा ने अत्यन्त कुपित होकर ऐन्द्र अस्त्र का प्रयोग किया। इन्द्रजाल के प्रभाव से अर्जुन के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा होने लगी। फैले हुए इन्द्रजाल को देखकर

अर्जुन ने गाण्डीव धनुष हाथ में लिया और इन्द्र के दिये हुए महास्त्र का प्रयोग करके अश्वत्थामा के इन्द्रजाल को नष्ट कर दिया। फिर पास जाकर अर्जुन ने अपने अस्त्र से अभिमन्त्रित बाणों द्वारा अश्वत्थामा के रथ और शरीर को छा दिया। अश्वत्थामा ने अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर भी, उस बाणवर्षा के भीतर घुसकर, अपने नाम से अङ्कित सौ बाण श्रीकृष्ण को और तीन सौ क्षुद्रक (छोटे) बाण अर्जुन को कस-कसकर मारे। तब अर्जुन ने मर्मस्थलों में सौ बाण मारकर गुरुपुत्र को विह्वल कर दिया और फिर सब कौरवों के सामने ही अश्वत्थामा के घोड़ों, सारथी और धनुष की डोरी पर लगातार बाण बरसाना शुरू किया। इसके बाद मर्मस्थलों में घायल अश्वत्थामा के सारथी को एक भल्ल बाण से मारकर गिरा दिया। तब अश्वत्थामा आप ही रास पकड़कर घोड़ों को हाँकने और बाणवर्षा से श्रीकृष्ण तथा अर्जुन को पीड़ित करने लगे। उस समय अश्वत्थामा की फुर्ती और पराक्रमपूर्ण साहस को देखकर हम लोग दङ्ग रह गये। उनको रथ हाँकते और ३० श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पर प्रहार भी करते देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे।

तब महाबाहु अर्जुन ने हँसकर क्षुरप्र बाणों से अश्वत्थामा के घोड़ों की रास काट दी। अर्जुन के बाणों से पीड़ित घोड़े, कोई रोक-थाम न रहने के कारण, इधर-उधर भागने लगे। यह देखकर आपकी सेना में भारी कोलाहल होने लगा। महावीर पाण्डवगण विजय प्राप्त करके अत्यन्त आनन्दित हुए और तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए कौरव-सेना पर चढ़ दौड़े। विजयी पाण्डवों के बारम्बार लगातार प्रहार करने से पीड़ित और उत्साहहीन होकर आपकी सेना, कर्ण और विचित्र योद्धा कौरवों के सामने ही, भाग खड़ी हुई। आपके पुत्र बारम्बार उसे रोकने लगे, लेकिन सैनिकगण चारों ओर से पीड़ित होने के कारण जी छोड़ चुके थे, इसलिए नहीं रुके। योद्धाओं के भागने पर आपकी भय-विह्वल सेना व्याकुल हो उठी। महारथी कर्ण बारम्बार "ठहरो-ठहरो" कहकर सबको रोकते थे, तथापि पाण्डवों की मार से

पीड़ित होने के कारण कोई पीछे फिरकर देखता भी नहीं था। दुर्योधन की सेना को चारों ओर भागते देखकर विजयी पाण्डव लोग आनन्द से सिंहनाद करने लगे।
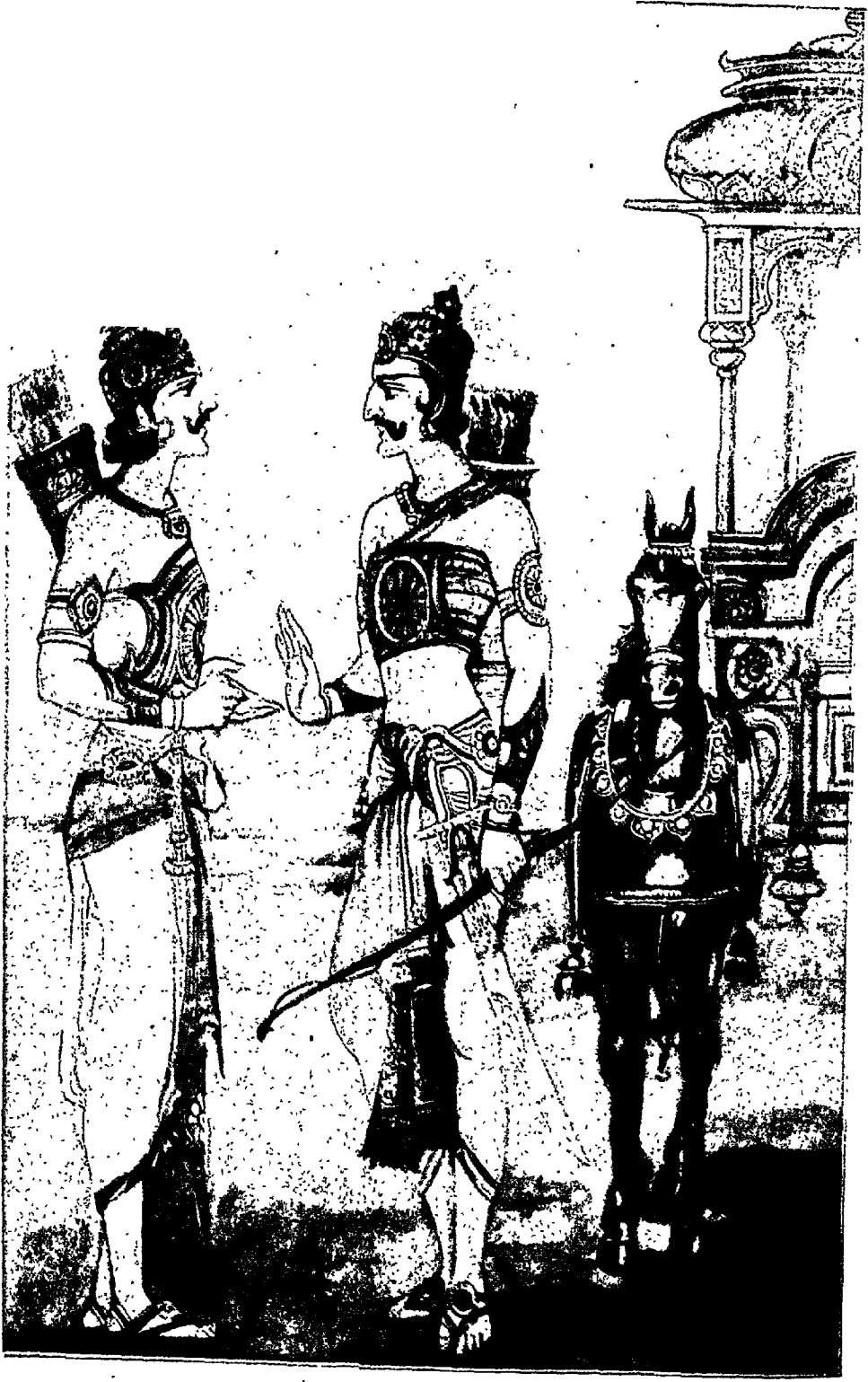
अब दुर्योधन ने पास आकर स्नेहपूर्ण स्वर से कहा—हे कर्ण ! देखो, तुम्हारे मौजूद रहते ही पाण्डवों और पान्चालों ने मेरी सेनाको इस तरह पीड़ित कर रक्खा है कि डरके मारे कोई ठहरने की हिम्मत नहीं करता। ६४ अध्याय, पृ० २८६५।

अब दुर्योधन ने पास आकर स्नेहपूर्ण स्वर से कहा—हे कर्ण! देखो, तुम्हारे मौजूद रहते ही पाण्डवों और पाञ्चालों ने मेरी सेना को इस तरह पीड़ित कर रक्खा है कि डर के मारे कोई ठहरने की हिम्मत नहीं करता। इस समय जो ठीक समझो वह करो। हमारे हज़ारों योद्धा, पाण्डवों के बाणों से पीड़ित होकर, भागे जा रहे हैं। वे अपनी रक्षा के लिए तुम्हीं को पुकार रहे हैं। ४१

महाराज, दुर्योधन के ये वचन सुनकर बली कर्ण उत्साह के साथ मद्रराज से हँसकर कहने लगे—हे शल्य, तुम झटपट मेरे घोड़ों को हाँककर शत्रु-सेना में ले चलो। मेरे बाहुबल, पराक्रम और दिव्य अस्त्रों के प्रभाव को देखो। मैं इस समय रण में सारी पाण्डव-सेना और पाञ्चालों को मार डालूँगा। शल्य से यों कहकर प्रतापी कर्ण अपने विजय धनुष पर डोरी चढ़ाकर, उसे बारम्बार हाथ से माँजकर, सत्य की शपथ देते हुए अपने योद्धाओं को लौटाने लगे। कर्ण के आश्वासन से सब सेना लौट पड़ी। तब अद्वितीय योद्धा कर्ण ने, परशुराम के दिये हुए, दिव्य भार्गवास्त्र का प्रयोग किया। उस अस्त्र के प्रभाव से कर्ण के धनुष से एक साथ हज़ारों, लाखों, करोड़ों, कङ्कपत्र-युक्त तीखे बाण निकलकर पाण्डव-सेना पर गिरने लगे। चारों ओर बाणों के सिवा और कुछ सूझता ही नहीं था। कर्ण के प्रबल भार्गवास्त्र से पीड़ित पाण्डव-सेना में हाहाकार मच गया। हज़ारों हाथी, घोड़े, रथी और पैदल मर-मरकर चारों ओर गिरने और पृथ्वीतल को कँपाने लगे। पाण्डवों की सेना में हलचल मच गई, सब लोग व्याकुल हो उठे। बिना धुएँ की आग के समान प्रचण्ड तेजस्वी कर्ण अकेले ही सब शत्रुओं को बाणवर्षा से भस्म कर रहे थे। वन में आग लगने पर हाथियों के झुण्ड, किसी ओर राह न पाकर, जैसे व्याकुल होते हैं वैसे ही कर्ण के बाणों से मारे जा रहे पाञ्चालगण और चेदिगण मोहित होकर मरने और आर्तनाद करने लगे। पाण्डव-सेना के योद्धा डर के मारे अपनी शक्ति भर चिल्लाने लगे। प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे लोगों का आर्तनाद प्रलयकाल के कोलाहल के समान सुनाई पड़ रहा था। किसी के मर जाने पर उसके कुटुम्बी जैसे जमा होकर रोते-कलपते और चिल्लाते हैं वैसे ही, अस्त्र के तेज से नष्ट हो रही, सेना के लोग चिल्ला रहे थे। पाञ्चालों की दुर्दशा देखकर और आर्तनाद सुनकर पशु-पक्षी आदि तिर्यक् योनि के जीव भी डर गये। कर्ण के प्रहार से मर रहे सृञ्जयगण, अपनी रक्षा के लिए, बार-बार अर्जुन और श्रीकृष्ण को वैसे ही पुकार रहे थे जैसे यमपुर में यातना भोगनेवाले प्राणी विह्वल होकर प्रेतराज को पुकारते हैं। ५०

कर्ण के बाणों से मारे जा रहे उन सैनिकों का आर्तनाद और पुकार सुनकर तथा महाघोर भार्गवास्त्र को देखकर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण, इस अमोघ भार्गवास्त्र का प्रभाव देखिए। इस अस्त्र को कोई किसी तरह व्यर्थ नहीं कर सकता। वह देखिए, महापराक्रमी कर्ण क्रुद्ध होकर, यम के समान, रणभूमि में दारुण कर्म कर रहा है। वह बारम्बार रथ के घोड़ों को हँकवाकर मेरी ओर देख रहा है, मानो मुझे युद्ध के लिए बुला रहा हो। मैं इस समय कर्ण के सामने ६०

से टल भी नहीं सकता। यदि मनुष्य का जीवन रहता है तो युद्ध में उसकी जय या पराजय होती है; किन्तु जो मर गया वह जय कहाँ से प्राप्त करेगा ?

महाराज, अर्जुन के ये वचन सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे धनञ्जय, कर्ण के प्रहारों से धर्म-राज अत्यन्त पीड़ित और जर्जर हो गये हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम पहले चलकर उन्हें देख लो और आश्वासन दो; फिर लौटकर कर्ण को मारना। महाराज, महात्मा कृष्ण चाहते थे कि इधर कर्ण अन्यान्य वीरों से लड़कर थक जायँगे और उधर अर्जुन थोड़ा सा विश्राम कर लेंगे, तब उन्हें कर्ण को मारने में आसानी होगी। यह सोचकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से पहले धर्मराज से मिल आने का अनुरोध किया। अब वे अर्जुन को लेकर युधिष्ठिर से मिलने के लिए चल दिये। धर्मराज को देखने की उत्कण्ठा के मारे अर्जुन, श्रीकृष्ण से, बार-बार तेज़ी से रथ हाँकने के लिए कहने लगे। इसी समय अश्वत्थामा के साथ उनका पूर्व-वर्णित युद्ध छिड़ गया। इन्द्र भी जिन्हें सहज में परास्त नहीं कर सकते, उन अश्वत्थामा को हराकर वीर अर्जुन सेना के भीतर धर्मराज ७० को खोजने लगे। किन्तु वे तो वहाँ थे ही नहीं, इस कारण कहीं नहीं देख पड़े।

पैंसठवाँ अध्याय

भीमसेन को रणभूमि का भार सौंपकर अर्जुन का शिविर में जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महाबली और शत्रुओं के लिए दुर्द्धर्ष अर्जुन वीर अश्वत्थामा को परास्त करने के बाद, दुष्कर कर्म करके, अपनी सेना को चारों ओर देखने लगे। सेना के अगले भाग में स्थित होकर युद्ध कर रहे शूरों को हर्षित करके अर्जुन ने उन वीरों की प्रशंसा की और उन योद्धाओं का हौसला बढ़ाया जो पहले शत्रुओं के आक्रमण से पीड़ित होने पर भी अब तक अपने रथों पर बैठे हुए समर-भूमि में डटे थे। इस प्रकार अपने योद्धाओं को सुश्रृङ्खला के साथ स्थापित करके, चारों ओर अपने बड़े भाई युधिष्ठिर को न देखकर, वीर अर्जुन भीमसेन के पास पहुँचे और उनसे पूछने लगे कि इस समय महाराज कहाँ हैं।

भीमसेन ने कहा—हे धनञ्जय, कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होने के कारण धर्मराज युधिष्ठिर यहाँ से शिविर को चले गये हैं। शायद ही वे जीते बचें।

यह सुनकर अर्जुन ने कहा—हे महानुभाव, आप शीघ्र ही धर्मराज की ख़बर लेने के लिए यहाँ से जाइए। अवश्य ही कर्ण ने बाणों से उनको गहरी चोट पहुँचाई है, तभी वे रणभूमि छोड़कर शिविर को गये हैं। पहले युद्ध में भी कर्ण ने बाणों से उन्हें पीड़ित किया था, लेकिन वे विजय की प्रतीक्षा करते हुए रणभूमि में तब तक उपस्थित रहे जब तक आचार्य नहीं मारे गये। किन्तु आज कर्ण ने उन्हें जीवन-संशय की अवस्था को पहुँचा दिया है तभी वे रणभूमि में नहीं ठहर सके। आप उनका वृत्तान्त जानने के लिए शीघ्र जाइए। मैं यहाँ, युद्ध करके, शत्रुओं को रोकूँगा।

वहाँ पहुँचकर दोनों वीर रथ से उतर पड़े। राजा युधिष्ठिर अकेले लेटे हुए थे।—पृ० २८६७

भीमसेन ने कहा—हे अर्जुन, तुम्हीं धर्मराज का हाल जानने के लिए जाओ। यदि मैं इस समय यहाँ से हट जाऊँगा तो शत्रु-पक्ष के वीरगण मुझे डरा हुआ जानकर मेरा उपहास करेंगे। अर्जुन ने फिर भीमसेन से कहा—भाई, इस समय मेरे सामने वीर संशप्तकगण युद्ध करने को खड़े हैं। इन्हें मारे बिना मैं शत्रुओं के बीच से कहीं नहीं जा सकता। अर्जुन के यों कहने पर भीमसेन ने उत्तर दिया कि हे अर्जुन, मैं अकेला ही अपने बल-वीर्य के भरोसे संशप्तकों से युद्ध करता हूँ। तुम युधिष्ठिर को देखने के लिए बेखटके चले जाओ। १०

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, तब महावीर अर्जुन युधिष्ठिर को देखने के लिए, उनके समीप, जाने के विचार से बोले—हे वासुदेव, धर्मराज को देखने के लिए मैं अत्यन्त उत्कण्ठित हो रहा हूँ। इसलिए आप झटपट इस सैन्य-सागर को छोड़कर, घोड़ों को हाँकते हुए, मुझे वहाँ ले चलिए। अब अप्रमेय प्रभावशाली श्रीकृष्ण, गरुड़ के समान वेग से चलनेवाले, घोड़ों को हाँकते हुए भीमसेन से कहने लगे—हे वीर, संशप्तकगण को मारना और रोकना तुम्हारे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हम जाते हैं, तुम शत्रुओं को चौपट करो।

भीमसेन को शत्रु-सेना के विरुद्ध खड़ा करके और युद्ध करने की आज्ञा देकर कृष्णचन्द्र बड़े वेग से घोड़ों को हाँकते हुए राजा युधिष्ठिर के शिविर की ओर चले। वहाँ पहुँचकर दोनों वीर रथ से उतर पड़े। राजा युधिष्ठिर अकेले लेटे हुए थे। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने, पास जाकर, उनके पैर छुए। धर्मराज को क्षेमपूर्वक देखकर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने आनन्द से वैसे ही उनका अभिनन्दन किया जैसे अश्विनी-कुमार इन्द्र का अभिनन्दन करें। राजा युधिष्ठिर ने भी, सूर्य के समीप उपस्थित अश्विनीकुमारों के समान, उन दोनों वीरों को देखकर—कर्ण को मारा गया समझकर—प्रसन्नता-पूर्वक वैसे ही उनका अभिनन्दन किया जैसे जम्भासुर के मारे जाने पर बृहस्पति ने इन्द्र और विष्णु का अभिनन्दन किया था। २०

सञ्जय कहते हैं—सेना के मुखिया, विशाल लाल लोचनोंवाले, वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन के सब अङ्गों में बाण लगे हुए थे, खून निकल रहा था। उन्हें ऐसे रूप में देखकर युधिष्ठिर

को निश्चय हो गया कि कर्ण अब इस लोक में नहीं है। तब प्रसन्नचित्त युधिष्ठिर मुसकुराकर,
२३ अभिनन्दन करते हुए, अर्जुन और श्रीकृष्ण से मधुर वचन कहने लगे।

छाछठवाँ अध्याय

कर्ण को मरा हुआ जानकर युधिष्ठिर का अर्जुन की प्रशंसा करना

धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा—हे श्रीकृष्ण और अर्जुन! मैं हृदय से तुम दोनों का स्वागत करता हूँ। इस समय तुम्हें देखकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ। महारथी कर्ण को मारकर तुम अछूते लौट आये, इससे अधिक आनन्द की बात और क्या होगी? लोक-प्रसिद्ध योद्धा कर्ण युद्धस्थल में ज़हरीले साँप के समान, सब शस्त्रों के युद्ध में निपुण, दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र के पुत्रों के आगे चलनेवाला, कवच के समान उनका रक्षक और उनके लिए कल्याण-स्वरूप था। धनुष हाथ में लिये महारथी वृषसेन और सुषेण नाम के दोनों पुत्र उसकी रक्षा कर रहे थे। परशुराम ने उसे अस्त्र सिखलाकर दुर्जय बना दिया था। वह पृथ्वी के योद्धाओं में अग्रगण्य, नरश्रेष्ठ और प्रसिद्ध रथी था। शत्रुओं को और उनकी सेना को मारनेवाला कर्ण सदा दुर्योधन का हित चाहता था और हमें दुःख देने को तैयार रहता था। इन्द्र सहित सब देवता भी महायुद्ध में उसे परास्त नहीं कर सकते थे। वह तेज और बल में अग्नि तथा वायु के तुल्य था। उस पाताल के समान गम्भीर (अर्थात् अथाह पराक्रमी), सुहृदों के लिए आनन्दवर्धन और मेरे मित्रों के लिए मृत्युरूप कर्ण को महायुद्ध में मारकर असुर-नाशन देवताओं के समान तुम दोनों सकुशल मेरे पास लौट आये, यह बड़े हर्ष और सौभाग्य की बात है। हे अच्युत और हे अर्जुन! उसने आज, सब प्रजा के संहार के लिए उद्यत कुपित काल की तरह, निडर होकर मुझसे घोर युद्ध किया था। धृष्टद्युम्न और सात्यकि के सामने ही कर्ण ने मेरी ध्वजा काट डाली, घोड़े मार डाले और मेरे आसपास के चक्ररक्षकों सहित सारथी को भी मार गिराया। इस तरह धृष्टद्युम्न, सात्यकि, नकुल, सहदेव, वीर शिखण्डी, द्रौपदी के पाँचों
११ पुत्र और सब पाञ्चालगण उसका कुछ नहीं कर सके। इन सबको और अन्य बहुत से वीरों को जीतकर कर्ण ने यत्न करके मुझे जीत लिया। इतना ही नहीं, उसने मेरा पीछा करके अनेक कठोर वचन भी बारम्बार कहे। अधिक क्या कहूँ, भीमसेन के ही प्रभाव से मैं इस समय जीवित बच गया हूँ। कर्ण ने जो मेरा अपमान किया है उसे मैं उसके मारे जाने पर ही सह सकता हूँ। हे धनञ्जय, कर्ण के डर से मैं तेरह वर्ष न तो रात को सोया और न दिन को ही घड़ी भर के लिए सुखी हुआ। उससे द्वेष और शत्रुता होने का ख़याल करके सदा मेरा हृदय चिन्ता से जलता रहा। मैं वाध्रीणस पक्षी * की तरह युद्ध में कर्ण के हाथ से अपनी मृत्यु जानता था।

* यह पक्षी पितृकर्म में याज्ञिकों के हाथ से मारा जाता है। इसकी गर्दन काली, सिर लाल और पङ्ख सफ़ेद होते हैं।

मैं मुद्दत से इसी चिन्ता में चूर था कि युद्ध में कर्ण किस तरह मारा जायगा। बड़े भाग्य की बात है कि आज वह समय आ गया और कर्ण मारा गया। मैं जागते-सोते सब समय कर्ण को ही स्मरण किया करता था। मुझे अब तक चारों ओर यह जगत् कर्णमय दिखाई दे रहा है।

हे अर्जुन, कर्ण के डर से मैं जहाँ जाता था वहीं मुझे, अपने आगे, कर्ण देख पड़ता था। समर से न हटनेवाले कर्ण ने आज युद्ध में, रथ और घोड़े नष्ट करके, मुझे जीत लिया और दया करके किसी तरह जीता छोड़ दिया। युद्ध में भीष्म, द्रोण और कृपाचार्य ने जो दुर्दशा मेरी नहीं की थी वही आज उसने कर डाली। हे अर्जुन, कर्ण ने जब मेरी दुर्दशा कर डाली तब मुझे जीवन या राज्य से क्या लाभ? मैं तुमसे पूछता हूँ, बतलाओ, कर्ण कुशल-पूर्वक जीवित तो नहीं है? जिस तरह तुमने कर्ण को मारा हो वह वृत्तान्त विस्तार के साथ मुझसे कहो। युद्ध में इन्द्र के तुल्य बली, पराक्रम में यमराज के समान, अस्त्रविद्या में परशुराम के सदृश कर्ण को तुमने किस तरह मारा? वह महारथी कहलाता था, सब तरह के युद्धों में निपुण था और धनुर्द्धर वीरों में श्रेष्ठ था। धृतराष्ट्र और उनके पुत्रों ने तुम्हारे वध के लिए ही सदा कर्ण का सम्मान और सत्कार किया था। उसी कर्ण को तुमने आज किस तरह मारा? दुर्योधन के सब योद्धा रण में कर्ण के हाथ से तुम्हारी मृत्यु समझते थे। हे अर्जुन, उसी कर्ण को युद्ध में तुमने किस तरह मारा? हे वीर, रुरु को मारनेवाले सिंह की तरह युद्ध कर रहे बड़े डील-डौलवाले कर्ण का सिर, उसके मित्रों के सामने, तुमने कैसे काट डाला? कर्ण युद्ध के लिए तुमको चारों ओर ढूँढ़ता फिरता था और तुम्हें दिखा देनेवाले पुरुष को रत्नों से भरा हुआ छकड़ा और छः हाथियों से युक्त रथ देने की प्रतिज्ञा कर रहा था। उस कर्ण को तुमने युद्ध में कैसे मारा? तुम्हारे हाथ से मारा गया दुरात्मा कर्ण कङ्कपत्र-युक्त तीक्ष्ण बाणों से छिन्न-भिन्न होकर रणभूमि में पड़ा है न? उसको मारकर तुमने आज मेरा प्रिय किया है न? वीरता का अभिमान रखने- वाले सूतपुत्र को समर में तुमने मार डाला है न? पापमति कर्ण सदा तुमसे युद्ध करने की लाग-डाँट रखता था और आज भी तुम्हें दिखानेवाले पुरुष को हाथी-घोड़े-बैल आदि से युक्त सुवर्ण-निर्मित रथ और राज्य देना चाहता था। उस पापबुद्धि कर्ण को तुम मार चुके हो न? अपनी शूरता के मद में मत्त होकर कर्ण कौरवों की सभा में, दुर्योधन की प्रसन्नता के लिए, सदा अपनी बड़ाई किया करता था। उस पापी को मारकर तुम निष्कण्टक हो चुके हो न? तुमसे युद्ध करके, तुम्हारे धनुष से छूटे हुए लोहमय बाणों से छिन्न-भिन्न होकर, वीरमानी कर्ण धरती पर पड़ा हुआ है न? क्या तुमने दुर्योधन की भुजाएँ तोड़ डालीं? जो दर्पयुक्त कर्ण राजाओं के बीच दुर्योधन के हर्ष को बढ़ाता हुआ मोहवश कहा करता था कि मैं सब पाण्डवों को मारूँगा, मैं ही अर्जुन को मारनेवाला हूँ, उस कर्ण को तुमने मार डाला है न? पापी कर्ण ने कुरु- सभा के बीच हमारी प्रिया द्रौपदी से रूखे और कठोर वचन कहे थे [कि "हे द्रौपदी ! पाण्डवों

२०

३०

को धिक्कार है, वे तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते, इसलिए आज तुम बिना पति की हो; क्योंकि रक्षा करने के कारण ही पति 'पति' कहलाता है",] सो उसे मारकर उसके उन वचनों को तुमने मिथ्या कर दिखाया है न ? हमारे घार शत्रु और शत्रुओं के लिए दुर्जय महाबली कर्ण ने, दुर्योधन के प्रयोजन को पूर्ण करने का निश्चय करके, बारह वर्ष से यह उग्र व्रत धारण कर रक्खा था कि समर में उग्रपराक्रमी अर्जुन को मारे बिना पैर नहीं धुलाऊँगा। आज रण में उसे मारकर तुमने उसके उक्त व्रत को तोड़ दिया है न ? दुष्टबुद्धि कर्ण ने कौरवों की सभा में सब महारथियों और राजाओं के सामने द्रौपदी से कहा था कि हे कृष्णे, तुम इन दुर्बल, पतित पाण्डवों को छोड़कर अन्य पति क्यों नहीं कर लेतीं ? दुष्ट कर्ण ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि कृष्ण सहित अर्जुन को मारे बिना नहीं लौटूँगा। वह पापमति सूतपुत्र तुम्हारे बाणों से कट-कुटकर रणशय्या में शयन कर रहा है न ? क्या तुमको ख़बर है अर्जुन कि कौरवों और सृञ्जयों के समागम में, उनके सामने, युद्ध करते समय दुष्ट कर्ण ने मेरी यह दशा
४० कर दी है ? क्या उस दुरात्मा को मारकर तुम इस समय मेरे पास आये हो ? तुमने गाण्डोव धनुष से छूटे हुए प्रज्वलित अग्नि-तुल्य उग्र बाणों से काटकर उस मन्दमति कर्ण का कुण्डल-शोभित तेजस्वी मस्तक क्या धड़ से अलग कर दिया है ? कर्ण जिस समय बाणवर्षा से मुझे पीड़ित कर रहा था उस समय, उसके मारने के लिए, मैंने तुम्हें स्मरण किया था। सो कर्ण को मारकर मेरे उस ख़याल को तुम पूरा कर चुके हो न ? कर्ण का सहारा पाकर ही दुर्योधन को इतना दर्प था कि वह हम लोगों को भस्म कर देना चाहता था और हमें उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। तुमने पराक्रम-पूर्वक कर्ण को मारकर दुर्योधन को आज निराश्रय कर दिया है न ? कुरुसभा में, कौरवों के सामने, कर्ण ने हम लोगों को षण्ढ (खोखले) तिल कहा था। उस क्रोधी कर्ण को युद्ध में क्या तुम मार आये हो ? शकुनि के साथ हुई द्यूत-क्रीड़ा में हारी गई द्रौपदी को बलपूर्वक सभा में लाने के लिए जिस दुरात्मा ने मुसकाकर दुःशासन को अनुमति दी थी, उस कर्ण को तुमने मार डाला है न ? रथातिरथ-गणना के समय पृथ्वी भर के शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पितामह भीष्म ने कर्ण को अर्धरथी बतलाया था; इसी पर बिगड़कर नीचमति कर्ण ने उनका तिरस्कार किया था। वह दुरात्मा कर्ण क्या तुम्हारे बाणों से मर गया है ? हे अर्जुन ! मेरे हृदय में कर्ण के किये अपमान की क्रोधाग्नि, उसके कपटाचार की हवा से सुलगती हुई, सदा से जल रही है। इस समय तुम यह कहकर, कि मैंने कर्ण को मार डाला, क्या उसे शान्त करोगे ? कर्ण का मारा जाना मेरे लिए अत्यन्त प्रार्थनीय है। इसलिए शीघ्र बतलाओ, तुमने उसे किस तरह मारा ? हे वीर, वृत्रासुर के मारे जाने पर विष्णु ने जैसे
४८ इन्द्र के आगमन की प्रतीक्षा की थी वैसे ही मैं अब तक तुम्हारी बाट जोह रहा था।

महाभारत के स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) जो सज्जन हमारे यहाँ महाभारत के स्थायी ग्राहकों में अपना नाम और पता लिखा देते हैं उन्हें महाभारत के अङ्कों पर २०) सैकड़ा कमीशन काट दिया जाता है। अर्थात् १।) प्रति अङ्क के बजाय स्थायी ग्राहकों को १) में प्रति अङ्क दिया जाता है। ध्यान रहे कि डाकख़र्च स्थायी और फुटकर सभी तरह के ग्राहकों को अलग देना पड़ेगा।

(२) साल भर या छः मास का मूल्य १२) या ६), दो आना प्रति अङ्क के हिसाब से रजिस्ट्री ख़र्च सहित १३॥) या ६॥।) जो सज्जन पेशगी मनीआर्डर-द्वारा भेज देंगे, केवल उन्हीं सज्जनों को डाकख़र्च नहीं देना पड़ेगा। महाभारत की प्रतियाँ राह में गुम न हो जायँ और ग्राहकों की सेवा में वे सुरक्षित रूप में पहुँच जायँ, इसी लिए रजिस्ट्री द्वारा भेजने का प्रबन्ध किया गया है।

(३) उसके प्रत्येक खंड के लिए अलग से बहुत सुन्दर जिल्दें भी सुनहले नाम के साथ तैयार कराई जाती हैं। प्रत्येक जिल्द का मूल्य ॥।) रहता है परन्तु स्थायी ग्राहकों को वे ॥) ही में मिलती हैं। जिल्दों का मूल्य महाभारत के मूल्य से बिलकुल अलग रहता है।

(४) स्थायी ग्राहकों के पास प्रतिमास प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही बिना विलम्ब वी० पी० द्वारा भेजा जाता है। बिना कारण वी० पी० लौटाने से उनका नाम ग्राहक-सूची से अलग कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकों को चाहिए कि जब किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करें तो कृपा कर अपना ग्राहक-नम्बर जो कि पता की स्लिप के साथ छपा रहता है और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक-नम्बर के लिखे हज़ारों ग्राहकों में से किसी एक का नाम ढूँढ़ निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और पत्र की कार्रवाई होने में देरी होती है। क्योंकि एक ही नाम के कई-कई ग्राहक हैं। इसलिए सब प्रकार का पत्र-व्यवहार करते तथा रुपया भेजते समय अपना ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

(६) जिन ग्राहकों को अपना पता सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो, अथवा पते में कुछ भूल हो, उन्हें कार्यालय को पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक-नम्बर भी लिखना चाहिए। जिससे उचित संशोधन करने में कोई दिक़्क़त न हुआ करे। यदि किसी ग्राहक को केवल एक दो मास के लिए ही पता बदलवाना हो, तो उन्हें अपने हलके के डाकख़ाने से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(७) ग्राहकों से सविनय निवेदन है कि नया आर्डर या किसी प्रकार का पत्र लिखने के समय यह ध्यान रक्खें कि लिखावट साफ़ साफ़ हो। अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़ साफ़ हिन्दी या अँगरेज़ी में लिखना चाहिए ताकि अङ्क या उत्तर भेजने में दुबारा पूछ-ताछ करने की ज़रूरत न हो। "हम परिचित ग्राहक हैं" यह सोच कर किसी को अपना पूरा पता लिखने में लापरवाही न करनी चाहिए।

(८) यदि कोई महाशय मनी-आर्डर से रुपया भेजें, तो 'कूपन' पर अपना पता-ठिकाना और रुपया भेजने का अभिप्राय स्पष्ट लिख दिया करें, क्योंकि मनीआर्डरफ़ार्म का यही अंश हमको मिलता है।

सब प्रकार के पत्रव्यवहार का पता—

मैनेजर महाभारत विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

आवश्यक सूचनायें

(१) हमने प्रथम खण्ड की समाप्ति पर उसके साथ एक महाभारत-कालीन भारतवर्ष का प्रामाणिक सुन्दर मानचित्र भी देने की सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में हम ग्राहकों को सूचित करते हैं कि पूरा महाभारत समाप्त हो जाने पर हम प्रत्येक ग्राहक को एक परिशिष्ट अध्याय बिना मूल्य भेजेंगे जिसमें महाभारत-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण खोज, साहित्यिक आलोचना, चरित्र-चित्रण तथा विश्लेषण आदि रहेगा। उसी परिशिष्ट के साथ ही मानचित्र भी लगा रहेगा जिसमें पाठकों को मानचित्र देख कर उपरोक्त बातें पढ़ने और समझने आदि में पूरी सुविधा रहे।

(२) महाभारत के प्रेमी ग्राहकों को यह शुभ समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कानपुर, उन्नाव, काशी (रामनगर), कलकत्ता, गाज़ीपुर, बरेली, मथुरा (वृन्दावन), जोधपुर, बुलन्दशहर, प्रयाग और लाहौर आदि में ग्राहकों के घर पर ही महाभारत के अङ्क पहुँचाने का प्रबन्ध किया है। अब तक ग्राहकों के पास यहीं से सीधे डाक-द्वारा प्रतिमास अङ्क भेजे जाते थे जिसमें प्रति अङ्क तीन चार आना खर्च होता था पर अब हमारा नियुक्त किया हुआ एजेंट ग्राहकों के पास घर पर जाकर अङ्क पहुँचाया करेगा और अङ्क का मूल्य भी ग्राहकों से वसूल कर ठीक समय पर हमारे यहाँ भेजता रहेगा। इस व्यवस्था पर ग्राहकों को ठीक समय पर प्रत्येक अङ्क सुरक्षित रूप में मिल जाया करेगा और वे डाक, रजिस्टरी तथा मनीआर्डर इत्यादि के व्यय से बच जायँगे। इस प्रकार उन्हें प्रत्येक अङ्क केवल एक रुपया मासिक देने पर ही घर बैठे मिल जाया करेगा। यथेष्ट ग्राहक मिलने पर अन्य नगरों में भी शीघ्र ही इसी प्रकार का प्रबन्ध किया जायगा। आशा है जिन स्थानों में इस प्रकार का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ के महाभारतप्रेमी सज्जन शीघ्र ही अधिक संख्या में ग्राहक बन कर इस अवसर से लाभ उठावेंगे। और जहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो चुकी है वहाँ के ग्राहकों के पास जब एजेंट अङ्क लेकर पहुँचे तो ग्राहकों को रुपया देकर अङ्क ठीक समय पर ले लेना चाहिए जिसमें उन्हें ग्राहकों के पास बार बार आने जाने का कष्ट न उठाना पड़े। यदि किसी कारण उस समय ग्राहक मूल्य देने में असमर्थ हों तो अपनी सुविधानुसार एजेंट के पास से जाकर अङ्क ले आने की कृपा किया करें।

(३) हम हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जनों से एक सहायता की प्रार्थना करते हैं। वह यही कि हम जिस विराट् आयोजन में संलग्न हुए हैं आप लोग भी कृपया इस पुण्य-पर्व में सम्मिलित होकर पुण्य-सञ्चय कीजिए, अपनी राष्ट्र-भाषा हिन्दी का साहित्य-भाण्डार पूर्ण करने में सहायक हूजिए और इस प्रकार सर्वसाधारण का हित-साधन करने का उद्योग कीजिए। सिर्फ़ इतना ही करें कि अपने दस-पाँच हिन्दी-प्रेमी इष्ट-मित्रों में से कम से कम दो स्थायी ग्राहक इस वेद-तुल्य सर्वाङ्गसुन्दर महाभारत के और बना देने की कृपा करें। जिन पुस्तकालयों में हिन्दी की पहुँच हो वहाँ इसे ज़रूर मँगवावें। एक भी समर्थ व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसके घर यह पवित्र ग्रन्थ न पहुँचे। आप सब लोगों के इस प्रकार साहाय्य करने से ही यह कार्य्य अग्रसर होकर समाज का हितसाधन करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

सड़सठवाँ अध्याय

अर्जुन का कर्ण को जीवित बताकर उसके वध की प्रतिज्ञा करना

सञ्जय ने कहा कि हे राजेन्द्र! अमित वीर्यशाली विजयी अर्जुन, कर्ण पर कुपित युधिष्ठिर के वचन सुनकर, उनसे कहने लगे—महाराज, [कर्ण को जब मालूम हुआ कि द्रोणाचार्य मारे गये और समुद्र में अथाह जल में टूटकर डूब रही नाव की सी कौरवों की दशा हो रही है, वे घबराकर शत्रुओं को जीतने के बारे में निरुत्साह हो रहे हैं, तब वह महातेजस्वी वीर सगे भाई की तरह धृतराष्ट्र के पुत्रों को उस सङ्कट से उबारने के विचार से रथ पर बैठकर युद्ध करने के लिए वेग से मेरी ओर चला।] मैं उस समय संशप्तक-सेना से युद्ध कर रहा था। राजन्, कौरव-सेना के अग्रगामी अश्वत्थामा विषैले सर्पतुल्य बाण बरसाते हुए एकाएक मेरे सामने आये। मेरी ध्वजा के अगले भाग को देखकर उन्होंने असंख्य रथियों को मुझ पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। मेघ के समान गरज रहे मेरे रथ को देखकर वे चारों ओर से मुझे घेरने लगे। मैंने फुर्ती से उनमें से पाँच सौ वीरों को मार डाला और अश्वत्थामा के सामने अपना रथ पहुँचा दिया। महावीर अश्वत्थामा ने अपने योग्य काम किया; जैसे मस्त गजराज सिंह के सामने पहुँचे वैसे उन्होंने मेरा सामना किया और मारे जा रहे कौरवों को सङ्कट से बचाने की चेष्टा की। उस समय अश्वत्थामा के साथ, आठ-आठ बैलों से खींचे जानेवाले, आठ छकड़े बाणों से

भरे थे। अश्वत्थामा ने वे सब बाण बरसाकर मुझे और श्रीकृष्ण को पीड़ित किया। आँधी जैसे मेघों को छिन्न-भिन्न करे वैसे मैं भी अश्वत्थामा के बाणों के टुकड़े-टुकड़े करने लगा। उस समय वीर अश्वत्थामा अपना अभ्यास, शिक्षा-कौशल, बाहुबल और प्रयत्नपूर्वक अस्त्र-निपुणता दिखलाकर, वर्षाकाल में काली घटा जैसे जलधारा बरसाती है वैसे, मुझ पर बाण बरसाने लगे। वे मेरे किस तरफ़ हैं, कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं और कब छोड़ते हैं, कितनी

दूरी पर हैं, यह कुछ भी मुझे नहीं जान पड़ता था, ऐसी फुर्ती वे दिखला रहे थे। यही देख पड़ता था कि अलातचक्र के समान उनका धनुष मण्डलाकार घूम रहा है और बाण सब दिशाओं को व्याप्त कर रहे हैं। अश्वत्थामा ने, अस्त्रबल के प्रभाव से, कान तक खींच-खींचकर अनेक बाण मारे। मुझे और श्रीकृष्ण को उन्होंने पाँच-पाँच तीक्ष्ण बाण मारे। तब मैंने तुरन्त वज्रतुल्य तीस बाण मारकर अश्वत्थामा को पीड़ित किया। मेरे बाण शरीर में लगने से वे शल्लकी (स्याही) १० के समान जान पड़ने लगे। बहुत घायल होने के कारण उनके शरीर से रक्त बह चला। अपने योद्धाओं को पीड़ित, ख़ून से तर और अपने को विह्वल देखकर अश्वत्थामा फुर्ती से कर्ण की रथ-सेना में चले गये। कर्ण ने जब देखा कि मेरे प्रहार से उसकी सेना नष्ट हो रही है, योद्धा लोग डरकर भाग खड़े हुए हैं और हाथियों तथा घोड़ों के झुण्ड तितर-बितर हो रहे हैं, तब वह पचास श्रेष्ठ रथियों के साथ फुर्ती से मेरे सामने आ गया। उन सब योद्धाओं को मारकर मैं, केवल कर्ण को छोड़कर, आपको देखने के लिए जल्दी से यहाँ चला आया हूँ।

महाराज, सिंह को देखकर जैसे गायों के झुण्ड घबराते हैं वैसे ही पाञ्चालगण कर्ण को देखकर डर रहे हैं। सब प्रभद्रकगण कर्ण के सामने जाकर मानों मृत्यु के मुख में पहुँच गये हैं। कर्ण ने प्रभद्रकगण के सात सौ रथी योद्धाओं को मार डाला है। वास्तव में कर्ण ने जब तक हमारी सेना पर आक्रमण नहीं किया था तब तक वह शङ्कित नहीं हुआ था। राजन्, मैंने सुना कि पहले वीर अश्वत्थामा ने तीक्ष्ण बाणों से आपको घायल किया, उसके बाद कर्ण से आपकी मुठभेड़ हो गई। मुझे निश्चय हो गया कि आप कर्ण को छोड़कर शिविर को चले आये हैं। राजन्, मैंने अबसे पहले कर्ण का ऐसा अद्भुत पराक्रम नहीं देखा था। इस समय सृञ्जय-सेना में ऐसा कोई महारथी नहीं है जो कर्ण के वेग और पराक्रम को सह सके। सागर के भारी मच्छ के समान कर्ण के ग्रास में पड़कर प्रभद्रकगण नष्ट हो रहे हैं। छः हज़ार राज-कुमार स्वर्ग पाने की इच्छा से कर्ण का सामना कर रहे हैं। हे नरेन्द्र, इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर को मारा था वैसे ही मैं इस समय कर्ण को मारूँगा। महावीर सात्यकि और धृष्टद्युम्न मेरे रथ के पहियों की रक्षा करें। वीरवर युधामन्यु और उत्तमौजा पीछे से मेरे रथ की रक्षा करते रहें। मैं अगर आज पराक्रम प्रकट करके युद्ध कर रहे कर्ण को भाई-बन्धुओं सहित न मारूँ तो हे राजसिंह, मेरी वही कष्टदायक गति हो जो अङ्गीकार या प्रतिज्ञा करके उसका पालन न करनेवाले लोगों की होती है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे रण में विजयलाभ का आशीर्वाद दें। अब मुझे रण में जाने की आज्ञा दीजिए; क्योंकि भीमसेन को अकेला पाकर धृतराष्ट्र के पुत्र पीड़ित कर रहे होंगे। आज मैं सारी सेना सहित कर्ण को और अपने २३ अन्य सब शत्रुओं को अवश्य मारूँगा।

अड़सठवाँ अध्याय

युधिष्ठिर-कृत अर्जुन का तिरस्कार

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, कर्ण के बाणों की वेदना से विह्वल धर्मराज युधिष्ठिर ने जब कर्ण को सकुशल जीवित सुन पाया तब वे अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहने लगे—हे अर्जुन, तुम्हारे सैनिक कर्ण के बाणों से पीड़ित होकर भाग रहे हैं और तुम भी कर्ण को मारने में असमर्थ होने के कारण भय से विह्वल हो, रण में अकेले भीमसेन को छोड़कर, भाग आये हो! आर्या कुन्ती के गर्भ से तुमने व्यर्थ जन्म लिया। तुमने द्वैत वन में मेरे आगे प्रतिज्ञा की थी कि मैं अकेला ही सूतपुत्र को मारूँगा। अब वह तुम्हारी प्रतिज्ञा कहाँ चली गई? कर्ण के डर से भीम को अकेले छोड़कर तुम यहाँ कैसे चले आये? तुम अगर द्वैत वन में पहले ही मुझसे कह देते कि मैं कर्ण से युद्ध नहीं कर सकूँगा, कर्ण को नहीं मार सकूँगा, तो मैं पहले ही उसका उचित प्रबन्ध करता अथवा इस तरह लड़कर राज्य लेने का विचार ही

न करता। उस समय [दुर्योधन की आधी सेना सहित कर्ण के वध की] प्रतिज्ञा करके और शत्रुओं के बीच में लाकर क्यों तुमने मुझको इस तरह उठाकर कठिन धरती पर पटक दिया? तुमने यों कर्ण से विमुख होकर फलने के समय फूले हुए वृक्ष को मानों काट डाला—हमारी बहुत दिनों की आशा पर पानी फेर दिया! मैं अत्यन्त राज्य का लोभी था, इसी कारण मांस से लिपटी हुई बंसी जैसे मछली का सर्वनाश करती है, अथवा खाने के पदार्थ में मिला हुआ विष जैसे प्राण हर लेता है, वैसे ही तुम्हारी बातों में फँसकर राज्य लेने के प्रयत्न ने मेरा सर्व-नाश कर दिया। हे मूढ़! ठीक समय पर बोया गया बीज जैसे मेघ की प्रतीक्षा करता है, वैसे ही मैं आज तक तुमसे राज्य पाने की आशा लगाये हुए था। तुमने इस तरह धोखा देकर मुझे बड़े ही असमञ्जस में—नरक में—डाल दिया। हे मन्दमति अर्जुन! जब तुम सात दिन

के थे तब आकाशवाणी हुई थी कि "हे कुन्ती, यह इन्द्र के अंश से उत्पन्न बालक अनेक युद्धों
१० में विजय प्राप्त करेगा। यह महाबली बालक देवताओं को और सब प्राणियों को खाण्डव-दाह के समय परास्त करेगा। यह वीर मद्र, कलिङ्ग, केकय आदि देशों के वीरों को और युद्ध में सामना करनेवाले दैत्यों तथा राक्षसों को मारेगा। यह दिग्विजय में पृथ्वी-मण्डल को, कौरवों और अपने सजातीयों को जीतेगा। इससे बढ़कर कोई धनुर्द्धर योद्धा अब नहीं उत्पन्न होगा। कोई भी प्राणी इसे नहीं जीत सकेगा। यह सब विद्याओं में पारङ्गत होगा और चाहेगा तो सब प्राणियों को अपने वश में कर लेगा। अदिति के गर्भ से उत्पन्न उपेन्द्र के समान यह बालक तुम्हारे गर्भ से उत्पन्न हुआ है। यह वीर बालक कान्ति में चन्द्रमा के समान, वेग में वायु के तुल्य, क्षमा में पृथ्वी सा और स्थिरता में सुमेरु पर्वत के सदृश होगा। यह प्रताप में अग्नि सा, ऐश्वर्य में कुबेर सा, तेज में सूर्य सा, शूरता में इन्द्र सा और बल-वीर्य में भगवान् विष्णु सा होगा। यह वंश का नाम बढ़ानेवाला पुत्र तुम्हें आनन्दित करेगा, स्वजनों को विजयी बनावेगा और शत्रुओं को मारने के लिए उत्पन्न हुआ है।" शतशृङ्ग पर्वत के शिखर पर, सब तपस्वियों के आगे, अन्तरिक्ष में ये वचन सुन पड़े थे; किन्तु ये वास्तव में वैसे नहीं हुए। इससे जान पड़ता है, देवता भी झूठ बोलते हैं। हे अर्जुन, अन्य ऋषि भी सदा तुम्हारी बड़ाई किया करते थे। [उनके वचन सुनकर ही मुझे आशा थी कि तुम दुर्योधन को परास्त करोगे और] इसी से मैं दुर्योधन से नहीं दबा, मैंने युद्ध छेड़ दिया। मुझे नहीं मालूम था कि तुम कर्ण से डरकर रण से भाग खड़े होगे। त्वष्टा (विश्वकर्मा) के बनाये, शब्दहीन अक्ष और चक्रों से युक्त, कपिध्वज रथ पर तुम बैठे थे; दिव्य खड्ग, सुवर्णचित्रित ताल-प्रमाण गाण्डीव धनुष बाँधे हुए थे; तुम्हारे सारथी भी नरश्रेष्ठ श्रीकृष्ण थे। फिर भी तुम कर्ण से डरकर रण से भाग आये! पहले दुर्योधन कहा करता था कि युद्ध में अर्जुन कभी महाबली कर्ण के सामने नहीं ठहर सकता। मैंने मूर्खता-वश उसके कहने पर विश्वास नहीं किया। उसी का फल यह है कि आज मैं सन्तप्त हो रहा हूँ। हाय! मैं शत्रुओं के चङ्गुल में फँसकर नरक को जाऊँगा। तुमको पहले ही कह देना था कि मैं कर्ण से युद्ध नहीं कर सकूँगा। पहले कह देते तो मैं सृञ्जय, केकय आदि अपने इष्ट-मित्रों को युद्ध का निमन्त्रण न देता। किन्तु अब तो कोई उपाय नहीं है। अब मैं कर्ण, दुर्योधन और युद्ध करने के लिए उपस्थित अन्य सब शत्रुओं को दबाने
२० के लिए क्या करूँ? हे श्रीकृष्ण, मेरे जीवन को धिक्कार है कि कर्ण ने मुझे जीतकर छोड़ दिया! दुर्योधन आदि सब कौरवों और युद्ध के लिए उपस्थित सब राजाओं के सामने कर्ण ने मेरा यह अपमान किया है। [एक भीमसेन ही मेरा रक्षक है, जिसने रण के बीच महाभय से मुझे छुड़ाया और कुपित होकर तीक्ष्ण बाण से कर्ण को पीड़ित किया। गदापाणि रक्त-चर्चित भीमसेन ने—प्रलयकाल में काल के समान समरभूमि में विचरकर, प्राणों का मोह छोड़कर, सब

युधिष्ठिर के ये वचन सुन कर अर्जुन को क्रोध चढ़ आया, उन्होंने कटुभाषी भाई को मार डालने के विचार से तलवार पर हाथ डाला। पृ० २६०५

कौरवदल के प्रधान वीरों से युद्ध किया और उन्हें हराया। इस समय भी कौरवों के बीच भीमसेन बार-बार गरज रहे हैं।] हे अर्जुन, अगर इस समय वीर अभिमन्यु होता या राक्षसेन्द्र घटोत्कच की मृत्यु न हुई होती तो कर्ण के हाथ से मेरा कभी ऐसा अपमान न होता और न मुझे रण से विमुख ही होना पड़ता। वास्तव में यह सब मेरे भाग्य का ही दोष है, पहले के किये पापों का फल है, जो तृण-तुल्य तुच्छ तुमको अपना सहायक समझकर मैंने यों धोखा खाया और कर्ण ने किसी असमर्थ अनाथ की तरह मुझे अपमानित किया। जो कोई आपत्ति से अपने को छुड़ावे वही बान्धव, स्नेही और सुहृत् है—यह ऋषियों का कथन है और यही सज्जनों द्वारा आचरित धर्म है। तुम अगर केशव को गाण्डीव धनुष देकर ख़ुद उनके सारथी बनते तो मरुद्गण सहित वज्रपाणि इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर को मारा था वैसे ही श्रीकृष्ण अवश्य कर्ण को मारकर ही लौटते। हे धनञ्जय, तुम अगर रण में विचर रहे कर्ण को नहीं मार सकते तो अपने से अधिक बली और अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण किसी राजा को गाण्डीव धनुष दे दो। तब फिर लोग हमें पापाचारी पुरुषों के लायक़ अगाध नरक में निपतित, स्त्री-पुत्र-विहीन और राज्यसुख से भ्रष्ट नहीं देख पावेंगे। हे दुरात्मन्, इस तरह कर्ण के आगे से भाग आने की अपेक्षा अगर पाँचवें महीने तुम कुन्ती के गर्भ से गिर जाते या कुन्ती के गर्भ से तुम्हारा जन्म ही न होता तो बहुत अच्छा था। और अधिक तुमसे क्या कहूँ, तुम्हारे गाण्डीव को धिक्कार है! तुम्हारे असंख्य तीक्ष्ण और अमोघ बाणों को धिक्कार है! तुम्हारे अग्निदत्त कपिध्वज रथ को भी धिक्कार है! तुम्हारे भुज-बल को धिक्कार है! ३०

उनहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का कुपित होकर युधिष्ठिर को मार डालने के लिए उठना और श्रीकृष्ण का रोक लेना

सञ्जय कहते हैं कि हे कुरुकुल-तिलक, राजा युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर अर्जुन को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने कटुभाषी भाई को मार डालने के विचार से अपनी तलवार पर हाथ डाला। वासुदेव ने क्रुद्ध अर्जुन की चेष्टा देखकर कहा—हे अर्जुन! यह क्या, तलवार क्यों निकाल रहे हो? कुछ कहो तो। यहाँ पर कोई युद्ध करने के लिए उपस्थित नहीं देख पड़ता। भीमसेन ने धृतराष्ट्र के सब पुत्रों को रोक रक्खा है; वे यहाँ आये नहीं हैं, तुम खड्ग से किसे मारना चाहते हो? यहाँ तो तुम राजा युधिष्ठिर को देखने आये हो। राजा को कुशलपूर्वक देख लिया। धर्मराज को सकुशल देखकर इस हर्ष के समय तुम्हें क्रोध क्यों आ गया? यहाँ तो ऐसा कोई नहीं देख पड़ता, जिसका तुम वध करो। फिर किस पर प्रहार करना चाहते हो? तुम्हारे चित्त को यह विभ्रम कैसा उपस्थित हुआ है? तुम अकारण ही तलवार क्यों निकाल

रहे हो ? हे अद्भुत पराक्रमी, इसी से मैं पूछता हूँ कि तुम क्या करना चाहते हो। क्रुद्ध होकर खड्ग निकालने का कारण क्या है ?

श्रीकृष्ण के यों कहने पर क्रुद्ध सर्प की तरह फुफकार रहे अर्जुन, युधिष्ठिर की ओर देखकर, कहने लगे—हे श्रीकृष्ण, आप जानते हैं कि मेरी यह प्रतिज्ञा है कि जो कोई मुझसे और किसी के हाथ में गाण्डीव धनुष देने को कहेगा उसका सिर मैं काट डालूँगा। हे जनार्दन, आपके सामने ही महाराज ने मुझसे और किसी को गाण्डीव धनुष देने के लिए कहा है। मैं इसे क्षमा नहीं कर सकता। इसलिए हे नरश्रेष्ठ, इन धर्मात्मा राजा को ही मारकर मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन करूँगा। इसी लिए मैंने खड्ग हाथ में लिया है कि धर्मराज को मारकर, प्रतिज्ञा का पालन करके, शोकशून्य और सन्तापहीन होऊँगा। हे गोविन्द, अथवा इस समय आपकी राय में मुझे क्या करना चाहिए ? क्योंकि आप इस जगत् के सब भूत-भविष्य वृत्तान्त को जानते हैं। आप जो कहेंगे वही मैं करूँगा। ११

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, अर्जुन के वचन सुनकर श्रीकृष्ण बारम्बार धिक्-धिक् कहकर अर्जुन से कहने लगे—हे धनञ्जय, इस समय तुम्हारा क्रोध देखकर और बातें सुनकर मुझे मालूम पड़ता है कि तुमने वृद्धों की सङ्गति नहीं की—बड़े-बूढ़ों से उपदेश नहीं प्राप्त किया। तुम्हारा यह क्रोध असङ्गत और असामयिक है। धर्म के अङ्गों को जाननेवाले लोग कभी ऐसा नहीं कर सकते। तुम धर्मभीरु होकर भी धर्म के यथार्थ तत्त्व को अच्छी तरह नहीं जानते। आज ऐसे कार्य में तुमको प्रवृत्त देखने से तुम मुझे मूढ़ जान पड़ते हो। हे अर्जुन, जो व्यक्ति अकर्तव्य को कर्तव्य और कर्तव्य को अकर्तव्य जानता है वह अकर्तव्य और कर्तव्य के संमिश्रण को न जाननेवाला व्यक्ति नराधम है। धर्म का अनुसरण करनेवाले बुद्धिमान् धर्म के समष्टि और

व्यष्टि रूप को जानकर काम करते हैं। तुम्हें उन बहुदर्शी पण्डितों का निश्चय नहीं मालूम। उस निश्चय को न जाननेवाला पुरुष तुम्हारी ही तरह कर्तव्य-अकर्तव्य के निर्णय में मोह को प्राप्त

होता है। कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्णय सहज नहीं है। शास्त्र के द्वारा ही कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान होता है। तुमको उसका बोध नहीं है। तुम अपने को धर्मज्ञ समझकर, अज्ञानवश होकर, धर्मरक्षा के लिए प्राणिवधरूप महापातक में डूबने को उद्यत हो। इसी से कहना पड़ता है कि न तो तुम्हें शास्त्र का ज्ञान है और न तुमने बड़े-बूढ़ों का शास्त्रसङ्गत उपदेश ही सुना है। प्राणिवध करके धर्म का पालन करना, मेरी राय में, वृथा और अधर्म है। मैं अहिंसा को ही श्रेष्ठ धर्म मानता हूँ। मेरी राय में झूठ चाहे बोल ले, लेकिन प्राणी की हिंसा करना कदापि उचित नहीं। हे नरश्रेष्ठ, तुम प्रतिज्ञा-पालन के लिए किसी साधारण मूर्ख पुरुष की तरह अपने बड़े भाई राजा और धर्मज्ञ धर्मराज का वध कैसे करना चाहते हो ? जो युद्ध न कर रहा हो, गुरु हो, अवध्य हो, विमुख हो, भाग रहा हो, शरण में आया हो, हाथ जोड़ रहा हो, असावधान और विपत्तिग्रस्त हो, उसे मारना सज्जनों की दृष्टि में सर्वथा निन्दनीय है। तुम्हारे अग्रज धर्मराज में ये सब बातें मौजूद हैं। तुमने अपने जिस व्रत का उल्लेख किया है उसे बाल-सुलभ नासमझी के कारण ही तुमने धारण किया था और इस समय उसका पालन करने के लिए जो अधर्म तुम करना चाहते हो, वह भी तुम्हारी मूर्खता ही है। हे पार्थ, तुम अपने बड़े भाई को मारने को जो उद्यत हो उसका कारण यही है कि तुम धर्म की सूक्ष्म गति को नहीं जानते। मैं तुम्हें धर्म का गूढ़ रहस्य बतलाता हूँ। इस धर्म के रहस्य को पितामह भीष्म, राजा युधिष्ठिर, विदुर, यशस्विनी गान्धारी और देवी कुन्ती ही जानती और कह सकती हैं। तुम मन लगाकर सुनो। २०–३०

साधु जन सत्य ही बोलते हैं। सत्य से बढ़कर और कुछ नहीं है। किन्तु उस सत्य का स्वरूप, मेरी समझ में, अत्यन्त सूक्ष्म और दुर्ज्ञेय है। कहीं पर सत्य न बोलकर मिथ्या बोलना ही उचित होता है। जहाँ पर सत्य मिथ्या की तरह अधर्मजनक और मिथ्या सत्य की तरह धर्मजनक होता है वहाँ वह सत्य ही मिथ्या है और मिथ्या ही सत्य है। इसके सिवा विवाह के अवसर पर, रति-क्रीड़ा के समय, प्राण-सङ्कट और सर्वस्व हरे जाने के समय (उसके बचाने के लिए) और ब्राह्मण के लिए, इन पाँच अवसरों पर झूठ बोलने से पाप नहीं होता। सर्वस्व छिना जाता हो तो वहाँ झूठ बोलना चाहिए; क्योंकि वहाँ सत्य मिथ्या के समान और मिथ्या सत्य के समान माना गया है। जो कोई सत्य और मिथ्या के इस विशेष मर्म को न जानकर सत्य बोलता है वह मूढ़ है। सत्य और मिथ्या के इस तत्त्व को जाननेवाला ही यथार्थ धर्मज्ञ है। अत्यन्त दारुण कर्म करनेवाला पुरुष भी जङ्गली अन्ध पशु के मारनेवाले बलाक व्याध की तरह धर्मज्ञ होने के कारण महापुण्य का भागी होता है और धर्मेच्छु मूढ़ पुरुष नदी-तटवासी कौशिक ब्राह्मण की तरह पाप का भागी होता है।

अर्जुन ने कहा—हे केशव, मुझे बलाक व्याध और कौशिक ब्राह्मण का वृत्तान्त विस्तार से सुनाइए, जिससे मैं इस सत्य-धर्म के सूक्ष्म तत्त्व को अच्छी तरह समझ जाऊँ। महात्मा

श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, पूर्व समय में एक ईर्ष्या-रहित अपने धर्म में निरत बलाक नाम का व्याध था जो, शौक़िया नहीं बल्कि, स्त्री-पुत्र-परिवार के पालन मात्र के लिए मृगों का वध करता था। वह उस मृग-मांस से अपने बूढ़े मा-बाप और अन्य आश्रित जनों का पालन करता था। ४० [सबको बाँटकर आप भी भोजन करता था।] एक दिन वह व्याध शिकार करने गया तो उसे कहीं पर कोई भी मृग नहीं मिला। अन्त को एक जगह उसे एक अन्धा और सूँघकर ही देखनेवाला पशु मिल गया। वैसे विचित्र पशु को उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह पशु जल पी रहा था। यह देखकर उस व्याध ने उसे मार डाला। उस अन्धे पशु के मरते ही आकाश से फूल बरसने लगे और अप्सराओं के रमणीय गाने-बजाने का शब्द अन्तरिक्ष में सुन पड़ने लगा। उसी समय व्याध को स्वर्ग ले जाने के लिए एक दिव्य विमान आया। हे अर्जुन, उस पशु ने तप करके ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था और वह वन में सब प्राणियों का संहार करता था। इसी लिए ब्रह्मा ने उस दुष्ट पशु को अन्धा बना दिया था। सब प्राणियों के संहार के लिए कृतनिश्चय उस दुष्ट पशु को मारने के कारण जो पुण्य प्राप्त हुआ उससे निष्ठुर कर्म करनेवाला वह व्याध स्वर्ग को गया। धर्म का तत्त्व ऐसा ही सूक्ष्म और दुर्बोध है।
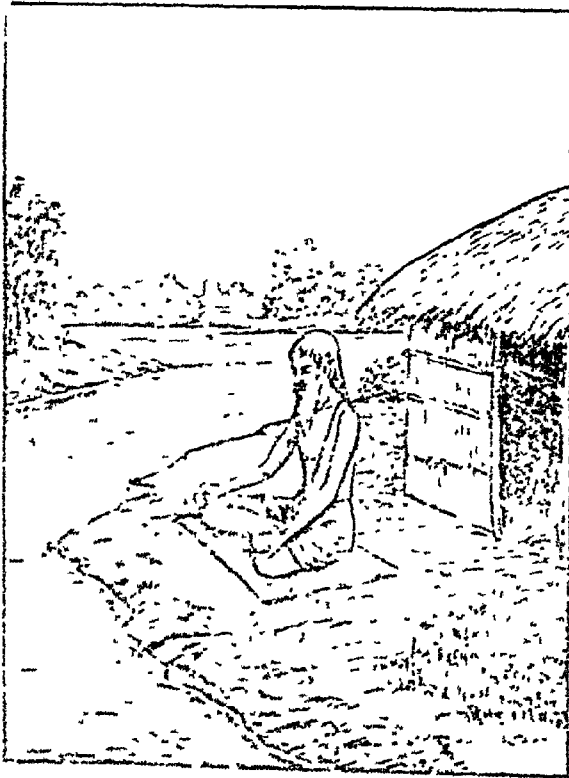
हे अर्जुन, अब दूसरा उपाख्यान सुनो। कौशिक नाम के एक शास्त्रज्ञ श्रेष्ठ तपस्वी ब्राह्मण, गाँव के पास ही, नदियों के सङ्गम पर रहते थे। सदा सत्य बोलने का व्रत धारण करने के कारण वे सत्यवादी कहलाते थे। एक दिन कुछ लोग डाकुओं के डर से वहाँ वन में जा छिपे। कुपित डाकू, उन्हें खोजते हुए, कौशिक के पास पहुँचे। उन्होंने सत्यवादी ब्राह्मण से पूछा कि भगवन्, कुछ मनुष्य इधर आये थे, सो वे किस राह से गये हैं? आपने देखा हो तो सत्य कह दीजिए। ब्राह्मण देवता कोरे सत्यवादी थे, सत्य-धर्म के सूक्ष्म तत्त्व को नहीं जानते थे। उन्होंने उन्हें डाकू जानकर भी सत्य-पालन के लिए सच-सच कह ५० दिया कि हाँ, वे लोग इस वृक्ष-लता और झाड़-झंखाड़ से परिपूर्ण वन में जा छिपे हैं। बस,

वह पशु जल पी रहा था। यह देखकर उस व्याध ने उसे मार डाला। उस अन्धे पशु के मरते ही आकाश से फूल बरसने लगे और अप्सराओं के रमणीय गाने-बजाने का शब्द अन्तरिक्ष में सुन पड़ने लगा।—पृ० २१०८

उदार-प्रकृति कृष्णचन्द्र कर्ण को मारने के लिए निश्चय किये हुए अर्जुन से फिर कहने लगे।—पृ० २६२०

उन निष्ठुर डाकुओं ने उनका पता पाकर वन में जाकर सबको मार डाला। सूक्ष्म धर्म के न जाननेवाले सत्यवादी कौशिक ने, मूढ़तावश सच बोलकर, लोगों की जो हत्या कराई थी, उसी पाप से उन्हें नरक में जाना पड़ा।

हे धनञ्जय, जो मनुष्य धर्म का निर्णय स्वयं नहीं कर सकता और अपने से अधिक ज्ञानी पुरुषों से पूछकर अपने धर्म-सम्बन्धी भ्रम को दूर भी नहीं कर लेता वह, कौशिक की ही तरह, घोर नरक में गिरता है। धर्म और अधर्म के तत्त्व का निर्णय करने के लिए उनके विशेष लक्षण शास्त्र में बताये गये हैं सही, परन्तु कहीं-कहीं बुद्धि और अनुमान के द्वारा भी अत्यन्त दुर्बोध सूक्ष्म धर्म का निर्णय करना पड़ता है। [कुछ लोग केवल सत्य को ही धर्म कहते हैं। मैं इस कथन में कुछ दोष नहीं पाता; क्योंकि यह कथन धर्म के सभी अंशों के लिए लागू नहीं है।] कुछ लोग शास्त्र को ही धर्म के सम्बन्ध में प्रमाण बतलाते हैं। मैं इस पर दोषारोपण नहीं करता। शास्त्र में प्रायः सब कुछ बता दिया गया है, फिर भी बहुत सी धर्म की विशेष बातें और अवस्थाएँ ऐसी हैं कि वैसा प्रसङ्ग कभी न आने के कारण उनका निर्णय शास्त्र में नहीं किया गया। वैसी अवस्थाओं में अवश्य ही अनुमान से काम लेना चाहिए। मैं उसी को धर्म मानता हूँ जो अहिंसा का प्रतिपादक हो; क्योंकि प्राणियों की रक्षा के लिए ही धर्म की स्थापना हुई है। जो अभ्युदय-युक्त है वही तो धर्म है। शास्त्र में लिखा है कि धारण अर्थात् रक्षा करनेवाला ही धर्म है। धर्म ही सब प्रजा की रक्षा करता है, अर्थात् जो प्रजा की—सब जीवों की—रक्षा के लिए उपयोगी है वही धर्म है। हिंसा न होने देने के लिए धर्म के नियम बने हैं। जो लोग अनुचित रीति से किसी का धन छीनना चाहें उन्हें उसका पता न बतलाया जाय, यही निश्चित धर्म है। यदि चुप रहने से चोरों के हाथ से बचाव होता हो तो बोलने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि पापियों को धन देने से वे उसके द्वारा पाप ही करेंगे, जिससे उस धन का स्वामी भी नरक-भागी होगा। और यदि लाचारी से उत्तर देना ही पड़े, बिना बोले चोरों को सन्देह हो जाने की आशङ्का हो, तो ऐसे प्रसङ्ग पर झूठ बोलना ही भला है; क्योंकि यहाँ पर मिथ्या ही सत्य है। प्राण- ६० सङ्कट, विवाह, सारी जाति के वध और हँसी-दिल्लगी में झूठ बोलना दूषित नहीं। धर्म के यथार्थ तत्त्व के ज्ञाता पण्डितों का कथन है कि इन अवसरों पर झूठ बोलने से अगर बचत होती हो तो झूठ ही बोलना चाहिए; क्योंकि वह मिथ्या ही सत्य है।

हे पार्थ, मैंने तुम्हारे हित की इच्छा से धर्म-शास्त्र और अपनी बुद्धि के अनुसार संक्षेप में धर्म का विशेष लक्षण तुमको सुना दिया। अब इस लक्षण के अनुसार विचार करके तुम्हीं कहो कि क्या तुम्हें प्रतिज्ञा-रक्षा के लिए युधिष्ठिर का वध करना चाहिए?

अर्जुन ने कहा—हे वासुदेव, आप महाप्राज्ञ और बड़े यशस्वी हैं। आपने जो कुछ कहा वह वास्तव में ठीक और हमारे लिए हितकारी है। सुहृद् और शुभचिन्तक को जो कुछ

कहना चाहिए वही आपने कहा। आप हमारे माता और पिता के तुल्य हैं। हम आपको अपनी अनन्य गति और एकमात्र आश्रय समझते हैं। त्रिभुवन भर में ऐसा कोई विषय नहीं जिसे आप न जानते हों। इसलिए आप सत्य-धर्म के यथार्थ श्रेष्ठ स्वरूप को भी अच्छी तरह ७० जानते हैं। मुझे मालूम हो गया कि युधिष्ठिर सर्वथा मेरे लिए अवध्य हैं। अब आप, मेरे मन के भाव को सुनकर, ऐसा उपाय बतलाइए कि युधिष्ठिर का वध न करने पर भी मेरी प्रतिज्ञा मिथ्या न हो। हे वासुदेव, मैं आपसे कह ही चुका हूँ कि मेरा उपांशु व्रत है कि अगर कोई मनुष्य मुझसे कहेगा कि तुम अपने से अधिक अस्त्रज्ञ वीर्यशाली पुरुष को अपना गाण्डीव धनुष दे दो, तो मैं उसे उसी दम मार डालूँगा। वीर भीमसेन की भी यह प्रतिज्ञा है कि उन्हें जो कोई पेटू कहेगा उसे वे मार डालेंगे। इस समय धर्मराज ने आपके सामने ही बार-बार मुझसे कहा कि तुम अपना गाण्डीव धनुष वृष्णिवीर श्रीकृष्ण को अथवा अन्य किसी को दे दो। अब अगर मैं इनको मार डालूँ तो घड़ी भर भी इनके बिना जीवित नहीं रह सकूँगा। इसके सिवा मैंने मोहवश धर्मराज को मारने का विचार मन में लाकर भी अपने को पापभागी बना लिया है। हे श्रेष्ठ धर्मज्ञ, अब ऐसा उपाय सोचकर बताइए कि लोगों की समझ में मेरी प्रतिज्ञा भी खण्डित न हो और युधिष्ठिर का और मेरा जीवन भी नष्ट न हो।

श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! धर्मराज थक गये थे, घायल हो गये थे, अपमान से दुःखित थे और कर्ण ने युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त पीड़ित करके उन्हें अधीर बना दिया था। इसी से दुःखित धर्मराज ने कुपित होकर ऐसे अनुचित वचन कहकर तुम्हारा तिरस्कार किया। ऐसे वचन कहने से इनका प्रयोजन यह भी था कि तुम कर्ण के ऊपर क्रोध करो; क्योंकि ये जानते हैं कि कुपित हुए बिना शायद तुम दुष्ट कर्ण को न मारो। कर्ण के ऊपर युधिष्ठिर अत्यन्त कुपित थे और यह भी जानते थे कि पापमति कर्ण को सिवा तुम्हारे और कोई नहीं मार सकता। इसी से धर्मराज ने तुम्हारे सामने ऐसे कठोर वचन कहकर तुम्हें क्रोधित किया। पाप-परायण कर्ण महादुर्द्धर्ष है; वह सदा तुमसे युद्ध करने की लाग-डाँट दिखाया करता है। आज कौरवगण कर्ण की ही बाज़ी लगाकर युद्ध कर रहे हैं। धर्मराज जानते हैं कि कर्ण को मारने से ही कौरव परास्त हो जायँगे। इसी से युधिष्ठिर वध के योग्य नहीं हैं। किन्तु तुम्हें भी अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना है। इसलिए मैं तुमको तुम्हारे योग्य ही उपाय ८० बतलाता हूँ, जिससे ये जीते ही मृत-तुल्य हो जायँ। हे पार्थ, संसार का यह नियम है कि माननीय पुरुष का जब तक सम्मान हो तभी तक वह जीवित है, और जब उसका अपमान हो तब वह जीते ही मरे के तुल्य हो जाता है। तुम और भीमसेन, नकुल, सहदेव, वृद्ध जन, शूर जन आदि सभी लोग सदा इन धर्मराज का सम्मान करते आ रहे हैं। सो आज अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए तुम कुछ इनका अपमान कर डालो। हे अर्जुन, तुम इस समय पूजनीय धर्मराज

को "तुम" कह दो। "तुम" कहना मानों गुरु जन की हत्या करना है। अथर्ववेद में यह लिखा है और महर्षि अङ्गिरा ने यही कहा है। इस समय विना विचारे तुम इस विधान का पालन करो। कल्याण चाहनेवाले मनुष्यों को ऐसे अवसर पर ऐसा ही करना चाहिए। गुरु जन को 'आप' की जगह 'तुम' कहना विना मारे ही मार डालना है। हे धर्मज्ञ, मेरे कथन के अनुसार यही उपाय तुम करो। इस तरह तुम्हारे 'तुम' सम्बोधन से अपमानित होकर धर्मराज तुम्हारे हाथ से मारे जाने के समान ही कष्ट का अनुभव करेंगे। उसके उपरान्त तुम इनके पैरों पर गिरकर अपराध क्षमा कराना और कल्याण-युक्त हितवचन कहकर शान्त कर देना। तुम्हारे बड़े भाई धर्मराज स्वयं प्राज्ञ और धर्ममार्ग के अनुगामी हैं। वे तुम्हारे किये अपमान का भेद जानकर, तुम्हें प्रतिज्ञा-पालन के लिए वैसा करने को विवश समझकर, कदापि क्रोध न करेंगे। इस तरह अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करके और भाई की हत्या के पाप से वचकर पीछे से प्रसन्नतापूर्वक तुम कर्ण को मारो। ८८

सत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन-कृत धर्मराज का तिरस्कार और आत्मप्रशंसा

सञ्जय कहते हैं कि हे राजेन्द्र! हितचिन्तक श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर, उनकी प्रशंसा करके, वीरवर अर्जुन ने जैसे कठोर वचन पहले कभी नहीं कहे थे वैसे वचन धर्मराज से कहना शुरू किया। अर्जुन ने कहा—राजन्! तुम युद्धभूमि से भागकर कोस भर पर पड़े हुए हो, इसलिए ऐसे कठोर वचन कहकर मेरा तिरस्कार करना तुम्हें नहीं सोहता। हाँ, महाबली भीमसेन मेरी निन्दा कर सकते हैं; क्योंकि वे अकेले ही वीर कौरवों से युद्ध कर रहे हैं। महावीर भीम ने यथासमय शत्रुओं को पीड़ित किया है, श्रेष्ठ-श्रेष्ठ वीर राजाओं को और अन्य शूर क्षत्रियों को मारा है, श्रेष्ठ रथियों और हाथियों को यमपुर भेजा है। रथ से उतरकर गदा हाथ में लेकर भीमसेन ने बेशक वह दुष्कर कर्म किया है जिसे और कोई नहीं कर सकता। उन्होंने सिंह-नाद करके हज़ारों हाथियों को मार गिराया है। काम्बोजों और पहाड़ी वीरों को, जो हाथियों और घोड़ों पर से युद्ध कर रहे थे, वीर भीमसेन ने वैसे ही मारा, जैसे सिंह मृगों को मार गिराता है। बड़े-बड़े रथों, पर्वताकार हाथियों और तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों को मारकर कौरवों की सेना में घुसनेवाले भीमसेन ही मुझे उलहना दे सकते हैं। इन्द्र के समान पराक्रमी भीमसेन श्रेष्ठ खड्ग, चक्र, धनुष और हाथों से ही शत्रुओं को मार रहे हैं। महाबली यम और कुबेर के समान पराक्रमी और बलपूर्वक शत्रुओं के यश और प्राणों को अकेले ही हरने-वाले भीमसेन मेरा तिरस्कार कर सकते हैं। सदा सुहृद्गण जिनकी रक्षा करते रहते हैं वह तुम मुझे कुछ नहीं कह सकते। भीमसेन अकेले ही दुर्योधन की चतुरङ्गिणी सेना का नाश कर

रहे हैं। मेघ के समान कलिङ्ग, वङ्ग, अङ्ग, निषाद, मगध देश के वीरों का मान-मर्दन और प्राण-संहार करनेवाले भीमसेन अगर मुझको कुछ कहें तो कह सकते हैं। यथासमय अश्व-संयुक्त रथ पर बैठकर, धनुष चढ़ाकर, मुट्ठी भर बाण लेकर, मेघ जैसे जलधारा की वर्षा करे, वैसे ही १० शत्रुसेना के ऊपर निर्भय होकर बाण बरसानेवाले भीमसेन ही मुझे कुछ कह सकते हैं—तुम नहीं। भीमसेन ने आज तीक्ष्ण बाणों से मस्तक-कपोल-सूँड़ आदि अङ्ग-प्रत्यङ्गों को विदीर्ण करके आठ सौ मस्त हाथियों को मार गिराया है। वही शत्रुओं को मारनेवाले वृकोदर मुझे उलहना दे सकते हैं। राजन्, ब्राह्मणों का वाक्यबल और क्षत्रियों का बाहुबल जगत् में प्रसिद्ध है। तुम स्वयं क्षत्रियबल से हीन हो और वाक्यबल का आश्रय लेकर निष्ठुरतापूर्वक मुझे बलहीन बतला रहे हो!

मैं स्त्री, पुत्र, शरीर और जीवन तक से तुम्हारा प्रिय करने का यत्न करता हूँ, तो भी तुम मुझे वाक्यबाणों से पीड़ित कर रहे हो! तुम्हारे ही कारण हमें यह अत्यन्त घोर सङ्कट प्राप्त हुआ है। मैं तुम्हारे लिए समर में महारथियों को मारता हूँ और तुम द्रौपदी की शय्या पर पड़े रहते हो। तुम्हें मेरा अपमान न करना चाहिए। द्यूतक्रीड़ा में बारम्बार प्रमत्त होकर तुमने राजपाट सब गँवा दिया। फिर तुम मेरी निन्दा कैसे कर सकते हो? राजन्! तुम्हीं सदा असावधान हो, तुम्हीं मूढ़ हो, तुम्हीं भरतवंशियों में असाधु हो। तुम्हारे ही कारण राज्य नष्ट हुआ और पाण्डव दास बने। तुम्हारे ही कारण हमें वनवास के दुःख सहने पड़े और अभिमन्यु की मृत्यु का घोर शोक प्राप्त हुआ। अपने को ऐसा नृशंस जानकर भी तुम क्यों मेरी निन्दा करते हो? राजन्, अगर तुममें कुछ भी लज्जा हो तो तुमको लज्जित होकर चुप-चाप सब तमाशा देखना चाहिए। तुम कृतघ्न हो, जो अपने उपकारी की निन्दा कर रहे हो। जो मनुष्य स्वयं अशक्त हो उसे सदा क्षमा ही करनी चाहिए। हम भाइयों को तुमसे कभी कुछ सुख नहीं मिला। तुम सबसे शङ्कित रहते हो, सब पर सन्देह करते हो। राजन्, सत्य-सन्ध पितामह ने तुम्हारे हित के लिए ही स्वयं अपनी मृत्यु का उपाय बतला दिया और उसी के अनुसार शिखण्डी ने उन महात्मा को रथ से गिराया। उस समय शिखण्डी की रक्षा और पितामह के ऊपर बाण-प्रहार करनेवाला मैं ही था, नहीं तो शिखण्डी कदापि उन्हें नहीं गिरा पाते। तुम जुआरी हो, इसलिए मैं तुम्हारे राज्यलाभ का अभिनन्दन नहीं करता (अर्थात् राज्य पाकर फिर हार दोगे)। तुमने स्वयं अनार्यजनोचित पापकर्म (द्यूतक्रीड़ा) किया और अब हम लोगों के बाहुबल से इस सङ्कट के पार जाना चाहते हो! सहदेव ने अक्षक्रीड़ा के दोष और उससे होनेवाले अधर्म का वर्णन तुम्हारे आगे किया था, तथापि तुमने उस समय द्यूतक्रीड़ा से हाथ नहीं खींचा और दास्यरूप घोर नरक में हम सबको डाल दिया। तुम जुआरी हो, तुम्हारे ही कारण राज्य हाथ से गया और हमें अनेक कष्ट भोगने पड़े। तुम्हारे ही दोष से यह शत्रु-सेना हमारे बाणों से मरती, आर्तनाद करती, पृथ्वी पर गिर रही है। तुम्हारे ही कारण कुरु-

वंश का विनाश उपस्थित है। तुम्हारे ही दोष से पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, चारों दिशाओं के राजा दोनों ओर से एकत्र होकर युद्ध में अद्भुत कार्य करते हुए परस्पर मर-कट रहे हैं। इसलिए यह सब सोचकर क्रूर वचनों की चाबुक मुझे न मारो। यह तुम्हारी अल्प बुद्धि का दोष है कि अपना ही दोष होने पर भी मुझे कटु वचनों से कुपित और व्यथित कर रहे हो। २१

सञ्जय कहते हैं—महाराज! धर्मभीरु स्थिरप्रतिज्ञ अर्जुन बड़े भाई पूजनीय धर्मराज को ये कठोर वचन सुनाने के उपरान्त, इस तरह का अल्पमात्र पापाचरण करने से, अत्यन्त खिन्न हुए। वे पछताते और दुःख से बार-बार साँसें लेते हुए फिर म्यान से तलवार निकालने लगे। तब श्रीकृष्ण ने कहा—हे पाण्डव, अब फिर तुम किस लिए आकाश के समान श्यामवर्ण तलवार निकाल रहे हो? शीघ्र मेरी बात का उत्तर दो। मैं तुम्हारा प्रयोजन पूर्ण करने के लिए सहज उपाय बता दूँगा। इस पर अत्यन्त दुःखित अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! मैंने अपने पूजनीय बड़े भाई को अकथनीय दुर्वचन सुनाकर, उनका अपमान करके, अति निन्दनीय पाप किया है। उसी के प्रायश्चित्त के लिए अब आत्महत्या कर डालूँगा। अर्जुन के ये वचन सुनकर धर्मात्मा श्रीकृष्ण कहने लगे—हे अर्जुन, तुम धर्मराज को ऐसे दुर्वाक्य सुनाने से अपने को महापातक में लिप्त जानकर फिर एक

घोर पाप करना चाहते हो। आत्महत्या महापाप है। अगर तुम खड्ग-प्रहार से धर्मनन्दन ज्येष्ठ भ्राता की हत्या कर डालते, तो फिर यह तुम्हारी धर्मभीरुता कहाँ रहती और अन्त को तुम क्या करते? सूक्ष्म धर्म की गति अति दुर्ज्ञेय है। अज्ञ या अल्पज्ञ मनुष्य उसे कदापि सहज में नहीं जान सकते। हे पार्थ, आत्महत्या करने से तुम भ्रातृ-वध की अपेक्षा भी अधिक भीषण नरक में गिरोगे। देखो, अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करना भी एक प्रकार की आत्महत्या है। विद्वानों ने यही निश्चय किया है। इसलिए तुम अब अपने मुँह से अपने गुणों का बखान करके ही अपना वध करो।

हे राजेन्द्र! श्रीकृष्ण के युक्तियुक्त वचन सुनकर, उनका अनुमोदन करके, धनुष हाथ में लेकर अर्जुन इस तरह धर्मात्मा युधिष्ठिर से "राजन्, सुनिए" कहकर आत्म-प्रशंसा करने लगे—
३० हे धर्मराज, पिनाकपाणि शङ्कर के सिवा मेरे समान धनुर्द्धर योद्धा और कोई नहीं है। मैं उन महात्मा का अनुगृहीत महारथी हूँ। मैं पल भर में इस चराचर जगत् का विनाश कर सकता हूँ। राजन्, मैंने दसों दिशाएँ जीतकर आपके अधीन कर दीं। मेरे ही बाहुबल और प्रभाव से आपने राजसूय यज्ञ निर्विघ्न समाप्त किया और ब्राह्मणों को यथेष्ट दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। मयासुर की बनाई हुई दिव्य सभा भी आपको मेरे ही प्रताप से प्राप्त हुई। मेरी हथेलियों में तीक्ष्ण बाणों के, बाण सहित धनुष के, चिह्न मौजूद हैं। मेरे तलवों में रथ, ध्वजा आदि की अनेक रेखाएँ हैं। मेरे सब लक्षण शुभ हैं। मुझ सरीखे प्रतापी शूर को कोई युद्ध में परास्त नहीं कर सकता। मैंने अकेले ही कौरवपक्ष के, चारों दिशाओं से आये हुए, महाबली महारथी राजाओं को मारा है और अद्वितीय योद्धा संशप्तकगण को अल्पावशिष्ट कर दिया है। मैंने ही कौरवों की आधी सेना का संहार किया है। देवसेना-तुल्य कौरवसेना के लोग मेरे ही बाणों से मरकर रणभूमि में शयन कर रहे हैं; अस्त्रज्ञों को मैं अस्त्रों से ही मारता हूँ। इसी से मैं बहुत लोगों को भस्म कर सकता हूँ। हे श्रीकृष्ण, हम दोनों विजयदायक रथ पर बैठकर शीघ्र ही कर्ण को मारने के लिए चलेंगे। हे वासुदेव, आज ये महाराज शान्त रहें; क्योंकि मैं रण में अवश्य ही कर्ण को अपने तीक्ष्ण बाणों से मार डालूँगा। हे भरतकुलतिलक, वीर अर्जुन फिर धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से कहने लगे—राजन्, आज या तो कर्ण की माता ही पुत्रशोक से दुखी होगी और या मैं कर्ण के हाथ से मारा गया तो कुन्ती देवी को पुत्रशोक होगा। हे नरेन्द्र! मैं सत्य कहता हूँ, प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को मारे बिना कदापि कवच नहीं उतारूँगा।

सञ्जय कहते हैं कि हे कुरुराज, अर्जुन ने धर्मराज के आगे यों कहकर धनुष और शस्त्र रख दिये, तलवार म्यान में कर ली। उसके बाद वे लज्जा से सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर, धर्मराज से कहने लगे—महाराज, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप प्रसन्न हों और कारण-वश मैंने जो कुछ कटु वचन कहे हैं उन्हें क्षमा करें। मैंने क्यों आपके साथ यह दुर्व्यवहार किया और कठोर वचन कहे, सो यथासमय आपको विदित हो जायगा। अब महातेजस्वी अर्जुन बड़े भाई के पैरों पर गिर पड़े और सन्ताप से पीड़ित अजातशत्रु राजा को प्रसन्न करके उनके सामने खड़े होकर यों कहने लगे—महाराज, कर्ण मुझसे युद्ध करने के विचार से युद्धस्थल में उपस्थित है। मैं शीघ्र ही उसको मारूँगा। मैं सच कहता हूँ, आज कर्ण के मरने से उसकी माता राधा पुत्रहीन होगी, अथवा मैं मारा जाऊँगा और कुन्ती को पुत्रशोक होगा। आज या तो कर्ण की मृत्यु होगी या मेरी। राजन्, मैं सच कहता हूँ कि मेरा यह जीवन आपका प्रिय करने के लिए ही है।
४१ अब अनुमति दीजिए तो मैं भीमसेन को समर से छुट्टी देने और कर्ण को मारने जाऊँ।

भाई के पूर्वोक्त कठोर वचनों से धर्मराज युधिष्ठिर अत्यन्त अपमानित हो चुके थे। अब शय्या से उठकर दु:खित और दीन भाव से कहने लगे—अर्जुन, नि:सन्देह मैंने अच्छा काम नहीं किया और मेरी ही करतूत से तुम सब भाइयों को घोर सङ्कट का सामना करना पड़ा तथा दु:ख सहने पड़े। मैं अत्यन्त व्यसनी, जुआरी, मूढ़मति, आलसी, भीरु, निष्ठुर, वृद्धों का अपमान करनेवाला, पापरूप और पापोपहत हूँ। मुझ नराधम के कारण ही कुरुकुल का नाश हुआ। बस, तुम मेरा सिर काट डालो। मुझ निष्ठुर का साथ देने से तुम्हें क्या लाभ? अथवा मैं पापी अभी वन को जाता हूँ। तुम मुझे छोड़कर सुख से रहो। वीर भीमसेन ही राजा होने के योग्य हैं। मैं निकम्मा और असमर्थ हूँ—राज्य लेकर क्या करूँगा? हे वीर, इस तरह अपमानित होकर मैं जीवित रहना नहीं चाहता। मुझसे अब फिर तुम्हारे ऐसे कठोर वचन नहीं सुने जा सकते। बस, भीमसेन राजा हों, मैं जाता हूँ। महाराज, अपमान के कारण क्रोध और क्षोभ से युक्त युधिष्ठिर यों कहकर सहसा शय्या छोड़कर उठ खड़े हुए और वन को जाने के लिए उद्यत हो गये। तब महात्मा वासुदेव ने प्रणत होकर उन्हें रोका और यह कहकर शान्त किया—हे राजन्, सत्य-प्रतिज्ञ महावीर अर्जुन की गाण्डीव धनुष के सम्बन्ध में जो पुरानी प्रसिद्ध प्रतिज्ञा है उसे आप जानते हैं। जो कोई इनसे अन्य किसी के हाथ में गाण्डीव धनुष दे देने के लिए कहेगा उसे ये मार डालेंगे। आपने आज अर्जुन से वही बात कही। उस अपनी प्रतिज्ञा को सच करने के लिए, सत्य-रक्षा के लिए, मेरी सलाह से अर्जुन ने वध की जगह आपका अपमान किया है; क्योंकि गुरु जन का अपमान करना ही उनका वध माना गया है। महाराज, सत्य की रक्षा के लिए लाचार होकर अर्जुन ने और मैंने जो अपराध तथा धर्म-व्यतिक्रम किया है, उसे क्षमा

कीजिए। हम दोनों आपके शरणागत अनुगत हैं। मैं स्वयं प्रणत होकर प्रार्थना करता हूँ, आप क्षमा करें। निश्चय जानिए, आज पृथ्वी अवश्य कर्ण का रुधिर पियेगी। मैं सच
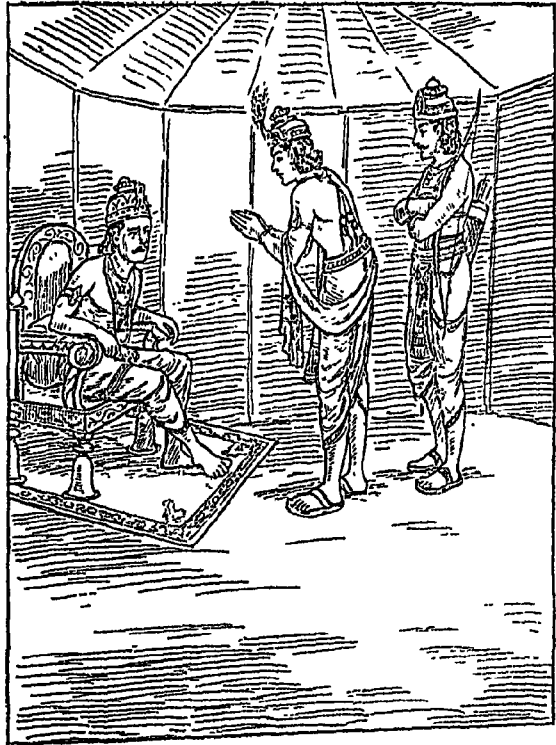
कहता हूँ, आप कर्ण को मरा हुआ ही समझिए। आप जिसका वध चाहते हैं उसकी आयु का समय समाप्त ही समझिए।

श्रीकृष्ण को यों कहकर, प्रणत होकर, क्षमा-प्रार्थना करते देख धर्मराज युधिष्ठिर ने सम्मान-पूर्वक उनको उठा लिया। धर्मराज ने हाथ जोड़कर श्रीकृष्ण से कहा—हे केशव, तुम्हारा कहना ठीक है। अर्जुन से अन्य के हाथों में गाण्डीव धनुष देने के लिए कहकर मैंने ही अनुचित किया। अब मैं समझ गया और मुझे शान्ति प्राप्त हुई। तुमने इस तरह अर्जुन की प्रतिज्ञा का निर्वाह करके हमें बचा लिया, घोर विपत्ति और सङ्कट से उबार लिया। हम दोनों भाई अज्ञान-वश मोहित हो गये थे; तुमने नाव की तरह इस उभय-सङ्कट के भयङ्कर विपत्तिसागर से हमें निकाल लिया। हे वासुदेव! तुम्हारी बुद्धिरूप नाव का आश्रय पाकर ही हम, अमात्यों और बन्धु-बान्धवों ६० सहित, दुःख और शोक के सागर के पार पहुँच गये। तुम्हीं हमारे नाथ हो।

इकहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का युधिष्ठिर को प्रसन्न करके कर्ण के वध की प्रतिज्ञा करना

सञ्जय कहते हैं—हे नरेन्द्र, श्रीकृष्ण के कहने से युधिष्ठिर को कटु वचन कहने का कुछ पातक करने के कारण जब अर्जुन उदास और दुःखित हुए तब युधिष्ठिर के प्रीति-युक्त वचन सुन-कर उन्हें मनाने और प्रसन्न करने के लिए अनुरोध करते हुए श्रीकृष्ण ने अर्जुन से हँसकर कहा—तुम अगर पैने खड्ग से धर्मनिष्ठ युधिष्ठिर का वध कर डालते तो क्या होता? धर्मराज को कठोर वचन सुनाकर ही जब तुम इस तरह दुःखित हो रहे हो तब युधिष्ठिर की हत्या करने पर तुम्हारी क्या दशा होती? इसी लिए कहा है कि धर्म अत्यन्त दुर्ज्ञेय है, विशेषकर मन्दमति लोग तो उसकी गति समझ ही नहीं सकते। तुम अगर प्रतिज्ञा-पालन-रूप धर्म की रक्षा करने के लिए बड़े भाई को मार डालते तो अवश्य ही अधर्मभागी होकर महाघोर नरक में गिरते। हे कुरुश्रेष्ठ, मेरी राय यह है कि अब तुम श्रेष्ठ धर्मात्मा धर्मराज को मना लो। भक्तिपूर्वक राजा को प्रसन्न कर चुकने के बाद हम और तुम दोनों शीघ्र ही कर्ण से युद्ध करने के लिए यहाँ से चलेंगे। तुम आज तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को मारकर महाराज को अत्यन्त प्रसन्न कर लोगे। हे महाबाहो, मेरी राय में इस समय यही कर्तव्य है कि तुम राजा युधिष्ठिर को प्रसन्न करके कर्ण को मारने १० के लिए चलो। ऐसा करने से ही तुम्हारा कार्य सम्पन्न होगा।

महाराज! अब अपनी कृति के लिए लज्जित अर्जुन, श्रीकृष्ण के कहने के अनुसार, धर्मराज के पैरों पर सिर रखकर बारम्बार कहने लगे—महाराज! प्रसन्न हूजिए, प्रसन्न हूजिए। मैंने प्रतिज्ञा-पालन-धर्म की रक्षा के लिए जो दुर्वाक्य आपको कहे हैं उन्हें क्षमा कीजिए।

अर्जुन धर्मराज के पैरों पर सिर रख कर बारम्बार कहने लगे, महाराज ! मैंने प्रतिज्ञा पालन धर्म की रक्षा के लिये जो दुर्वाक्य आपको कहे हैं, उन्हें क्षमा कीजिए। पृ० २६१६

हे भरतकुल-तिलक, शत्रुदमन अर्जुन को पैरों पर गिरकर रोते और क्षमा-प्रार्थना करते देखकर धर्मराज ने भाई को दोनों हाथों से उठाकर स्नेह-पूर्वक छाती से लगा लिया। वे आप भी आँसू बहाने लगे। इस तरह देर तक आँसू बहाने से दोनों महातेजस्वी भाइयों का हृदय शुद्ध हो गया। राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्नतापूर्वक अर्जुन को छाती से लगाकर, वारम्वार उनका मस्तक सूँघकर, हँसकर कहा—हे धनुर्द्धर अर्जुन, कर्ण ने सब सेना के सामने ही युद्ध के समय बाणों से मेरे छत्र, कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति, बाण आदि को काट डाला, मेरे घोड़े भी मार डाले, और सब वीरों को हराकर मुझे बेतरह घायल, पीड़ित और विमुख कर दिया। रण में कर्ण के उस अद्भुत कर्म और पराक्रम को देखकर मारे दुःख के मैं खिन्न हो रहा हूँ। मुझे अब अपना जीवन भी प्रिय नहीं रहा। तुम अगर आज उस वीर को नहीं मारोगे तो उस अपमान के दुःख से मैं अपने प्राण त्याग दूँगा; क्योंकि ऐसे अपमानित जीवन से क्या लाभ?

यह सुनकर अर्जुन ने कहा—राजन्! मैं सत्य की, आपके चरणों की, भीमसेन की, नकुल और सहदेव की क़सम खाकर शस्त्र को छूकर कहता हूँ कि आज या तो मैं कर्ण को मारूँगा और या कर्ण ही मुझे मार गिरावेगा। २०

हे नरेश्वर, महावीर अर्जुन ने युधिष्ठिर से यों कहकर कृष्णचन्द्र से कहा—हे माधव, आज मैं अवश्य युद्ध में कर्ण को मारूँगा। आप मेरे कल्याण के लिए दुरात्मा कर्ण के वध का अनुमोदन कीजिए। आपका भला हो। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा—हे भरतश्रेष्ठ, तुमने जो मुझसे कहा उसे तुम कर सकते हो। कर्ण का वध तुम्हीं कर सकते हो। हे महारथी, मैं नित्य यही कामना किया करता हूँ कि तुम किसी तरह रण में कर्ण को मारो। मैं यही सोचा करता हूँ कि तुम किस तरह युद्ध में कर्ण को मारोगे। महात्मा श्रीकृष्ण ने धर्मराज से कहा—महाराज, अब आप सान्त्वना देकर अर्जुन को प्रसन्न कीजिए और कर्ण को मारने की आज्ञा दीजिए। हम दोनों को जब मालूम हुआ कि आप कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर चले आये हैं, तब आपका हाल जानने के लिए हम रणभूमि से यहाँ चले आये। बड़ी बात है कि अब आप सकुशल हैं। भाग्यवश कर्ण आपको न तो मार सका और न पकड़ ही सका। अब आप अर्जुन को मधुर वचनों से सान्त्वना देकर विजय-लाभ का आशीर्वाद दीजिए।

तब धर्मराज ने अर्जुन से कहा—हे पार्थ! आओ, मेरे हृदय से लग जाओ। तुमने प्रतिज्ञा-पालन के लिए मुझे कटु वचन सुनाकर ठीक ही किया। मैं उसे क्षमा करता हूँ। अब मैं तुमको अनुमति देता हूँ, जाओ, कर्ण को मारो। मैंने अपमान के कारण घबराकर जो कुछ अनुचित वचन तुम्हें कहे हैं उनके लिए क्रोध न करना, बुरा न मानना। ३०

सञ्जय कहते हैं—हे राजेन्द्र, तब अर्जुन ने सिर नवाकर दोनों हाथों से बड़े भाई के चरण पकड़कर क्षमा-प्रार्थना की। पछता रहे पीड़ित भाई को उठाकर, गले लगाकर, मस्तक सूँघकर

धर्मराज ने कहा—हे महाबाहु, तुमने अच्छी तरह सम्मान करके मेरे हृदय की वेदना दूर कर दी। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि अविनश्वर यश और विजय प्राप्त करो।

वीरवर अर्जुन ने फिर कहा—महाराज, आज मैं अपने तीक्ष्ण बाणों से बलगर्वित कर्ण को मय उसके साथियों और सहायकों के अवश्य यमपुर भेज दूँगा। दुर्मति कर्ण ने धनुष चढ़ाकर बाणों से आपको अत्यन्त पीड़ित किया है। उस पाप का दारुण फल अभी उसे मिल जायगा। महाराज, सच कहता हूँ कि कर्ण को मारकर रण से लौटकर मैं शीघ्र ही आपके दर्शन करूँगा, आपका अभिनन्दन और सम्मान करूँगा। हे पृथ्वीनाथ! आपके चरण छूकर सत्य कहता हूँ कि कर्ण का वध किये बिना आज मैं रणभूमि से नहीं लौटूँगा।

सञ्जय कहते हैं कि धर्मपरायण युधिष्ठिर अर्जुन के वचन सुनकर, प्रसन्न होकर, कहने लगे—हे अर्जुन! तुम्हें अक्षय यश और विजय मिले, तुम्हारी इच्छा पूरी हो, शत्रु-नाश हो, वीर्य और आयु बढ़े। जाओ, देवगण तुम्हें कल्याण और वृद्धि दें। मैं जो कुछ चाहता हूँ वह सब तुम्हें प्राप्त हो। अपने अभ्युदय के लिए इन्द्र जैसे वृत्रासुर को मारने चले थे वैसे ही तुम भी जाकर कर्ण को मारो। ४०

बहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन को युद्धयात्रा के समय सगुन होना। श्रीकृष्ण का अर्जुन को उत्साहित करना

सञ्जय ने कहा कि राजन्, महाबली अर्जुन इस तरह राजा को प्रसन्न करके स्वयं भी आनन्दित हुए। वे कर्ण को मारने के लिए उद्यत होकर श्रीकृष्ण से कहने लगे—हे वासुदेव, आप मेरे रथ को फिर से सुसज्जित करके उसमें सब अस्त्र-शस्त्र रखवाइए और श्रेष्ठ घोड़े जुतवाइए। निपुण सवारों के सिखलाये हुए दिव्य घोड़े पृथ्वी पर लोट-पोटकर अपनी थकन मिटा चुके होंगे; अब उन्हें लाकर उन पर साज रखवाइए और कर्णवध के लिए मुझे रथ पर बिठाकर झटपट समरभूमि में ले चलिए।

अर्जुन के यों कहने पर श्रीकृष्ण ने अपने सारथी दारुक को बुलाया और अर्जुन की आज्ञा के अनुसार रथ सजाकर शीघ्र लाने के लिए उससे कहा। आज्ञा पाते ही दारुक फ़ौरन् रथ सजाकर ले आया और ख़बर दी कि रथ तैयार है। वीर अर्जुन रथ तैयार खड़ा देखकर, धर्मराज की आज्ञा लेकर, उस पर सवार हुए। [देवताओं की पूजा वे पहले ही कर चुके थे।] इस समय ब्राह्मणगण सुमङ्गल स्वस्त्ययन करके स्वस्तिपाठ करने लगे। कर्ण से युद्ध करने के लिए जा रहे अर्जुन को महाप्राज्ञ युधिष्ठिर ने अनेक आशीर्वाद दिये। अब प्रतापी अर्जुन का रथ बड़े

वेग से कर्ण के रथ की ओर चला। अर्जुन को आते देखकर सब प्राणियों ने महाधनुर्द्धर अर्जुन के हाथों कर्ण को मरा हुआ समझ लिया। महाराज, उस समय सब दिशाएँ चारों ओर निर्मल हो गईं। चाप, शतपत्र और क्रौञ्च नामक शुभपक्षी अर्जुन की प्रदक्षिणा करने लगे, अर्थात् उनकी दाहिनी ओर उड़ते दिखाई पड़ने लगे। पुन्नामक (अर्थात् नर) पक्षी प्रसन्नतापूर्वक शब्द करते हुए अर्जुन को विजय की सूचना देकर युद्ध की प्रेरणा करने लगे। उनके आगे-आगे कङ्क, गिद्ध, कौए, बाज़, बगले आदि पक्षी मांसाहार के लोभ से चलने लगे। इस तरह के शुभ शकुन अर्जुन को शत्रुसेना के नाश और कर्ण के वध की सूचना देने लगे। १०

राजन्, महावीर अर्जुन जिस समय युद्ध के लिए रवाना हो रहे थे उस समय उनके शरीर से लगातार पसीना निकलने लगा। उन्हें यह बड़ी चिन्ता हुई कि मैं अद्वितीय योद्धा अस्त्रबल-सम्पन्न कर्ण को मारकर कैसे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा। उस दुष्कर कर्म के लिए अर्जुन को चिन्ता करते जानकर और विषाद में मग्न देखकर प्रोत्साहित करते हुए कृष्णचन्द्र यों कहने लगे—हे महारथी अर्जुन, तुमने दिव्य गाण्डीव धनुष के द्वारा अपने बाहुबल से संग्राम में जिन वीरों को जीता है उन्हें तुम्हारे सिवा इस पृथ्वी पर और कौन मनुष्य जीत सकता था? ये बहुत से इन्द्रतुल्य पराक्रमी शूरगण समर में तुम्हारे सामने आते ही मरकर परम गति को प्राप्त हुए हैं। द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, भगदत्त, अवन्ती देश के विन्द और अनुविन्द, काम्बोज देश के सुदक्षिण, श्रुतायु, अच्युतायु आदि महारथियों से युद्ध करके कौन सकुशल जीवित रह सकता था? इन सबको मारना तुम्हारा ही काम था। तुम्हारे अस्त्र दिव्य हैं। तुममें फुर्ती, बाहु- २० बल, युद्ध में मोह को न प्राप्त होना, रण-विज्ञान, अचूक लक्ष्यवेध, लक्ष्यपात और एकाग्रता आदि सभी गुण अद्वितीय हैं और पूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं। धनुष धारण करनेवाले युद्धदुर्मद क्षत्रियों में तुम्हारे समान योद्धा मैंने देखा-सुना नहीं है। देवता, गन्धर्व, राक्षस आदि सबको तुम युद्ध में मार सकते हो; क्योंकि पृथ्वी पर तुम्हारे समान योद्धा कोई नहीं है। सब प्रजा की सृष्टि

करनेवाले प्रजापति ब्रह्मा ने ही गाण्डीव धनुष बनाया है। उसी धनुष से तुम युद्ध करते हो। इसलिए तुम्हारे समान और कोई नहीं है। किन्तु तुम्हारे हित की बात कहना अवश्य ही मेरा कर्तव्य है। हे महाबाहो, तुम कर्ण को साधारण पुरुष मत समझना। समर की शोभा बढ़ाने-वाला कर्ण भी बलवान्, दर्पपूर्ण, अस्त्रज्ञ, महारथी, युद्धकला में अद्वितीय अभ्यास रखनेवाला, विचित्र युद्ध में निपुण और देश-काल का ज्ञाता है। बहुत कहने से क्या, मैं संक्षेप में जो कुछ कहता हूँ, वह सुनो। मैं महारथी कर्ण को तुम्हारे समान अथवा यों कहो कि तुमसे अधिक समझता हूँ। इसलिए खूब एकाग्र होकर बड़े यत्न से महारण में तुम उसको मार सकोगे। वह सिंहसदृश कर्ण बड़ा बली, तेज में अग्निसदृश, वेग में वायुसदृश और क्रोध में कालसदृश है। वह महाबाहु, चौड़ी छातीवाला कर्ण अत्यन्त दुर्जय है। एक सौ अड़सठ अङ्गुल का उसका उन्नत शरीर है। अभिमानी, शूर, श्रेष्ठ वीर, दर्शनीय, योद्धाओं के सब गुणों से युक्त, मित्रों को अभय देने-
३१ वाला, सदा पाण्डवों से द्वेष रखनेवाला और दुर्योधन का हितैषी कर्ण ऐसा है कि मेरी समझ में सिवा तुम्हारे इन्द्र सहित सब देवता भी उसको नहीं मार सकते। इसलिए तुम यत्नपूर्वक आज उसे मारो। रक्त-मांस का शरीर धारण करके सब देवता भी अगर युद्ध करने आवें और यत्न-पूर्वक प्रहार करें तो वे भी योद्धा कर्ण को नहीं जीत सकते। हे अर्जुन! दुरात्मा, पापचरित्र, नृशंस, पाण्डवों के प्रति दुष्ट-बुद्धि रखनेवाले और पाण्डवों के साथ बिना किसी स्वार्थ के विरोध रखनेवाले कर्ण को आज मारकर तुम कृतकृत्य होओ। श्रेष्ठ रथी, दुर्जय कर्ण को आज मारकर धर्मराज को प्रसन्न करो। हे पार्थ, तुम्हारे वीर्य और पराक्रम को मैं ठीक-ठीक जानता हूँ। देवता और दैत्य भी मिलकर तुम्हारा सामना नहीं कर सकते। दुरात्मा कर्ण दर्प के कारण सदा पाण्डवों का अपमान करता है और उन्हें तुच्छ समझता है। दुष्ट दुर्योधन जिसके आश्रय से अपने को वीर बली समझता है, उस पाप और अनर्थ की जड़ कर्ण को तुम आज मारो। कर्ण पुरुषसिंह है, खड्ग उसकी जिह्वा है, धनुष मुख है और बाण दाढ़ें हैं। उस महावेगशाली दर्पपूर्ण कर्ण को आज मारो। तुम्हारे बल-वीर्य को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इसी से कहता हूँ कि गजराज को जैसे सिंह मारे, वैसे ही तुम रण में शूर कर्ण को मारो। दुर्योधन जिसके बाहुबल के भरोसे
४० तुम्हारे पराक्रम के प्रति अनादर प्रकट किया करता है, उसी कर्ण को तुम शीघ्र संग्राम में मारो।

तिहत्तरवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का कर्ण को ही सब अनर्थों की जड़ बताकर उसे मारने
के लिए अर्जुन को उत्तेजित करना

सञ्जय ने कहा कि हे पृथ्वीनाथ, उदार-प्रकृति कृष्णचन्द्र कर्ण को मारने के लिए निश्चय किये हुए अर्जुन से फिर कहने लगे—हे मित्र, आज इस लगातार हो रहे युद्ध का सत्रहवाँ दिन

है। इस महायुद्ध में हज़ारों हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों का संहार हो चुका है। पाण्डव-पक्ष की असंख्य सेना कौरवों से युद्ध करके मरते-मरते थोड़ी सी बच रही है। कौरवों की सेना में बहुत से रथ, हाथी, घोड़े और मनुष्य थे; किन्तु वे भी तुम-से शत्रु के सामने उपस्थित होकर मर गये हैं और क्षीण होते जाते हैं। ये आये हुए राजा लोग और सृञ्जयों सहित पाण्डवगण तुम्हारे ही दुर्द्धर्ष बाहुबल के आश्रय से कौरवों का सामना कर रहे हैं। तुम्हारे ही बलवीर्य से सुरक्षित होकर पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य, करूष, चेदि आदि देशों के शत्रुदलन वीर शत्रुसेना का नाश कर सके हैं। अर्जुन के सिवा और कौन योद्धा युद्ध में कौरवों को जीत सकता है ? मैं सच कहता हूँ, तुम रण में देवता, दैत्य, मनुष्य आदि सहित तीनों लोकों के वीरों को जीत सकते हो। यह कौरवों की सेना तो कोई चीज़ ही नहीं। तुम्हारे सिवा और कौन वीर, चाहे इन्द्रतुल्य ही क्यों न हो, राजा भगदत्त को जीत सकता है ? हे पार्थ, तुम्हारे बाहुबल से सुरक्षित पाण्डव-सेना को शत्रुपक्ष के महारथी राजा लोग आँख उठाकर देख भी नहीं सके, मारने की कौन कहे। हे अर्जुन, महावीर शिखण्डी और धृष्टद्युम्न की तुम सदा रक्षा करते रहे, इसी से वे भीष्म और द्रोण को रथ से गिरा सके। कौरवों के महारथी इन्द्रतुल्य पराक्रमी भीष्म और द्रोण को युद्ध करके भला कौन जीत सकता था ? भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, वैकर्तन कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, कृतवर्मा, जयद्रथ, शल्य, राजा दुर्योधन आदि उग्र, युद्धदुर्मद, अस्त्रज्ञ, समर से विमुख न होनेवाले, अक्षौहिणियों के रक्षक और स्वामी सब मिलकर तुम्हारे विरुद्ध खड़े हुए थे। इनको तुम्हारे सिवा और कौन इस पृथ्वी पर जीतनेवाला है ? तुम्हारे धनुष से लगातार निकल रहे बाणों से असंख्य रथ, घोड़े और हाथी नष्ट हुए हैं, सेनाएँ विदीर्ण हुई हैं, अनेक देशों से आये हुए उग्र क्रोधी क्षत्रियों का संहार हुआ है। हे अर्जुन ! दासमीय, वसाति, प्राच्य, वाटधान, अभिमानी भोजवंशी यादव आदि क्षत्रियों की असंख्य अश्व-गजपूर्ण सेना तुमसे और भीमसेन से युद्ध करके नष्ट हुई है। दुर्योधन के लिए क्रुद्ध होकर युद्ध कर रहे उग्र-स्वभाव दण्डपाणि समर-विशारद बली तुषार, यवन, खश, दार्वाभिसार, दरद, शक, माठर, तङ्गण, कोंकण, अन्ध्रक, पुलिन्द, किरात, म्लेच्छ, पार्वतीय (पहाड़ी) और सागर-तटवासी वीरों को तथा उनके सहायक कौरवों को तुम्हारे सिवा और कोई वीर योद्धा नहीं जीत सकता। दुर्योधन की विशाल सेना व्यूहरचना-पूर्वक आक्रमण कर रही थी। अगर तुम रक्षक न होते तो भला कौन उसका सामना कर सकता था ? तुम पाण्डवों की रक्षा कर रहे थे, इसी से वे क्रुद्ध होकर सागर सी उमड़ रही और धूल उड़ाकर आक्रमण कर रही शत्रुसेना को विदीर्ण और नष्ट कर सके। आज सात दिन हुए, अभिमन्यु ने मगध देश के राजा महाबली जयत्सेन को युद्ध में मारा था और उसके बाद भीमसेन ने उसके अनुगामी योद्धाओं के भयङ्कर दस हज़ार हाथियों को गदा से गिराया था। इसी तरह

१०

२०

और भी हाथियों, रथों और घोड़ों को भीमसेन ने बलपूर्वक नष्ट किया है। हे पार्थ, इस तरह महाभयङ्कर संग्राम छिड़ने पर तुमने और भीमसेन ने चतुरङ्गिणी सेना सहित कौरवदल के अनेक वीरों को यमपुर पहुँचा दिया है।

हे अर्जुन, तुम जानते ही हो कि पाण्डवों ने जब इस तरह शत्रुसेना के अगले भाग को नष्ट कर दिया, तब श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ भीष्म पितामह ने उग्र बाण बरसाकर चेदि, काशी, पाञ्चाल, करूष, मत्स्य और केकय देश की सेना को नष्ट करना शुरू कर दिया। उनके धनुष से छूटे हुए, शत्रुशरीर-विदारण, सुवर्णपुङ्ख-शोभित विकट बाणों ने आकाशमण्डल को छा लिया था। उन्होंने एक-एक मुट्ठी बाण चलाकर हज़ार-हज़ार रथी योद्धाओं को गिराना शुरू किया और इस तरह एकत्र हुए लाखों श्रेष्ठ वीरों तथा हाथियों को मार गिराया। उनके बाण दसवीं उग्र गति से जाते थे। वे दोषयुक्त नव गतियों को त्यागकर सर्वथा प्राण हरनेवाली अमोघ दूरपातिनी गति से ही बाण बरसाते थे, जिससे तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेना का अधिकांश नष्ट हो गया। इस तरह पितामह ने दस दिन तक पाण्डवसेना का संहार करके रथों को ख़ाली कर दिया और बेशुमार हाथियों, घोड़ों और पैदलों को मार डाला। धर्मयुद्ध कर रहे पितामह का रूप युद्ध में रुद्र और उपेन्द्र का सा घोर दिखाई पड़ रहा था। वे पाण्डव-सेना में घुसकर चेदि, पाञ्चाल, केकय आदि देशों के नरपतियों को और उनकी चतुरङ्गिणी सेना को प्रज्वलित प्रलयकाल की आग की तरह बाणों से भस्म कर रहे थे। युद्ध-सागर में डूब रहे मन्दमति दुर्योधन का उद्धार करने के लिए सूर्य की तरह तपते हुए विचर रहे पितामह की ओर सृञ्जयगण और अन्य राजा लोग देख भी नहीं सकते थे। श्रेष्ठ शस्त्र हाथों में लिये हज़ारों-करोड़ों पैदल योद्धा उनके बाणों से विनष्ट हो गये। विजयी भीष्म ने अकेले ही पूर्ण उद्यम से युद्ध करके पाण्डवों और सृञ्जयों को मारा और भगाया, जिससे वे पृथ्वी पर अद्वितीय वीर और योद्धा माने गये। उन्हीं वीरवर को, तुम्हारे बाहुबल से सुरक्षित, शिखण्डी ने तीक्ष्ण बाण मारकर रथ से गिरा दिया। वे पितामह इन्द्र से लड़नेवाले वृत्रासुर की तरह तुम्हारे पराक्रम से गिरकर शरशय्या पर पड़े हुए हैं।

हे धनञ्जय, उसी तरह उग्र-रूप द्रोणाचार्य ने पाँच दिन तक घोर युद्ध किया और शत्रु-सेना को मारा। उन्होंने अभेद्य चक्रव्यूह की रचना की, कई महारथियों को मारा, समर में जयद्रथ की रक्षा का प्रयत्न किया और रात्रियुद्ध में काल के समान भयंकर रूप रखकर पाण्डव-सेना को भस्म कर डाला। वीर प्रतापी महारथी द्रोणाचार्य तुम्हारे असंख्य योद्धाओं को मार-कर अन्त को धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये। उस महासमर में अगर तुम कर्ण आदि महारथियों को न रोकते तो द्रोणाचार्य कभी न मारे जा सकते। तुमने दुर्योधन की सब सेना को और महारथियों को रोक रक्खा था, तभी धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य को मार सके। हे पार्थ, जय-द्रथ-वध के अवसर पर तुमने जैसा अद्भुत कर्म किया था, उसे तुम्हारे सिवा और कौन कर

सकता था ? तुमने सारी कौरव-सेना को पीड़ित और विमुख करके, महा पराक्रमी वीर महीपालों को मारकर, अस्त्रबल से जयद्रथ को मारा। सब राजा लोग जयद्रथ-वध को अत्यन्त आश्चर्यजनक कार्य समझते हैं। किन्तु वास्तव में तुम जैसे महारथी अस्त्रज्ञ के लिए, मेरी समझ में, वह कोई आश्चर्य की बात नहीं। तुम ऐसे पराक्रमी हो कि एक दिन में सब क्षत्रियों का नाश कर सकते हो। अगर तुम एक दिन में सब क्षत्रियों का संहार कर डालो तो मुझे कुछ विस्मय न होगा; मैं उसे तुम्हारे बाहुबल और अस्त्रबल के उपयुक्त कार्य ही समझूँगा। तुम ५० घड़ी भर में अस्त्रबल से सारे संसार का संहार कर सकते हो। हे पार्थ, भीष्म और द्रोण की मृत्यु हो जाने से अब कौरव-सेना में कोई वीर नहीं रहा। उसके सब श्रेष्ठ योद्धा और अधिकांश सैनिक मर चुके हैं; अधिकांश रथ, हाथी, घोड़े और पैदल भी नष्ट हो चुके हैं। इस समय सूर्य-चन्द्र-नक्षत्रहीन आकाश की तरह कौरव-सेना प्रभाहीन हो रही है। पहले इन्द्र के पराक्रम से जैसे दानवसेना नष्ट हुई थी, वैसे ही इस समय तुम्हारे प्रभाव से कौरव-सेना नष्ट हो रही है। कौरवदल में केवल अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कर्ण, शल्य और कृपाचार्य, ये पाँच महारथी बच रहे हैं। हे पार्थ, इन पाँचों महारथियों को मारकर महाराज युधिष्ठिर को यह द्वीप-नगर-वन-पर्वत सहित सम्पूर्ण पृथ्वी का निष्कण्टक राज्य अर्पण करो और सुखी होओ। विष्णु ने जैसे दैत्य-दानवों को मारकर इन्द्र को त्रिभुवन का राज्य दिया था, वैसे ही तुम भी शत्रुओं को मारकर युधिष्ठिर को पृथ्वी का साम्राज्य अर्पण करो। पूर्व समय में विष्णु के पराक्रम से दैत्यों का संहार होने पर देवगण जैसे सन्तुष्ट हुए थे वैसे ही आज तुम्हारे बाहुबल से शत्रुओं का संहार होने पर पाञ्चाल-गण प्रसन्न होंगे। हे अर्जुन, अगर तुम नरश्रेष्ठ गुरुवर द्रोणाचार्य के सम्मान की रक्षा के लिए अश्वत्थामा पर कृपा करो और आचार्यपद का गौरव करके कृपाचार्य को छोड़ दो, अगर मातृ-कुल के सम्मान से बन्धुभाव का ख़याल करके कृतवर्मा को और मामा समझकर मद्रराज शल्य ६० को न मारो, इन चारों को दया करके छोड़ दो, तो इसमें कुछ हर्ज नहीं। यह अच्छा काम है, हम लोग भी इसका अनुमोदन करेंगे। किन्तु इस पापमति और पाण्डवों के प्रति अत्यन्त क्षुद्र विचार रखनेवाले कर्ण को अवश्य तीक्ष्ण बाणों से आज मार डालो। दुष्टात्मा कर्ण ही सब अनर्थों की जड़ है। मन्दमति दुर्योधन ने जो रात्रि के समय लाक्षागृह में तुम पाँचों भाइयों सहित आर्या कुन्ती को भस्म करने का उद्योग किया था और तुम लोगों को सभा में बुलाकर द्यूतक्रीड़ा की थी, सो सब कर्ण की ही प्रेरणा से हुआ था। दुर्मति दुर्योधन को तुम्हें सताने के लिए कर्ण ही सदा उत्साहित करता रहा है। कर्ण सदा सभा में तुम सबको मारने की प्रतिज्ञा करके दुर्योधन को तुम लोगों पर अत्याचार करने के लिए उत्साहित करता रहा है। दुर्योधन ने तुम लोगों के साथ जो कुछ दुर्व्यवहार किया, उसका प्रधान कारण कर्ण ही है। दुर्योधन सदा से समझता है कि कर्ण उसका रक्षक है। कर्ण के भरोसे पर ही दुर्मति दुर्योधन

अपनी सभा में बलपूर्वक मुझे पकड़ लेने के लिए उद्यत हुआ था। दुर्योधन निश्चित रूप से जानता है कि कर्ण युद्ध में सब पाण्डवों को मारेगा। दुर्योधन ने तुम्हारा बल और पराक्रम जानकर भी कर्ण के बल पर पाण्डवों के साथ युद्ध ठाना है। कर्ण सदा दुर्योधन के आगे राजमण्डली के बीच कहा करता है कि मैं युद्धस्थल में कृष्ण सहित सब पाण्डवों को परास्त

७० और नष्ट करूँगा। प्रतापी दुर्योधन ने भरी सभा में द्रौपदी का अपमान आदि जो कुछ कर्ण के बल पर किया है, उसे स्मरण करो और शीघ्र कर्ण को मारो।

हे अर्जुन, वृषभस्कन्ध महायशस्वी शूर अपराजित बालक अभिमन्यु ने छः महारथियों के बीच अद्भुत युद्ध किया था। उसने बारम्बार द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि वीरों को तीक्ष्ण बाणों से विचलित कर दिया था। कुरुकुल और वृष्णिवंश के यश को बढ़ानेवाला वह बालक असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को मार रहा था; हाथियों और घोड़ों की पीठों को मनुष्यों से ख़ाली और महारथियों को रथहीन कर रहा था; घोड़ों को मारता और पैदलों को शस्त्रहीन प्राणहीन करता हुआ वह अपना पराक्रम दिखाता शत्रुसेना को बाणों से भस्म कर रहा था। उसके भय से कुरुसेना के योद्धा इधर-उधर भाग रहे थे। इसी बीच में क्रूरकर्मा छः महारथियों ने मिलकर उसे मार डाला। मित्र! मैं शपथ खाकर कहता हूँ, अभिमन्यु के इस तरह मारे जाने का अन्याय और उससे उत्पन्न क्रोध हर घड़ी मेरे जी को जलाता रहता है। उस समय कर्ण ने अभिमन्यु से युद्ध किया था; परन्तु उस बालक के सामने वह ठहर नहीं सका। अभिमन्यु के प्रहार से अचेत, ख़ून से तर और पीड़ित कर्ण की बड़ी दुर्दशा हो गई थी। क्रोधान्ध कर्ण को उस बालक ने बाणों से विमुख कर दिया था। विह्वल कर्ण निरुत्साह होकर भागना चाहता था, लेकिन दुर्योधन को देखकर लज्जा के मारे अभिमन्यु के आगे से भाग नहीं सका और किसी तरह खड़ा रहा। उस समय जीवन से निराश कर्ण ने द्रोणाचार्य से अभिमन्यु के वध का उपाय पुछवाया। द्रोण ने वह क्रूर उपाय बता दिया और दुष्ट कर्ण ने बालक का

८० धनुष काट डाला। तब उस असहाय अकेले बालक को पाँच महारथियों ने घेर लिया। कपटी दुरात्मा कर्ण और अन्य पाँच महारथियों ने तीक्ष्ण बाण मारकर बालक को शस्त्रहीन कर दिया और इस तरह क्रूर कर्ण की कठोरता से ही अभिमन्यु मारा गया। दुर्योधन और कर्ण के सिवा और सबको अभिमन्यु के मारे जाने से शोक और दुःख हुआ था। इन्हीं दोनों निर्लज्जों ने हँसकर आनन्द प्रकट किया था।

हे पार्थ! कर्ण ने ही कुरुसभा में पाण्डवों के आगे कौरवों को सुनाकर द्रौपदी से कहा था कि हे द्रौपदी, हे मधुरभाषिणी! पाण्डव विनष्ट (राज्यहीन दास) होकर सदा के लिए नरकगामी हो गये, इसलिए अब तुम अन्य किसी को पति बना लो। हे कमललोचने! तुम्हारे पूर्वपति पाण्डव अब नहीं हैं, इसलिए तुम दासी होकर कुरुराज के भवन में रहो। पाण्डव

तुम्हारे प्रभु नहीं रहे; क्योंकि वे दुर्योधन के दास हो चुके। हे शोभने, दास-भार्या तुम स्वयं दासी होकर रहो। आज पृथ्वी पर राजा दुर्योधन ही सम्राट् हैं। सब राजा इन्हीं की कृपा से राज्य-सुख भोगते हैं। दुर्योधन के तेज से परास्त पाण्डव बैठे हुए एक दूसरे की ओर लाचारी से देख रहे हैं। ये खोखले तिलों के समान बेकार और नरक में निमग्न पाण्डव आज से नौकर की तरह राजा दुर्योधन की सेवा करेंगे। हे अर्जुन, दुरात्मा पापी कर्ण ने तुम्हारे आगे ही ऐसे दुर्वचन धर्मपरायणा द्रौपदी से कहे थे। तुम आज तीक्ष्ण सुवर्ण-भूषित बाणों से कर्ण का जीवन नष्ट करके उसके दुर्वचनों और अपने प्रति बुरे आचरणों का बदला चुकाओ। तुम लोगों ९० के साथ कर्ण ने जो पापाचरण किया है उसकी शान्ति बाणों से ही होगी। आज राजा लोग कर्ण को तुम्हारे बाणों से मरकर गिरते देखें। आज कर्ण, गाण्डीव धनुष के बाणों की चोट खाकर, भीष्म और द्रोण के वाक्यों को स्मरण करे। आज तुम्हारे बिजली की तरह चमकीले सुवर्णपुङ्ख नाराच बाण कर्ण के कवचों को छेदकर उसका रक्त पियें। आज कर्ण को उसके बान्धव ख़ून से तर होकर, शस्त्र फेंककर, पृथ्वी पर लोटते देखें। आज पापी कर्ण की हस्ति-कक्ष्या-चिह्नित ध्वजा तुम्हारे भल्ल बाणों से कटकर पृथ्वी पर गिरेगी। कर्ण के मरने पर मद्रराज शल्य तुम्हारे बाणों से व्यथित और अचेत होकर, कर्ण के सुवर्णालंकृत रथ को छोड़कर, भय से भागेंगे। आज कर्ण की मृत्यु देखकर दुर्योधन राज्यलाभ और जीवन से निराश हो जायगा। १०१

हे धनञ्जय, वह देखो, पाण्डवों के सहायक पाञ्चालगण कर्ण के बाणों से पीड़ित होकर भागे जा रहे हैं। इस समय द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को और धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न के पुत्रगण, नकुल, सहदेव, शतानीक, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा, सात्यकि और समस्त पाञ्चालों को कर्ण के क़ाबू में गया समझो। कर्ण के बाणों से पीड़ित, तुम्हारे परम आत्मीय, पाञ्चालों की चिल्लाहट सुनाई पड़ रही है। पहले के युद्ध में महावीर भीष्म ने अकेले ही सारी पाण्डव-सेना को बाणों से व्याप्त कर रक्खा था। लेकिन महाधनुर्द्धर शूर पाञ्चालगण उनके बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भी न तो डरे और न रण से ही विमुख हुए। भला वे योद्धा लोग कर्ण के सामने से क्यों भागने लगे! वे लोग धनुर्द्धर योद्धाओं के अस्त्रगुरु अग्निसम तेजस्वी द्रोणाचार्य को परास्त करने के लिए सदा उद्यत रहे। वे आज तक कर्ण से भी नहीं डरे और उसके आगे से नहीं भागे। किन्तु आज दुर्मति कर्ण अपने मित्र का प्रिय करने के लिए उन महाशूर, जीवन की ११ ममता छोड़कर लड़नेवाले वेगशाली पाञ्चालों को अस्त्रबल से विमुख करके वैसे ही भस्म कर रहा है, जैसे प्रचण्ड आग पतङ्गों को जलाती है। कर्ण और अन्य योद्धा इन्हें मार रहे हैं और खदेड़ रहे हैं। इसलिए हे अर्जुन! तुम शीघ्र ही नौका के समान, कर्ण के पराक्रम-सागर में डूब रहे, इन महाधनुर्द्धर पाञ्चालों का उद्धार करो। कर्ण ने उसी भयानक भार्गवास्त्र को छोड़ा है जिसे ऋषिवर परशुराम से प्राप्त किया था। यह महातेजोमय शत्रुपक्ष-क्षयकारी अस्त्र अजेय और दुर्निवार्य

है। इस अस्त्र के प्रभाव से असंख्य बाण प्रकट होकर भ्रमरपंक्ति की तरह चारों ओर फैल रहे हैं, जिनसे पाण्डव-सेना अत्यन्त पीड़ित हो रही है। पाञ्चालगण अनिवार्य अस्त्र के प्रभाव से विह्वल, व्यथित और विनष्ट होते हुए चारों ओर भाग रहे हैं। वह देखो, भीमपराक्रमी भीमसेन सृञ्जयों को रोके हुए उनके साथ कर्ण से युद्ध कर रहे हैं। किन्तु अस्त्र-युक्त तीक्ष्ण बाण उन्हें
१२० बहुत ही पीड़ित कर रहे हैं। इस समय यदि तुम कर्ण की उपेक्षा करोगे तो वह महावीर, शरीर में स्थित रोग की तरह, प्रबल होकर सब पाण्डवों, पाञ्चालों और सृञ्जयों का संहार कर डालेगा। हे पार्थ! युधिष्ठिर की सेना में और कोई ऐसा योद्धा नहीं है, जो कर्ण से युद्ध ठानकर फिर अछूता शरीर लिये लौट सके। मैं सच कहता हूँ, तुमको छोड़कर और कोई भी कर्ण सहित कौरवों को परास्त नहीं कर सकता। इसलिए अब तुम तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को मारने का महाकार्य करो। इस प्रकार प्रतिज्ञा पूरी करके यश और सुख के साथ विजयलक्ष्मी प्राप्त
१२५ करो। इसी में तुम्हारी अस्त्रशिक्षा की सार्थकता है।

चौहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन की कर्णवध-प्रतिज्ञा

सञ्जय कहते हैं—राजन्, श्रीकृष्ण के ये वचन सुनते ही क्षण भर में अर्जुन की चिन्ता और शोक सब दूर हो गया। उन्होंने सन्तुष्ट होकर कर्णवध के लिए दृढ़ निश्चय किया और गाण्डीव हाथ में लेकर, उसकी प्रत्यञ्चा को परिमार्जित करके, कहा—हे श्रीकृष्ण! आप भूत भविष्य वर्तमान त्रिकाल के ज्ञाता और प्रवर्तक हैं। आप हमारे नाथ प्रसन्न होकर सहायता कर रहे हैं, इसलिए रण में मुझे अवश्य ही विजय प्राप्त होगी। हे मित्र! मैं आपकी सहायता पाकर, कर्ण क्या चीज़ है, युद्ध में एकत्र होकर आक्रमण करने को उद्यत तीनों लोकों के प्राणियों को मार सकता हूँ। हे जनार्दन, मैं देखता हूँ कि पाञ्चालों की सेना डर के मारे भाग रही है और कर्ण निडर होकर समर में विचर रहा है। उसका छोड़ा हुआ भार्गवास्त्र, इन्द्र के वज्र की तरह, चारों ओर प्रज्वलित हो रहा है। मैं आज इस भीषण समर में कर्ण को मारूँगा और मेरे उस कार्य और यश का वर्णन तब तक लोग करते रहेंगे जब तक यह पृथ्वी रहेगी। आज मेरे विकर्ण बाण गाण्डीव धनुष से निकलकर कर्ण को अवश्य यमपुर भेजेंगे। आज राजा धृतराष्ट्र यह सोचकर पश्चात्ताप और अपनी बुद्धि की निन्दा करेंगे कि उन्होंने सर्वथा राज्य पाने के अयोग्य दुर्योधन को क्यों राजा बनाया। धृतराष्ट्र आज अवश्य ही पुत्र, राष्ट्र, राज्य, सुख और श्री से
१० रहित होंगे। आज कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन अवश्य राज्य और जीवन से निराश होकर आपके उन वाक्यों को स्मरण करेगा, जिन्हें आपने सन्धि का प्रस्ताव ले जाकर कुरुसभा में कहा था। धृतराष्ट्र को शोक करना ही चाहिए; क्योंकि जो कोई गुणी को छोड़कर निर्गुण

को प्रभु बनाता है वह विनाश को देखकर चिरकाल तक शोक करता है। जैसे कोई मन्दमति पुरुष आम का वन काटकर ढाक के पेड़ लगाता और उन्हें सींचने पर अन्त को पछताता है, वही दशा धृतराष्ट्र की होगी। जैसे कोई मूर्ख ढाक के रङ्गीन फूल देखकर उससे फल प्राप्त करना चाहे, किन्तु अन्त में पछताय, वैसे ही धृतराष्ट्र आज दुःखित होंगे। आज शकुनि को मालूम होगा कि यह युद्ध की चौसर बड़ी विकट है—इसमें बाण ही पाँसे हैं, गाण्डीव धनुप गोटों की जगह है और मेरा रथ ही उसकी 'बिसात' है। इस द्यूतक्रीड़ा में मेरी ही जीत होगी। आज मैं तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को मारकर राजा युधिष्ठिर की गई हुई नींद फिर लौटाऊँगा। वे कर्ण के डर से रात को सोते नहीं थे, अब सुख से सोवेंगे। आज धर्मराज मेरे बाणों से कर्ण की मृत्यु देखकर प्रसन्न होकर सदा सुख भोग करेंगे।

हे श्रीकृष्ण, आज मैं समर में ऐसा अमोघ अप्रतिम उग्र अनिवार्य बाण छोड़ूँगा जो अवश्य ही कर्ण के जीवन को नष्ट कर देगा। हे श्रीकृष्ण, दुरात्मा कर्ण पहले मुझे मारने के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा कर चुका है कि वह मुझे मारे बिना अपने पैर नहीं धुलावेगा। मैं आज उसके इस व्रत को निष्फल कर दूँगा और तीक्ष्ण बाणों से उसके प्राणहीन शरीर को रथ के नीचे गिरा दूँगा। जो दुर्मति कर्ण रण में किसी मनुष्य को कुछ समझता ही नहीं, उस अभिमानी के रक्त को आज अवश्य पृथ्वी पियेगी। दुर्योधन की इच्छा के अनुसार कर्ण ने कुरुसभा में अपने गुणों की प्रशंसा करके पाञ्चाली से कहा था कि "हे द्रौपदी, तुम पतिहीना हो, तुम्हारा कोई रक्षक नहीं है", सो उसके इस उपहास-वाक्य को मिथ्या करके आज विषैले नाग के समान क्रुद्ध तीक्ष्ण मेरे बाण उसका रक्त पियेंगे। आज मैं बिजली के समान चमकीले नाराच बाणों को भरज़ोर खींचकर गाण्डीव धनुप से छोड़ूँगा और वे कर्ण के प्राणों को हर लेंगे। पहले कर्ण ने कुरुसभा में पाण्डवों की निन्दा करके द्रौपदी से जो कठोर वचन कहे थे, उनके लिए उसे आज अवश्य पश्चात्ताप होगा। जो पाण्डव उस दिन कुरुसभा में खोखले तिल कहे गये थे वे ही आज, कर्ण के मारे जाने पर, सारपूर्ण तिल होंगे। मूढ़ कर्ण ने दुर्योधन से बारम्बार वादा किया है कि वह पुत्रों सहित पाण्डवों को मारकर कौरवों की रक्षा करेगा। आज उस अभिमानी कर्ण के उन वचनों को मेरे तीक्ष्ण बाण असत्य कर दिखावेंगे। अपने गुणों का गर्व और बखान करनेवाले कर्ण के बाहुबल के सहारे ही दुर्मति दुर्योधन पाण्डवों का अपमान करता आया है और कर्ण के बल पर ही उसने बड़े-बड़े मनोरथ कर रक्खे हैं। किन्तु मैं आज [उसके सब मनोरथों को व्यर्थ कर दूँगा और दुर्योधन तथा] सब राजाओं के आगे ही कर्ण को मारूँगा। आज मेरे बाणों से महावीर कर्ण पुत्रों और भाइयों सहित विनष्ट होगा और उसकी यह दशा देखकर दुर्योधन पृथ्वी, राज्य और जीवन से निराश हो जायगा—धृतराष्ट्र के पुत्रगण और कौरव-पक्ष के राजा भय-विह्वल होकर वैसे ही भागेंगे, जैसे सिंह को देखकर मृगों के झुण्ड भागते हैं।

२०

२७

आज कर्ण के मरने पर दुर्योधन अपनी करनी पर पछतायगा; उसे मालूम होगा कि अर्जुन सब धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ है। आज कर्ण के मरने पर पुत्र-पौत्र-अमात्य-सुहृद्गण सहित धृतराष्ट्र राज्य से निराश, निरानन्द और निराश्रय हो जायँगे—समृद्धिपूर्ण राज्य और लक्ष्मी से हीन हो जायँगे। आज शत्रु के मरने से धर्मपुत्र निष्कण्टक राज्य के अधिकारी होंगे। आज अनेक गिद्ध आदि मांसाहारी जीव कर्ण की लाश को इधर-उधर घसीटेंगे। आज मैं सब राजाओं के आगे पैने विपाठ और क्षुरप्र आदि विविध बाणों से पापी कर्ण के शरीर को छिन्न-भिन्न करके उसका सिर धड़ से अलग कर दूँगा। आज मैं कर्ण को मारकर और उसके अनुचर बन्धुओं का संहार करके ४१ धर्मराज को आनन्दित करूँगा। आज मेरे पराक्रम के प्रभाव और सर्पविष-सदृश अग्नितुल्य अमोघ कङ्कपत्त्र-शोभित बाणों से रणभूमि मृत राजाओं के शरीरों द्वारा पट जायगी, अभिमन्यु को मारनेवाले शत्रुओं के सिर धड़ से जुदा होंगे—उनके शरीर छिन्न-भिन्न होंगे। आज दो ही बातें होंगी; या तो मैं, इस पृथ्वी को कर्ण और धृतराष्ट्र के पुत्रों से शून्य करके, बड़े भाई धर्म-राज के हाथ में अर्पण करूँगा या आप इस पृथ्वी को अर्जुन से रहित देखेंगे।

हे कृष्णचन्द्र! आज मैं सब योद्धाओं के सामने कर्ण को मारकर अपने रथ, कौरवों के कोप, दिव्य बाण और गाण्डीव धनुष के ऋण से छुटकारा पाऊँगा। इन्द्र ने जैसे शम्बर दैत्य को मारा था वैसे ही आज कर्ण को मारकर मैं तेरह वर्ष से जमे हुए भारी दुःख से मुक्त हो जाऊँगा। आज मित्र-कार्य के लिए यत्न करनेवाले सोमवंशी महारथी कर्णवध से कृतकृत्य होकर आनन्द मनावेंगे। मैं जब कर्ण को और उसके पुत्र को मारकर विजय प्राप्त करूँगा तब वीर सात्यकि को ५० अपार हर्ष होगा। मैं कर्ण को मारकर भीमसेन, नकुल और सहदेव को प्रसन्न करूँगा और वीर धृष्टद्युम्न, शिखण्डी तथा अन्य पाञ्चालों के ऋण से छुटकारा पाऊँगा। आज सब लोग देखें कि अर्जुन कुपित होकर प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए कर्ण और कौरवों को मार रहा है।

हे कृष्णचन्द्र, मैं आपके आगे फिर अपनी प्रशंसा और पराक्रम का वर्णन करता हूँ। इस पृथ्वी पर धनुर्वेद का ज्ञाता, पराक्रमी, क्रोधी, क्षमाशील और दयावान् और कोई नहीं है। मैं धनुष हाथ में लेकर देवता, दैत्य और सब प्राणी आदि को एक साथ अपने बाहुबल से परास्त कर सकता हूँ। मेरा पौरुष सब शत्रुओं से बढ़कर है। गाण्डीव धनुष से बाण-वर्षा करके मैं अकेला ही, ग्रीष्म ऋतु में सूखी घास को जला रही आग की तरह, सब कौरवों और वाह्लीकों को नष्ट कर सकता हूँ। मेरी हथेलियों में तीक्ष्ण बाण और धनुष की रेखाएँ हैं, तलवों में रथ और ध्वजा के चिह्न मौजूद हैं। मुझ सरीखे शुभ-लक्षण-सम्पन्न पुरुष को कोई युद्ध में परास्त नहीं कर सकता।

महाराज! लोहितलोचन शत्रुनाशन अद्वितीय वीर अर्जुन श्रीकृष्ण से यों कहते हुए, ५८ भीमसेन की रक्षा और कर्ण के वध के लिए दृढ़ निश्चय करके, युद्धभूमि की ओर चले।

पचहत्तरवाँ अध्याय

युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, मेरे पक्ष के लिए भयङ्कर पाण्डवों और सृञ्जयों के युद्ध में अर्जुन के जाने पर कर्ण के साथ उनका कैसा युद्ध हुआ ? उस युद्ध का वृत्तान्त तुम मुझसे कहो।

सञ्जय कहने लगे—महाराज ! पाण्डवों और सृञ्जयों की सुसज्जित और विशाल ध्वजाओं से शोभित सेना, सुशृङ्खला के साथ, युद्धस्थल में उपस्थित हुई। वर्षा ऋतु में मेघ जैसे पवन-सञ्चालित होकर गरजते हैं, वैसे ही वे सैनिक नगाड़े बजाने और सिंहनाद करने लगे। वह भयानक संग्राम असमय में होनेवाली, अनिष्ट करनेवाली, वर्षा की तरह अत्यन्त क्रूर भाव से संहार करने लगा। बड़े-बड़े गजराज मेघघटा के समान, अस्त्रशस्त्र-वर्षा जल-धारा के समान, बाजों का शब्द, रथों की घरघराहट और तल-शब्द मेघ-गर्जन के समान, सुवर्ण-चित्रित शस्त्र-समूह चमक रही बिजलियों के समान और बाण-खड्ग-नाराच आदि अस्त्र-शस्त्र बूँदों के गिरने के समान जान पड़ते थे। वह युद्ध बड़े वेग से हो रहा था। रक्त बह रहा था। खड्ग आदि शस्त्रों के प्रहार से असंख्य क्षत्रियों के जीवन नष्ट हो रहे थे। बहुत से रथी कहीं पर एक रथी को घेरकर मार रहे थे और कहीं पर एक ही महारथी अनेक रथी योद्धाओं को यमपुर भेज रहा था। कहीं एक रथी एक रथी को और कहीं अनेक रथी अनेक रथी योद्धाओं को मार रहे थे। किसी रथी ने अपने प्रतिद्वन्द्वी रथी को सारथी और घोड़ों सहित मार डाला। कहीं किसी हाथी पर सवार योद्धा ने अनेक रथियों और घुड़सवारों को मार डाला। उस समय वीरवर अर्जुन तीक्ष्ण असंख्य बाण बरसाकर शत्रुदल के सारथी और घोड़ों सहित रथों, हाथियों, घुड़सवारों, घोड़ों और पैदलों को मार-मारकर यमपुर भेजने लगे। कृपाचार्य शिखण्डी से, दुर्योधन सात्यकि से, अश्वत्थामा श्रुतश्रवा से, चित्रसेन युधामन्यु से और कर्ण के पुत्र सुषेण पाञ्चाल-वीर उत्तमौजा से युद्ध करने लगे। साँड़ जैसे सिंह से युद्ध करे वैसे ही वीर सहदेव पाँसों के खेल में धूर्त गान्धारराज शकुनि से युद्ध करने के लिए दौड़े। नवयुवक नकुलनन्दन शतानीक कर्ण के पुत्र युवा वृषसेन के ऊपर बाण बरसाने लगे। महापराक्रमी वृषसेन भी नकुल के पुत्र को बाणों से पीड़ित करने लगे। विचित्र युद्ध में निपुण नकुल कृतवर्मा से और पाण्डवों के सेनापति धृष्टद्युम्न सैन्य सहित वीर कर्ण से युद्ध करते हुए उनको बाणों से पीड़ित करने लगे। वीर दुःशासन संशप्तकगण को साथ लेकर, मुख फैलाये क्रूर काल के समान भयङ्कर, धनुर्द्धरश्रेष्ठ असह्य वेगवाले भीमसेन के साथ युद्ध करने लगे। ११

महाबली उत्तमौजा ने बलपूर्वक बाणों से कर्णपुत्र सुषेण का सिर काट डाला। सुषेण का कटा हुआ सिर पृथ्वीतल और आकाश को प्रतिध्वनित करता हुआ धरती पर गिर पड़ा।

यह देखकर कर्ण को बड़ा दुःख और क्रोध हुआ। उन्होंने बाणों से उत्तमौजा के घोड़े मार डाले और उनके रथ और ध्वजा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उत्तमौजा तीक्ष्ण बाणों से और खड्ग से कृपाचार्य के रथ तथा चक्र-रक्षकों को नष्ट कर शिखण्डी के रथ पर सवार हो गये। कृपाचार्य को रथहीन देखकर रथ पर स्थित शिखण्डी ने उन पर बाण का प्रहार नहीं किया। इसी बीच में कीचड़ में फँसी गाय के समान सङ्कट में पड़े हुए कृपाचार्य को, अपने रथ पर बिठाकर, अश्वत्थामा ने विपत्ति से उबार लिया। दोपहर के समय तप रहे ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के समान सुवर्णकवचधारी भीमसेन भी आपके पुत्रों की सेना को अपने तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करके शत्रुओं का संहार करने लगे। १७

छिहत्तरवाँ अध्याय

भीमसेन और सारथी विशोक का संवाद

सञ्जय कहते हैं कि हे राजेन्द्र, उस महायुद्ध में असंख्य शत्रुसेना के बीच घिरे हुए अकेले भीमसेन ने अपने सारथी विशोक से कहा—हे सूत, तुम वेग से घोड़ों को हाँककर दुर्योधन की इस सेना के भीतर मुझे ले चलो। मैं अभी इन धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारे डालता हूँ। महाराज, भीमसेन की आज्ञा पाकर वह सारथी बड़े वेग से रथ को हाँकने लगा। भीमसेन जहाँ पर जाना चाहते थे वहीं पर विशोक ने उनको पहुँचा दिया। तब कुरुसेना के योद्धा लोग बेशुमार रथ, हाथी, घोड़े, पैदल साथ लेकर चारों ओर से भीमसेन पर आक्रमण करने के लिए चले और वेग से जा रहे उनके रथ और श्रेष्ठ घोड़ों पर बाण बरसाने लगे। महाबली भीमसेन भी सुवर्णपुङ्ख-शोभित बाणों से उस बाण-वर्षा को व्यर्थ कर—शत्रुओं के बाणों के दो-दो तीन-तीन टुकड़े कर—पृथ्वी पर गिराने लगे। वज्रपात से फटे हुए पहाड़ों के समान भीमसेन के बाणों से विदीर्ण असंख्य हाथी, घोड़े, रथी योद्धा और पैदल सिपाही घोर हाहाकार और आर्तनाद करने लगे। फूलों के मधु के लोभ से पक्षियों के झुण्ड जैसे किसी बड़े वृक्ष की ओर जाते हैं, वैसे ही भीमसेन के बाणों से पीड़ित प्रधान रथी राजा लोग चारों ओर से भीमसेन की ओर चले और तीक्ष्ण बाणों से उनके शरीर को छिन्न-भिन्न करने लगे। महाराज, इस तरह जब आपकी सेना ने घोर आक्रमण किया तब, प्रलयकाल में सब प्राणियों का संहार करने के लिए उद्यत दण्डपाणि काल की तरह, उग्र रूप रखकर भीमसेन बड़े वेग से चले। प्रलय के समय मुख फैलाकर सृष्टि का संहार करनेवाले काल के वेग को जैसे कोई नहीं सँभाल सकता, वैसे ही उस समय वेग से आ रहे भीमसेन के आगे आपकी सेना का कोई वीर योद्धा नहीं ठहर सका। भीमसेन के डर से सारी सेना वैसे ही भागने लगी, जैसे आँधी चलने से बादल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। भीमसेन को, संहार करते हुए, आते देखकर मारी जा रही सेना भय से विह्वल हो उठी।

उस समय महाबली भीमसेन ने आनन्दित होकर फिर अपने सारथी से कहा—हे विशोक, मैं इस समय युद्ध में ऐसा लिप्त हो रहा हूँ कि मुझे यह नहीं जान पड़ता कि सामने और आसपास उपस्थित रथों में कौन अपने पक्ष का है और कौन पराये पक्ष का है। तुम मुझे बतलाते चलो कि किस तरफ कौन मित्र है, कौन शत्रु है, जिससे मैं असावधानता-वश अपनी ही सेना को बाणों से नष्ट न कर डालूँ। चारों ओर शोकहीन शत्रुओं के रथों और ध्वजाओं को देखकर मैं क्रोधान्ध हो रहा हूँ। आज धर्मराज को शत्रुओं ने बहुत सताया है और अर्जुन भी अब तक धर्मराज के पास से लौटकर नहीं आये। इन्हीं कारणों से मैं शोक, क्षोभ और दुःख से ज्ञान-शून्य सा हो रहा हूँ। मुझे इसका बड़ा दुःख है कि धर्मराज मुझे छोड़कर शत्रुसेना के भीतर गये। मालूम नहीं, धर्मराज जीवित हैं या नहीं। कहीं ऐसा न हुआ हो कि पीड़ित धर्मराज की मृत्यु देखकर अर्जुन ने आत्महत्या कर ली हो। अर्जुन अब तक लौटकर नहीं आये, इससे मेरे मन में तरह-तरह के सन्देह हो रहे हैं। मैं अत्यन्त दुःख और क्रोध से पीड़ित हो रहा हूँ। ख़ैर, मैं इस समय एकाग्र होकर सम्पूर्ण शत्रुसेना का संहार करके ही प्रसन्नता और शान्ति प्राप्त करूँगा। मेरे इस कार्य से तुम्हें भी आनन्द होगा। अब तुम सब तरकसों को देखकर मुझे यह बताओ कि मेरे रथ पर किस-किस प्रकार के कितने-कितने बाण बच रहे हैं। १०

विशोक ने कहा—हे वीर, तुम्हारे रथ में छः अयुत (साठ हज़ार) बाण हैं। दस हज़ार क्षुरप्र बाण और इतने ही भल्ल बाण हैं। दो हज़ार नाराच बाण और तीन हज़ार प्रदर बाण हैं। इनके सिवा गदा, खड्ग, प्रास, मुद्गर, शक्ति, तोमर आदि शस्त्र भी हज़ारों हैं। तुम्हारे पास बचे हुए इतने शस्त्र हैं कि छकड़े में रखने से छः बली बैल भी उस छकड़े को नहीं खींच सकते। इसलिए तुम अपना बाहुबल दिखाते हुए बेखटके शत्रुओं पर शस्त्र चलाओ। शस्त्रों के चुक जाने की शङ्का मत करो।

भीमसेन ने कहा—हे विशोक, आज देखना, मेरे हाथों से छूटे हुए और शत्रु-राजाओं का संहार कर रहे बाणों से सारी रणभूमि पट जायगी। आकाश-मण्डल में सूर्य का प्रकाश नहीं देख पड़ेगा। यह रणभूमि यमलोक के समान भयानक हो उठेगी। आज शत्रुसेना के राजाओं के बच्चे-बच्चे तक को मालूम हो जायगा कि भीमसेन के हाथों में इतना बल है। आज या तो मैं ही मारा जाऊँगा और या अकेला मैं सब कौरवसेना को परास्त कर दूँगा। आज मैं ऐसा कर्म करूँगा कि लोग मेरे बचपन से लेकर अब तक के गुणों का बखान करेंगे। मेरा मङ्गल चाहनेवाले देवगण मुझे इस समय विजय दें, सब विघ्नों को दूर करें। श्रीकृष्ण जिनके सारथी हैं वे महारथी अर्जुन, यज्ञ में बुलाये गये इन्द्र की तरह, शीघ्र यहाँ आ जायँ।

२०

हे सूत! वह देखो, कौरव-सेना छिन्न-भिन्न हो गई और योद्धा राजा लोग चारों ओर भाग रहे हैं। इसका क्या कारण है? मुझे जान पड़ता है कि अर्जुन तीक्ष्ण बाणों से कौरव-सेना को पीड़ित करते हुए आ रहे हैं। वह देखो, असंख्य ध्वजाओं से शोभित कौरवों की चतुरङ्गिणी सेना—अगणित बाण, शक्ति आदि शस्त्रों के प्रहार से पीड़ित होकर—भाग रही है। अर्जुन के वज्र-तुल्य सुवर्णपुङ्ख अमोघ बाणों से मारी जा रही शत्रुसेना, हाहाकार करती हुई, चारों ओर चक्कर खा रही है। ये हाथियों, घोड़ों और रथों के झुण्ड पैदल सेना को रौंदते-कुचलते भाग रहे हैं। दावानल से घबराये हुए हाथियों की तरह ये कौरवदल के योद्धा भागते और हाहाकार करते हैं। नाराचों से घायल होकर बड़े-बड़े हाथी चिल्ला रहे हैं।

विशोक ने कहा—हे वीर भीमसेन, क्या तुम कुपित अर्जुन के हाथों से खींचे जा रहे गाण्डीव धनुष के घोर शब्द को नहीं सुन रहे हो? अर्जुन के धनुष की ध्वनि ने क्या तुम्हारी श्रवण-शक्ति नष्ट कर दी है? वह देखो, तुम्हारी सब अभिलाषाओं को पूर्ण करता हुआ अर्जुन की ध्वजा का वानर शत्रुओं की गजसेना के बीच उन्हें डरवाता हुआ दिखाई दे रहा है। उसे देखकर मेरे हृदय में भी भय का सञ्चार हो रहा है। वह देखो, महाबली अर्जुन के धनुष की

समरभूमि में रथों की घरघराहट और सिंहनाद सुन कर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से शीघ्र रथ हांकने के लिए कहा। पृ० २६३२

डोरी श्याम घनघटा में चमक रही बिजली की तरह शोभित हो रही है। अर्जुन का विचित्र किरीट और किरीट के मध्य में स्थित सूर्यतुल्य दिव्य बहुमूल्य मणि अपूर्व शोभा को प्राप्त हो रही है। उनके पास ही रथ पर सफ़ेद रङ्ग का, गम्भीर शब्द करनेवाला, दिव्य देवदत्त नामक शङ्ख शोभायमान है। वह देखो, घोड़ों की रास हाथ में लेकर समरस्थल में विचर रहे महात्मा कृष्णचन्द्र के पास सूर्य-सदृश तेजोमय, केशव के यश को बढ़ानेवाला, यादवों के द्वारा पूजित, पैना, वज्रनाभ सुदर्शन चक्र विद्यमान है। श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में प्रकाशमान कौस्तुभ मणि और वैजयन्ती माला सुशोभित हो रही है। वह देखो, महाबली अर्जुन क्षुरप्र बाणों से हाथियों की, साखू के पेड़ के समान लम्बी, सूँड़ें काट-काटकर गिरा रहे हैं और विकट वज्र-प्रहार से फटे हुए पहाड़ों के समान गजराज, मय अपने सवारों के, मर-मरकर पृथ्वी पर गिर रहे हैं। अवश्य ही श्रीकृष्ण-सञ्चालित सफ़ेद घोड़ों से शोभित रथ पर बैठे हुए महारथी श्रेष्ठ वीर अर्जुन शत्रुसेना को चारों ओर भगाते हुए रणस्थल में आ रहे हैं। वह देखो, गरुड़ के पङ्खों की प्रचण्ड वायु से उखड़कर गिरनेवाले महावन के वृक्षों की तरह ये इन्द्रतुल्य तुम्हारे भाई अर्जुन के बाणों से विदीर्ण शत्रुपक्ष के असंख्य रथ, हाथी, घोड़े और पैदल पृथ्वी पर गिर रहे हैं। देखो, अर्जुन ने समर में मय सारथी और घोड़ों के ये चार सौ रथ तीक्ष्ण बाणों से नष्ट कर डाले हैं। उन्हीं के बाणों से सात सौ हाथी, असंख्य घुड़सवार और पैदल योद्धा मारे जा चुके हैं। वह देखो, धूमकेतु ग्रह के समान कौरवों का नाश करते हुए बली अर्जुन तुम्हारे निकट आ रहे हैं। हे पाण्डव! तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई, तुम्हारे शत्रु मारे गये। तुम्हारी आयु और बल बढ़े। ३१

विशोक के ये वचन सुनकर भीमसेन बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—हे विशोक, तुमने अर्जुन के आने का प्रिय समाचार सुनाया है, इसलिए अत्यन्त प्रसन्न होकर मैं तुमको उसके पुरस्कार में सौ दासियाँ, बीस रथ और चौदह गाँव देता हूँ। ४०

सतहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन के पराक्रम का वर्णन। भीमसेन का शकुनि को परास्त करना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, समरभूमि में रथों की घरघराहट और सिंहनाद सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से शीघ्र रथ हाँकने के लिए कहा। श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, जहाँ पर भीमसेन युद्ध कर रहे हैं वहाँ मैं तुमको अभी पहुँचाता हूँ। अब उन्होंने मणि-मोतियों के साज से शोभित और सोने के जाल से अलङ्कृत घोड़ों को हवा के समान वेग से हाँक दिया। जम्भासुर को मारने के लिए जा रहे कुपित वज्रपाणि इन्द्र के समान अर्जुन को लेकर वे घोड़े वेग से चले। कौरवों की चतुरङ्गिणी सेना (रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों के झुण्ड)

बाणों की सनसनाहट, पहियों की घरघराहट और टापों की धमक से पृथ्वी को कँपाती और शब्दायमान करती हुई आगे बढ़ी। विजयाभिलाषी अर्जुन को आते देखकर कौरवसेना के प्रधान-प्रधान वीर कुपित होकर उनकी ओर बढ़े। अब देह-पाप-प्राणहारी घोर युद्ध होने लगा। त्रैलोक्य की रक्षा के लिए त्रिलोकीनाथ विष्णु ने जैसे असुरों से युद्ध किया था, वैसे ही विजयी वीर अर्जुन कौरवदल के योद्धाओं से दारुण युद्ध करने लगे। अकेले अर्जुन क्षुरप्र, अर्धचन्द्र और तीक्ष्ण भल्ल बाणों से शत्रुओं के चलाये हुए छोटे-बड़े शस्त्रों को काटकर उनके सिर और हाथ आदि अङ्गों को तथा छत्रों, चामरों, ध्वजाओं, घोड़ों, रथों, पैदलों और हाथियों को वैसे ही काट-काटकर गिराने लगे, जैसे घोर आँधी बड़े वन के वृक्षों को उखाड़कर तोड़-फोड़कर धरती पर लिटा देती है। वीरगण अर्जुन के बाणों से कट-कटकर गिरने लगे। सुवर्णजाल-शोभित, ध्वजा-पताका और योद्धाओं से युक्त बड़े-बड़े हाथी सुवर्णपुङ्खसंयुत बाणों के लगने से दावानल से प्रज्वलित पर्वतों के समान शोभा को प्राप्त हुए।

हे भरतकुलश्रेष्ठ! महापराक्रमी अर्जुन इस तरह वज्र-सदृश बाणों से बहुत से हाथियों, घोड़ों और रथों को छिन्न-भिन्न करके—बल दानव को मारने के लिए जा रहे इन्द्र की तरह—कर्ण को मारने के विचार से शीघ्रता के साथ आगे बढ़ने लगे। वीर अर्जुन ने, सागर के भीतर १० मच्छ या मगर की तरह, शत्रुसेना में प्रवेश किया। उत्साह-युक्त कौरवपक्ष के वीरगण अपार चतुरङ्गिणी सेना लेकर बड़े वेग से अर्जुन का सामना करने लगे। उनके चलने से वैसा ही तुमुल कोलाहल हुआ, जैसा क्षोभ को प्राप्त महासागर की लहरों से शब्द उत्पन्न होता है। इस तरह वे सिंह-सदृश पराक्रमी महारथी प्राणों का मोह छोड़कर अर्जुन के सामने आये। प्रबल आँधी जैसे घोर मेघजाल को छिन्न-भिन्न करे वैसे ही अर्जुन, घोर बाण बरसा रहे, उस सेना को अपने बाणों से विह्वल और नष्ट करने लगे। तब उन योद्धाओं ने फिर एकत्र होकर रथों से अर्जुन को घेर लिया। वे सब मिलकर तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को पीड़ित करने लगे। उनके बाणों से घायल अर्जुन ने क्रोध करके बाण-प्रहार से हज़ारों रथों, हाथियों और घोड़ों को मारना शुरू कर दिया। अर्जुन के धनुष से छूटे हुए बाणों के असह्य प्रहार से महारथी लोग विह्वल, भयाकुल और निश्चेष्ट होकर अपने-अपने रथों में छिपने लगे। उनमें से विजय के लिए यत्न कर रहे चार सौ वीर महारथियों को अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से यमपुर भेज दिया। बचे हुए योद्धा अर्जुन के विविध बाणों की चोट न सह सके और उनको छोड़कर चारों ओर भागने लगे। वे जब भागने लगे तब वैसा ही कोलाहल सुनाई पड़ने लगा जैसा पर्वत २० से टकराने पर जल-प्रवाह में शब्द उत्पन्न होता है। उस सेना को बाणों से अत्यन्त पीड़ित और नष्ट करके वीर अर्जुन फिर कर्ण की सेना की ओर वेग से चले; क्योंकि इस सेना के भागने से आगे की राह साफ़ हो गई थी। पूर्व समय में जब गरुड़ ने नागों पर आक्रमण

किया था तब नाग-मण्डली में जैसा कोलाहल हुआ था वैसा ही कोलाहल इस समय, अर्जुन को कर्ण की ओर जाते देखकर, कौरवसेना में होने लगा।

राजन्, तब फुर्तीले भीमसेन उस महाकोलाहल को सुनकर अर्जुन को देखने की इच्छा से बहुत ही प्रसन्न हुए। उनके आने की ख़बर पाते ही प्रतापी भीमसेन प्राणपण से आपकी सेना को मारने लगे। वेग और पराक्रम में वायु के समान भीमसेन उस समय सर्वत्र विचरनेवाले वायु की तरह फुर्ती से सब ओर जाकर शत्रुओं को चौपट करने लगे। भीमसेन के पराक्रम से पीड़ित कौरवसेना, सागर में टूटी हुई नाव की तरह, सङ्कट में पड़कर भागने लगी। भीमसेन उस समय फुर्ती दिखाकर तीक्ष्ण बाणों से उस सेना को नष्ट करने लगे। हे भरतश्रेष्ठ, भीमसेन के असाधारण बल को देखकर सब योद्धा भय से व्याकुल हो उठे। उन्हें भीमसेन प्रलयकाल में सर्व-संहार करनेवाले काल के समान जान पड़ने लगे।

राजन्, भीमसेन को इस तरह कौरवसेना का संहार करते देखकर राजा दुर्योधन ने अपने सैनिकों और महाधनुर्द्धर योद्धाओं से कहा—हे वीरो, तुम सब मिलकर भीमसेन को मार डालो। मैं समझता हूँ, भीमसेन को मार लिया तो मानों सारी शत्रुसेना को मार लिया; क्योंकि फिर उसे नष्ट करना कुछ कठिन न होगा। हे नरनाथ, सब राजा लोग आपके पुत्र की यह आज्ञा पाते ही चारों ओर से भीमसेन पर बाणों की वर्षा करने लगे। भीमसेन बाणों से छिप गये। उधर जय की इच्छा रखनेवाले अनेक शूरों ने भीमसेन को हाथियों और रथों से घेर लिया। उन शूरों के बीच में शूर-श्रेष्ठ भीमसेन नक्षत्रों के मध्यगत पूर्ण चन्द्र के समान शोभित हुए। परिपूर्ण चन्द्रमा जैसे मण्डल पड़ने पर शोभा को प्राप्त होता है वैसे ही उस घेरे के बीच भीमसेन शोभायमान हुए। क्रोध से लाल आँखें करके भीमसेन की ओर देख रहे सब राजा लोग, उन्हें मार डालने के लिए, मिलकर उन पर बाण बरसाने लगे। उस समय भीमसेन ने अर्जुन के ही समान पराक्रम दिखलाया। मछली जैसे जल में जाल को तोड़कर निकल जाय वैसे ही तीक्ष्ण बाणों से उस महासेना को छिन्न-भिन्न करके वे उस घेरे से निकल गये। विमुख न होनेवाले दस हज़ार हाथियों, दो लाख दो सौ मनुष्यों, पाँच हज़ार घोड़ों और एक सौ रथों को नष्ट करके भीमसेन ने वैतरणी के समान, भीरु जनों के लिए भयङ्कर, रक्त की नदी बहा दी। वह नदी रथों के आवर्त से युक्त थी। उसमें हाथी ग्राह के समान, मनुष्य मीन के समान, घोड़े नक्र के समान, कटे हुए हाथ नागों के समान देख पड़ते थे। उसमें योद्धाओं के अनेक आभूषण और रत्न भरे पड़े थे। वह लोगों के पैर पकड़नेवाली, मज्जा की कीच से भरी हुई थी। उसमें केश सेवार की जगह, सिर शिलाखण्डों की जगह, धनुष काश-कुसुम की जगह, बाण नीची-ऊँची भूमि की जगह और पगड़ियाँ फेनपुञ्ज की जगह देख पड़ती थीं। उस नदी में गदा, परिघ आदि अनेक शस्त्र बह रहे थे और ध्वजा, छत्र आदि हंस से

प्रतीत होते थे। हार कमल के फूलों के समान जान पड़ते थे। उसमें धूल की लहरें उठ रही थीं। योद्धा रूप ग्राहों से परिपूर्ण और यमलोक को जा रही वह उग्र नदी भीरु जनों के लिए बड़ी दुस्तर थी। आर्यजनोचित अपने धर्म का पालन करनेवाले क्षत्रिय सहज ही उसके पार जा सकते थे। क्षण भर में भीमसेन ने ऐसी भयानक रक्त की नदी बहा दी। राजन्, महारथी भीमसेन जहाँ-जहाँ पहुँचे वहाँ-वहाँ उन्होंने सैकड़ों-हज़ारों योद्धाओं को मार डाला।

महाराज, रण में भीमसेन के किये हुए इस अद्भुत कार्य को देखकर राजा दुर्योधन ने शकुनि से कहा—मामाजी, संग्राम में जनक्षय कर रहे महाबली भीमसेन को तुम शीघ्र मार डालो। भीमसेन को जीत लेने से ही पाण्डवों की सेना परास्त हो जायगी। हे राजेन्द्र, महा-प्रतापी शकुनि यह सुनकर अपने भाइयों को साथ लेकर रणभूमि में भीमसेन के सामने पहुँचे। तटभूमि जैसे सागर के वेग को रोकती है वैसे ही शकुनि भीमसेन को रोकने की चेष्टा करने ५० लगे। शकुनि को तीक्ष्ण बाणों से अपने को रोकते देखकर भीमसेन उनकी ओर वेग से चले। तब शकुनि ने भीमसेन के वक्षःस्थल और वाम पार्श्व में कई सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण नाराच मारे। वे कङ्कपत्रयुक्त बाण कवच को तोड़ते हुए भीमसेन के शरीर में घुस गये। इस तरह बेहद घायल होने पर भीमसेन को क्रोध चढ़ आया और उन्होंने एक सुवर्णभूषित उग्र बाण शकुनि के ऊपर छोड़ा। महाबली शकुनि ने फुर्ती के साथ कई बाणों से उस बाण के सात टुकड़े कर डाले। इस तरह बाण को व्यर्थ होते देखकर क्रुद्ध भीमसेन ने हँसकर शकुनि का धनुष भल्ल बाण से काट डाला। प्रतापी शकुनि ने वह कटा हुआ धनुष फेंककर दूसरा धनुष और सोलह भल्ल बाण हाथ में लिये। फिर दो बाणों से भीमसेन के सारथी को घायल करके सात बाणों से भीमसेन को पीड़ित किया, एक बाण से ध्वजा और दो बाणों से छत्र काट डाला। चार बाण चारों घोड़ों को मारे। महाराज, तब भीमसेन ने क्रोध करके सुवर्णदण्डशोभित लोहमयी एक उग्र शक्ति शकुनि के ऊपर फेंकी। नाग की जीभ की तरह लपलपा रही वह शक्ति बड़े वेग से आकर ६० शकुनि को लगी। कुपित शकुनि ने सुवर्णभूषित वही शक्ति लेकर भीमसेन को मारी। वह शक्ति भीमसेन की बाईं भुजा को चीरती हुई, आकाश से गिरी हुई बिजली की तरह, भूमि पर गिर पड़ी। शकुनि का यह अद्भुत कार्य देखकर कौरवपक्ष के वीर सिंहनाद करने लगे।

राजन्, कौरवों के उस सिंहनाद को बली भीमसेन नहीं सह सके। वे क्रुद्ध होकर, दूसरा धनुष लेकर, फुर्ती से तीक्ष्ण बाणों से फिर शकुनि की सेना को पीड़ित करने लगे। पराक्रमी पाण्डव ने शकुनि के सारथी और चारों घोड़ों को मारकर एक भल्ल बाण से ध्वजा काट डाली। बिना घोड़ों के रथ से उतरकर शकुनि, पृथ्वी पर खड़े होकर, धनुष चढ़ाकर भीमसेन पर बाण-वर्षा करने लगे। उस समय शकुनि के नेत्र क्रोध से लाल हो रहे थे और वे बारम्बार साँसें ले रहे थे। प्रतापी भीमसेन ने वेग से शकुनि के प्रहारों को व्यर्थ करके उनका धनुष काट डाला

और फिर उनको अनेक तीक्ष्ण बाण ताक-ताककर मारे। भीमसेन के बाणों से विह्वल शकुनि मृतप्राय होकर गिर पड़े। उनको विह्वल और अचेत देखकर दुर्योधन वेग से उनके पास गये और भीमसेन के सामने ही मामा को रथ पर बिठाकर वहाँ से हटा ले गये। कौरवपक्ष के ७० योद्धा और दुर्योधन के भाई, शकुनि को विह्वल देखकर, रण छोड़कर भीमसेन के डर से भागने लगे। राजा दुर्योधन भी शकुनि को भीमसेन से परास्त देखकर, डर के मारे, उन्हें लेकर, वेग से घोड़े हँकवाकर वहाँ से चल दिये।

हे कुरुराज, राजा को विमुख देखकर अन्य योद्धा भी प्रतिद्वन्द्वी शत्रुओं को छोड़कर भागने लगे। सब कौरवों को भागते देखकर भीमसेन वेग से बाण बरसाते हुए उनका पीछा करने लगे। भीमसेन के बाणों से पीड़ित और मारी जा रही कौरवसेना ने विमुख होकर अपनी रक्षा के लिए पराक्रमी कर्ण के पास जाकर दम लिया। तूफ़ान के समय नाविक लोग नाव टूट जाने पर किसी द्वीप को पाने से जैसे आश्वासित हों, वैसे ही वीर कर्ण को पाकर उनके दम में दम आया। इस तरह कर्ण के द्वारा सुरक्षित होने पर कौरवसेना फिर आश्वस्त और उत्साहित हुई। महाराज, आपके योद्धा फिर प्रसन्नतापूर्वक प्राणपण से शत्रुओं के साथ युद्ध करने लगे। ७९

अठहत्तरवाँ अध्याय

कर्ण के पराक्रम का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! पराक्रमी भीमसेन ने जब इस तरह मेरी सेना को अकेले ही मार भगाया तब दुर्योधन, शकुनि, विजयशाली महारथी कर्ण, कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, दुःशासन और मेरे दल के अन्य योद्धाओं ने क्या कहा? भीमसेन ने अकेले ही मेरे पक्ष के सब योद्धाओं से लड़कर उन्हें हटा दिया, यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। भीमसेन का बाहुबल और पराक्रम मुझे तो अत्यन्त अद्भुत जान पड़ता है। शत्रुनाशन कर्ण सब कौरवों का कवच के समान रक्षक था। उसी के ऊपर कौरवों का कल्याण, प्रतिष्ठा और जीवन की आशा निर्भर थी। उसने पाण्डवों को परास्त करने की प्रतिज्ञा कर रक्खी थी। उस समय धनुर्द्धर-श्रेष्ठ कर्ण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप कार्य कर दिखाया या नहीं? भीमसेन के पराक्रम से अपनी सेना को मरते और भागते देखकर कर्ण ने, मेरे दुर्द्धर्ष पुत्रों ने और अन्य महारथी राजाओं ने क्या किया? हे सूत, यह सब वृत्तान्त मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—महाराज, उस तीसरे पहर के समय प्रतापी कर्ण कुपित होकर सोमकसेना का संहार कर रहे थे और उधर महावीर भीमसेन भी दुर्योधन की विशाल सेना को नष्ट कर रहे थे। कर्ण ने जब अपनी सेना को भीमसेन के बाहुबल से विह्वल होकर भागते देखा,

तब वे शल्य से कहने लगे कि हे मद्रराज, तुम मुझे शीघ्र पाञ्चालसेना के सामने ले चलो। कर्ण की इच्छा के अनुसार महाबली शल्य—चेदि, पाञ्चाल और करूष देश की सेना के सामने—वायु
१० के समान वेग से जानेवाले सफ़ेद घोड़ों को हाँकने लगे। उस महासेना के भीतर पहुँचकर शल्य वहीं-वहीं रथ पहुँचाने लगे जहाँ-जहाँ शत्रुपक्ष के रथों को देखकर कर्ण जाने की इच्छा प्रकट करते थे। पाण्डव और पाञ्चालगण सूतपुत्र के उस व्याघ्रचर्ममण्डित मेघ-सदृश रथ को देखकर भय से विह्वल हो उठे। उस रथ के चलने से महाघोर शब्द उत्पन्न हो रहा था; जान पड़ता था, जैसे कोई पहाड़ फट रहा है या मेघ गरज रहे हैं। तब महाबली कर्ण कान तक तान-तानकर छोड़े गये सैकड़ों बाणों से, हज़ारों की संख्या में, पाण्डव-सेना का संहार करने लगे।

अपराजित कर्ण को युद्धस्थल में ऐसा अद्भुत कार्य करते देखकर शिखण्डी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और सात्यकि आदि पाण्डवपक्ष के महारथियों ने चारों ओर से घेर लिया। वे सब कर्ण को मार डालने के लिए उन पर लगातार बाण बरसाने लगे। महावीर सात्यकि ने कर्ण के जत्रु-स्थान में बीस तीक्ष्ण बाण मारे। इसी तरह शिखण्डी ने पचीस, धृष्टद्युम्न ने सात, द्रौपदी के पुत्रों ने चौंसठ, सहदेव ने सात, नकुल ने सौ और भीमसेन
२० ने नब्बे तीक्ष्ण बाण मर्मस्थल में मारकर कर्ण को पीड़ित किया। कर्ण ने हँसकर, धनुष चढ़ाकर, इन सबको पाँच-पाँच बाण मारे। महाबली कर्ण ने इस तरह तीक्ष्ण बाणों से शत्रुपक्ष के महारथियों को पीड़ित करके सात्यकि का धनुष और ध्वजा काट डाली और उनकी छाती में नव विकट बाण मारे। फिर क्रुद्ध होकर भीमसेन को तीस बाण मारकर एक भल्ल बाण से सहदेव की ध्वजा काट डाली और तीन बाणों से उनके सारथी को मार गिराया। पल भर में ही द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के रथ नष्ट कर डाले। महाराज, इस तरह तीक्ष्ण बाणों से इन सब महारथियों को विमुख करके वीर कर्ण ने शूर पाञ्चालों को और महारथी चेदिगण को मारना शुरू कर दिया। महाबली चेदि, मत्स्य और पाञ्चालगण अकेले कर्ण के सामने जाकर उन पर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उनके प्रहारों की परवा न करके महारथी सूतपुत्र बलपूर्वक उन्हें तीक्ष्ण बाणों से मारने और गिराने लगे। सिंह के डर से भाग रहे मृगों की तरह भय-विह्वल होकर चेदि, मत्स्य और पाञ्चालगण कर्ण के आगे से भागने लगे। महाराज! मैंने प्रतापी कर्ण का यह अद्भुत कर्म देखा कि उन्होंने अकेले ही पाण्डवपक्ष के सब महारथियों को, जो कि पूर्ण उद्योग
३० से शत्रु को रोकने की चेष्टा कर रहे थे, बाणों से विमुख कर दिया। हे भारत! कर्ण की फुर्ती और पराक्रम देखकर सब देवता, सिद्ध और चारणगण बहुत सन्तुष्ट हुए और महाधनुर्द्धर कौरव-पक्ष के योद्धा भी कर्ण को सर्वश्रेष्ठ महारथी मानकर उनकी प्रशंसा करने लगे।

राजन्, गर्मियों में प्रज्वलित प्रचण्ड आग जैसे सूखी घास को जला देती है वैसे ही महापराक्रमी कर्ण उस समय बाणों से शत्रुसेना का संहार करने लगे। पाण्डवपक्ष के सैनिक-

गण कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर उन्हें देखते ही चारों ओर भागने लगे। कर्ण के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर पाञ्चालगण हाहाकार और आर्तनाद करने लगे। उस महा-घोर शब्द को सुनकर पाण्डवपक्ष के और सब सैनिक अत्यन्त भय-विह्वल हो उठे। उन्हें निश्चय हो गया कि कर्ण के समान योद्धा और कोई नहीं है। उस समय शत्रुदलदलन कर्ण युद्धस्थल में ऐसा अद्भुत बल-वीर्य और पराक्रम प्रकट करने लगे कि पाण्डवपक्ष के सैनिक उनकी ओर देखने को भी समर्थ न हुए। जल-प्रवाह जैसे पर्वत से टकराकर इधर-उधर फैल जाता है वैसे ही वे कर्ण के सामने से इधर-उधर भागने लगे। उस समय महाबाहु कर्ण प्रज्वलित प्रचण्ड अग्नि की तरह पाण्डवसेना को भस्म करने लगे। उनके धनुष से छूटे हुए बाणों से शत्रुओं के मस्तक, कुण्डलशोभित कान, हाथ, हाथीदाँत की मूठवाले खड्ग, ध्वजा,

शक्ति, हाथी, घोड़े, रथ, पताका, चामर, अक्ष, जोत, युग, पहिये आदि लगातार कट-कटकर गिरने लगे। कर्ण के बाणों से मरे हुए असंख्य हाथी-घोड़ों से और उनके रक्त-मांस की कीच से रणभूमि दुर्गम हो उठी। चतुरङ्गिणी सेना मारी और गिराई जाने से यह नहीं जान पड़ता था कि कौन स्थान समतल है और कौन स्थान ऊँचा-नीचा है। उस समय धूल और कर्ण के बाणों से ऐसा अँधेरा छा गया कि योद्धाओं को अपने-पराये का पहचानना कठिन हो गया। फिर महावीर कर्ण सुवर्णभूषित बाणों की बौछार से पाण्डवपक्ष के महारथियों को पीड़ित करने लगे और वे लोग बारम्बार उनके आगे से भागने लगे। राजन्, वन में सिंह जैसे कुपित होकर मृगों को भगाता है वैसे ही वीर कर्ण भी महारथी पाञ्चालों को भगाने लगे। वे पशुओं को मारने-वाले भेड़िये की तरह शत्रुसेना को भय-विह्वल करके नष्ट करने लगे। कौरव-पक्ष के योद्धा पाण्डवों को समर-विमुख देखकर सिंहनाद करते हुए उनका पीछा करने लगे। उस समय राजा दुर्योधन ने आनन्दित होकर विविध बाजे बजाने की आज्ञा दी। तब महाधनुर्द्धर पाञ्चालगण शस्त्रहीन और पीड़ित होकर भी वीरों की तरह जी-जान से युद्ध करने लगे। शत्रु-विनाशन कर्ण भी

४२

५०

उनको बारम्बार भगाने लगे। कर्ण ने कुपित होकर तीक्ष्ण बाणों से पाञ्चालसेना के बीस और चेदिसेना के सौ से अधिक श्रेष्ठ रथी योद्धाओं को मार डाला। उनके बाणों के प्रभाव से असंख्य रथ तथा हाथियों और घोड़ों की पीठें ख़ाली हो गईं; पैदल सेना भागने लगी। वीर कर्ण उस समय दोपहर के प्रचण्ड सूर्य और यम के समान दिखाई पड़ने लगे।

राजन्, शत्रुदलदलन कर्ण ने इस तरह रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों का संहार कर डाला। महाबली अनिवार्य काल जैसे प्राणियों का नाश करे, वैसे ही अकेले कर्ण सोमकगण का संहार करते हुए समरभूमि में विचरने लगे। उस समय हम लोगों ने पाञ्चालों का अद्भुत साहस और पराक्रम देखा कि वे इस तरह अत्यन्त पीड़ित होने पर भी युद्ध छोड़कर भागे नहीं।
६० हे भारत! इसी समय राजा दुर्योधन, दुःशासन, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा और शकुनि भी क्रुद्ध होकर इधर-उधर पाण्डवसेना को पीड़ित करते हुए विचरने लगे। कर्ण के बल-विक्रम-सम्पन्न दोनों महारथी पुत्र भी क्रुद्ध होकर पाण्डवसेना का संहार करने लगे। उधर पाण्डवपक्ष के महारथी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और सात्यकि आदि भी क्रुद्ध होकर कौरवसेना का नाश करने लगे। राजन्, इस तरह उस महाभयानक संग्राम में कर्ण आदि वीरों के पराक्रम से
६४ पाण्डवों की और भीमसेन आदि के पराक्रम से कौरवों की असंख्य सेना मारी जाने लगी।

उन्नासी अध्याय

अर्जुन का कर्ण के पास पहुँचना। शल्यकृत कर्ण-प्रोत्साहन
और कर्णकृत अर्जुन-वध की प्रतिज्ञा

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ, इधर अर्जुन रण में कर्ण को कुपित देखकर और कौरवों की चतुरङ्गिणी सेना को मारकर आगे बढ़े। उन्होंने शत्रुओं को मारकर रक्त की महानदी बहा दी। वह मांस-मज्जा की कीच और हड्डियों से परिपूर्ण, मनुष्यों के मस्तक-रूप पाषाणों से युक्त, हाथियों और घोड़ों के शरीरों से बने हुए किनारोंवाली, छत्र-रूप हंस और प्लव पक्षियों से शोभित नदी किनारे के वृक्ष ऐसे वीरों को (उखाड़ती) गिराती हुई बह रही थी। शूरों की हड्डियों से दुर्गम उस नदी के आसपास कौए और गिद्ध विकट शब्द कर रहे थे। हार कमल से, पगड़ियाँ फेनपुञ्ज सी, नरमुण्ड और रथ [डोंगी और नाव से] उसमें दिखाई दे रहे थे। धनुष-बाण आदि उसमें शरवन से प्रतीत होते थे और ढालें आवर्त (भँवर) सी चक्कर खाती बह रही थीं। ऐसी, डरपोकों के लिए दुस्तर और विजय चाहनेवाले शूरों के लिए सुगम, रक्त-नदी बहाकर अर्जुन वासुदेव से यों कहने लगे—हे कृष्णचन्द्र, वह कर्ण के रथ की ध्वजा

दिखाई दे रही है और भीमसेन आदि योद्धा उस महारथी से युद्ध कर रहे हैं। वह देखो, कर्ण के डर से पाञ्चालगण भाग रहे हैं। वह सफ़ेद छत्र से शोभित राजा दुर्योधन, कर्ण के भगाये हुए, पाञ्चालों को सता रहा है। महारथी कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा आदि वीरगण दुर्योधन की सहायता कर रहे हैं और वीरश्रेष्ठ कर्ण उन सबकी रक्षा कर रहा है। हम लोग अगर इन वीरों को न मारेंगे तो ये अवश्य ही सब सामक-सेना का संहार कर डालेंगे। वे रथ हाँकने में चतुर वीर शल्य कर्ण के रथ को हाँक रहे हैं। हे कृष्णचन्द्र, अब आप मेरा रथ वहीं पर ले चलिए। मैंने निश्चय कर लिया है कि कर्ण को मारे विना युद्ध-स्थल से नहीं लौटूँगा। मैं अगर इस समय कर्ण से युद्ध नहीं करूँगा तो वह हमारे सामने ही पाण्डवदल के महारथियों और सृञ्जयों का संहार कर डालेगा।

१०

महाराज! महामति श्रीकृष्ण अर्जुन के ये वचन सुनकर, उनको कर्ण के साथ द्वैरथ-युद्ध करने में प्रवृत्त करने के लिए, घोड़ों को तेज़ हाँककर कर्ण के सामने रथ ले चले। श्रीकृष्ण और अर्जुन को आते देखकर पाण्डवों की सब सेना आश्वासित हुई। अर्जुन के रथ के वेग से घोर शब्द होने लगा। ऐसा जान पड़ता था, जैसे वज्रपात से पर्वत फट रहे हों। सत्य-विक्रमी अर्जुन कौरवसेना को छिन्न-भिन्न और परास्त करते हुए, रथ और धनुष के शब्द के साथ, वेग से कर्ण के रथ की ओर जाने लगे। श्रीकृष्ण-सञ्चालित सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ पर आ रहे अर्जुन की ध्वजा देखकर मद्रराज शल्य कहने लगे—हे कर्ण, जिनको तुम पूछ रहे थे वे अर्जुन शत्रुवध करते आ रहे हैं। उनका श्रीकृष्ण-सञ्चालित, सफ़ेद घोड़ों से शोभित, रथ वह आ रहा है। वे गाण्डीव धनुष को हाथ में लिये अर्जुन विराजमान हैं। इस समय तुम अगर इन वीरश्रेष्ठ को मार सकोगे तो हमारे पक्ष को विजय और कल्याण प्राप्त होगा। अर्जुन कौरवपक्ष के महारथियों को पीड़ित करते हुए तुम पर आक्रमण करने के लिए इधर ही चले आ रहे हैं। [कर्ण! वह अर्जुन की पताका देखो जो कि धनुष, डोरी, चन्द्र और नक्षत्र से अङ्कित है तथा

२०

जिसमें घुँघरू बँधे हुए हैं। वह आकाश में बिजली सी कौंचती है। उनकी पताका के आगे वह भयानक वानर चारों ओर देख रहा है जिससे कि सैनिक भयभीत हो रहे हैं। अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण के ये चक्र, गदा, शङ्ख और शार्ङ्ग धनुष देख पड़ते हैं। अर्जुन के द्वारा खींचे गये गाण्डीव का यह शब्द हो रहा है। ये अर्जुन के पैने बाण हैं जो विपक्षियों को मार रहे हैं। वीरों के, लाल आँखोंवाले, पूर्णचन्द्र-सदृश मुखों से युक्त सिरों से पृथ्वी पटी पड़ी है। ये वीरों की बड़ी-बड़ी भुजाएँ कट-कटकर गिर रही हैं। उनमें चन्दन लगा है और मुट्ठियों में हथियार हैं। ये देखो, सवारों समेत घोड़े मरे पड़े हैं जिनकी जीभें और आँखें निकल आई हैं। ये बड़े-बड़े हाथी अर्जुन के बाणों की चोट खाकर, घायल हो-होकर, गिर रहे हैं। पुण्य घट जाने पर स्वर्गीय जीव जैसे विमानों से नीचे

आ जाते हैं वैसे ही ये राजा लोग रथों से गिर रहे हैं। कौरवसेना को अर्जुन ने उसी तरह व्याकुल कर दिया है जिस तरह सिंह मृगों के छक्के छुड़ा देता है।] इसलिए तुम उनसे युद्ध करने को उनके सामने चलो। कौरवों की सेना शत्रुनाशन अर्जुन के डर से इधर-उधर भाग रही है। महावीर अर्जुन उसे छोड़कर तुम्हारी ही ओर आ रहे हैं। स्पष्ट जान पड़ता है कि कुपित अर्जुन इस समय तुम्हारे सिवा और किसी से युद्ध नहीं करेंगे। महावीर भीमसेन को पीड़ित, युधिष्ठिर को रथहीन घायल और विह्वल, शिखण्डी, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, उत्तमौजा, नकुल, सहदेव और द्रौपदी के पाँचों पुत्र आदि पाण्डवपक्ष के वीरों को पराजित देखकर अर्जुन के क्रोध का ठिकाना नहीं है। वे कौरवपक्ष के सब राजाओं का वध करने के लिए उद्यत जान पड़ते हैं। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो रही हैं। वे वेग से हमारी ही ओर आ रहे हैं। इसलिए तुम शीघ्र उनके सामने चलो। इस लोक में तुम्हारे सिवा और कोई कुपित अर्जुन के सामने नहीं ठहर सकता। ऐसी दशा में एक तुम्हीं उन पर आक्रमण कर सकते हो। इस समय अर्जुन अकेले ही आ रहे हैं, न कोई उनका पृष्ठ-रक्षक है और न कोई चक्ररक्षक है। इसलिए तुम अर्जुन-वध-रूप अपने कार्य को सिद्ध करने का यत्न करो। हे कर्ण, सागर के वेग को तटभूमि के

समान, तुम्हीं समर में श्रीकृष्ण और अर्जुन को रोक सकते हो। यह काम तुम्हीं को सौंपा गया है। तुम पराक्रम में भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और अश्वत्थामा के समान हो; इसलिए वेग से आ रहे अर्जुन को रोको। क्रोध से फुफकार रहे साँप के समान, गरज रहे बली साँड़ के समान, वन में स्थित गरज रहे व्याघ्र के समान भयङ्कर अर्जुन को तुम मारो। ये अर्जुन के भय से विह्वल महाबली कौरवपक्ष के राजा लोग, प्राण-रक्षा के लिए, उनके आगे से भाग रहे हैं। हे सूतनन्दन, तुम्हारे सिवा इस समय इन सबको बचानेवाला और कोई महारथी नहीं है। ये कौरवपक्ष के योद्धा तुम्हीं को इस भय से उबारनेवाला जानकर तुम्हारी शरण में आये हैं। हे वीर! तुमने जिस धैर्य से समर में अत्यन्त दुर्जय वैदेह, अम्बष्ठ, काम्बोज, नग्नजित् और गान्धारगण की सेना को हराया था, वही धैर्य धारण करके अपना पौरुष दिखाओ और प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण के साथ स्थित अर्जुन से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ो।

राजन्, कर्ण ने ये वचन सुनकर कहा—हे मद्रराज, अब जाकर तुम्हारी बुद्धि ठिकाने आई। हे महाबाहो, इस समय तुम्हारे हृदय से अर्जुन का डर दूर हुआ जान पड़ता है। अब तुम मेरे बाहुबल, अस्त्रशिक्षा और अभ्यास की करामात देखो। सच कहता हूँ, मैं अकेला ही पाण्डव-सेना का संहार करके कृष्ण और अर्जुन को मारूँगा। उन दोनों वीरों को मारे बिना आज मैं युद्ध से नहीं लौटूँगा। युद्ध में जय-पराजय का कोई निश्चय नहीं, इसलिए या मैं कृष्ण-अर्जुन को मारूँगा और या उनके बाणों से मरकर वीर-शय्या पर सोऊँगा। या तो उन्हें मारकर या स्वयं मरकर, दोनों तरह से, मैं कृतार्थ होऊँगा। ५०

इस पर शल्य ने कहा—हे कर्ण, बड़े-बड़े महारथी कहते हैं कि योद्धाओं में श्रेष्ठ अर्जुन रण में अजेय हैं। अकेले अर्जुन को ही कोई नहीं जीत सकता। फिर इस समय तो श्रीकृष्ण उनकी रक्षा कर रहे हैं। इस समय उन्हें कौन जीत सकता है?

कर्ण ने कहा—हे शल्य, मैंने भी सुना है कि ऐसा श्रेष्ठ योद्धा पृथ्वी पर कोई नहीं हुआ जैसे कि अर्जुन हैं। उन्हीं अद्वितीय वीर अर्जुन से मैं आज युद्ध करूँगा। आज महायुद्ध में तुम मेरे पौरुष को देखना। वह देखो, कौरव-कुल के राजकुमार महारथी अर्जुन, सफ़ेद घोड़ों से शोभित रथ पर बैठे, रणभूमि में विचर रहे हैं। बस, आज या तो यही कर्ण को मारेंगे और या कर्ण इन्हें मारने में समर्थ होगा। यदि मैं मारा गया तो फिर कौरवपक्ष का कोई योद्धा जीता न बचेगा। युद्ध करते समय राजपुत्र अर्जुन की विशाल भुजाएँ न तो कभी काँपती हैं और न उनमें पसीना आता है। उनके हाथों में धनुष की डोरी की रगड़ से घट्टे पड़ गये हैं। दृढ़ता से धनुष पकड़नेवाले अर्जुन धनुर्वेद को अच्छी तरह जानते हैं। मतलब यह कि सचमुच उनके समान योद्धा दूसरा नहीं है। वे अनेक बाणों को लेकर एक ही बाण की तरह सहज में एक साथ धनुष पर चढ़ाते और फुर्ती के साथ चलाते हैं। उनके अमोघ बाण कोस भर तक

जाकर अपना काम करते हैं। उनके समान योद्धा पृथ्वी पर कौन है? अतिरथी अर्जुन ने, कृष्ण की सहायता से, खाण्डव-वन देकर अग्नि को तृप्त किया। वहाँ अग्नि ने प्रसन्न होकर महात्मा कृष्ण को सुदर्शन चक्र और अर्जुन को गाण्डीव धनुष, भयानक शब्द करनेवाला रथ, सफ़ेद घोड़े, अक्षय तरकस और अन्य दिव्य शस्त्र देकर सम्मानित किया। अर्जुन ने इन्द्रलोक जाने के समय असंख्य दुर्जय कालकेय नामक दानवों का नाश किया और दिव्य देवदत्त शङ्ख ६० पाया। इसलिए पृथ्वी पर अर्जुन से बढ़कर पराक्रमी कौन है? महानुभाव अर्जुन ने किरातरूपधारी साक्षात् शङ्कर से युद्धकर उन्हें अपने अस्त्रबल से प्रसन्न किया और उनसे वह पाशुपत नामक महाघोर दिव्य अस्त्र पाया, जिससे त्रैलोक्य का नाश किया जा सकता है। इन्द्रलोक में सब लोकपालों ने एकत्र और प्रसन्न होकर अर्जुन को अलग-अलग अपने अमोघ अस्त्र अर्पण किये और अर्जुन ने उन्हीं अस्त्रों से कालकेय आदि असुरों का संहार किया। विराट के नगर में अकेले अर्जुन ने हम सब महारथियों को हराया, हमारे वस्त्र छीन लिये और विराट की गायें लौटा लीं। ऐसे वीर्य-गुण-सम्पन्न अर्जुन को, जब कि कृष्ण उनके सहायक हैं, मैं युद्ध के लिए बुला रहा हूँ और यह कहने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं कि यह मेरा साहस परम प्रशंसनीय है। सब लोकों के जीव मिलकर हज़ारों वर्षों में भी जिनके गुणों का वर्णन नहीं कर सकते उन्हीं शङ्ख-चक्र-खड्गपाणि विष्णु जिष्णु अनन्तवीर्य अप्रतिम नारायणावतार वसुदेव-नन्दन कृष्ण को लगातार अर्जुन की रक्षा करने के लिए उपस्थित देखकर भी मैं नहीं घबराता। अजेय कृष्ण और अर्जुन को एक साथ अपने विरुद्ध क्रुद्ध और युद्ध के लिए उद्यत देखकर मुझे खटका भी होता है। अर्जुन धनुष-बाण के युद्ध में सभी क्षत्रिय राजपुत्रों से बढ़कर हैं और वैसे ही कृष्णचन्द्र चक्रयुद्ध में निपुण और सर्वश्रेष्ठ हैं। हिमालय चाहे अपने स्थान से विचलित हो जाय, किन्तु पाण्डव और वासुदेव कभी युद्ध से नहीं हट सकते। वे दोनों शूर, बली, दृढ़ायुध, महावीर, दृढ़-शरीर, वीर, नर-श्रेष्ठ हैं [और स्वर्गभ्रष्ट देवकुमार से प्रतीत होते हैं। अग्नि, आदित्य, इन्द्र, बृहस्पति, यमराज, काल, चन्द्रमा, पूषा, भगदेवता, मित्रावरुण, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, वसुगण आदि सब देवता एक-एक करके या सब मिलकर युद्ध करें, तो भी बलपूर्वक कृष्ण और अर्जुन को नहीं जीत सकते]। हे शल्य, ऐसे प्रभावशाली कृष्ण और अर्जुन से युद्ध करने का साहस मेरे सिवा और कौन कर सकता है? अर्जुन के साथ युद्ध करने की मेरी बहुत दिनों की इच्छा आज पूरी होगी। अब तुम मेरे रथ को शीघ्र अर्जुन और कृष्ण के सामने ले चलो। मैं अर्जुन से डटकर युद्ध करूँगा। अभी तुम देखोगे कि मैं अर्जुन और कृष्ण को मारकर गिरा दूँगा, अथवा उनके हाथ से मरकर रण-शय्या पर विश्राम करूँगा।

महाराज, शत्रुनाशन कर्ण शल्य से इस तरह कहकर मेघ-गर्जन के समान भयङ्कर सिंह-
७० नाद करने लगे। इसके बाद वे राजा दुर्योधन के पास गये। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कर्ण का

अभिनन्दन किया। तब कर्ण ने अपने रथ को अर्जुन की ओर वेग से हँकवाया। राजा दुर्योधन ने कृपाचार्य, कृतवर्मा, भाइयों सहित शकुनि, अश्वत्थामा, कर्ण के पुत्र और अपने भाइयों का अभिनन्दन करके उनसे और झुण्ड के झुण्ड हाथियों तथा घोड़ों के सवारों और पैदलों से कहा—हे वीरो! तुम लोग वेग से जाओ, कृष्ण और अर्जुन को आगे बढ़ने से रोको, युद्ध करके थका दो। तुम लोग बाणों से जब अत्यन्त घायल कर दोगे तब मेरे सेनापति वीर कर्ण उन थके हुए दोनों वीरों को सहज में मार सकेंगे।

राजा की आज्ञा पाकर वे वीर शीघ्रता-पूर्वक, मार डालने के लिए, अर्जुन पर आक्रमण करने लगे। कर्ण की सहायता के लिए उद्यत वे महारथी वेग से जाकर अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। किन्तु महासागर जैसे नद-नदियों को ग्रस लेता है, वैसे ही अर्जुन ने सहज ही कौरवपक्ष के वीरों का प्रयास व्यर्थ कर दिया। उस समय अर्जुन ऐसी फुर्ती कर रहे थे कि शत्रुओं को नहीं जान पड़ता था कि वे कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते और कब छोड़ते हैं। यही देख पड़ता था कि अर्जुन के बाणों से विदीर्ण होकर, मरकर असंख्य मनुष्य, हाथी और घोड़े पृथ्वी पर गिर रहे हैं। धनुष-रूपी मण्डल और बाण-रूपी किरणों से युक्त महातेजस्वी अर्जुन उस समय प्रलयकाल के प्रचण्ड सूर्य्य के समान जान पड़ते थे। आँखों के रोगी जैसे सूर्य की ओर नहीं देख सकते, वैसे ही कौरवगण अर्जुन की ओर देख भी नहीं सकते थे।

गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्जुन ने हँसते-हँसते उन महारथियों की बाण-वर्षा को काट डाला। इस तरह वे बारम्बार शत्रुओं के बाणों को व्यर्थ करने लगे। ज्येष्ठ और आषाढ़ मास के मध्यवर्ती सूर्य अपनी किरणों से जैसे जल-राशि को सुखाते हैं, वैसे ही वीर अर्जुन शत्रुओं के बाणों को नष्ट करके अपने तेज और पराक्रम से कौरव-सेना को भस्म करने लगे। इसी समय महावीर कृपाचार्य, कृतवर्मा, राजा दुर्योधन और महारथी अश्वत्थामा, ये वीर उसी तरह अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे, जिस तरह मेघ पर्वत के ऊपर जल बरसाते हैं। मारने के लिए उद्यत रण-निपुण महारथियों ने यत्नपूर्वक जितने बाण छोड़े, उन सबको फुर्ती के साथ अपने बाणों से काट-कर वीर अर्जुन ने सबकी छाती में तीन-तीन बाण मारे। उस समय मण्डलाकार गाण्डीव धनुष ८० से शोभित और शत्रुओं को पीड़ित कर रहे सूर्य-सदृश तेजस्वी अर्जुन बाण-रूपी किरणों से वैसे ही शोभित हुए जैसे ज्येष्ठ और आषाढ़ के मध्यवर्ती उग्ररूप सूर्य मण्डल के बीच शोभा पाते हैं।

अब अश्वत्थामा ने उग्र दस बाण अर्जुन को और तीन बाण श्रीकृष्ण को मारे। फिर चार नाराच बाण घोड़ों को मारकर ध्वजा पर स्थित वानर को अनेक बाण मारे। यह देखकर महावीर अर्जुन क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने तीन बाणों से अश्वत्थामा के सारथी का सिर काट डाला, चार बाणों से चारों घोड़े मार डाले और तीन बाणों से ध्वजा काटकर गिरा दी। अश्वत्थामा ने क्रुद्ध होकर मणि-सुवर्ण और हीरों से अलङ्कृत, तक्षक नाग के फन के समान

भयङ्कर, पर्वत-निवासी अजगर के समान दूसरा दृढ़ धनुष हाथ में लेकर अर्जुन-वध के लिए उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई। उसके बाद वे निकटवर्ती होकर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से अर्जुन और श्रीकृष्ण को पीड़ित करने लगे। सूर्य को जैसे मेघ घेर लें वैसे ही कृपाचार्य, कृतवर्मा और दुर्योधन आदि महारथी भी बाण बरसाकर अर्जुन को रोकने लगे। सहस्रबाहु के समान पराक्रमी अर्जुन ने कृपाचार्य का धनुष-बाण और ध्वजा काट डाली और सारथी तथा घोड़ों को भी मार डाला। इन्द्र ने जैसे राजा बलि को पीड़ित किया था वैसे ही अर्जुन भी हज़ारों बाण मारकर कृपाचार्य को पीड़ित करने लगे। पहले जैसे भीष्म पितामह अर्जुन के बाणों से व्यथित हुए थे, वैसे ही इस समय कृपाचार्य भी उनके असंख्य बाणों से चेष्टा-रहित हो गये।

महावीर अर्जुन ने दुर्योधन को सिंहनाद करते देखकर बाणों से उनकी ध्वजा और धनुष काट डाला। कृतवर्मा के घोड़ों को मारकर उनकी भी ध्वजा और धनुष के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इसके उपरान्त वीर अर्जुन के बाणों से धनुष, ध्वजा, घोड़े, सारथी समेत रथ, सवारों सहित घोड़े तथा हाथी नष्ट होने और गिरने लगे। इस तरह अर्जुन जब फुर्ती से जनसंहार करने लगे तब जलप्रवाह के वेग से टूटे सेतु के समान सारी सेना अर्जुन के बाणों से तितर-बितर हो गई। अर्जुन के सारथी कृष्णचन्द्र पीड़ित शत्रुसेना के वाम भाग में घुसकर रथ चलाने लगे। ६० वृत्र को मारने के लिए जा रहे इन्द्र के समान अर्जुन को आगे बढ़ते देखकर शत्रुसेना के अन्य अनेक योद्धा, युद्ध करने की इच्छा से, ऊँची ध्वजाओंवाले सुसज्जित रथ बढ़ाकर उनके पीछे चले और बाण-वर्षा करने लगे। यह देखकर शिखण्डी, सात्यकि, नकुल और सहदेव आदि पाण्डवपक्ष के महारथी योद्धाओं ने जाकर उनको रोका। वे शत्रुओं को तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण करते हुए बेतरह सिंहनाद करने लगे। महाराज, तब कौरव और सृञ्जयगण कुपित होकर परस्पर अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से प्रहार करने लगे। उस समय देवासुर-युद्ध के समान घोर संग्राम होने लगा। जय चाहनेवाले और स्वर्ग जाने के लिए उत्सुक वीरगण मारने-मरने लगे। हज़ारों हाथी, घोड़े

और मनुष्य मर-मरकर गिरने लगे। वीरगण तीक्ष्ण बाणों से परस्पर प्रहार करने लगे। उस महारण में महारथी योद्धाओं ने परस्पर इतने बाण बरसाये कि अँधेरा हो गया। बाणों के जाल ने चारों दिशाओं, चारों उपदिशाओं और सूर्य की प्रभा को छिपा दिया। ८५

अस्सी अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहने लगे—हे राजराजेश्वर! महाबली अर्जुन कौरवपक्ष के प्रधान-प्रधान योद्धाओं को भीमसेन के ऊपर आक्रमण करते देखकर, सङ्कट-मग्न भाई को उबारने के लिए, बाणों से कर्ण की सेना को मारने लगे। उनके मारे हुए योद्धा यमपुर को जाने लगे। उनके असंख्य बाण पक्षियों की तरह आकाश में जाते और आपकी सेना का संहार करते दिखाई पड़ने लगे। महावीर अर्जुन कौरवों के लिए काल होकर तीक्ष्ण क्षुरप्र, भल्ल, नाराच आदि बाणों से शत्रुसेना के सिरों और अङ्गों को काटने लगे। उस समय युद्धभूमि कटे हुए शरीरों, मस्तकों और कवचहीन योद्धाओं के कलेवरों से परिपूर्ण और अङ्गहीन घायल हाथियों, घोड़ों, रथों के गिरने से भीषण वैतरणी नदी के समान अत्यन्त दुर्गम और दुर्निरीक्ष्य हो उठी। बहुत से रथों के ईषा, पहिये, और अक्ष टूटकर इधर-उधर गिरने लगे। मरे हुए और अधमरे लोगों के ढेर लग गये। कोई रथ घोड़े और सारथी से शून्य थे, किसी रथ में केवल घोड़े रह गये और किसी रथ में केवल सारथी था—घोड़े नहीं थे। सोने के विचित्र जालों और लोहे के कवचों से शोभित, माला आदि सुवर्ण के गहने पहने, भद्र जाति के, सदा मदोन्मत्त चार सौ हाथियों पर बैठे हुए योद्धा अर्जुन पर आक्रमण करने चले। महावतों ने क्रूरभाव से अङ्कुश मार-मारकर उन्हें क्रुद्ध और उत्तेजित किया तब वे बड़े वेग से अर्जुन की ओर झपटे। परन्तु महाबली अर्जुन ने देखते ही देखते उन सब हाथियों को, मय उनके महावतों और योद्धाओं के, मार गिराया। अर्जुन के बाणों से विदीर्ण वे हाथी, पर्वत के फटे हुए सजीव शिखरों की तरह, पृथ्वी पर गिरने लगे। उन हाथियों से रणभूमि पट गई। मद बरसा रहे मेघ-सदृश उन हाथियों की सेना को चीरते समय वीर अर्जुन का रथ मेघों को फाड़कर निकल रहे सूर्य के समान शोभा को प्राप्त हुआ। मारे गये हाथियों, घोड़ों, टूटे हुए रथों, शस्त्र-यन्त्र-कवच-हीन होकर मरे हुए युद्धप्रिय वीरों और उनके बिखरे हुए शस्त्रों का ढेर लग जाने से चारों ओर जाने की राह ही नहीं रही। अर्जुन के गाण्डीव धनुष का वज्रपात और मेघ-गर्जन के समान घोर शब्द बारम्बार कानों को व्यथित कर रहा था। सागर में जहाज़ जैसे तूफ़ान से तबाह होकर टूट जाता है, वैसे ही कौरव-सेना भी अर्जुन के बाणों की चोट से विह्वल होकर ११

छिन्न-भिन्न हो गई। गाण्डीव से निकले हुए, अनेक प्रकार के, प्राण हरनेवाले बाण—अलातचक्र, उल्का और वज्र की तरह—आपकी सेना को भस्म कर रहे थे। महापर्वत पर रात को आग से बाँस का वन जैसे जले वही दशा बाण-पीड़ित आपकी सेना की हुई। अर्जुन के बाणों से घायल होकर लोग चारों ओर भागने लगे। दावानल से डरे हुए मृग आदि जीव जैसे भागते हैं वैसे ही कौरवसेना घबराकर, महाबाहु भीमसेन को छोड़कर, रणभूमि से भाग खड़ी हुई। इस तरह बाण-प्रहार से कौरवों को भगाकर अपराजित अर्जुन भीमसेन के पास पहुँचे।

२१

राजन्, विजयी अर्जुन पल भर भीमसेन के पास ठहर गये। उनको अर्जुन ने यह ख़बर दी कि अब धर्मराज सकुशल हैं, उनकी सब वेदना दूर हो गई है। यह कहकर, युद्ध के विषय में उनसे सलाह करके और फिर रथघोष से पृथ्वीतल तथा आकाश को परिपूर्ण करते हुए अर्जुन कर्ण की ओर वेग से बढ़े। उस समय दुःशासन से छोटे दुर्योधन के दस भाई अर्जुन के सामने आकर बाणों से उन्हें पीड़ित करने लगे, जैसे कोई किसी गजराज को जलती हुई लकड़ी मारे। वे वीर धनुष चढ़ाकर रणभूमि में नृत्य सा कर रहे थे। उन्हें अर्जुन के बाणों से शीघ्र ही यमलोक जानेवाला जानकर महात्मा कृष्णचन्द्र उनके वाम भाग में रथ ले चले। वे मूर्खतावश अर्जुन को विमुख जानकर गरजते और बाण बरसाते हुए उनका पीछा करने लगे। अर्जुन ने फ़ुर्ती से नाराच और अर्धचन्द्र बाणों से उन दसों के घोड़े, सारथी, धनुष और ध्वजाएँ काट डालीं। फिर अन्य दस भल्ल बाणों से उनके सिर भी काट डाले। क्रोध से लाल आँखें किये और दाँतों से ओठ चबा रहे उनके मुख-मण्डल पृथ्वी पर आकाशस्थित तारागण के समान अथवा फूले हुए कमलपुष्पों के समान शोभायमान हुए। इस तरह सोने के गहनों से सजे हुए दस कौरवों को दस स्वर्णपुङ्ख बाणों से मारकर वीर अर्जुन आगे जाने लगे।

३२
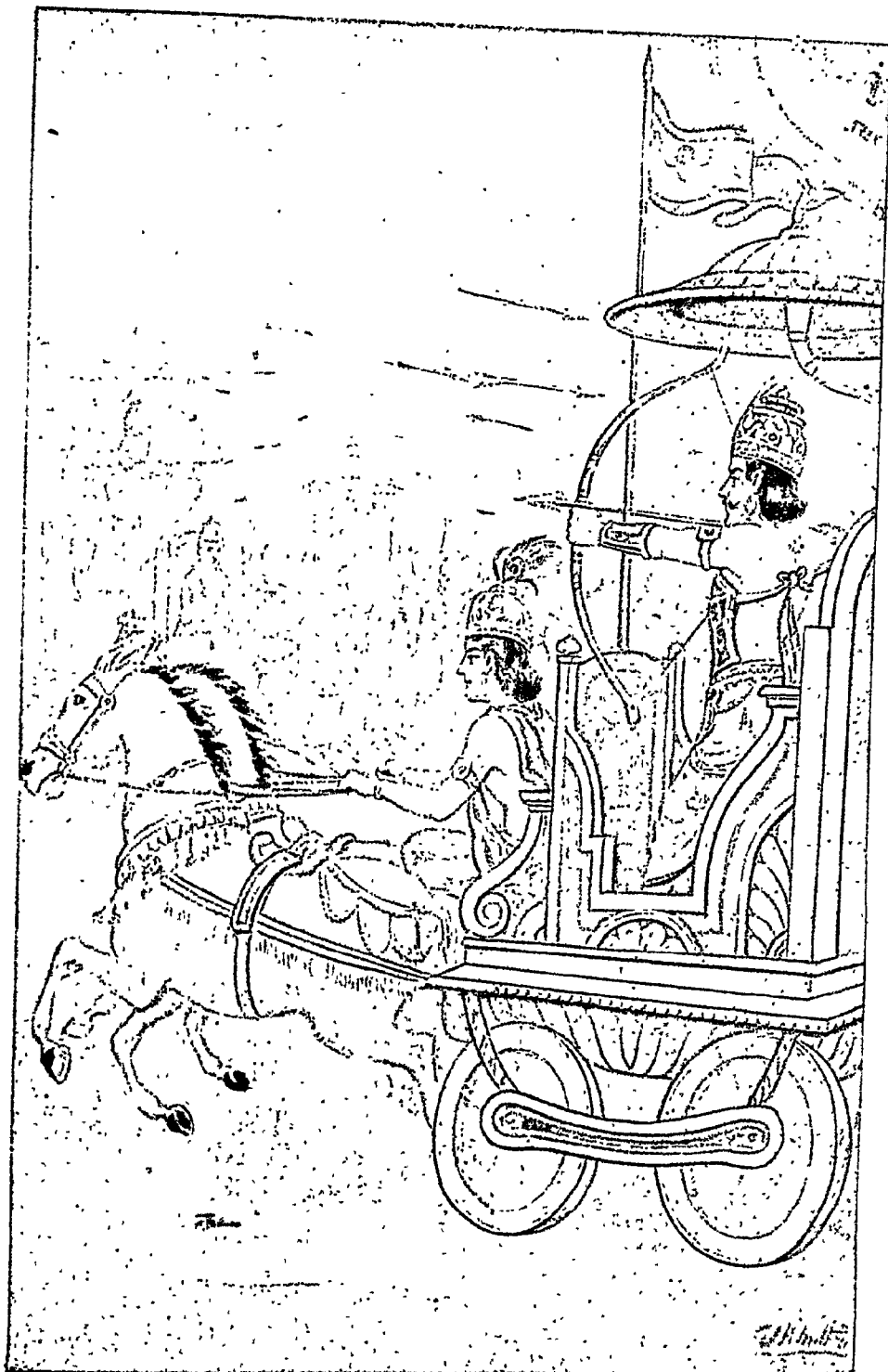
श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन के सुवर्ण, मणि और मोतियों से अलङ्कृत सफ़ेद घोड़ों को कर्ण के रथ की ओर चलाने लगे।—पृ० २६४६

उसी समय अश्वत्थामा ने दुर्योधन का हाथ अपने हाथ में लेकर उन्हें समझाते हुए, यों कहा—महाराज दुर्योधन ! प्रसन्न और शान्त होकर अब पाण्डवों से मेल करलो ।—पृ० २१७३

इक्यासी अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज, श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन के सुवर्ण-मणि और मोतियों से अलङ्कृत सफ़ेद घोड़ों को कर्ण के रथ की ओर चलाने लगे। तब आपके पक्ष के नव्वे वीर रथी अर्जुन को वेग से बढ़ते देखकर उनकी ओर दौड़ पड़े। वीर संशप्तकगण मरने-मारने की शपथ करके, अर्जुन को घेरकर, उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर अर्जुन ने फ़ुर्ती के साथ रोकने का यत्न कर रहे उन नव्वे वीरों को तीक्ष्ण बाणों से, मय सारथी, धनुष और ध्वजा के, मार गिराया। पुण्य का क्षय होने पर सुकृती सिद्धगण जैसे स्वर्गलोक के विमानों से नीचे गिरते हैं, वैसे ही वे भी अर्जुन के विविध बाणों से नष्ट होकर रथों से गिर पड़े। अब कौरवगण असंख्य हाथी, घोड़े और रथ लेकर अर्जुन के सामने बेधड़क आये और उन्हें रोककर उन पर लगातार शक्ति, ऋष्टि, प्रास, गदा, खड्ग, बाण आदि अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। सूर्यदेव जैसे किरणों से अँधेरे को दूर करते हैं, वैसे ही महावीर अर्जुन ने आकाश में विस्तृत उन शत्रुओं की शस्त्र-वर्षा और बाणों को काट डाला। १०

फिर राजा दुर्योधन की आज्ञा पाकर मस्त हाथियों पर सवार तेरह सौ म्लेच्छ बग़ल से हमला करके अर्जुन के ऊपर कर्णी, नालीक, नाराच आदि बाण और प्रास, शक्ति, मूसल, भिन्दिपाल आदि तीक्ष्ण शस्त्र बरसाने लगे। वीर अर्जुन ने भल्ल और अर्धचन्द्र बाणों से उन म्लेच्छों के शस्त्रों को व्यर्थ कर दिया और अपने विविध तीक्ष्ण बाणों से ध्वजा-पताका-शोभित हाथियों और उनके सवार शूर म्लेच्छों को मारना शुरू किया। वे सुवर्ण-माला से भूषित मस्त हाथी अर्जुन के सुवर्णपुङ्ख-युक्त बाणों से घायल और प्राणहीन होकर, वज्रपात से फटे हुए गिरि-शिखरों की तरह, गिरने और ज्वालामुखी पर्वतों की तरह शोभायमान होने लगे। उस समय घायल और मर रहे मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि का आर्तनाद और गाण्डीव धनुष का भयानक शब्द रणभूमि में गूँज उठा। ख़ाली
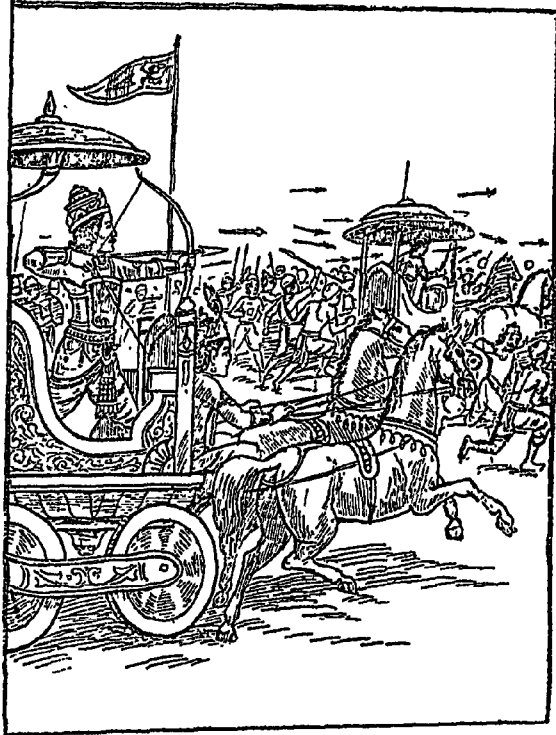
पीठ असंख्य हाथी और घोड़े बाणों की चोट से विह्वल होकर चारों ओर भागने लगे। घोड़ों, योद्धाओं और सारथियों से शून्य गन्धर्वनगराकार सुसज्जित हज़ारों रथ इधर-उधर पड़े थे। महाराज, घुड़सवार योद्धा जहाँ भागकर जाते थे वहीं अर्जुन के बाण उन्हें मारते थे। उस समय हम लोगों ने अर्जुन का अद्भुत बाहुबल देखा। वे अकेले ही युद्ध करके गजारोही, २० अश्वारोही और रथी योद्धाओं को मार रहे थे। राजन्! उस समय फिर साहस करके हाथियों, घोड़ों और रथों के योद्धा लौट पड़े और गरज-गरजकर अर्जुन को घेरने लगे।

महाराज! उस समय बली भीमसेन, अर्जुन को सेना के बीच घिरते देखकर, कौरवपक्ष के बचे हुए रथी योद्धाओं को छोड़कर, बड़े वेग से अर्जुन के रथ की ओर, उनकी सहायता करने के लिए दौड़े। कौरवसेना अर्जुन के ही पराक्रम से अधिकांश मर चुकी थी। अब भीमसेन को भी आते देखकर वह अल्पावशिष्ट पीड़ित सेना और भी डर गई और भागने लगी। गदा हाथ में लिये भीमसेन अर्जुन के निकट जाकर, अर्जुन के मारने से बच रहे, घुड़सवारों को मारने लगे। दीवार, बड़े-बड़े महल और फाटक तोड़ सकनेवाली, कालरात्रि के समान अति उग्र और मनुष्यों, हाथियों तथा घोड़ों के प्राण हरनेवाली उनकी वह भयानक गदा फुर्ती के साथ

बारम्बार हाथियों, घोड़ों और उनके सवारों पर चलने लगी। कवच धारण करनेवाले घोड़ों और उनके सवारों को भीमसेन उस गदा से चूर्ण करने लगे और वे आर्तनाद करते हुए पृथ्वी पर गिरने लगे। उनके सिर, हड्डी और पैर आदि अङ्ग-प्रत्यङ्ग चूर-चूर हो गये और वे ख़ून से नहाकर, दाँतों से पृथ्वी को पकड़ते हुए, धरती पर लोटने लगे। मांसाहारी जीव प्रसन्नतापूर्वक उनका मांस खाने लगे। भीमसेन की वह भयानक गदा सेना के रक्त, मांस और चर्बी से तृप्त होकर उनकी हड्डियों को भी चूर्ण करने लगी। महाबली भीमसेन इस तरह दस हज़ार घोड़ों, उनके सवारों और असंख्य ३० पैदलों को मारकर गदा हाथ में लिये रणभूमि में शोभायमान हुए। गदापाणि भीमसेन को देखकर कौरवपक्ष के सैनिकों को जान पड़ा कि साक्षात् यमराज ही दण्ड हाथ में लेकर उनका संहार

कर रहे हैं। बड़ा भारी मगर जैसे सागर में प्रवेश करे वैसे ही मस्त हाथी के समान दुर्द्धर्ष कुपित भीमसेन कौरवों की गजसेना में फिर घुसे। वहाँ जाकर उन्होंने क्षण भर में उसी गदा से हाथियों को भी चौपट कर डाला। हौदों से शोभित, ध्वजाओं से अलङ्कृत, योद्धाओं सहित बड़े-बड़े हाथी—पक्षयुक्त पर्वतों की तरह—मरकर और घायल होकर पृथ्वी पर गिरते दिखाई पड़ने लगे।

महावीर भीमसेन इस तरह गजसेना का संहार करके रथ पर बैठकर फिर अर्जुन के पीछे, उनकी रक्षा करते हुए, चले। उस समय कौरवों की सेना के अधिकांश योद्धा उत्साह-शून्य और युद्ध से विमुख हो गये। शस्त्रों के प्रहार से पीड़ित होने के कारण उनमें युद्ध करने की शक्ति और साहस ही नहीं रहा। वह फुर्ती जाती रही। उन्हें निश्चेष्ट और निस्तेज देखकर वीर अर्जुन ने शस्त्रों और बाणों की वर्षा से उन्हें ढक दिया। अर्जुन के असंख्य बाण लगने से मनुष्य, हाथी, रथ और घोड़े केसर-युक्त कदम्ब-कुसुम के समान जान पड़ने लगे। हे राजेन्द्र! मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के प्राण हरनेवाले अर्जुन के उग्र बाणों की वर्षा से कौरवदल में बेतरह हाहाकार सुनाई पड़ने लगा। इधर-उधर भागकर छिपने की चेष्टा कर रहे, भय-विह्वल कौरव-सैनिक हाहाकार करते हुए, अलातचक्र की तरह, भ्रमण करने लगे। अर्जुन ने ऐसी बाण- ४० वर्षा की कि कौरवदल में कोई रथी, हाथी, घोड़ा या उसका सवार अक्षत-शरीर नहीं देख पड़ता था। सैनिकों के कवच कट गये थे और शरीर ख़ून से तर हो रहे थे। सारी सेना फूले हुए अशोक-वन के समान या दावानल से जल रहे वन के सदृश जान पड़ती थी। महाराज, अर्जुन का वह अद्भुत बाहुबल और वेग-विक्रम देखकर कौरवगण कर्ण के जीवन से निराश हो गये। अर्जुन के बाणों का स्पर्श असह्य होने के कारण कौरवगण युद्ध करना छोड़ अर्जुन के आगे से हटने और अपनी रक्षा के लिए कर्ण को पुकारने लगे। महापराक्रमी अर्जुन भी बाण-वर्षा से उन्हें भगाने और भीमसेन प्रमुख पाण्डव-सैनिकों को आनन्दित करने लगे।

महाराज, तब आपके दुर्योधन आदि पुत्र अर्जुन के बाणों से विह्वल होकर कर्ण के पास गये। उस समय अथाह सङ्कट-सागर में डूब रहे उन लोगों की रक्षा करनेवाले एक कर्ण ही द्वीप-स्वरूप थे। कौरवदल के सब योद्धा, विषहीन साँप के समान, अर्जुन का कुछ नहीं कर सके और उनके भय से विह्वल होकर कर्ण की शरण में गये। सब प्राणी जैसे मृत्यु के डर से विषय-भोगों को छोड़कर सब लोगों की एकमात्र गति धर्म का आश्रय लेते हैं, वैसे ही सेना सहित आपके पुत्रगण अर्जुन के डर से कर्ण की शरण में पहुँचे। ५०

कर्ण ने देखा कि वे लोग अर्जुन के बाणों से पीड़ित, ख़ून से तर, भय-विह्वल और विपत्ति-ग्रस्त होकर त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। अर्जुन के बाहुबल से भागी हुई आपकी सेना की यह दशा देखकर कर्ण ने उन्हें अभय-दान किया। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कर्ण, अर्जुन को मारने का निश्चय करके, धनुष की डोरी बजाने लगे। वे क्रोध के मारे बारम्बार साँसें लेते हुए अर्जुन

के सामने ही पाञ्चालसेना पर आक्रमण करके उसका नाश करने लगे। यह देखकर पाण्डव-पक्ष के महारथी राजा लोग क्रोध से लाल आँखें करके कर्ण के ऊपर अमोघ तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। इधर कर्ण सैकड़ों-हज़ारों बाण छोड़कर वीर पाञ्चालों के प्राण हरने लगे। उस समय मित्र-हितैषी कर्ण और मित्रों (पाण्डवों) के लिए प्राण देने को उद्यत पाञ्चालगण परस्पर महाघोर युद्ध करने लगे। पाञ्चालसेना में बेतरह कोलाहल सुन पड़ने लगा। ५७

बयासी अध्याय

भीमसेन और दुःशासन का समागम और परस्पर बातचीत

सञ्जय कहते हैं—हे राजेन्द्र! महापराक्रमी कर्ण ने अर्जुन के प्रभाव से कौरवों को भागते देखकर, आँधी जैसे मेघमाला को छिन्न-भिन्न करे वैसे ही, पाञ्चाल-सेना को मारना और भगाना शुरू किया। कर्ण ने अञ्जलिक बाणों से जनमेजय के सारथी और घोड़ों को मारकर अनेक भल्ल बाणों से शतानीक और सुतसोम को पीड़ित किया और उनके धनुष भी काट डाले। फिर उन्होंने छः बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल करके कई बाणों से उनके घोड़े मार डाले और फिर सात्यकि के घोड़ों को मारकर केकय-राजकुमार विशोक को मार गिराया। कुमार विशोक की मृत्यु देखकर केकय-सेना के सेनापति उग्रकर्मा कुपित होकर कर्ण की ओर दौड़े। उन्होंने उग्र वेगवाले बाणों से कर्ण के पुत्र प्रसेन को बारम्बार पीड़ित किया। कर्ण ने हँसकर तीन अर्धचन्द्र बाणों से उक्त सेनापति का सिर और दोनों हाथ काट डाले। वे प्राणहीन होकर कुल्हाड़ी से काटे गये शालवृक्ष की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े।

रण में नृत्य सा कर रहे कर्णपुत्र ने धनुष चढ़ाकर सात्यकि को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करना शुरू किया। महावीर सात्यकि ने क्रोध से विह्वल होकर शीघ्र ही तीक्ष्ण बाणों से कर्ण के पुत्र

को मार गिराया। अपने पुत्र का वध देखकर महावीर कर्ण क्रोध और क्षोभ से विह्वल हो उठे। उन्होंने "अरे सात्यकि, तुम मारे गये!" यों कहकर, उनको मारने के विचार से, एक अत्यन्त अनिवार्य विकट बाण वेग से छोड़ा। वीर शिखण्डी ने फुर्ती करके उस बाण को बीच में ही काट डाला और कर्ण को तीन बाण कसकर मारे। महाबाहु कर्ण ने क्रोध से विह्वल होकर क्षुरप्र बाणों से शिखण्डी की ध्वजा और धनुष को काटकर छः उग्र बाणों से उन्हें भी विह्वल कर दिया। इसके बाद उन्होंने धृष्टद्युम्न के पुत्र का सिर काटकर एक अत्यन्त तीक्ष्ण बाण सुतसोम को मारा।

महाराज, इस तरह घोर संग्राम में धृष्टद्युम्न के पुत्र का वध होने पर महात्मा कृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, वीर कर्ण क्रोध करके सभी पाञ्चालों का नाश किये डालता है; इसलिए तुम चलकर उसको मारो। श्रीकृष्ण के वचन सुनकर महावीर अर्जुन हँसकर कर्ण के रथ की ओर वेग से बढ़े। कर्ण के द्वारा प्राप्त भय से पाञ्चालों की रक्षा करने के लिए वीर अर्जुन उग्र शब्द से युक्त गाण्डीव धनुष को चढ़ाकर, उसकी प्रत्यञ्चा को बजाते, तलशब्द करते चले। अर्जुन ने क्षण भर में इतने बाण छोड़े कि अन्धकार हो गया और असंख्य रथी, हाथी, घोड़े और उनके सवार मरने लगे तथा ध्वजाएँ कट-कटकर गिरने लगीं। धनुष के उग्र शब्द से पर्वतों की कन्दराएँ प्रतिध्वनित हो उठीं, आकाश में उड़नेवाले पक्षी नीचे गिर पड़े। उस रौद्र मुहूर्त में मण्डलाकार धनुष घुमाते और बाण बरसाते वीर अर्जुन शत्रुसेना पर आक्रमण करने लगे। पराक्रमी भीमसेन, अर्जुन की पीछे से रक्षा करते हुए, रथ को बढ़वाकर चले। वे दोनों राजपुत्र शीघ्रता के साथ कर्ण की ओर जाने लगे। मार्ग में फिर शत्रु-सेना ने उनको रोका। १०

इसी समय कर्ण भी सोमकों का संहार करते हुए शत्रु-सेना के रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों को मारने और गिराने लगे। उनके बाणों से भी सब दिशाएँ और आकाश व्याप्त हो गया। तब उत्तमौजा, जनमेजय, युधामन्यु, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न, ये पाँचों पाञ्चालवीर सिंहनाद करते हुए तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को घायल करने लगे। किन्तु रूप-रस-गन्ध-शब्द-स्पर्श ये पाँचों इन्द्रियों के विषय जैसे संयमी जितेन्द्रिय पुरुष को धैर्य से नहीं हटा सकते, वैसे ही वे पाँचों वीर कर्ण को रथ से नहीं गिरा सके। अब कर्ण ने तीक्ष्ण बाणों से उन वीरों के धनुष, ध्वजा, पताका, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया और असंख्य बाणों से उन्हें पीड़ित करके घोर सिंहनाद किया। उस समय सब लोग यह जानकर अत्यन्त खिन्न हुए कि शायद बाण बरसाकर पाञ्चाल वीरों को पीड़ित कर रहे और प्रत्यञ्चा-युक्त बाणों से शोभित हाथोंवाले कर्ण के धनुष के शब्द से पृथ्वी फट जायगी। महावीर कर्ण लगातार इन्द्रधनुष के समान बहुत ही लम्बे-चौड़े विचित्र विजय धनुष को बारम्बार मण्डलाकार घुमाकर, प्रत्यञ्चा को खींचकर, बाण बरसा रहे थे जिससे वे किरण-शोभित 'मण्डल'-युक्त प्रचण्ड सूर्यमण्डल के समान शोभायमान

२० हो रहे थे। कर्ण ने शिखण्डी को बारह, उत्तमौजा को छः और युधामन्यु, जनमेजय तथा धृष्टद्युम्न को तीन-तीन उग्र बाण मारे। राजन्! भोग्य विषय जैसे जितेन्द्रिय पुरुष से हार जाते हैं, उसे अपने वश में नहीं कर सकते, वैसे ही पाञ्चाल देश के पाँचों महारथी वीर कर्ण के बल-वीर्य से परास्त हो गये। वे मन्त्र-मुग्ध से होकर चेष्टाहीन हो गये। उस समय द्रौपदी के पाँचों पुत्र अपने मातुलों को कर्ण के द्वारा विपत्तिसागर में निमग्न देखकर, सुसज्जित रथ लेकर, रक्षा करने के लिए उनके पास पहुँचे। जैसे जहाज़ टूट जाने पर कोई मनुष्य नौकाओं के द्वारा विपन्न यात्रियों को उबार ले, वैसे ही उन पाँचों कुमारों ने अपने रथों पर बिठाकर मातुलों का उद्धार किया।

महाराज, तब महारथी सात्यकि ने अपने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण के चलाये बाणों को काट-कूट कर अनेक बाणों से कर्ण को छिन्न-भिन्न कर डाला और फिर आपके बड़े पुत्र दुर्योधन को आठ लोहमय उग्र नाराच बाण मारे। उस समय महावीर कृपाचार्य, कृतवर्मा, कर्ण और राजा दुर्योधन, ये चारों महारथी मिलकर सात्यकि को तीक्ष्ण बाण-वर्षा से पीड़ित करने लगे। यादव-वीर सात्यकि इन चारों महारथियों से युद्ध करने के कारण दिक्पालों से लड़ रहे दानवराज के समान शोभा को प्राप्त हुए। उनका शब्दायमान धनुष लगातार बाण बरसा रहा था, जिससे वे गगनमण्डल-मध्यवर्ती शरद् ऋतु की दोपहरी के सूर्य के समान प्रचण्ड और दुर्द्धर्ष हो उठे। इसी बीच में पाञ्चाल देश के महारथी लोग एकत्र होकर वैसे ही महाबली सात्यकि की रक्षा करने लगे, जैसे देवगण इन्द्र की रक्षा करें। राजन्! उस समय कौरवों और पाण्डवों का युद्ध देवासुर-संग्राम के समान महा भयानक हो उठा। हाथी, घोड़े, रथ और पैदल बेशुमार मरने लगे। विविध बाणों और शस्त्रों के प्रहार सह रहे असंख्य रथी, हाथी, घोड़े और पैदल रणभूमि में इधर-उधर दौड़ने और परस्पर मारने-मरने लगे। कुछ सैनिक परस्पर प्रहार से

घायल होकर और वाहनों की पीठ से गिरकर आर्तनाद करने लगे और कुछ सैनिक धर्म-युद्ध में अनेक बाणों से पीड़ित और प्राणहीन होकर पृथ्वी पर गिरने लगे।

इधर महावीर दुःशासन बाण-वर्षा करते हुए बड़े वेग से बढ़कर बेधड़क भीमसेन के सामने आये और उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। सिंह जैसे अपने शिकार रुरु की ओर झपटता है, वैसे ही पराक्रमी भीमसेन बड़े वेग से दुःशासन की ओर चले। दोनों क्रुद्ध चिरविद्वेषी ३० महावीर, शम्बरासुर और इन्द्र के समान, दारुण संग्राम करने लगे। जिनके गण्डस्थल से मद बरस रहा हो ऐसे दो कामोन्मत्त गजराज जैसे एक हथिनी के लिए भिड़कर परस्पर दाँतों से प्रहार करें, वैसे ही वे दोनों वीर विजय के लिए शरीर को विदीर्ण करनेवाले बाणों से प्रहार करने लगे। भीमसेन ने मौक़ा पाकर दो क्षुरप्र बाणों से दुःशासन के धनुष और ध्वजा को काट डाला और उनके मस्तक में वेग से एक बाण मारकर अन्य तीक्ष्ण बाण से उनके सारथी का सिर अलग कर दिया। राजकुमार दुःशासन ने शीघ्र दूसरा धनुष लेकर भीमसेन को बारह बाण मारे। वे उस समय रास पकड़कर आप ही घोड़ों को हाँक रहे थे और भीमसेन के ऊपर प्रहार भी कर रहे थे। दुःशासन ने भीमसेन को ताककर एक सूर्य-किरण और अग्निशिखा सा उज्ज्वल, तेजोमय, हीरा-रत्न आदि से शोभित, सुवर्णमण्डित, वज्र के समान अत्यन्त दुःसह, शत्रु के शरीर को विदीर्ण करनेवाला महा घोर बाण छोड़ा। वह भयानक बाण लगने से महारथी भीमसेन का शरीर विदीर्ण हो गया। वे विह्वल और मृतप्राय होकर, दोनों हाथ फैलाकर, रथ के ऊपर गिर पड़े। थोड़ी देर में सचेत होकर वे सिंहनाद करने लगे। ३६

तिरासी अध्याय

दुःशासन-वध-वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज, वीर दुःशासन रणभूमि में घोर कर्म करने लगे। उन्होंने एक बाण से भीमसेन का धनुष काट डाला। फिर उन्होंने फुर्ती से साठ बाण भीमसेन के सारथी को और नव बाण भीमसेन को मारे। इसके उपरान्त अनेक तीक्ष्ण बाण मारकर वे भीमसेन को पीड़ित करने लगे। असाधारण बल-वीर्यशाली भीमसेन क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने दुःशासन के ऊपर एक घोर तीक्ष्ण शक्ति फेंकी। वीर दुःशासन ने भारी उल्का के समान प्रज्वलित उस भयानक शक्ति को सहसा वेग से आते देखकर, तनिक भी विचलित हुए बिना ही, कानों तक खींचकर पूर्ण वेग से छोड़े गये दस बाणों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। यह देखकर कौरव पक्ष के सब लोग परम प्रसन्न हुए और दुःशासन के इस कार्य तथा कौशल की प्रशंसा करने लगे। आपके पुत्र वीर दुःशासन ने फिर तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को बहुत घायल कर दिया। पराक्रमी भीमसेन दुःशासन के इस कार्य से क्रोध के मारे अग्नि की तरह प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने दुःशासन से कहा—हे धृतराष्ट्र के पुत्र, तूने तो मुझ पर जी भरकर

प्रहार कर लिया; अब मेरी गदा की चोट सहने के लिए तैयार हो जा। इसके बाद दुःशासन-वध का निश्चय किये हुए भीमसेन ने गदा हाथ में ली। उन्होंने फिर दुःशासन से कहा—रे पामर दुरात्मा ! सँभल जा, मैं आज इस समय तेरी छाती का रक्त पीऊँगा। [इस तरह अपनी पुरानी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा ।]

वीर दुःशासन ने भीमसेन के ये वचन सुनकर साक्षात् मृत्यु-स्वरूपिणी एक भयानक शक्ति लेकर उन पर फेंकी। अत्यन्त कुपित होकर भीमसेन ने भी अपनी भयानक गदा के प्रहार से उस शक्ति को चूर्ण कर दिया। उसके बाद वही गदा बड़े वेग से दुःशासन के मस्तक में ताककर मारी। मस्तक में गदा लगने से दुःशासन विह्वल होकर काँपते हुए रथ से दस धनुष (चार हाथ का एक धनुष) के फ़ासले पर जाकर गिरे। महावीर दुःशासन उस वेगवती गदा के प्रहार से काँपने और वेदना से अति विह्वल होकर पृथ्वीतल पर लोटने लगे। १० उनका कवच टूट गया, कपड़े फट गये, माला टूट गई और गहने इधर-उधर गिर गये। उनका रथ, सारथी और घोड़े भी उस गदा के गिरने से चूर्ण हो गये। यह देखकर पाण्डव और पाञ्चालगण आनन्द के मारे सिंहनाद करने लगे। महाबली भीमसेन भी दुःशासन को गिराकर बड़े हर्ष से, दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुए, घोरतर सिंहनाद करने लगे। आस-पास के सब लोग उनके भयानक सिंहनाद से मूर्च्छित होकर समरभूमि में गिर पड़े। तब अचिन्त्य अद्भुत कर्म करनेवाले भीमसेन रथ से उतरकर बड़े वेग से दुःशासन की ओर दौड़े। उस असंख्य जनपूर्ण घोर रणस्थल में दुःशासन को देखकर भीमसेन को स्मरण हो आया कि दुर्योधन आदि ने पाण्डवों के साथ अनेक शत्रुता के व्यवहार किये हैं; पति-परायणा द्रौपदी जब रजस्वला थीं तब दुःशासन कुरु-सभा में उन्हें घसीट लाया; उनके केश पकड़े और साड़ी उतार लेने की चेष्टा की। इस प्रकार कौरवों से प्राप्त अनेक क्लेशों को स्मरण करके भीमसेन प्रचण्ड अग्नि के समान क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। वे कर्ण, दुर्योधन, कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा आदि महारथियों को सुनाकर कहने लगे—मैं अब दुरात्मा दुःशासन को मारूँगा [उसका रक्तपान करूँगा]; अगर किसी में शक्ति हो तो वह दुःशासन की रक्षा करे।

महाबली भीमसेन दुःशासन को मारने के लिए वेग से उनके पास पहुँच गये और, सिंह जैसे गजराज पर आक्रमण करे वैसे ही, दुर्योधन और कर्ण के सामने ही दुःशासन को पकड़कर उन्होंने पटक दिया। उसके बाद काँप रहे दुःशासन की छाती पर चढ़कर, कण्ठ पर पैर रखकर, तीक्ष्ण खड्ग तानकर भीमसेन ने कहा—अरे पापी, तूने पहले कर्ण और दुर्योधन के साथ खुश होकर 'बैल-बैल' कहकर हमारा उपहास किया था, उसका फल अब भोग। बतला, राजसूय-यज्ञ के अवभृथ-स्नान से पवित्र हुए द्रौपदी के केश तूने किस हाथ से पकड़े थे ? तुझसे भीमसेन इस समय पूछता है।

भीमसेन ने दुःशासन के हृदय को चीर कर·······बारम्बार······गर्म रक्त पीना शुरू कर दिया। पृ० २१५७

महाराज, भीमसेन के ये घोर वचन सुनकर और उनका रौद्र रूप देखकर दुःशासन तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने लाल-लाल आँखें निकालकर अहङ्कार के साथ क्रोधपूर्ण स्वर से कहा—अरे भीमसेन! यही हाथी की सूँड़ के समान और पीन स्तनों का मर्दन करनेवाला वह हाथ है, जिसने हज़ारों गोदान किये हैं और समर में क्षत्रियों का संहार किया है। कुरुसभा में सब सभासदों के, कौरव-श्रेष्ठों के और तुम पाण्डवों के सामने मेरे इसी हाथ ने द्रौपदी के केश पकड़े थे। २१

राजन्! दुःशासन के ये वचन सुनकर भीमसेन ने बलपूर्वक रगड़कर, सिंहनाद करके, फिर कहा—मैं इस नीच का यह हाथ उखाड़ता हूँ, जिसमें शक्ति हो वह इसके जीवन की रक्षा करे। अब महाबली भीमसेन ने क्रोधान्ध होकर दुःशासन का वह हाथ तोड़ डाला और गला दबाकर उसे मार डाला। काल-सदृश भीमसेन ने घोर कर्म करके दुःशासन के हृदय को चीर-कर, स्वाद ले-लेकर, चारों ओर देखकर, बारम्बार दुःशासन का गर्म रक्त पीना शुरू कर दिया। कुपित भीमसेन कहने लगे—माता के दूध में, अमृत में, घी-दूध में, मीठे जल में, रस में, जव और महुए की मदिरा में, किसी भी पीने के पदार्थ में ऐसा स्वाद नहीं मिल सकता, जैसा स्वाद मुझे इस समय शत्रु के रक्त में मिल रहा है। ३१

निष्ठुर कर्म करनेवाले भीमसेन दुःशासन को मरा हुआ देखकर, अट्टहास करके, फिर कहने लगे—शोक है अरे नीच कि तू मर गया, मृत्यु ने तुझे बचा लिया और अब मैं तुझे कोई कष्ट नहीं पहुँचा सकता! हे भरतश्रेष्ठ, इस तरह कहकर दुःशासन की छाती पर से उठकर क्रूर भीमसेन मारे आनन्द के नाचने और शत्रुओं को ललकारने लगे। उस समय जिसने भीमसेन की भयानक मूर्ति देखी वही व्यथित और भय से विह्वल होकर गिर पड़ा। जो मनुष्य नहीं भी गिरे उनके हाथ से शस्त्र छूट पड़े। सब लोग मोहित से हो गये, उन्होंने आँखें मूँद लीं। लोग डर के मारे अस्पष्ट स्वर से चिल्लाने लगे। जिन लोगों ने वहाँ भीमसेन को दुःशासन का रक्त पीते देखा, वे भय से विह्वल होकर "अरे यह मनुष्य नहीं, कोई राक्षस है!" कहते हुए चारों ओर भागने लगे।

इसी बीच में राजकुमार युधामन्यु ने सेना सहित भाग रहे चित्रसेन का पीछा किया। वेग से चित्रसेन के सामने जाकर निडर युधामन्यु ने उनको तीक्ष्ण सात बाण मारे। महावीर चित्रसेन युधामन्यु के बाणों की चोट से, लात लगने से फुफकारकर चोट करनेवाले साँप की तरह, क्रुद्ध होकर लौट पड़े। उन्होंने युधामन्यु को तीन और उनके सारथी को छः बाण मारे। पराक्रमी युधामन्यु ने क्रोध से विह्वल होकर एक तीक्ष्ण बाण ताककर मारा। कान तक खींचकर छोड़े गये उस उग्र बाण ने चित्रसेन का सिर काट डाला। उनकी मृत्यु देखकर कर्ण अपना पौरुष प्रकट करने, शत्रुसेना को मारने और भगाने लगे। यह देखकर महावीर नकुल शीघ्रता के साथ कर्ण से युद्ध करने लगे। ४०

इधर पराक्रमी भीमसेन का क्रोध तब भी नहीं शान्त हुआ था। वे दुःशासन का रक्त पी चुकने के बाद उनके ख़ून को अञ्जलि में भरकर ऊँचे स्वर से, मृत दुःशासन को लक्ष्य करके, शत्रुओं को सुना-सुनाकर कहने लगे—दुष्ट दुःशासन, मैं इस समय राक्षस की तरह तेरा रक्त पी रहा हूँ; इस समय फिर प्रसन्नतापूर्वक "बैल-बैल" कहकर मेरा उपहास कर! पूर्व समय में जिन्होंने "बैल-बैल" कहकर हमारे आगे नृत्य किया था, उन्हीं के आगे इस समय हम भी "बैल-बैल" कहकर उनका उपहास करते हुए नाच रहे हैं। कर्ण और शकुनि की कुमन्त्रणा से दुर्योधन ने मुझे प्रमाणकोटि के ऊँचे भवन में सुलाकर पानी में गिराया, भोजन में विष मिलाकर खिलाया और साँपों से डसवाया। फिर लाक्षागृह में माता कुन्ती सहित हम पाँचों भाइयों को जला डालने की चेष्टा की, द्यूत-क्रीड़ा में कपट से राज्य ले लिया, वनवास के लिए लाचार किया, द्रौपदी के केश पकड़े और अब युद्ध ठानकर शस्त्र-बाण-वर्षा से ये मार डालने की चेष्टा कर रहे हैं। इस तरह पुत्रों सहित धृतराष्ट्र की दुष्टता से हम अपने घर में, वन में और अज्ञातवास के समय राजा विराट के नगर में सदा दुःख ही भोगते रहे। यह सब तेरी ही करतूत है। हमने दुःख के सिवा सुख कभी नहीं जाना।

राजन्, उस समय भीमसेन ख़ून से तर हो रहे थे और रक्त पीने के कारण उनका मुख भी लाल हो रहा था। क्रोध के आवेश से भरे हुए विजयी भीमसेन, श्रीकृष्ण और अर्जुन के सामने जाकर, कहने लगे—हे दोनों वीरो! दुःशासन-वध के सम्बन्ध में मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी। अब मैं इस रण-यज्ञ के प्रधान पशु दुर्योधन को मारकर और उसके सिर को लात से ठुकराकर दूसरी प्रतिज्ञा भी कौरवों के सामने ही शीघ्र पूरी करूँगा। तभी मुझे शान्ति प्राप्त होगी। ५० हे राजेन्द्र! महाबली भीमसेन, वृत्रासुर को मारनेवाले इन्द्र की तरह, प्रसन्न होकर ५२ घोर सिंहनाद करने और उछलने-कूदने लगे।

चौरासी अध्याय

नकुल और वृषसेन का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! महावीर दुःशासन के मारे जाने पर भ्रातृशोक से पीड़ित निषङ्गी, कवची, पाशी, दण्डधार, धनुर्द्धर, अलोलुप, षंढ, सह, वातवेग और सुवर्चा नाम के आपके दस महारथी पुत्र क्रोध से विह्वल हो उठे। वे लोग भीमसेन को घेरकर चारों ओर से तीक्ष्ण बाण मारने और पीड़ित करने लगे। कुपित काल के समान लाल आँखें किये हुए भीमसेन ने बड़े वेग से दस सुवर्णभूषित भल्ल बाणों से, रण से विमुख न होनेवाले, उन दसों वीरों को मार डाला। उनके मारे जाने पर कौरव-सेना कर्ण के सामने ही भीमसेन के डर से भागने लगी।

प्रजा-संहारक काल के समान भीमसेन का भयानक पराक्रम देखकर महावीर कर्ण डर गये। कर्ण के आकार से उनके मन का भाव जानकर चतुर शल्य ताड़ गये कि कर्ण भी भय से विह्वल हो रहे हैं। तब वे उस समय के योग्य हितोपदेश-युक्त वचन इस प्रकार बोले—हे वीरश्रेष्ठ कर्ण, तुम इस तरह भय-पीड़ित और विह्वल न होओ। यह तुम्हारे योग्य नहीं है। देखो, भीमसेन के डर से ये सब राजा भाग रहे हैं। दुर्योधन भी भाई के शोक से पीड़ित हो रहे हैं। १० भीमसेन को दुःशासन का रक्त पीते देखकर वे शोक और भय से मोहित हो रहे हैं। बचे हुए दुर्योधन के भाई और कृपाचार्य आदि महारथी भी, शोकाकुल और खिन्न होकर, दुर्योधन के निकट उपस्थित हैं। अर्जुन आदि पाण्डवपक्ष के महारथी विजय पाने से प्रबल होकर युद्ध करने के लिए तुम्हारे सामने आ रहे हैं। इसलिए तुम डर छोड़कर अपना पौरुष और साहस दिखाओ, क्षत्रिय-धर्म का पालन करने के लिए अर्जुन के सामने जाओ और युद्ध करो। राजा दुर्योधन ने सेनापति बनाकर युद्ध का सब भार तुम्हें सौंपा है। तुम अपनी शक्ति के अनुसार उस भार को वहन करो। युद्ध में विजय प्राप्त करने से चिरस्थायिनी कीर्त्ति मिलेगी और रण में मरण होने से स्वर्गलाभ होगा। हे कर्ण! वह देखो, तुम्हारा पुत्र वीर वृषसेन, तुम्हें इस तरह मोह को प्राप्त देखकर, क्रोध करके बड़े वेग से पाण्डवों पर आक्रमण करने जा रहा है।

हे राजेन्द्र, महातेजस्वी शल्य के ये वचन सुनकर महारथी कर्ण सावधान हुए। उन्होंने वीर क्षत्रिय की तरह युद्ध करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इसी समय कर्ण के पुत्र वृषसेन कुपित होकर उग्ररूप दण्डपाणि काल के समान गदा हाथ में लेकर सेना का संहार कर रहे भीमसेन के सामने बाण बरसाते हुए चले। यह देखकर, जम्भासुर को मारने के लिए उद्यत इन्द्र की तरह, वीर नकुल वृषसेन की ओर चले और तीक्ष्ण बाण मारकर प्रसन्नचित्त शत्रु को पीड़ित करने लगे। नकुल ने दम भर में एक क्षुरप्र बाण से वृषसेन की बिल्लौर और सुवर्ण से चित्रित ध्वजा काट डाली और एक भल्ल बाण से उनका सुवर्णभूषित विचित्र धनुष भी काट

२० डाला। तब दु:शासन का बदला लेने के विचार से दूसरा धनुष लेकर अस्त्रविद्या में निपुण वृषसेन ने नकुल को दिव्य अस्त्र-युक्त बाणों की वर्षा से पीड़ित करना शुरू कर दिया। कुपित महारथी नकुल भी उल्का-सदृश प्रज्वलित भयानक बाण वृषसेन के ऊपर बरसाने लगे। अस्त्र-युद्ध में निपुण वृषसेन ने उत्कृष्ट बाणों से नकुल के सब बाणों को व्यर्थ कर दिया। उनके बाणप्रहार से कुपित वृषसेन अपने तेज और अस्त्रों के प्रभाव से, आहुति पड़ने से प्रचण्ड अग्नि के समान, प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से नकुल के सुवर्णालङ्कृत, वनायु देश में उत्पन्न, सुकुमार उज्ज्वल चारों घोड़ों को मार डाला। तब विचित्र योद्धा नकुल उस बिना घोड़ों के रथ से उतर पड़े और शीघ्र ही सुवर्ण-चित्रित शतचन्द्र-शोभित ढाल और नीला तीक्ष्ण खड्ग लेकर आकाशचारी पक्षी की तरह रणभूमि में विचरने और पैंतरे बदलने लगे। फुर्ती दिखा रहे नकुल ने उसी खड्ग से वृषसेन की सहायता करनेवाले दो हज़ार योद्धाओं को काट-काटकर गिराना शुरू कर दिया। रथों, हाथियों और घोड़ों पर सवार वे योद्धा, अश्वमेध में यजमान के मारे हुए बलि-पशुओं की तरह, खड्ग-प्रहार से कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उत्तम चन्दन प्राप्त करने के लिए जैसे कोई चन्दन-वन को काटे, वैसे ही अकेले नकुल ने उन युद्धप्रिय, दुर्योधन के मित्र, सत्यसन्ध, अनेक देशों के क्षत्रियों को देखते ही देखते तलवार के वार से पृथ्वी पर सुला दिया।

पृथ्वी पर पैदल ही तलवार के हाथ दिखाकर शत्रुसेना का संहार कर रहे नकुल को चारों ओर से अनेक महारथी और वीरवृषसेन असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से घायल करने लगे। किन्तु वीर नकुल उन बाणों की परवा न करके शत्रुसेना को मारते हुए विचरने लगे। बाणों के प्रहार से अत्यन्त घायल और क्रोध से अधीर हो रहे नकुल इस तरह रणभूमि में घोर जन-संहार करने लगे। महावीर भीमसेन भी, अपने भाई नकुल की रक्षा करते हुए, शत्रुसेना का संहार कर रहे थे। इसके उपरान्त महाबली नकुल को कौरव-सेना के असंख्य पैदलों, रथियों,

घुड़सवारों और गजारोहियों का संहार करते देखकर वृषसेन ने तीक्ष्ण अठारह बाण उनको मारे। उन बाणों की गहरी चोट से पीड़ित नकुल क्रोध से अधीर हो उठे और वृषसेन को मार डालने के लिए उनकी ओर बड़े वेग से दौड़े। पर फैलाकर मांस-लोभ से अपने शिकार पर झपट रहे बाज़ की तरह नकुल को एकाएक अपनी ओर आते देखकर वृषसेन ने अनेक तीक्ष्ण बाणों से उनकी ढाल काट डाली। वीर नकुल वृषसेन के बाण-प्रहार की उपेक्षा करके विचित्र गति से आगे बढ़ने लगे। तब वृषसेन ने छः तीक्ष्ण बाण मारकर नकुल की वह तीक्ष्ण, सर्प-सदृश नङ्गी तलवार काट डाली और उनकी छाती में कई बाण मारे। रथ-हीन नकुल, खड्ग कट जाने से चिन्तित और पीड़ित होकर, शीघ्र ही भीमसेन के रथ पर चढ़ गये और वहाँ से अत्यन्त घोर बाण बरसाने लगे। ३०

महापराक्रमी वृषसेन उन दोनों महारथी पाण्डवों को एक ही रथ पर देखकर, क्रुद्ध होकर, लगातार बाण बरसाने और उन्हें घायल करने लगे। कौरवदल के अन्य योद्धा भी एकत्र होकर भीमसेन और नकुल पर बाण-वर्षा करने लगे। उस समय भीमसेन, और अर्जुन भी क्रोध के मारे आहुति से प्रचण्ड अग्नि की तरह प्रज्वलित होकर वृषसेन को लगातार बाण-वर्षा से पीड़ित करने लगे। अब भीमसेन ने अर्जुन से कहा—हे पार्थ! देखो, वृषसेन के बाणों से नकुल व्यथित और विह्वल हो रहे हैं। महावीर वृषसेन हम दोनों पर भी लगातार बाण छोड़ रहा है। इसलिए तुम शीघ्र इससे युद्ध करने के लिए आगे बढ़ो। हे नरनाथ, महारथी अर्जुन यह सुनकर वृषसेन की ओर वेग से चले। तब नकुल ने भी अर्जुन से शीघ्र ही वृषसेन का वध करने के लिए कहा। वीर अर्जुन ने नकुल के वचन सुनकर वासुदेव से झटपट वृषसेन के सामने रथ ले चलने को कहा। ४२

पचासी अध्याय

वृषसेन का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—हे राजेन्द्र! तब द्रुपदराज के पाँचों पुत्र (धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, जनमेजय, युधामन्यु और उत्तमौजा), द्रौपदी के पाँचों पुत्र और वीर सात्यकि, नकुल को वृषसेन के बाणों से रथ-रहित, धनुष और खड्ग के कटने से शस्त्रहीन तथा अत्यन्त पीड़ित देखकर क्रोध करके शत्रुओं की चतुरङ्गिणी सेना का संहार करते हुए नकुल की सहायता करने के लिए चले। उनके रथ वेग से चले, हवा से पताकाएँ फहराने लगीं। उनके घोड़े मानों उड़ते हुए चले। इस तरह पाण्डवपक्ष के योद्धाओं को आते देखकर उनका सामना करने के लिए कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, दुर्योधन, शकुनि-सुत, वृक, क्राथ और देवावृध आदि कौरवपक्ष के महारथी भी फुर्ती से अपने रथों को बढ़ाते, प्रत्यञ्चा का शब्द करते और बाण बरसाते चले।

ये सब वीर वज्र-तुल्य बाणों से प्रहार करते हुए जब शत्रुओं की ओर चले तब पाण्डवपक्ष की कुलिन्द-सेना मेघवर्ण पर्वत-शिखर-तुल्य हाथियों को वेग से बढ़ाती हुई विपक्षियों को रोकने और घेरने की चेष्टा करने लगी। वे हाथी हिमाचल के वनों में उत्पन्न, मदमत्त, सुसज्जित और सुवर्ण-जाल से शोभित थे। उन पर रणनिपुण योद्धा बैठे थे। वे हाथी बिजली से युक्त मेघों के समान शोभायमान हुए। कुलिन्दराज के पुत्र ने लोहे के दस तीक्ष्ण बाण मारकर सारथी और घोड़ों सहित कृपाचार्य को पीड़ित किया। कृपाचार्य ने तीक्ष्ण बाणों से उसे और उसके हाथी को मारकर गिरा दिया। तब कुलिन्द-राजकुमार का छोटा भाई अपने बड़े भाई की मृत्यु से क्रुद्ध होकर आगे बढ़ा। उसने सूर्य-किरण सदृश चमकीले कई तोमर मारकर कृपाचार्य को पीड़ित किया और घोर सिंहनाद किया। यह देखकर वीर शकुनि ने उसका सिर काट डाला। कुलिन्द-राजकुमारों के मारे जाने पर आपके महारथी लोग प्रसन्न होकर शङ्ख बजाने लगे। अब फिर पाण्डवों और सृञ्जयों के साथ कौरवों का भीषण संग्राम होने लगा। एक
१० दूसरे से आहत होकर रथी, घोड़े, हाथी और पैदल योद्धा पृथ्वी पर गिरने लगे।

इसके उपरान्त कृतवर्मा ने बाणों से शतानीक के साथ की असंख्य चतुरङ्गिणी सेना का संहार कर डाला। वीर अश्वत्थामा ने तीक्ष्ण बाणों से योद्धा, ध्वजा और शस्त्र सहित अन्य तीन हाथियों को मार डाला। वे कुलिन्द-सेना के हाथी वज्रपात से विदीर्ण पर्वतों के समान पृथ्वी पर गिर पड़े। कुलिन्द-राज के छोटे तीसरे पुत्र ने राजा दुर्योधन की छाती में कई तीक्ष्ण बाण मारे। दुर्योधन ने भी तीक्ष्ण बाणों से उसे और उसके हाथी को मार गिराया। वह गजराज अपने ऊपर बैठे हुए राजपुत्र के साथ गिर पड़ा। वर्षा ऋतु में इन्द्र के वज्रपात से फटे गेरू के पहाड़ से जैसे लाल जल बहता है वैसे ही उस हाथी के मुँह और शरीर से रक्त बह चला। कुलिन्दाधिपति का और एक पुत्र क्राथ की ओर हाथी को बढ़ाता हुआ चला। उस हाथी ने क्राथ के सारथी, रथ और घोड़ों को तहस-नहस कर दिया। क्राथ ने कुपित होकर तीक्ष्ण बाणों से उसे और

उसके हाथी को वैसे ही पृथ्वी पर गिरा दिया जैसे वज्रपात से कोई पहाड़ फटकर गिर जाय। उसी समय हाथी पर बैठे हुए अन्य एक पहाड़ी कुलिन्द-नन्दन ने तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से दुर्जय वीर योद्धा क्राथ को—मय रथ, सारथी, घोड़े, धनुष और ध्वजा के—छिन्न-भिन्न और प्राणहीन करके, आँधी से उखड़े बड़े वृक्ष की तरह, पृथ्वी पर गिरा दिया। तब वीर वृक ने उस हाथी पर सवार पहाड़ी कुलिन्द-नन्दन को बारह तीक्ष्ण बाण मारे। इस पर उस कुलिन्द के हाथी ने झपटकर पैरों से वृक को रथ और घोड़ों समेत रौंद डाला। बभ्रु के बेटे के बाणों से विदीर्ण होकर हाथी अपने महावत समेत पृथ्वी पर गिर पड़ा। सहदेव के पुत्र से पीड़ित देवावृध का बेटा भी गिर गया। कुलिन्दराज का अन्य एक शूर पुत्र एकाएक अपने ख़ूनी हाथी को बढ़ाकर शकुनि के ऊपर झपटा और तीक्ष्ण बाण मारने लगा। शकुनि ने जब देखा कि वह हाथी हमला कर रहा है तब उसका सिर काट गिराया। १९

कौरव पक्ष के असंख्य हाथी, घोड़े, रथ और पैदल नकुल-नन्दन शतानीक के बाणों से विनष्ट हो-होकर, गरुड़ के पङ्खों की प्रचण्ड आँधी से विमर्दित साँपों की तरह, पृथ्वी पर गिरने लगे। इसी समय कलिङ्गराज के पुत्र ने हँसकर शतानीक को कई तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित किया। शतानीक ने क्रुद्ध होकर क्षुरप्र बाण से उसका कमल-कुसुम-तुल्य मुख से शोभित सिर काट डाला। तब कर्ण के पुत्र वृषसेन ने लोहे के तीन उग्र बाण शतानीक को, इतने ही अर्जुन और भीमसेन को तथा बारह बाण श्रीकृष्ण को मारकर सात बाण नकुल को मारे। वृषसेन का यह अलौकिक कार्य और अद्भुत फुर्ती देखकर कौरव-गण बहुत प्रसन्न हुए और उनकी प्रशंसा करने लगे। किन्तु जो लोग अर्जुन के पराक्रम को विशेष रूप से जानते थे उन्होंने समझ लिया कि आग में पड़े हुए व्यक्ति के समान वृषसेन अब जीवित नहीं बच सकता।

महावीर अर्जुन अपने भाई नकुल को घोड़ों और रथ से हीन तथा श्रीकृष्ण को अत्यन्त घायल देखकर, वृषसेन पर कुपित होकर, बड़े वेग से शत्रु के रथ की ओर चले। कर्ण के

समीप स्थित वृषसेन ने जब हज़ारों बाण छोड़ रहे अर्जुन को उग्र रूप रखकर अपनी ओर आते देखा तब वे भी, पूर्वकाल में इन्द्र पर आक्रमण करनेवाले नमुचि दानव की तरह, बेधड़क उनके सम्मुख उपस्थित हुए। वृषसेन ने एक तीक्ष्ण बाण अर्जुन को मारकर घोर सिंहनाद किया। फिर इन्द्र को घायल करनेवाले नमुचि की तरह वृषसेन ने अर्जुन की बाईं भुजा को, जड़ में, कई उग्र बाणों से घायल करके नव बाणों से श्रीकृष्ण को और दस बाणों से अर्जुन को पीड़ित किया। वृषसेन के बाणों की चोट खाकर अर्जुन कुछ कुपित हो उठे। उनकी भ्रुकुटी त्रिकोणाकार होकर मस्तक में चढ़ गई; नेत्र लाल हो गये। वे वृषसेन को मारने का इरादा करके अनेक बाण छोड़ने लगे। शत्रुनाशन अर्जुन ने कर्ण, अश्वत्थामा और राजा दुर्योधन को ३० सुनाकर गर्व के साथ कहा—हे कर्ण, मैं इस समय तुम्हारे सामने ही उग्र कर्म कर रहे वृषसेन को तीक्ष्ण बाणों से मारकर यमपुर भेजता हूँ। सब लोग कहते हैं कि मेरा पुत्र अभिमन्यु जब अकेला, असहाय, रथहीन और शस्त्र-रहित था तब तुम सबने मिलकर उसे मारा था। किन्तु वृषसेन सशस्त्र और रथ पर स्थित है, तुम सब लोग भी उसकी सहायता करने के लिए निकट ही उपस्थित हो। लो, मैं तुम लोगों के सामने ही वृषसेन को मारता हूँ; जिसमें शक्ति हो वह इसकी रक्षा करे। हे मूढ़ कर्ण, मैं अर्जुन संग्राम में पहले वृषसेन को मारकर पीछे से इस कलह की जड़ और दुर्योधन का आश्रय पाकर गर्वित जो तू है, उसे भी मारूँगा और, इस जन-संहार के कारण-स्वरूप नराधम दुर्योधन को मेरे भाई भीमसेन मारेंगे।

राजन्, महारथी अर्जुन यों कहकर वृषसेन को ताककर उनके वध के लिए तीक्ष्ण बाण छोड़ने लगे। निःशङ्क अर्जुन ने हँसकर वृषसेन के मर्मस्थलों में दस बाण मारे। फिर चार तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणों से क्रमशः वृषसेन के धनुष, दोनों हाथों और सिर को काट डाला। अर्जुन के बाणों से विदीर्ण वृषसेन, सिर और बाहुओं से रहित होकर, मरकर वैसे ही रथ से पृथ्वी पर गिर पड़े जैसे कोई फूला हुआ

बड़ा शाल-वृक्ष वज्रपात से टूटकर पर्वतशिखर से गिर पड़े। अर्जुन के बाणों से मरे अपने महारथी वीर पुत्र को गिरते देखकर महावीर कर्ण शोक से पीड़ित और क्रोध से विह्वल हो उठे। वे बड़े वेग से अर्जुन के सामने आ गये। ३९

छियासी अध्याय

श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद

सञ्जय ने कहा कि महाराज! देवताओं के लिए भी दुर्द्धर्ष और अनिवार्य महाकाय कर्ण को, उमड़े हुए महासागर की तरह, गरजते और आते देखकर पुरुषोत्तम वासुदेव ने हँसकर कहा—हे अर्जुन! जिसके साथ तुमको युद्ध करना है वह कर्ण, शल्य-सञ्चालित, रथ पर बैठा आ रहा है; सावधान हो जाओ। वह देखो, महारथी कर्ण का किङ्किणी-जाल-मण्डित, विविध पताकाओं से अलङ्कृत, सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ आकाशचारी विमान की तरह चला आ रहा है। देखो, कर्ण की ध्वजा इन्द्र-धनुष की तरह आकाश से बातें कर रही है। वह ध्वजा हस्तिकक्ष्या-चिह्नित है। नित्य दुर्योधन का प्रिय करनेवाला वीर कर्ण, जलधारा छोड़ रहे महामेघ की तरह, बाण-वर्षा करता आ रहा है। मद्रराज शल्य आगे बैठे हुए महातेजस्वी कर्ण के घोड़ों को हाँक रहे हैं। हे पाण्डव, कौरव-सेना में चारों ओर शङ्ख-दुन्दुभि आदि बाजे बज रहे हैं और वीरगण तरह-तरह के सिंहनाद कर रहे हैं। महारथी कर्ण के धनुष का शब्द उन सब शब्दों को दबाकर चारों ओर फैल रहा है। वन में कुपित सिंह को झपटते देखकर जैसे मृग भागते हैं, वैसे ही कर्ण को आते देखकर पाञ्चाल-सेना के महारथी और उनके अनुगामी योद्धा भाग रहे हैं। हे अर्जुन, इस समय तुम सब तरह से कर्ण को मारने का यत्न करो। कर्ण के तीक्ष्ण बाणों को ११ और कोई नहीं सह सकता। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अकेला कर्ण क्या चीज़ है, तुम देव-दानव-गन्धर्वगण सहित त्रिभुवन को, चराचर जगत् को, अकेले ही संग्राम में जीत सकते हो। देखो, भीम उग्र त्रिलोचन शर्व कपर्दी आदि नामों से प्रसिद्ध और सब जगत् का संहार करनेवाले रुद्र से युद्ध करना तो दूर रहा, कोई मनुष्य उनकी ओर देख भी नहीं सकता। तुमने उन्हीं महादेव को, उनसे युद्ध करके, सन्तुष्ट किया है। अन्य देवताओं ने भी प्रसन्न होकर तुमको वर और अस्त्र दिये हैं। हे पार्थ, इन्द्र ने जैसे नमुचि दानव को मारा था वैसे उन देव-देव शूलपाणि के अनुग्रह से तुम भी कर्ण को मारो, विजय प्राप्त करो। तुम्हारा कल्याण हो।

अर्जुन ने प्रसन्न होकर कहा—मित्र मधुसूदन! तुम सब लोकों के गुरु मुझ पर प्रसन्न हो, इस कारण मुझे अवश्य ही विजय प्राप्त होगी। हे श्रीकृष्ण, शीघ्र मेरे घोड़ों को कर्ण के रथ की ओर ले चलो। आज कर्ण को मारे बिना अर्जुन नहीं लौटेगा। हे गोविन्द, आज

तुम या तो कर्ण को मेरे बाणों से छिन्न-भिन्न और प्राणहीन देखोगे और या मुझे ही कर्ण के बाणों से मरकर रण-शय्या पर शयन करते पाओगे। यह त्रैलोक्य को मोहित करनेवाला घोर २०. युद्ध होगा। जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक लोग इस युद्ध की चर्चा करेंगे।

महाराज, इस तरह कहते हुए वीर अर्जुन उसी तरह रथ हँकवाकर कर्ण की ओर चले जिस तरह मस्त हाथी दूसरे हाथी से युद्ध करने को जाता है। तेजस्वी शत्रुदमन अर्जुन फिर श्रीकृष्ण से कहने लगे—मित्र! शीघ्र घोड़ों को हाँकिए, समय बीता जा रहा है, दिन थोड़ा ही रह गया है। अर्जुन के ये वचन सुनकर, उन्हें जय का निश्चय दिलाकर, महात्मा कृष्ण ने मन और हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़ों को तेज़ी से हाँक दिया। अर्जुन का रथ २३ वायुवेग से चलकर क्षण भर में कर्ण के रथ के सामने पहुँच गया।

सत्तासी अध्याय

कर्ण और अर्जुन का समागम और युद्ध देखने के लिए आकाश में देवता, सिद्ध, गन्धर्व आदि का जमघट

सञ्जय कहते हैं—महाराज, वृषसेन की मृत्यु देखकर महाबली कर्ण क्रोध से विह्वल हो उठे। पुत्र-शोक के कारण उनकी आँखों में आँसू भर आये। क्रोध से नेत्र लाल करके तेजस्वी कर्ण युद्ध के लिए निकटवर्ती अर्जुन को ललकारते हुए उनके सामने उपस्थित हुए। व्याघ्रचर्म-मण्डित, सूर्य के समान वे दोनों रथ—आमने-सामने होकर—उदय हुए दो सूर्यों के समान शोभा को प्राप्त हुए। सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथों पर विराजमान दोनों वीर आकाश में स्थित चन्द्र-सूर्य के सदृश जान पड़ने लगे। त्रैलोक्य-विजय के लिए उद्यत इन्द्र और राजा बलि के समान उन दोनों वीरों को देखकर सभी सैनिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। रथ, प्रत्यञ्चा, बाण, शङ्ख आदि के शब्द के साथ सिंहनाद करते हुए दोनों वीर और उनके अनुगामी क्षत्रियगण बड़े वेग से एक दूसरे की ओर चले। हस्तिकक्ष्या-शोभित कर्ण की और वानर-युक्त अर्जुन की ध्वजा देखकर सभी वीरों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन दोनों श्रेष्ठ योद्धाओं को युद्ध के लिए उद्यत देखकर क्षत्रिय-गण सिंहनाद और साधुवाद से उनका अभिनन्दन करने लगे। कर्ण और अर्जुन के द्वन्द्वयुद्ध का उद्योग देखकर हज़ारों वीर पुरुष ताल ठोकने और धनुष-बाण का शब्द करने लगे। कौरव-१० गण कर्ण के आसपास जमा होकर हज़ारों बाजे और शङ्ख बजाने लगे। उसी तरह पाण्डव-गण भी अर्जुन को उत्साहित करते हुए तुरही-शङ्ख-नगाड़े आदि के शब्द से दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित करने लगे। कर्ण और अर्जुन का समागम होने के समय चारों ओर वीरगण उछ-लने, वस्त्र उछालने, चिल्लाने, गरजने और ताल-ख़म ठोकने लगे।

उस समय कर्ण और अर्जुन दोनों महारथी रथों पर बैठे और दिव्य धनुष हाथ में लिये थे। दोनों ही बाण-शक्ति-ध्वजा आदि से युक्त, कवच पहने, खड्ग-तरकस बाँधे, शङ्ख लिये और दर्शनीय थे। दोनों के सारथी श्रीकृष्ण और शल्य थे। दोनों के शरीर में लाल चन्दन लगा हुआ था। दोनों छत्र और चामरों से शोभित थे। दोनों के कन्धे सिंह के से ऊँचे, भुजाएँ विशाल, नेत्र लाल और छाती चौड़ी थी। दोनों का रूप एक सा था। दोनों सुवर्ण-माला से शोभित, महाबली, एक दूसरे को मारने के लिए उद्यत और विजय की इच्छा रखनेवाले थे। दोनों मैदान में भिड़ रहे दो साँड़ों के समान, दो मस्त हाथियों के समान, विषैले सर्प-शिशुओं के समान, मृत्यु और काल के समान, इन्द्र और वृत्रासुर के समान, प्रलय करने के लिए उद्यत दो क्रुद्ध क्रूर ग्रहों के समान जान पड़ते थे। दोनों सूर्य और चन्द्र के समान तेजस्वी, देवताओं के अंश से उत्पन्न, बल में देवताओं के तुल्य और देव-बालक से सुन्दर थे। दोनों वीर, अनेक शस्त्र धारण किये, शेर की तरह दर्प-पूर्ण दृष्टि से परस्पर देख रहे थे। दोनों को देखकर पाण्डवों और कौरवों को अपार प्रसन्नता हो रही थी। वीर कर्ण और अर्जुन युद्ध में परिश्रम और अभ्यास किये हुए तथा विविध अस्त्रों के ज्ञाता थे। दोनों का पौरुष और बल जगत्प्रसिद्ध था। दोनों ही पराक्रम में शम्बर, इन्द्र, कार्तवीर्य, श्रीरामचन्द्र, विष्णु और शङ्कर के समान थे। दोनों महारथियों के सारथी भी अद्वितीय निपुण शल्य और श्रीकृष्ण थे। दोनों के घोड़े भी सफ़ेद थे। दोनों ही तल-शब्द, बाहु-शब्द, धनुष के शब्द और सिंहनाद से आकाश को प्रतिध्वनित कर रहे थे। उन्हें देखकर कोई यह निश्चय नहीं कर सका कि कौन जीतेगा। २०

उन दोनों महारथियों को समरभूमि में देखकर सिद्ध-चारण लोग अत्यन्त विस्मित हुए। महाराज! उस समय आपके महाबली सब पुत्र, सारी सेना और योद्धाओं के साथ, समर की शोभा बढ़ानेवाले कर्ण के आसपास आ खड़े हुए। उधर वैसे ही धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, चेकितान, प्रसन्नचित्त प्रभद्रकगण और बचे हुए अन्य शूर युद्धप्रिय योद्धा अर्जुन को घेरकर खड़े हुए। पाण्डवों की चतुरङ्गिणी सेना और योद्धा लोग अर्जुन की रक्षा करते हुए कर्ण के वध और अर्जुन के विजय-लाभ की चेष्टा करने लगे। दुर्योधन आदि कौरव भी कर्ण की रक्षा और अर्जुन-वध का प्रयत्न करने लगे। विजय-लाभ की बाज़ी में पाण्डवों ने अर्जुन का और कौरवों ने कर्ण का जीवन लगा दिया। दोनों ओर के लोग और अन्य प्राणी उन दोनों की अनिश्चित जय-पराजय का फ़ैसला देखने के लिए उत्सुकता से उपस्थित थे। ३०

राजन्! वे संग्राम में सुशोभित, क्रोध-पूर्ण, दोनों महावीर परस्पर प्रहार और संहार के लिए उद्यत होकर इन्द्र और वृत्रासुर के समान शोभायमान हुए। उस समय उनका रूप महा-धूमकेतु ग्रहों के समान भयानक हो उठा। महाराज, उस समय आकाश में उपस्थित प्राणियों में भी मत-भेद हो गया। कुछ कर्ण का पक्ष लेकर और कुछ अर्जुन का पक्ष लेकर विवाद

करने लगे। देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, नाग, राक्षस आदि सब प्राणियों के परस्पर-विरोधी दो दल हो गये। एक दल कर्ण को और दूसरा दल अर्जुन को विजय प्राप्त होने की बात कह रहा था। नक्षत्रों सहित आकाश ने कर्ण का पक्ष लिया और पुत्र की विजय चाहनेवाली माता की तरह पृथ्वी ने अर्जुन का पक्ष लिया। इसी तरह सागरों, पर्वतों, नदियों और जल में उत्पन्न होनेवाले जीव अर्जुन के पक्षपाती थे। असुर, यातुधान, यक्ष और आकाशचारी पक्षियों

४० ने कर्ण का पक्ष ग्रहण किया। मुनि, सिद्ध, चारण, गरुड़, अन्य सब पक्षी, रत्न, निधि, चारों वेद, इतिहास, उपवेद, उपनिषद्, रहस्य, संग्रह, वासुकि, चित्रसेन, तक्षक, मणिक और विषधर कद्रू के पुत्र महानाग, ऐरावत, सौरभेय और वैशालेय शुभ साँप अर्जुन के पक्ष में हुए। पापप्रवृत्ति क्रूर साँप कर्ण के पक्ष में हुए। ईहामृग, व्यालमृग, शुभ पक्षी और शुभ पशु, सिंह, व्याघ्र आदि अर्जुन की विजय मनाने लगे। आठों वसु, मरुद्गण, साध्यगण, रुद्रगण, विश्वेदेवा,

४७ अश्विनीकुमार, अग्नि, इन्द्र, सोम, पवन, दसों दिशा, अपने गणों समेत देवगण, पितृगण, ऋषिगण, तुम्बुरु आदि गन्धर्व, यमराज, कुवेर, वरुण, देवर्षि, ब्रह्मर्षि, प्राधेय, मौनेय, अप्सराओं के झुण्ड, गुह्यक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, यज्ञ, दक्षिणा आदि सब अर्जुन के पक्ष में हुए। उधर कुत्ते, गीदड़, गिद्ध आदि पक्षी, सब आदित्य, राक्षस, क्रूर पशु, वैश्य, शूद्र, सूत, वर्णसङ्कर जातियाँ, प्रेत, पिशाच, भूतगण, मांसाहारी पापप्रकृति जीव, क्षुद्र नाग आदि कर्ण के पक्ष में हुए। सुन्दर गन्ध और शुभ शकुन अर्जुन की ओर दिखाई पड़ने लगे। आकाशचारी देव-गन्धर्व-राक्षस-अप्सरा आदि—ईहामृग, व्यालमृग, हाथी, घोड़े, रथ, मेघ और वायु आदि वाहनों पर बैठकर—कर्ण और अर्जुन का युद्ध देखने के लिए आ गये। देव-सिद्ध-चारण आदि के हज़ारों सुसज्जित दिव्य विमानों से आकाश परिपूर्ण हो गया। महाराज! कर्ण अथवा अर्जुन की विजय चाहनेवाले देवता, दानव, गन्धर्व, नाग, यक्ष, पक्षी, राक्षस, महर्षि, देवगण, स्वधा-भोजी पितृगण, तपस्वी वेदपाठी महर्षि, ओषधियाँ, सिद्ध, अप्सरा आदि के झुण्ड भिन्न-भिन्न पक्ष लेकर परस्पर झगड़ने लगे। ब्रह्मर्षियों और प्रजापतियों सहित दिव्य तेज से युक्त ब्रह्मा और रुद्रदेव भी, दिव्य विमानों पर बैठकर, वह अद्भुत घोर युद्ध देखने के लिए आकाश में आ गये।

तब इन्द्रदेव महाबली कर्ण और अर्जुन को युद्ध करने के लिए आमने-सामने देखकर कहने लगे—आज मेरे पुत्र अर्जुन कर्ण का वध करेंगे। सूर्यदेव ने कहा—नहीं, मेरे वीर पुत्र कर्ण युद्ध में अर्जुन को मारकर विजयलाभ से कृतकृत्य होंगे। इस तरह इन्द्र और सूर्य भी परस्पर विवाद करके अपने-अपने पुत्र के पक्ष में हो गये। महाराज, सच तो यह है कि कर्ण और अर्जुन के अपरिमित बल को देखकर प्रजापति ब्रह्मा के मन में भी सन्देह होने लगा कि न जाने

६० कर्ण अर्जुन को मारकर विजयी होगा अथवा अर्जुन कर्ण को मारकर यशस्वी होगा। महाराज, देवता ऋषि और चारण आदि सहित त्रिलोकी के सब जीव कर्ण और अर्जुन को संग्राम के लिए

तब इन्द्रदेव महाबली कर्ण और अर्जुन को युद्ध करने के लिए आमने सामने देख कर कहने लगे—
आज मेरे पुत्र अर्जुन कर्ण का वध करेंगे। पृ० २९६८

उद्यत देखकर, उनके अस्त्रबल से त्रिभुवन के भस्म होने की आशङ्का करके, भय से काँपने लगे। असुरों ने कर्ण का और देवगण सहित अन्यान्य प्राणियों ने अर्जुन का पक्ष लिया।

इसके उपरान्त सब देवताओं और प्राणियों ने सब लोकों के पितामह प्रजापति ब्रह्मा से हाथ जोड़कर कहा—भगवन्, कर्ण और अर्जुन दोनों तुल्यबल और अद्वितीय योद्धा हैं। इनमें विजय-लक्ष्मी किसे प्राप्त होगी? हमारी समझ में तो इनमें कोई किसी को नहीं परास्त कर सकता; क्योंकि कोई किसी से कम नहीं है। इसलिए ऐसा कीजिए कि ये युद्ध न करें। हे देव, इन दोनों का युद्ध होने से सारे जगत् के नाश की आशङ्का है और यही सोचकर हम लोग भय से विह्वल हो रहे हैं। आप कृपापूर्वक निश्चय करके बतलाइए कि इन दोनों में कौन विजय का अधिकारी है? भगवन्, हमारी इच्छा तो यह है कि आप दोनों का परस्पर परास्त न होना स्वीकार करें।

राजन्, उस समय इन्द्र देवताओं के ये वचन सुनकर ब्रह्मा को प्रणाम करके उनसे कहने लगे—ब्रह्मन्, पहले देवादिदेव महादेव कह चुके हैं कि इस युद्ध में श्रीकृष्ण सहित अर्जुन ही विजयी होंगे। इसलिए आप भी मुझ पर प्रसन्न होकर रुद्र के कथन का अनुमोदन कीजिए। मैं आपको वारम्वार प्रणाम करके प्रार्थना करता हूँ कि रुद्रदेव का कथन किसी तरह मिथ्या न हो।

महाराज, इन्द्र की प्रार्थना सुनकर प्रजापति ब्रह्मा रुद्रदेव के सामने ही कहने लगे—हे देवराज, खाण्डवप्रस्थ में अग्नि को तृप्त करनेवाले और देवलोक में आकर दानव-संहार करके तुम्हें यथोचित सहायता पहुँचानेवाले महारथी अर्जुन ही विजय प्राप्त करेंगे। अर्जुन देवपक्ष और कर्ण दानवपक्ष है, इसलिए कर्ण की हार और अर्जुन की जीत होनी ही चाहिए। अर्जुन कर्ण को परास्त ७० करेंगे तो देवताओं का भी दानवविजय-रूप कार्य सिद्ध होगा। इसी लिए हम भी अर्जुन की विजय चाहते हैं; क्योंकि अपने कार्य की सिद्धि सबको इष्ट होती है। और देखो, वीर अर्जुन सदा धर्म-परायण, मनस्वी, बलवान्, शूर, कृतविद्य, महातेजस्वी, सब गुणों से अलङ्कृत और सम्पूर्ण धनुर्वेद के ज्ञाता हैं। नारायणावतार, साक्षात् भगवान् विष्णु, कृष्णचन्द्र उनके सहायक और सारथी हैं। इन कारणों से अर्जुन की ही विजय होगी। पाण्डवों ने कर्ण और दुर्योधन के कारण वन-वास आदि के क्लेश सहे हैं। इसलिए अर्जुन ही विजयी होंगे। यही ठीक भी है।

हे इन्द्र, महावीर अर्जुन का तपोबल बहुत अधिक है। वे अगर बल-वीर्य में कर्ण से परास्त होने लगेंगे तो अपने तपोबल से उसे नष्ट कर देंगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन क्रुद्ध होकर लोक-मर्यादा का विचार नहीं करेंगे, इससे त्रिभुवन का संहार हो जायगा। इस कारण अर्जुन ही विजयी होंगे। अर्जुन और श्रीकृष्ण दोनों पुरुषोत्तम, जगत् की सृष्टि करनेवाले प्राचीन ऋषि नर-नारायण हैं। ये जगत् के शासक और नियामक हैं। इनका नियन्ता कोई नहीं है। स्वर्ग या मनुष्य-लोक में, कहीं, इनके समान कोई नहीं है। देवर्षि, देवता, चारण आदि सभी प्राणी इनके अनुगत हैं। इन्हीं के प्रभाव से इस जगत् की उत्पत्ति और रक्षा होती है। ८०

अतएव इस महायुद्ध में इन्हीं की विजय हो। और, पुरुषश्रेष्ठ महारथी कर्ण स्वर्ग में देवताओं के साथ या वसुलोक में भीष्म और द्रोणाचार्य के साथ रहकर सुख भोगें।

हे पृथ्वीनाथ, भवानीपति शङ्कर ने भी ब्रह्मा के इस कथन का सहर्ष अनुमोदन किया। तब त्रिलोकी के स्वामी इन्द्र ने, ब्रह्मा और महादेव के ये वचन सुनकर, वहाँ पर स्थित सब प्राणियों को सम्बोधन करके कहा—भगवान् शङ्कर और ब्रह्माजी ने जगत् के लिए हितकर जो कुछ कहा, वह तुम लोगों ने सुन लिया। वैसा ही होगा, उनका कथन मिथ्या नहीं हो सकता। तुम लोग घबराहट और चिन्ता को छोड़ो। महाराज, इन्द्र के ये वचन सुनकर वहाँ उपस्थित सब प्राणियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे लोग इन्द्र की प्रशंसा करने लगे। हर्षित देवगण सुगन्धित फूल बरसाने और तुरही आदि बाजे बजाने लगे। देवता, दैत्य और गन्धर्वगण उन दोनों वीरों का अद्भुत द्वन्द्व-युद्ध देखने के लिए आकाश में स्थित हुए।

इसी समय सफ़ेद घोड़ों से शोभित महाशब्द-युक्त दिव्य रथों पर विराजमान लोकप्रसिद्ध वीर श्रीकृष्ण, अर्जुन, कर्ण और शल्य अलग-अलग अपने श्रेष्ठ शङ्खों को बजाने लगे। उनके साथ ही अन्य वीरों ने दोनों ओर शङ्ख बजाये। इसके उपरान्त परस्पर लाग-डाँट रखनेवाले कर्ण और अर्जुन का, इन्द्र और शम्बरासुर के समान, कायरों के मन में डर पैदा करनेवाला भयानक युद्ध शुरू हो गया। दोनों वीरों के रथों पर स्थित सफ़ेद ध्वजाएँ प्रलयकाल में उदित राहु और केतु ग्रहों के समान शोभा को प्राप्त हुईं। आशीविष साँप के समान भयङ्कर, रत्नमयी, इन्द्र-धनुष के तुल्य, सुदृढ़ कर्ण की हस्तिकक्ष्या-चिह्नित ध्वजा शोभित हो रही थी। उधर अर्जुन की दिव्य ध्वजा पर स्थित, मुँह फैलाये मृत्यु के समान, वानर दाँत निकालकर लोगों को डरवा रहा था और किरण-युक्त प्रचण्ड सूर्य के समान

९०

दुर्निरीक्ष्य हो रहा था। इसी समय अर्जुन की ध्वजा में स्थित वानर, युद्ध की इच्छा करके, अपनी जगह से बड़े वेग से चलकर कर्ण की हस्तिकक्ष्या-युक्त ध्वजा पर पहुँचा और गरुड़ जैसे साँप को

छिन्न-भिन्न करें वैसे ही प्रहार करके नखों और दाँतों से उसे नोचने लगा। किङ्किणी-मण्डित कालपाश-तुल्य कर्ण की ध्वजा में स्थित हस्तिकच्या भी वेग से क्रुद्ध होकर उस वानर की ओर चली। इस तरह उन दोनों वीरों का, जान की बाज़ी लगाकर होनेवाला, घोर द्वन्द्व-युद्ध शुरू होने के पहले ही उनकी ध्वजाएँ परस्पर युद्ध करने लगीं। इसी प्रकार दोनों रथों के घोड़े भी परस्पर स्पर्धा प्रकट करते हुए हिनहिनाने लगे। श्रीकृष्ण ने शल्य की ओर और अर्जुन ने कर्ण की ओर आँखों से आँखें मिलाईं। कर्ण और शल्य दोनों की दृष्टि अर्जुन और श्रीकृष्ण की दृष्टि से दब गई। अब कर्ण ने हँसकर शल्य से कहा—हे मद्रराज, यदि इस युद्ध में किसी तरह अर्जुन ने मुझे मार डाला तो तुम क्या करोगे? शल्य ने कहा—हे कर्ण, जो अर्जुन ने तुमको मार डाला तो मैं अकेला ही श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों को मारूँगा। सञ्जय कहते हैं कि महाराज, इसी तरह अर्जुन ने गोविन्द से कहा कि हे कृष्णचन्द्र, अगर कर्ण किसी तरह मुझे मारने में समर्थ हुआ तो आप क्या करेंगे? यह सुनकर श्रीकृष्ण ने हँसकर कहा—हे अर्जुन! सूर्य चाहे आकाश से गिर पड़ें, भूमि के चाहे टुकड़े-टुकड़े हो जायँ, सागर चाहे सूख जाय और आग चाहे शीतल हो जाय, किन्तु कर्ण के हाथ से तुम्हारा वध नहीं हो सकता। और, अगर कर्ण किसी तरह तुम्हारा वध करने में समर्थ हो जायगा तो, निश्चय जानो, प्रलय हो जायगा। मैं विना शस्त्र लिये हाथों से ही कर्ण और शल्य दोनों का वध करूँगा। १०१

राजन्, श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर वीरवर अर्जुन हँसते हुए कहने लगे—हे श्रीकृष्ण, कर्ण और शल्य दोनों मिलकर भी मेरा सामना नहीं कर सकते। इन दोनों के एकत्रित पराक्रम को भी मैं अपने बाहुबल के बराबर नहीं समझता। आज आप रण में शीघ्र ही देखेंगे कि हाथी जैसे वृक्ष को तोड़-ताड़ डालता है वैसे ही मैं कर्ण के रथ, सारथी, घोड़े, कवच, ध्वजा-पताका-छत्र और धनुष को बाणों से काट-काट करके नष्ट कर दूँगा। आज अवश्य ही कर्ण की स्त्रियाँ विधवा होंगी। रात को उन्होंने अवश्य ही बुरे सपने देखे हैं। आप शीघ्र ही कर्ण की स्त्रियों को विधवावस्था में विलाप करते देखेंगे। कर्ण ने पहले कुरुसभा में द्रौपदी को उपस्थित देखकर मूढ़तावश जो आक्षेप किये थे, हमारा उपहास किया था, उसे मैं भूला नहीं हूँ। अदूरदर्शी कर्ण ने पहले से आज तक हम पाण्डवों के साथ जो बुरा बर्ताव किया है, उससे उत्पन्न क्रोध की आग बराबर मेरे हृदय को जलाया करती है। आज कर्ण को मारकर मैं उस आग को बुझाऊँगा। आप अभी देखेंगे कि मैं, फूले हुए पेड़ को चूर्ण करनेवाले मस्त हाथी की तरह, कर्ण को मारकर पृथ्वी पर गिरा दूँगा। हे मधुसूदन, "बड़े भाग्य की बात है जो हे वृष्णिवंशावतंस, आप विजयी हुए!" इस तरह के मधुर वचन आप स्वजनों के मुँह से शीघ्र ही सुनेंगे। आज आप प्रसन्नतापूर्वक सुभद्रा को, अपनी बुआ कुन्ती को, आँखों में आँसू भरे हुए देवी द्रौपदी को और महाराज युधिष्ठिर को अमृत-तुल्य वचनों से सान्त्वना देंगे। ११० ११७

अट्ठासी अध्याय

अश्वत्थामा का दुर्योधन को समझाना और उसका न मानना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! उस समय युद्ध-दर्शनाभिलाषी असंख्य देवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, अप्सरा, गरुड़, ब्रह्मर्षि और राजर्षि लोगों से परिपूर्ण आकाश-मण्डल की अद्भुत शोभा हुई। मनुष्य विस्मय-पूर्ण दृष्टि से आकाश की ओर देखने लगे। उसे मनोहर बाजों के शब्द, गीत, स्तुति, नृत्य, हास्य, बातचीत और अन्य मधुर शब्दों से युक्त देखकर उनके आनन्द का ठिकाना न रहा। इसी तरह आकाश में स्थित देवगण आदि रणभूमि के अद्भुत दृश्य को देख रहे थे। महाराज ! इधर प्रसन्नचित्त कौरवों और पाण्डवों के योद्धा विविध बाजे और शङ्ख बजाकर, सिंहनाद करके, उस शब्द से पृथ्वी और आकाश को प्रतिध्वनित और परस्पर प्रहार से शत्रुओं को पीड़ित करने लगे। चतुरङ्गिणी सेना से परिपूर्ण, मृत मनुष्यों हाथी-घोड़ों आदि के शरीरों से दुर्गम रण-

भूमि में रक्त ही रक्त हो गया। वहाँ सब वीर पुरुष ही उपस्थित थे और परस्पर बाण, खड्ग, शक्ति, ऋष्टि आदि शस्त्रों के दुःसह प्रहार कर रहे थे। कौरव और पाण्डव, प्राचीन देवासुर-संग्राम के समान, दारुण युद्ध करने लगे। ऐसे युद्ध का आरम्भ होने पर कवचधारी कर्ण और अर्जुन परस्पर तीक्ष्ण बाण बरसाकर सब दिशाओं और शत्रुसेना को व्याप्त तथा पीड़ित करने लगे। उस समय बाण-वर्षा से ऐसा अँधेरा हो गया कि दोनों ओर के लोगों को कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। तब दोनों पक्ष के योद्धा और सैनिक युद्ध छोड़कर, कर्ण और अर्जुन के पास खड़े होकर, वह घोर युद्ध देखने लगे। अस्त्रों के प्रभाव से सर्वत्र अद्भुत दृश्य दिखाई पड़ने लगे। पूर्व और पश्चिम की दो प्रचण्ड आँधियों के समान कर्ण और अर्जुन एक दूसरे के अस्त्र को अस्त्रबल से रोकने लगे। उस घने अँधेरे में, अन्धकार हरनेवाले चन्द्र और सूर्य के समान शोभा को प्राप्त, दोनों वीर चारों ओर किरणों के समान बाण बरसा रहे थे।

रण से भागना क्षत्रियधर्म के नियम के विरुद्ध जानकर दोनों ओर के योद्धा उन दोनों महारथियों के पास खड़े होकर वैसे ही शोभायमान हुए जैसे शम्बरासुर के पास दानव और इन्द्र के पास देवता शोभित हुए थे। चारों ओर मृदङ्ग, भेरी, पणव, नगाड़े, शङ्ख और बाहन आदि का शब्द गूँज उठने पर तेजस्वी कर्ण और अर्जुन घोर सिंहनाद करने लगे और गरज रहे मेघों के बीच में चन्द्र-सूर्य के समान शोभायमान हुए। मण्डलाकार घूम रहे दिव्य धनुषों के मण्डल में, किरणों के समान, बाण बरसा रहे तेजस्वी कर्ण और अर्जुन प्रलयकाल के दो सूर्यों के समान प्रचण्ड दिखाई पड़ने लगे। जान पड़ता था, वे सारे जगत् को भस्म कर देंगे। उनकी १० ओर देखना भी कठिन हो गया। दोनों ही महारथी, अजेय, शत्रुनाशन, कृतविद्य, युद्ध का पूर्ण अभ्यास रखनेवाले और परस्पर वध करने का दृढ़ सङ्कल्प किये हुए थे। कर्ण और अर्जुन, इन्द्र और जम्भासुर की तरह, निडर होकर परस्पर प्रहार और युद्ध कर रहे थे। वे महाधनुर्द्धर दोनों वीर महास्त्रों का प्रयोग करके भयानक बाणों से असंख्य मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों को मारते और एक दूसरे को पीड़ित करने लगे। अब फिर सिंह-पीड़ित मृग आदि वनवासी पशुओं के समान दोनों ओर की चतुरङ्गिणी सेना उनके बाणों से व्यथित और भय-विह्वल होकर भागने लगी।

तब राजा दुर्योधन, कृतवर्मा, शकुनि, कृपाचार्य और अश्वत्थामा, ये पाँचों महारथी मिलकर शरीर को चीरनेवाले तीक्ष्ण बाण मारकर श्रीकृष्ण और अर्जुन को पीड़ित करने लगे। वीरवर अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से एक साथ ही उन सबके धनुष, तरकस, ध्वजा और रथ काट डाले और घोड़े तथा सारथी मार डाले। यह अद्भुत कर्म करके उन्होंने कर्ण को भी बारह विकट बाण मारे। इसी समय शस्त्र हाथ में लिये सौ रथी योद्धा, सौ हाथियों के सवार और सौ घुड़सवार—मार डालने के विचार से—बड़े वेग से अर्जुन पर आक्रमण करने को चले। अर्जुन ने क्षुरप्र बाणों से उन शक, तुषार, यवन और काम्बोज जाति के वीरों को, मय उनके हाथों में स्थित शस्त्रों के, टुकड़े-टुकड़े करके पृथ्वी पर गिरा दिया। उन्होंने उनके सिर काट डाले और रथ, हाथी, घोड़े आदि उनके वाहनों को भी खण्ड-खण्ड कर डाला। उस समय अर्जुन के पराक्रम से प्रसन्न देवगण साधुवाद के साथ सुगन्धित वायु की सहायता से फूल बरसाने और तुरही आदि बाजे बजाने लगे। देवताओं और मनुष्यों के सामने किये गये अर्जुन के उस अद्भुत पराक्रम को देखकर सब प्राणियों को बड़ा विस्मय हुआ। किन्तु एक युद्ध का ही दृढ़ निश्चय किये हुए राजा दुर्योधन और कर्ण को न उससे विस्मय हुआ और न शङ्का या व्यथा हुई।

इसी समय अश्वत्थामा ने दुर्योधन का हाथ अपने हाथ में लेकर, उन्हें समझाते हुए, यों २० कहा—महाराज दुर्योधन! प्रसन्न और शान्त होकर अब पाण्डवों से मेल कर लो। इस विरोध को दूर कर दो, जिससे सबका संहार हो रहा है। मित्र! इस युद्ध को धिक्कार है, जिसमें सबके गुरु, ब्रह्मा के तुल्य, सब श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञाता मेरे पिता मारे गये और भीष्म पितामह

आदि अनेक महारथी योद्धा मृत्यु को प्राप्त हुए। मैं और मेरे मामा कृपाचार्य अवध्य हैं, इसी से हम दोनों अब तक जीते हैं। इसलिए मेल करके पाण्डवों के साथ मित्र भाव से चिरकाल तक पृथ्वी का राज्य करो। देखो, अर्जुन मेरे मना करने से युद्ध बन्द कर देंगे। कृष्णचन्द्र पहले से ही विरोध के विरोधी हैं, वे भी मान जायँगे। युधिष्ठिर धर्मात्मा और सभी प्राणियों के हितचिन्तक हैं, उन्हें मेल के लिए राज़ी कर लेना कुछ कठिन नहीं है। क्रोधी भीमसेन और नकुल-सहदेव युधिष्ठिर के कहे में हैं, वे भी शान्त हो जायँगे। मुझे निश्चय है कि पाण्डव, सन्धि का प्रस्ताव मानकर, युद्ध बन्द कर देंगे। अगर पाण्डवों से मेल कर लोगे तो तुम्हारी इस शुभ इच्छा से प्रजा का कल्याण होगा। इसलिए अब तुम युद्ध का विचार छोड़ दो। मरने से बचे हुए राजा लोग अपने नगरों को और बन्धु-बान्धव अपने घरों को लौट जायँ और सब सैनिकगण वैर भाव छोड़कर सुखी हों। हे नरेन्द्र! जो तुम मेरी इस बात को नहीं मानोगे तो शत्रुगण तुम्हारा वध करेंगे और तुम पछताओगे।

हे दुर्योधन, अभी तुमने और सारे जगत् ने अर्जुन का पराक्रम देख लिया है। अकेले अर्जुन ने जो काम किया है उसे साक्षात् इन्द्र, यमराज, वरुण, कुबेर या भगवान् ब्रह्मा भी नहीं कर सकते। हे कुरुराज, ऐसे गुणी और पराक्रमी होने पर भी वीर अर्जुन मेरे वचन को नहीं टालेंगे; युद्ध बन्द कर देंगे। वीर अर्जुन, महाराज युधिष्ठिर की तरह, तुम्हारे भी सदा आज्ञा-पालक रहेंगे। इसलिए हे राजेन्द्र, मुझ पर प्रसन्न होकर शान्ति की इच्छा से मेल कर लो। महाराज, मुझको सदा तुम्हारा अभिमान रहा है और तुम सदा मेरा सम्मान करते रहे हो, इसी से मैं तुमसे यह हित की बात कहता हूँ। तुम मेरे बहुत बड़े मित्र हो, उसी मित्रता के नाते मैं तुमको समझाता हूँ। देखो, मैं कर्ण को भी इस युद्ध से रोक सकता हूँ, केवल तुम्हारे राज़ी होने की देर है। कर्ण मेरे परम मित्र हैं और मैं उन्हें बड़े प्रेम और आदर की दृष्टि से देखता हूँ, इसलिए वे मेरी बात कभी न टालेंगे। बुद्धिमान् लोगों ने चार तरह की मैत्री कही है—एक सहज मैत्री, दूसरी सामनीति की मैत्री, तीसरी धन देकर की गई मैत्री और चौथी प्रताप देखकर की जानेवाली मैत्री। सो पाण्डव लोग इन चारों कारणों से तुम्हारे मित्र होने योग्य हैं, अर्थात् इन चारों कारणों से तुम्हें पाण्डवों से मित्रता करनी चाहिए। वे तुम्हारे भाई हैं। अगर तुम सामनीति से मेल करना चाहोगे तो वे तुम्हारे मित्र और हित-चिन्तक बन जायँगे। इस तरह प्रसन्न होकर अगर तुम पाण्डवों से मित्रता कर लोगे तो उससे जगत् का बड़ा उपकार और हित करोगे।

महाराज! परम हित-चिन्तक मित्र अश्वत्थामा के मुँह से ये हित वचन सुनकर दम भर सोचकर, लम्बी साँस छोड़कर, दुर्योधन ने खेदपूर्ण भाव से कहा—हे मित्र, तुमने जो कुछ कहा

३० वह बिलकुल ठीक है; किन्तु मैं जो कहता हूँ, वह भी सुनो। तुम्हारे सामने ही दुर्मति

भीमसेन ने, मेरे प्रिय भाई दुःशासन को सिंह की तरह मारकर, जो दुर्वचन कहे हैं, हमारा उपहास किया है, वह मेरे हृदय में काँटे की तरह कसक रहा है। फिर मेल किस तरह हो सकता है? मैंने पाण्डवों से बार-बार शत्रुता का व्यवहार किया है। मेरे उन व्यवहारों को याद करके पाण्डव कभी मेरे ऊपर विश्वास न करेंगे। इस समय कर्ण को संग्राम से रोकना भी उचित नहीं। उग्र आँधी जैसे सुमेरु पर्वत का कुछ नहीं बिगाड़ सकती, वैसे ही कर्ण के वेग और पराक्रम को अर्जुन कभी नहीं सँभाल सकता। अर्जुन इस समय थक चुका है, इसलिए कर्ण उसे ज़बर्दस्ती मार डालेंगे। हे गुरुपुत्र, तुम कर्ण से युद्ध से लौटने के लिए मत कहो। कर्ण अवश्य अर्जुन को मारेंगे, अर्जुन कर्ण को नहीं जीत सकता।

हे नरेन्द्र! आपके पुत्र दुर्योधन ने बारम्बार विनय करके, यों कहकर, अश्वत्थामा को समझा दिया। वे फिर अपने सैनिकों को उत्साहित और उत्तेजित करते हुए कहने लगे—हे वीरो, इस तरह निश्चिन्त और निश्चेष्ट होकर चुपचाप क्या खड़े हो? शीघ्र शत्रुओं पर आक्रमण करो और उन्हें मारो। ३४

नवासी अध्याय

कर्ण और अर्जुन का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन्! शङ्ख, भेरी आदि का शब्द चारों ओर होने लगा और पुरुष-सिंह महाबली कर्ण तथा अर्जुन वैसे ही परस्पर बाण बरसाते हुए युद्ध करने लगे, जैसे हिमाचल पर्वत के दो बड़े-बड़े दाँतोंवाले गजराज एक हथिनी के लिए परस्पर भिड़ जाते हैं। उस समय जान पड़ने लगा, जैसे पर्वत से पर्वत अथवा मेघ से मेघ टकरा रहे हैं। झरने, वृक्ष, लता, ओषधि आदि से युक्त ऊँचे शिखरवाले दो पर्वत जैसे चल रहे हों वैसे ही वे दोनों वीर शोभाय-मान हो रहे थे। दोनों महाबलशाली महारथी परस्पर अस्त्रयुद्ध करके एक दूसरे को पीड़ित करने लगे। पूर्व समय में इन्द्र और दानवराज बलि ने जैसा युद्ध किया था वैसा ही युद्ध उस समय कर्ण और अर्जुन करने लगे। दोनों के तीक्ष्ण बाणों और दुःसह अस्त्रों से दोनों के घोड़े, सारथी और शरीर बहुत ही घायल हो गये और लगातार रक्त बहने लगा। हे नरनाथ! ध्वजा-युक्त दोनों रथ एकत्र होने से जान पड़ने लगा जैसे पद्म, उत्पल, मत्स्य, कच्छप आदि से युक्त और पक्षियों के कलरव से प्रतिध्वनित दो बड़े सरोवर वायु के वेग से उमड़कर परस्पर निकटवर्त्ती हो रहे हों। इन्द्र के समान पराक्रमी और इन्द्र-तुल्य महारथी दोनों वीर, इन्द्र और वृत्रासुर की तरह, इन्द्र के वज्र के समान भयानक बाणों से परस्पर प्रहार करने लगे। अर्जुन और कर्ण के उस युद्ध को देखकर पृथ्वी-मण्डल काँप उठा और विचित्र कवच, आभूषण तथा

शस्त्र धारण किये हुए दोनों ओर के रथी, पैदल, घुड़सवार और हाथियों के सवार योद्धा विस्मित हो उठे। मार डालने के इरादे से महावीर कर्ण अर्जुन की ओर और महारथी अर्जुन कर्ण की ओर वैसे ही वेग से चले, जैसे प्रतिद्वन्द्वी मस्त हाथी की ओर मस्त हाथी झपटता है। यह देखकर दोनों ओर के योद्धा प्रसन्न होकर सिंहनाद करने, वस्त्र उछालने और हाथ उठाने लगे। उस समय सोमकगण चिल्लाकर अर्जुन से कहने लगे—हे वीर अर्जुन! देर न करो, शीघ्र ही १० दुष्ट कर्ण का सिर काटकर दुर्योधन की राज्य-लालसा को मिटा दो। इसी तरह कौरवपक्ष के योद्धा लोग कर्ण से कहने लगे—हे वीर कर्ण! शीघ्र बढ़कर तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को मारो, जिसमें पाण्डवगण सदा के लिए वन में जाकर रहें।

हे राजेन्द्र, तब महावीर कर्ण ने अर्जुन को दस तीक्ष्ण बाण मारे। अर्जुन ने भी हँसते हुए दस बाण पार्श्वदेश में मारकर कर्ण को पीड़ित किया। इस तरह दोनों वीर एक दूसरे को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। अर्जुन ने सिंहनाद करके गाण्डीव धनुष की प्रत्यञ्चा को साफ़ करके लगातार असंख्य नाराच, नालीक, वराहकर्ण, क्षुर, अञ्जलिक और अर्धचन्द्र बाण छोड़ना शुरू किया। सायङ्काल में पक्षी जैसे बसेरे के लिए मुख नीचा किये वेग से वृक्ष की ओर जाते हैं, वैसे ही अर्जुन के बाण कर्ण के रथ की ओर जाने लगे। अर्जुन ने कर्ण के ऊपर जिन-जिन अस्त्रों को चलाया उन्हें सूत-पुत्र ने एक-एक करके काट डाला।
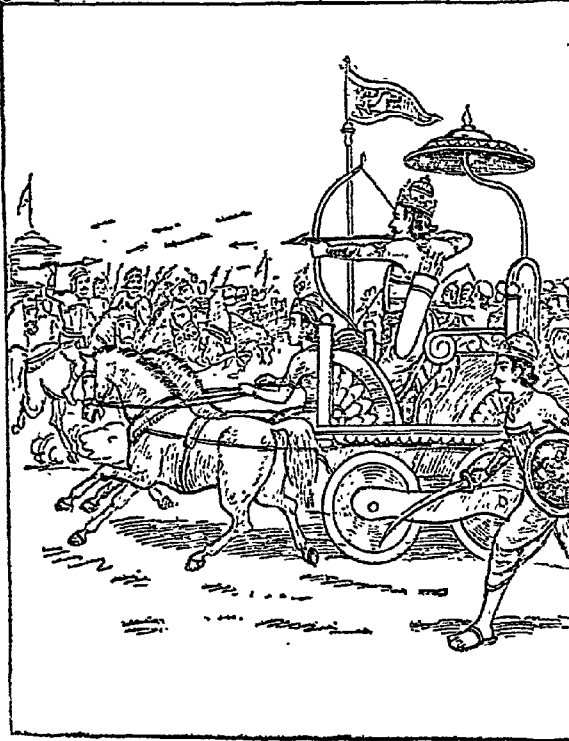
तब महापराक्रमी अर्जुन ने कर्ण के ऊपर शत्रुनाशन आग्नेय अस्त्र छोड़ा। वह अस्त्र अग्नि की ज्वालाओं से पृथ्वी, आकाश, सूर्यमण्डल और दिशाओं को व्याप्त करके प्रज्वलित हो उठा। बाँस के वन में आग लगने से जैसा शब्द होता है, वैसा ही घोर शब्द रणभूमि में उत्पन्न हुआ। योद्धाओं के वस्त्र जलने लगे और वे भागने लगे। कर्ण ने आग्नेय अस्त्र को प्रज्वलित देखकर, उसे शान्त करने के लिए, वारुण अस्त्र छोड़ा। कर्ण के उस अस्त्र के प्रभाव से आकाश में एकाएक बादल घिर आये और उनके जल बरसाने से वह अर्जुन के

अस्त्र की आग बुझ गई। उस समय मेघ-जाल से आकाश और सब दिशाएँ व्याप्त होने के कारण घना अँधेरा छा गया। अर्जुन ने फ़ुर्ती से वायव्य अस्त्र छोड़ा। उस अस्त्र के प्रभाव २० से उत्पन्न वायु ने दम भर में मेघों को छिन्न-भिन्न कर दिया।

अब दुर्द्धर्ष वीर अर्जुन ने गाण्डीव धनुष, उसकी प्रत्यञ्चा और बाणों को अभिमन्त्रित करके इन्द्र का प्रिय वज्रास्त्र प्रकट किया। अति कुपित अर्जुन के उस अस्त्र के प्रभाव से, उनके गाण्डीव धनुष से, लगातार असंख्य तीक्ष्ण वज्र-तुल्य क्षुरप्र, अञ्जलिक, अर्धचन्द्र, नालीक, नाराच और वराहकर्ण बाण निकलने लगे। वे वज्रस्पर्श बाण कर्ण के शरीर, घोड़े, धनुष, रथ, युग, चक्र, ध्वजा आदि को चीरते हुए, गरुड़ के भय से भागे हुए साँपों के समान, पृथ्वी में प्रवेश करने लगे। महारथी कर्ण अर्जुन के बाणों से व्याप्त हो गये; उनका शरीर रक्त से भीग गया। तब क्रोध से लाल हो रही आँखें निकालकर, महासागर के गर्जन-शब्द के समान गम्भीर शब्द करनेवाले धनुष को झुकाकर, वीर कर्ण ने घोर भार्गवास्त्र प्रकट किया। उस अस्त्र के प्रभाव से अर्जुन के अस्त्र का प्रभाव नष्ट हो गया और पाण्डवपक्ष के बेशुमार मनुष्य, हाथी और घोड़े मरने लगे। कर्ण कुपित होकर सुवर्णपुङ्ख-युक्त तीक्ष्ण अमोघ बाणों से पाञ्चाल और सोमकगण के प्रधान-प्रधान योद्धाओं को मारने लगे। वे भी कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर, क्रोध करके, तीक्ष्ण बाण बरसाकर चारों ओर से कर्ण को घायल करने लगे। पराक्रमी ३० कर्ण भी उत्साहपूर्वक बाण बरसाकर बलपूर्वक पाञ्चाल-सेना के रथी, गजारोही और अश्वारोही सैनिकों को मारने और घायल करने लगे। वे, वन में महाबली क्रुद्ध केसरी के मारे हुए हाथियों के समान, छिन्न-भिन्न और प्राणहीन होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। महारथी कर्ण इस तरह अपने बल-वीर्य और अस्त्र-ज्ञान के प्रभाव से पाञ्चाल-सेना के प्रधान-प्रधान वीरों को मारकर आकाश में स्थित प्रचण्ड किरण-युक्त सूर्य के समान शोभित हुए। राजन्, उस समय कौरव-पक्ष के योद्धा कर्ण को विजयी जानकर प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद करने लगे। उन्होंने समझा कि महारथी कर्ण ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को बेढब प्रहार और अस्त्रबल से विमुख कर दिया।

उस समय महाबली भीमसेन महारथी कर्ण के पराक्रम को अत्यन्त असह्य और अर्जुन के बाणों तथा अस्त्रों को व्यर्थ देखकर, क्रोध से लाल आँखें करके, हाथ से हाथ मलते और बार-बार लम्बी साँसें लेते हुए कहने लगे—हे अर्जुन, इस समय यह नृशंस अधर्मी सूतपुत्र तुम्हारे सामने ही कैसे बलपूर्वक प्रधान-प्रधान पाञ्चाल-वीरों को मार रहा है? पहले महा-देवजी के प्रभाव से दुर्जय कालकेय, निवातकवच आदि असुर भी तुमको नहीं हरा सके थे। आज यह सूतपुत्र कैसे तुमको दस बाण मारकर पीड़ित कर सका? यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि कर्ण तुम्हारे सभी बाणों को व्यर्थ कर रहा है। हे धनञ्जय! इस दुर्मति कर्ण ने द्रौपदी का जैसा अपमान किया था और कुरु-सभा में खोखले तिल कहकर

४० हमारा जैसा उपहास किया था, वह सब याद करके तुम शीघ्र इसको मारो। शत्रु-वध के विषय में क्यों उपेक्षा कर रहे हो? यह लापरवाही या सुस्ती का समय नहीं है। तुमने पहले खाण्डव वन में अग्निदेव को तृप्त करने के लिए जिस धैर्य से वहाँ के सब प्राणियों को मारा और परास्त किया था, उसी धैर्य को धारण करके इस समय कर्ण को मारो। तुम न मारोगे, तो मैं अभी गदा से इसका मस्तक चूर्ण कर दूँगा।

इसी समय श्रीकृष्ण ने भी कर्ण के प्रभाव से अर्जुन के अमोघ अस्त्र-युक्त बाणों को व्यर्थ होते देखकर, उन्हें उत्साहित करने के लिए, यों कहा—हे अर्जुन, क्या कारण है कि कर्ण तुम्हारे सामने ही अपने अस्त्रों और बाणों से तुम्हारे अस्त्रों और बाणों को व्यर्थ कर रहा है? तुम इस समय मोहित क्यों हो रहे हो? तुम क्या नहीं देखते कि तुम्हारे अस्त्रों को कर्ण के अस्त्र-बल से नष्ट होते देखकर सब कौरव प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद करते हुए कर्ण को सम्मानित और उत्साहित कर रहे हैं? तुम मन लगाकर कर्ण को मारने का प्रयत्न क्यों नहीं करते? तुमने जिस धैर्य से युग-युग में तमोगुणी घोर असुरों को और बलगर्वित दाम्भिक राक्षसों को मारा है, जिस धैर्य से किरात-रूप भगवान् शङ्कर से युद्ध करके उनको सन्तुष्ट किया है, उसी धैर्य से इस अनुचर-सहायक-गण सहित कर्ण को इस समय मारो। तुम कर्ण-वध के लिए और भी श्रेष्ठ अस्त्र छोड़ सकते हो, अथवा मेरे दिये हुए इस तीक्ष्ण पैने सुदर्शन चक्र को लो और नमुचि को जैसे इन्द्र ने मारा था, वैसे ही शत्रु का सिर काट डालो। इस तरह शीघ्र शत्रु को मारकर यह समृद्ध नगर-ग्राम-युक्त समुद्रों सहित पृथ्वी और उसका निष्कण्टक साम्राज्य धर्मराज को अर्पण करके स्वयं अतुल यश प्राप्त करो।

महाराज, भीमसेन और श्रीकृष्ण के यों प्रेरणा करने पर वीर अर्जुन कर्ण को मारने के लिए प्रयत्नशील हुए। अपने असाधारण पराक्रम और यथार्थ रूप को तथा पृथ्वीतल पर अपने जन्म लेने के कारण को स्मरण करके अर्जुन ने कहा—हे यादवश्रेष्ठ, अब मैं संसार के

कल्याण और कर्ण के वध के लिए अत्यन्त भयानक अस्त्र का प्रयोग करता हूँ, आप मुझे उसके लिए अनुमति दें। मैं उस अस्त्र के प्रयोग के लिए ब्रह्मा, शङ्कर, वेदज्ञ ब्राह्मणगण और देवगण आदि से भी अनुमति चाहता हूँ। ५०

राजन्! महाबली अर्जुन ने भगवान् ब्रह्मा को प्रणाम कर, मन में ध्यान करके, अत्यन्त घोर दुस्सह ब्रह्मास्त्र प्रकट किया। उस समय महावीर कर्ण ने मेघ की जलधारा की तरह लगातार अस्त्र-युक्त बाण बरसाकर अर्जुन के उस अस्त्र को शान्त कर दिया। पराक्रमी भीमसेन यह देखकर क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने कहा—हे अर्जुन, लोग तुमको ब्रह्मास्त्र जाननेवाला अद्वितीय योद्धा कहते हैं। इसलिए तुम फिर अनिवार्य ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करो। यह सुनकर महावीर अर्जुन ने कुपित होकर अनिवार्य ब्राह्म अस्त्र प्रकट किया। उस समय गाण्डीव धनुष से सर्प-तुल्य, सूर्य-किरणों के समान चमकीले, अस्त्र-युक्त सैकड़ों तीक्ष्ण बाण एक साथ छूटने लगे और उन प्रलय-सूर्य की किरणों के समान बाणों ने दिशा-उपदिशाओं को छा लिया। देखते ही देखते कर्ण का रथ उन बाणों से घिर गया। अर्जुन के धनुष से—अस्त्र के प्रभाव से—असंख्य नाराच, शूल, परशु और चक्र निकल-निकलकर चारों ओर कौरव-सेना पर गिरने और उसे नष्ट करने लगे। उस समय अर्जुन के बाणों से योद्धाओं के सिर कटते और उनके धड़ पृथ्वी पर गिरते देखकर बहुत से सैनिक भय से ही व्याकुल होकर मर गये। किसी वीर का हाथी की सूँड़ के समान दाहना हाथ, मय तलवार के, कटकर गिर पड़ा और किसी योद्धा का बायाँ हाथ क्षुरप्र बाण से, मय ढाल के, कटकर धरती पर लोटने लगा। राजन्, महावीर अर्जुन इस तरह प्राणनाशक भयानक बाणों से दुर्योधन की सेना के जवानों और योद्धाओं को मारने लगे।

इसी समय महारथी कर्ण भी मेघ की तरह जलधारा के समान असंख्य बाण छोड़ने लगे। अब उन्होंने भीमसेन, अर्जुन और श्रीकृष्ण को तीन-तीन बाणों से घायल करके घोर सिंहनाद किया। अर्जुन स्वयं घायल होकर, श्रीकृष्ण और भीमसेन की ओर देखकर, . . ६०

क्रोध से विह्वल हो उठे। वे कर्ण के प्रहार को न सह सके। उन्होंने एक साथ अठारह बाण छोड़े। तीन बाण कर्ण को, चार बाण शल्य को और एक बाण कर्ण की ध्वजा पर मारकर दस बाण, कर्ण के सहायक सुवर्ण-कवचधारी, सभापति नामक राजपुत्र को मारे। वह राजपुत्र कुल्हाड़ी से काटे गये शाल-वृक्ष की तरह रथ पर से गिर पड़ा। उसका सिर कट गया, हाथ कट गये और धनुष, ध्वजा, सारथी, घोड़े आदि सब नष्ट हो गये। फिर पराक्रमी अर्जुन ने अपनी फुर्ती दिखाने के लिए क्रम से तीन, आठ, दो, चार और दस बाण कर्ण को मारे। इसके बाद चार सौ हाथियों को, आठ सौ सशस्त्र रथी योद्धाओं को, सवारों सहित हज़ार घोड़ों को और आठ हज़ार पैदल वीरों को दम भर में अर्जुन ने मारकर गिरा दिया। कर्ण, शल्य, रथ और ध्वजा भी अर्जुन के असंख्य तीक्ष्ण बाणों से अदृश्य सी हो गई।

अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर कौरवगण चिल्लाकर कहने लगे—हे वीरश्रेष्ठ कर्ण! तुम लगातार बाण मारकर शीघ्र अर्जुन को मारो, नहीं तो ये दम भर में ही सब कौरवपक्ष के वीरों का नाश कर डालेंगे। भय-विह्वल कौरवों के ये वचन सुनकर वीर कर्ण यत्नपूर्वक मर्मभेदी बाण बरसाने और पाञ्चालों तथा पाण्डवदल के अन्य वीरों को मारने लगे। हे राजेन्द्र, धनुर्द्धरश्रेष्ठ महाबली वे दोनों वीर इस तरह अस्त्र-युक्त बाणों से एक दूसरे को और शत्रुपक्ष के सैनिकों को पीड़ित करने लगे।

चिकित्सकों के यत्न और मन्त्र तथा औषधों के प्रभाव से सुस्थ और विशल्य होकर धर्मराज युधिष्ठिर भी, इसी बीच में, कर्ण और अर्जुन का संग्राम देखने के लिए सोने का कवच ७० पहनकर रणभूमि में आ गये। सब लोग उनको, राहु के ग्रास से छूटे हुए पूर्णचन्द्र के समान, वहाँ आते देखकर बड़े सन्तुष्ट हुए।

राजन्, उस समय स्वर्गवासी और पृथ्वीतल के रहनेवाले लोग एकटक कर्ण और अर्जुन के उस घोर और अद्भुत युद्ध को देखने लगे। परस्पर प्रहार कर रहे वे दोनों वीर उस समय लगातार प्रत्यञ्चा खींचते और तल-ध्वनि करते हुए तरह-तरह के तीक्ष्ण बाण छोड़कर अपना रण-कौशल और पौरुष दिखा रहे थे। इसी बीच में अर्जुन के पूर्ण बल से बार-बार खींचने के कारण गाण्डीव धनुष की प्रत्यञ्चा टूट गई और उससे उत्पन्न घोर शब्द गूँज उठा। कर्ण ने यह मौक़ा पाकर सैकड़ों क्षुद्रक बाण अर्जुन को मारे और फिर केंचुल छोड़े हुए साँप के समान, तीक्ष्ण, तेल से साफ़ किये गये, कङ्कपत्र-शोभित साठ बाण श्रीकृष्ण को मारकर आठ बाण और अर्जुन को मारे। फिर वे भीमसेन को मर्मभेदी बाण मारकर अर्जुन की ध्वजा पर बाण बरसाते हुए उनके अनुगामी सोमकों का संहार करने लगे। उस समय सोमकगण क्रोध करके दौड़े और मेघ जैसे सूर्य-मण्डल को ढक लेते हैं, वैसे ही कर्ण के ऊपर बेशुमार बाण बरसाने लगे। अस्त्र-विद्या-विशारद कर्ण ने दम भर में अपने तीक्ष्ण बाणों से उन्हें रोककर चेष्टारहित कर दिया,

उनकी की हुई शस्त्र-वर्षा को व्यर्थ कर दिया और उनके हाथी-घोड़े-रथ आदि वाहनों को मार गिराया। उनके प्रधान-प्रधान सैनिक कर्ण के बाणों से पीड़ित और विह्वल होकर, सिंह के मारे हुए कुत्तों की तरह, आर्तनाद करते हुए मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। कर्ण ने वेग से आये हुए पाञ्चालों को तीक्ष्ण बाणों से मारकर गिरा दिया। यह देख अपने को रण में विजयी जानकर कौरव लोग तलध्वनि और सिंहनाद करने लगे। उस समय कर्ण का असह्य पराक्रम देखकर सभी को मालूम पड़ने लगा कि अब श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्ण से परास्त हुए। ८०

कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल पराक्रमी अर्जुन ने क्रोध करके फुर्ती के साथ गाण्डीव को झुकाकर उस पर अपने बाहुबल को सँभाल सकनेवाली दृढ़ प्रत्यञ्चा दम भर में चढ़ा दी। धनुष की डोरी को हाथ से साफ़ करके क्रोध से अधीर हो रहे अर्जुन ने पल भर में अपने बाणों से कर्ण के बाणों को काट डाला और फिर हँसकर सुतीक्ष्ण अस्त्र-युक्त बाणों से कर्ण, शल्य तथा अन्य कौरवों को पीड़ित करना शुरू कर दिया। उस समय अर्जुन के अस्त्र और बाणों के प्रभाव से आकाश में अँधेरा छा गया और पक्षियों का उड़ना भी बंद हो गया। आकाश में स्थित देवता अर्जुन के श्रम-निवारण के लिए सुगन्धित पवन चलाने लगे। महावीर अर्जुन ने हँसकर शल्य के कवच में दस बाण मारे और फिर कर्ण को क्रम से बारह और सात बाणों से घायल किया। अर्जुन के धनुष से बड़े वेग से निकले हुए बाणों की गहरी चोट से कर्ण का शरीर विदीर्ण हो गया और रक्त बहने लगा। उस समय वे प्रलय के समय महाश्मशान में स्थित रक्त-चर्चित रुद्रदेव के समान जान पड़ने लगे। वीर कर्ण ने इन्द्र-सदृश अर्जुन को तीन बाणों से अत्यन्त घायल करके श्रीकृष्ण को मार डालने के इरादे से उनके ऊपर विषैले साँप के समान भयानक पाँच बाण छोड़े। वे पाँचों बाण वास्तव में तक्षक-तनय अश्वसेन नामक महानाग के पक्ष के घोर साँप थे। वे कर्ण के धनुष से छूटकर श्रीकृष्ण के सुवर्ण-भूषित कवच को तोड़ते और शरीर को फाड़ते हुए वेग से पाताल में प्रवेश कर

गये और वहाँ भोगवती गङ्गा के जल में स्नान करके जब फिर तेज़ी से कर्ण के पास आने लगे तब अर्जुन ने राह में ही दस भल्ल बाणों से एक-एक के तीन-तीन टुकड़े कर डाले। इससे वे गरुड़ ९० के काटे हुए साँपों की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। उस समय श्रीकृष्ण को कर्ण के नाग-बाणों से पीड़ित और अत्यन्त घायल देखकर अर्जुन क्रोध से, सूखी घास को जलाने के लिए उद्यत आग की तरह, प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने कान तक भरपूर खींचकर छोड़े गये, अग्नि-सदृश, शरीरान्त कर डालनेवाले अनेक बाण ताक-ताककर कर्ण को मारे। उन बाणों की चोट से उत्पन्न क्लेश के कारण कर्ण काँप उठे; परन्तु वे अत्यन्त धैर्य धारण करने के कारण रथ से गिरे नहीं। राजन्! उस समय महापराक्रमी अर्जुन क्रुद्ध होकर बाण बरसाने लगे, जिनसे सब दिशा, उपदिशा, सूर्य का प्रकाश और कर्ण का रथ छिप गया। उन सुवर्ण-पुङ्ख-चित्रित बाणों से अर्जुन ने कर्ण के मर्मस्थलों और अङ्ग-प्रत्यङ्गों को व्याप्त कर दिया। ऐसा जान पड़ने लगा कि कर्ण का रथ बरस रही बर्फ़ से ढका हुआ पहाड़ है। अकेले महावीर अर्जुन ने इसी समय दुर्योधन के भेजे हुए कर्ण के पार्श्वरक्षक, चक्ररक्षक, पादरक्षक, पृष्ठरक्षक और अग्रगामी योद्धाओं को—जो दो हज़ार थे—मय घोड़े, सारथी और रथ के, क्षण भर में मार गिराया। उनमें से जो लोग अर्जुन के बाणों के मारे भय-विह्वल होकर भागे, वे भी नहीं बचे। तब आपके पुत्र और बचे हुए कौरवदल के योद्धा कर्ण को छोड़कर आर्तनाद करते हुए भागे। पिता पुत्र को और पुत्र पिता को अर्जुन के बाणों से घायल होते, मरते और आर्तनाद करते देखकर भी, उसे छोड़कर, भागने लगा। अर्जुन उन सबको अपने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से भगाने और पीड़ित करने लगे। कर्ण स्वयं अर्जुन के बाणों से घायल थे, तथापि रणभूमि से ९७ नहीं हटे। वे अर्जुन के रथ की ओर वेग से चले।

नब्बे अध्याय

कर्ण का नागास्त्र छोड़ना और उनके रथचक्र को पृथ्वी का पकड़ लेना।
कर्ण का अर्जुन से क्षण भर युद्ध बन्द करने के लिए कहना

संजय ने कहा—महाराज, महावीर अर्जुन के भयानक अस्त्र और बाण-वर्षा के प्रभाव से कौरवगण भागकर दूर जा खड़े हुए और देखने लगे कि अर्जुन का अस्त्र बिजली की तरह प्रकाश करता हुआ चारों ओर फैल रहा है। तब वीर कर्ण ने अपने वध के लिए उद्यत अर्जुन के अस्त्र-युक्त बाणों से कौरवों को पीड़ित और विमुख होते देखकर, सुदृढ़ प्रत्यञ्चा से युक्त अपना विजय नामक श्रेष्ठ धनुष चढ़ाकर, सुवर्णपुङ्ख बाणों को भार्गव के दिये हुए शत्रुनाशन अमोघ आथर्वण अस्त्र से युक्त किया और उन्हीं बाणों से अर्जुन के उस दिव्य अस्त्र का प्रभाव नष्ट कर दिया। अब वीर कर्ण अनेक अस्त्र-युक्त तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल करने लगे। जैसे दो

उस समय अप्सरायें स्वर्ग से समीप आकर दोनों वीरों के ऊपर शीतल चन्दन-जल छिड़कने लगीं और चँवर डुलाकर उनकी थकन मिटाने लगीं।—पृष्ठ २१८३

मस्त हाथी परस्पर दाँतों से प्रहार करें, वैसे ही अर्जुन और कर्ण एक दूसरे को बाणों से पीड़ित करते हुए महाघोर युद्ध करने लगे। दोनों ने अस्त्र-बल से बाण बरसाकर रणभूमि के आकाश-मण्डल को व्याप्त कर दिया। घोर बाण-वर्षा से चारों ओर अँधेरा हो जाने पर कौरवों और सोमकों को बाणों के सिवा और कोई वस्तु या प्राणी नहीं सूझ पड़ता था। दोनों धनुर्द्धर वीर लगातार तीक्ष्ण बाणों को धनुष पर चढ़ाते और छोड़ते हुए युद्ध-कौशल, अस्त्र-बल और विविध विचित्र गतियाँ दिखला रहे थे। उस भयानक युद्ध में बल-वीर्य, पौरुष और अस्त्रमाया के प्रभाव से कभी कर्ण अर्जुन से बढ़ जाते थे और कभी अर्जुन कर्ण से बढ़ जाते थे। उन एक दूसरे के छिद्र (असावधानता या प्रहार करने के अवसर) को खोज रहे महावीरों का महाघोर और औरों के लिए असह्य संग्राम देखने से अन्य वीरों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस समय आकाश में स्थित सब प्राणी कर्ण और अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। आकाश में "हे कर्ण, शाबाश !" "हे अर्जुन, शाबाश !" ऐसी वाणियाँ चारों ओर सुनाई पड़ने लगीं। अत्यन्त घोर युद्ध होने के कारण इधर-उधर दौड़ रहे रथों, हाथियों और घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि विदलित सी हो उठी। १०

राजन्, पहले खाण्डव-दाह के समय जिसकी माता को अर्जुन ने मार डाला था वह अर्जुन का वैरी अश्वसेन नाग पाताल में रहता था। अर्जुन पर अपार क्रोध रखनेवाला वही नाग इस समय आकाश में जाकर कर्ण और अर्जुन का घोर युद्ध देख रहा था। उसने सोचा कि अपने वैरी दुरात्मा अर्जुन से बदला लेने का यही अवसर है। यों सोचकर माया-बल से बाण का रूप धारण कर वह शीघ्रता के साथ कर्ण के तरकस में घुस गया। [कर्ण के पास नाग के आकार का एक महा भयानक बाण था। वह अलग एक तरकस में रक्खा रहता था। उसी बाण में वह नागराज प्रवेश कर गया।]

महाराज ! दोनों वीरों ने चमक रहे, अस्त्र-तेज से युक्त, तीक्ष्ण बाणों से जब आकाश को व्याप्त कर दिया और घना अँधेरा छा गया, तब कौरव और सोमकगण उस अन्धकार को देखकर डर गये। आकाश का यह हाल था कि चारों ओर बाण छा जाने से कोई पक्षी भी उड़ता नहीं देख पड़ता था। इस तरह लगातार बाण बरसाने के कारण वे दोनों, जीवन की ममता छोड़कर युद्ध करनेवाले, वीर थक गये। उस समय अप्सराएँ स्वर्ग से समीप आकर दोनों वीरों के ऊपर शीतल चन्दन-जल छिड़कने लगीं और चँवर डुलाकर उनकी थकन मिटाने लगीं। इन्द्र और सूर्य ने अपने-अपने पुत्र के मुख का पसीना अपने हाथों से पोंछ डाला। उस समय भी दोनों वीर परस्पर क्रोधपूर्ण टेढ़ी दृष्टि से देख रहे थे।

हे राजेन्द्र, कर्ण का शरीर जब अर्जुन के बाणों से बेहद छिन्न-भिन्न हो गया और वे वेदना से विह्वल होने के कारण अर्जुन से अधिक बल-वीर्य दिखलाने में असमर्थ हो गये, तब उन्हें उसी एक तूणीरशायी विकट नागबाण की याद आई। वह महातेजोमय बाण ऐरावत नाग के वंश १९

का था। कर्ण ने उसे अर्जुन को ही मारने के लिए सुवर्ण के तूणीर में चन्दन-चूर्ण के भीतर रख छोड़ा था। कर्ण नित्य उस शत्रुनाशन, रौद्ररूप, सर्पमुख बाण की पूजा करते थे। उन्होंने उस समय उसी उग्र बाण को धनुष पर चढ़ाकर, कान तक खींचकर, छोड़ना चाहा। अर्जुन का सिर काटने के लिए कर्ण ने जब वह बाण धनुष पर चढ़ाया तब सब दिशाओं सहित आकाश-मण्डल प्रज्वलित सा हो उठा, सैकड़ों उल्काएँ आकाश से गिरने लगीं और इन्द्र आदि लोकपाल घबराकर हाहाकार करने लगे। क्रोध से अधीर कर्ण ने उस बाण की ओर देखा ही नहीं। [जिस समय उन्होंने बाण को धनुष पर चढ़ाया उस समय उनका मुख आड़ा हो रहा था। उन्हें क्या मालूम कि इस बाण के पिछले भाग में अश्वसेन नाग योग-बल से घुसा हुआ है और अब यह बाण सजीव है। दूसरी ओर दृष्टि होने से कर्ण को मालूम नहीं हुआ कि वे नाग को धनुष पर उलटा चढ़ा रहे हैं। उसका मुख पीछे और पूँछ आगे थी।] महाराज, अर्जुन के वैरी उस भयानक नाग को बाण में प्रविष्ट देखकर इन्द्र को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने समझा कि अब मेरा पुत्र मारा गया। तब ब्रह्माजी ने इन्द्र से कहा—हे सुरेन्द्र, डरो नहीं; विजयलक्ष्मी अर्जुन को ही प्राप्त होगी।

इधर महामति शल्य ने कर्ण को [दूसरी ओर दृष्टि करके] उलटा बाण चढ़ाते देखकर कहा—हे वीर कर्ण! तुमने उलटा बाण चढ़ाया है। इसलिए देखकर फिर से शत्रुनाशन बाण का सन्धान करो, जिसमें यह शत्रु की गर्दन काट सके। यह सुनकर, क्रोध से लाल नेत्र किये हुए, मनस्वी कर्ण ने कहा—हे शल्य! कर्ण किसी बाण को दुबारा धनुष पर नहीं चढ़ाता, एक ही बार चढ़ाता और एक ही बार छोड़ता है। मुझ सरीखे लोग कूटयुद्ध नहीं करते। विजयाभिलाषी कर्ण ने यों कहकर अनेक वर्षों से पूजित और यत्न-पूर्वक रक्खा हुआ वह बाण बड़े वेग से छोड़ा और ज़ोर से कहा—अरे अर्जुन! तू अब मरा!

हे नरनाथ, अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान वह भयङ्कर बाण कर्ण के धनुष से छूटकर आकाश में पहुँचा और प्रज्वलित हो उठा। महामति कृष्णचन्द्र ने आकाश में प्रज्वलित उस बाण को बड़े वेग से आते देखकर एकाएक पैर से दबाकर अर्जुन के रथ को, मय पहियों के, पृथ्वी में कुछ धँसा दिया। अर्जुन के सुवर्णजाल-शोभित और चन्द्रमा की किरणों के समान सफ़ेद घोड़े घुटनों के बल बैठ गये। इस तरह बाण को लक्ष्यभ्रष्ट करके अर्जुन को बचाने के लिए जब कृष्णचन्द्र ने रथ को धरती में धँसा दिया तब आकाश में स्थित सब प्राणी उनकी ३० प्रशंसा, सिंहनाद और पुष्प-वर्षा करने लगे। रथ धँस जाने के कारण अर्जुन अपने पूर्व स्थान से कुछ नीचे चले गये थे इसलिए वह कर्ण का नागबाण बलपूर्वक अर्जुन के सिर पर शोभित, रत्न और सुवर्ण से अलङ्कृत, किरीट भर गिराकर चला गया। ऐसा जान पड़ा, जैसे वज्र ने पहाड़ के सुन्दर अङ्कुर और फूले हुए वृक्षों से शोभित शिखर को तोड़कर गिरा दिया हो। महाराज!

सुवर्ण-चित्रित, मोती-मणि-हीरे आदि से युक्त वह अर्जुन का किरीट सूर्य, चन्द्र, अग्नि और ग्रहों के समान तेजोमय, सुदृढ़ और असाधारण था। उस त्रिभुवन-प्रसिद्ध किरीट को भगवान् ब्रह्मा ने तपस्यापूर्वक इन्द्र के लिए बनाया था। इन्द्र ने प्रसन्न होकर वह महामूल्य और शत्रुओं के लिए घोररूप भयङ्कर किरीट अर्जुन को उस समय दिया था, जिस समय वे देवताओं के शत्रु दानवों को मारने के लिए चले थे। राजन्, कर्ण ने नागबाण से उस किरीट को चूर्ण करके भी कोई साधारण कार्य नहीं किया। शङ्कर का पिनाक धनुष, वरुण का पाश, इन्द्र का वज्र और कुबेर का दण्ड ये लोकपालों के दिव्य अमोघ शस्त्र भी उस किरीट को चूर्ण नहीं कर सकते थे। बाणरूपधारी विषैले नागराज के वेग से चूर्ण होकर वह प्रकाशपूर्ण तेजोमय सुन्दर किरीट, पृथ्वी पर गिरते समय, अस्ताचल के नीचे जा रहे लाल-लाल सूर्य-बिम्ब के समान शोभायमान हुआ। उस समय घोर शब्द से सब दिशाएँ गूँज उठीं और विह्वल होकर सब लोग सोचने लगे कि क्या प्रचण्ड आँधी ने बलपूर्वक पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग और सागर को तोड़-फोड़ डाला या उलट दिया है! उस भयङ्कर शब्द को सुनकर लोग घबरा गये।

महाराज! उस समय साँवले युवा अर्जुन, सिर पर किरीट न रहने से, ऊँचे शिखरवाले नीलपर्वत के समान जान पड़ने लगे। इस दुर्घटना से अर्जुन तनिक भी व्यथित नहीं हुए। उन्होंने केशों को समेटकर सफ़ेद कपड़ा बाँध लिया, जिससे वे उदय हो रहे सूर्य की किरणों से शोभित उदयाचल के समान शोभायमान हुए। कर्ण ने ताककर जिसे छोड़ा था वह बाण-रूप अर्जुन का वैरी नाग अर्जुन के सिर को काटने में असमर्थ होने के कारण, उनके किरीट को ही चूर्ण करके, फिर लौट पड़ा। उसने कर्ण के तरकस में फिर प्रवेश करना चाहा; किन्तु महारथी कर्ण ने उस महानाग को देख लिया। तब वह नाग कर्ण से कहने लगा—हे महारथी कर्ण, तुमने मुझे बिना देखे ही छोड़ा था, इसी से मैं अर्जुन के सिर को नहीं काट सका। अब तुम फिर से मुझे देखकर धनुष पर चढ़ाओ और छोड़ो, तो मैं अवश्य ही अपने और तुम्हारे शत्रु अर्जुन को मार डालूँगा। हे राजेन्द्र, साँप के ये वचन सुनकर कर्ण ने पूछा—तुम कौन हो? तुम्हारा रूप तो बड़ा ही उग्र देख पड़ता है। नाग ने कहा—हे कर्ण! अर्जुन ने पहले मेरी माता को मार डाला था, तभी से उस अपने अपराधी के साथ मेरी शत्रुता है। इस समय अगर वज्रपाणि इन्द्र भी अर्जुन की रक्षा करेंगे, तो भी मैं उसे मारे बिना न रहूँगा। कर्ण ने कहा—हे नागराज, कर्ण कदापि दूसरे के बल से जय प्राप्त करना नहीं चाहता। चाहे ऐसे-ऐसे सौ अर्जुनों को मारना हो, तो भी मैं एक बाण को दो बार धनुष पर चढ़ाने का नहीं। मैं अपने यत्न, क्रोध, बल और अस्त्र से अर्जुन को मारूँगा; तुम यथेष्ट स्थान को जाओ। महाराज, कर्ण के ये वचन सुनकर क्रोध के कारण नाग उन्हें सहन नहीं कर सका। वह स्वयं उग्र अस्त्र के रूप से अर्जुन को मारने के लिए वेग से चला। तब श्रीकृष्ण ने उसे आते देखकर कहा—हे अर्जुन,

४१

५० अपने पुराने वैरी इस नाग को शीघ्र मार डालो। गाण्डीव धनुष को धारण करनेवाले अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! यह कौन नाग है, जो अपने आप गरुड़ के मुँह में जाने के समान मेरे पास आ रहा है? श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, तुमने खाण्डव वन जलाने के लिए देकर जब अग्नि को तृप्त किया था तब इस नागराज अश्वसेन की माता इसे निगलकर बचाने के लिए आकाश में जा रही थी। तुमने इसकी माता का सिर काट डाला, लेकिन उसके शरीर में छिपे हुए इस नाग को नहीं देख पाया और यह निकल गया। इस समय उसी वैर को स्मरण करके यह वास्तव में अपनी ही मृत्यु के लिए तुम्हारे मारने का इरादा करके आ रहा है। हे शत्रुनाशन! देखो, यह आकाश से गिरी हुई उल्का के समान बड़े वेग से आ रहा है।

सञ्जय कहते हैं—राजन्, तब महावीर अर्जुन ने क्रोध से मुख फेरकर आकाश-मार्ग में पक्षी की तरह आ रहे उस नाग के छः बाणों से टुकड़े-टुकड़े कर डाले। नाग के मारे जाने पर श्रीकृष्ण ने स्वयं उतरकर दोनों हाथों से अर्जुन के रथ को पृथ्वी के भीतर से निकाल लिया। उस समय महावीर कर्ण ने क्रोधपूर्ण टेढ़ी दृष्टि से अर्जुन को देखकर उनको मयूरपक्ष-शोभित तीक्ष्ण दस बाण मारे। अर्जुन ने भी पहले बारह वराहकर्ण बाण मारकर फिर कान तक खींचकर एक अत्यन्त उग्र विषैले नाग के समान नाराच बाण कर्ण के ऊपर छोड़ा। वह उत्तम बाण कर्ण के विचित्र कवच को तोड़कर शरीर के भीतर घुस गया और मानों कर्ण के प्राणों को निकालने की चेष्टा करता हुआ, उनका रक्त पीकर, खून से तर होकर पृथ्वी में घुस गया। कर्ण भी डण्डे की चोट खाकर कुपित साँप की तरह वह बाण लगने से क्रोधान्ध हो उठे। महाविषैला साँप जैसे विष उगलता है वैसे ही वीर कर्ण फुर्ती के साथ अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। उन्होंने बारह बाण श्रीकृष्ण को और निन्नानवे बाण अर्जुन को मारकर फिर एक घोर बाण से उनके शरीर को विदीर्ण कर डाला। यह अद्भुत कर्म करके महारथी ६० कर्ण गरजने और हँसने लगे। कर्ण के उस हर्ष को अर्जुन नहीं सह सके। इन्द्र के समान पराक्रमी और मर्मज्ञ अर्जुन कर्ण के मर्मस्थलों में सैकड़ों तीक्ष्ण बाण मारने लगे। इन्द्र ने जैसे बल नामक दैत्य को पीड़ित किया था वैसे ही अर्जुन ने फिर कर्ण को कालदण्ड-सदृश तीक्ष्ण नब्बे बाण मारे। वज्र-प्रहार से फटे हुए पर्वत की सी दशा को प्राप्त होकर वीर कर्ण उन बाणों के प्रहार से अत्यन्त व्यथित हो उठे। अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण का बहुमूल्य हीरा-सुवर्ण-मणि-मोती आदि से शोभित मुकुट और कुण्डल काटकर पृथ्वी पर गिरा दिये। फिर क्षण भर में ही अर्जुन ने कर्ण का सुदृढ़, बहुमूल्य, चमकीला कवच भी काट-कूटकर गिरा दिया। उस कवच को अनेक कारीगरों ने बहुत दिनों में बनाया था। इसके बाद कुपित अर्जुन ने कर्ण के कवच-रहित शरीर को चार बाणों से बेहद घायल कर दिया। सन्निपात-ग्रस्त और मृत्यु के मुख में शीघ्र ही जानेवाला पुरुष जैसे वात-पित्त-कफ-ज्वर से पीड़ित होता है वैसे

ही कर्ण उन बाणों की चोट से व्याकुल हो उठे। उसी समय वीर अर्जुन ने झटपट गाण्डीव धनुष से, पूरे बल के साथ, असंख्य बाण छोड़कर मर्मस्थलों में कर्ण को पीड़ित करना शुरू किया। अर्जुन के विविध तीक्ष्ण बाण उग्र वेग से आकर कर्ण के शरीर में घुसने लगे और कर्ण के शरीर से लगातार रक्त बहने लगा। उस समय उस गेरू के पर्वत के समान कर्ण की शोभा हुई, जिसमें अनेक झरनों से लाल जल बह रहा हो।

महावीर अर्जुन ने फिर, क्रौञ्च पर्वत को तोड़नेवाले कार्त्तिकेय की तरह, अग्नि-शिखा और कालदण्ड के समान उग्र और सुवर्ण-पुङ्ख-शोभित तीक्ष्ण बाण कर्ण के हृदय में मारे। उन बाणों से कर्ण का वक्षःस्थल घायल हो गया। कवच-हीन होने के कारण वे अर्जुन के बाणों की चोट से ऐसे विह्वल हो उठे कि उनकी मुट्ठी ढीली पड़ गई, दस्ताना और इन्द्रधनुष के समान धनुष भी हाथ से छूटने लगा। ऐसा जान पड़ा कि मोहित और मूर्च्छित कर्ण रथ से नीचे गिर पड़ेंगे। उस समय वीर अर्जुन ने आर्य पुरुष और क्षत्रिय के धर्म का खयाल करके पीड़ित शत्रु के ऊपर प्रहार करना नहीं चाहा। तब श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, यह क्या? ऐसी ग़लती क्यों कर रहे हो? बुद्धिमान् लोग शत्रु को कमज़ोर पाकर फ़ौरन् उस पर वार करते हैं, दम भर भी नहीं रुकते। ऐसे ही अवसरों में तो प्रबल शत्रु मारा जा सकता है। चतुर लोग शत्रु को ऐसी ही सङ्कट की अवस्था में मारकर धर्म और यश प्राप्त करते हैं। इसलिए तुम इसी अवसर में अपने प्रधान प्रबल शत्रु और अद्वितीय वीर कर्ण को शीघ्र मारने का यत्न करो। इन्द्र ने जैसे नमुचि दानव को मारा था वैसे ही तुम कर्ण को मार डालो; नहीं तो यह महावीर बहुत जल्द ताज़ा होकर, सँभलकर, पहले के ही समान प्रबल हो उठेगा। ७०

श्रीकृष्ण की आज्ञा मानकर अर्जुन ने फुर्ती के साथ कर्ण के मर्मस्थलों में फिर तीक्ष्ण बाण मारना शुरू कर दिया। इन्द्र ने जैसे पहले राजा बलि को पीड़ित किया था वैसे ही महावीर अर्जुन पूरा ज़ोर लगाकर कर्ण और उनके घोड़ों सहित रथ को विकट वत्सदन्त बाणों से छेदने लगे। अर्जुन ने लगातार इतने बाण छोड़े कि सब दिशाओं को उन बाणों ने छा लिया। चौड़ी छातीवाले वीर कर्ण—सारे शरीर में अर्जुन के वत्सदन्त बाण लगने से और घावों के ख़ून से भीग जाने से—फूले हुए अशोक, पलाश, सेमर और चन्दन के वन से व्याप्त बड़े पर्वत के समान शोभायमान हुए। शरीर भर में शर-जाल चुभने के कारण कर्ण उस पर्वत के समान प्रतीत होने लगे, जिसके शिखरों और कन्दराओं में असंख्य फूले हुए कनेर आदि के वृक्ष लगे हों।

महाराज! वीर कर्ण भी दम भर में सचेत होकर, धैर्य धारण करके, अर्जुन के ऊपर फिर बाण बरसाने लगे। उस समय वे अस्ताचल को जा रहे लाल सूर्य के समान जान पड़ने लगे। उनका घूम रहा मण्डलाकार धनुष ही मण्डल सा जान पड़ता था और लगातार निकल रहे बाण किरणों के समान थे। कर्ण के छोड़े हुए चमकीले महानाग-सदृश बाणों को अर्जुन

के तीक्ष्ण बाण काट-काटकर गिराने लगे। धैर्य धारण करके, कुपित साँप के तुल्य उग्र बाण बरसा रहे, कर्ण ने दस बाण अर्जुन को और छः बाण श्रीकृष्ण को मारे। तब महारथी अर्जुन ने कुपित होकर, महा भयानक रौद्र अस्त्र से युक्त करके, साँप के विष और अग्नि के समान प्राण ८० हरनेवाला, लोहमय, उग्र शब्द करनेवाला एक विकट बाण छोड़ना चाहा। महाराज, कर्ण की मृत्यु का समय निकट आ गया। काल ने अदृश्य भाव से कर्ण को यह सुना दिया कि हे कर्ण, ब्राह्मण के शाप से पृथ्वी तुम्हारे रथ का पहिया ग्रसना चाहती है। यह सुनते ही कर्ण को वह घोर अस्त्र भूल गया, जो महात्मा परशुराम से प्राप्त हुआ था और जिसके सम्बन्ध में परशुराम ने कहा था कि यह तुम्हारी मृत्यु के समय भूल जायगा। उधर पृथ्वी भी कर्ण के रथ का बायाँ पहिया ग्रसने लगी। ब्राह्मण के शाप से कर्ण का रथ घूमने लगा। अस्त्र भी, विस्मृत होकर, कर्ण को इस बात की सूचना देने लगा कि उनकी मृत्यु का समय आ गया। फूले हुए चौतरे सहित ऊँचे चैत्य-वृक्ष (गाँव की सूचना देनेवाला, वेदी-युक्त, ऊँचा और बड़ा वृक्ष चैत्य-वृक्ष कहलाता था) की तरह कर्ण का रथ, पहिया धँस जाने से, नीचे बैठ गया।

राजन् ! इस तरह नागबाण व्यर्थ गया, अस्त्र भूल गया, रथ के पहिये को पृथ्वी ने पकड़ लिया और स्वयं कर्ण ब्राह्मण के शाप से मोहित हो गये। उस समय इन अनिवार्य विपत्तियों को न सह सकने के कारण, किं-कर्तव्य-विमूढ़ होकर, महामति कर्ण धर्म की ही निन्दा करने लगे। वे हाथ मलते हुए कहने लगे—अहो, धर्मज्ञ लोगों के मुँह से मैं सुनता आया हूँ कि धर्म सदा धर्मात्मा की रक्षा करता है। हम शास्त्रानुसार यथाशक्ति धर्म का आचरण और उसके पालन का यत्न करते आये हैं; किन्तु वह धर्म हमारी रक्षा नहीं करता, बल्कि संहार ही कर रहा है। इससे मुझे जान पड़ता है कि धर्म सदा धर्मात्मा की रक्षा नहीं करता अथवा कर ही नहीं सकता। हे भरतकुलभूषण महाराज ! कर्ण के घोड़े और सारथी, दोनों स्खलित-विचलित होने लगे। अर्जुन के बाण लगने से वे स्वयं विचलित हो उठे और मर्मस्थलों में चोट पहुँचने से युद्ध में शिथिल-प्रयत्न होकर बारम्बार धर्म की निन्दा करने लगे।

अब कर्ण ने धैर्य धरकर अपने को सँभाला और अत्यन्त घोर तीन बाण श्रीकृष्ण के हाथों में मारकर सात उग्र बाणों से अर्जुन को भी घायल किया। तब अर्जुन ने अग्नि-तुल्य, इन्द्र के वज्र के समान, सत्रह बाण बड़े वेग से कर्ण को मारे। वे बाण कर्ण के शरीर को छिन्न-भिन्न करके पृथ्वी में घुस गये। उन बाणों के प्रहार से कर्ण का आत्मा तक काँप उठा, किन्तु ९० उन्होंने यथाशक्ति अपने को सँभालकर पराक्रम की चेष्टा दिखलाई। कर्ण ने ब्रह्मास्त्र को स्मरण करके उसे प्रकट किया तब उसे शान्त करने के लिए अर्जुन ने ऐन्द्र अस्त्र को प्रकट किया। उन्होंने गाण्डीव धनुष, प्रत्यञ्चा और बाणों को ऐन्द्र अस्त्र के मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जल बरसानेवाले इन्द्र की तरह बाण बरसाना शुरू किया। अर्जुन के रथ से तेजोमय तीव्र बाण निकल-

कर कर्ण के रथ के निकट प्रकट होने लगे। महारथी कर्ण ने अस्त्र-बल से अर्जुन के उन बाणों को व्यर्थ कर दिया। कर्ण को अर्जुन के अस्त्र-तेज से मुक्त और अस्त्र का प्रभाव विनष्ट हुआ देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! और श्रेष्ठ अस्त्र छोड़ो, कर्ण तुम्हारे अस्त्र-युक्त बाणों को व्यर्थ कर रहा है। तब अर्जुन ने बड़े भयङ्कर अनिवार्य ब्रह्मास्त्र को प्रकट किया। वे बाणों को अस्त्र-युक्त करके उनसे कर्ण को पीड़ित करने लगे। कर्ण ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन के धनुष की डोरी काट डाली। उन्होंने इसी तरह क्रम से ग्यारह प्रत्यञ्चाएँ काट डालीं, लेकिन कुछ न हुआ; क्योंकि अर्जुन के धनुष में सौ प्रत्यञ्चाएँ थीं और कर्ण को यह मालूम नहीं था। अर्जुन ने फिर अन्य डोरी धनुष पर चढ़ाकर, उसे अस्त्र-मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, प्रज्वलित अग्नि-शिखा और विषैले साँप के समान बाणों से कर्ण को व्याप्त करना शुरू किया। अर्जुन ने इतनी फुर्ती की कि कर्ण को उनकी प्रत्यञ्चा कटने का और नई प्रत्यञ्चा चढ़ने का हाल ही नहीं मालूम हुआ। उस समय वीरवर कर्ण ने अस्त्रों से अर्जुन के अस्त्रों को नष्ट करके उनसे अधिक पराक्रम १०० प्रकट किया। कर्ण को असाधारण पराक्रम दिखाकर अर्जुन की अपेक्षा प्रबल और अर्जुन को कर्ण के अस्त्र से पीड़ित देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, शीघ्र ही कर्ण को मारने के लिए और श्रेष्ठ अस्त्र छोड़ो। तब अर्जुन ने अग्नि और वज्र के तुल्य, घोर सर्प-विष के समान, बाण को रौद्र अस्त्र से युक्त करके कर्ण के ऊपर छोड़ना चाहा। महाराज, इसी समय कर्ण के रथ-चक्र को पृथ्वी ने पूरा-पूरा ग्रस लिया। यह देखकर महावीर कर्ण शीघ्र रथ से उतरकर रथ का पहिया पृथ्वी से निकालने लगे। उन्होंने दोनों हाथों से पकड़कर रथ के पहिये को ऊपर उठाना चाहा तो पर्वत-वन-कानन आदि सहित सातों द्वीपों से युक्त पृथ्वी चार अङ्गुल ऊपर उठ आई; लेकिन ब्राह्मण के शाप के कारण पृथ्वी ने पहिये को न छोड़ा। अर्जुन के कुपित होकर प्रहार करने पर उद्यत और पहिये को इस तरह पृथ्वी के मुख में पड़ा हुआ देखकर विवश कर्ण के, क्रोध के मारे, आँसू निकल आये। उन्होंने कहा—हे अर्जुन, जब तक मैं धँसे हुए अपने रथ के पहिये को निकालता हूँ तब तक ठहर जाओ। दैवयोग से मेरे रथ का बायाँ पहिया पृथ्वी में घुस गया है। इस अवसर में प्रहार करना कायरों और नीच पुरुषों का काम है। तुम्हें ऐसा निन्दित कार्य न करना चाहिए। हे अर्जुन! तुम भारी योद्धा और रण-निपुण कहलाते हो; तुम्हें श्रेष्ठ कार्य ही करना चाहिए। क्षत्रियधर्म का पालन करनेवाले आर्य पुरुष कदापि ऐसे पुरुष १० पर प्रहार नहीं करते, जो शरणागत हो, शस्त्रहीन हो या शस्त्र रख चुका हो, प्रार्थना कर रहा हो, रण से विमुख हो, जिसके केश (डर के मारे) खुल गये हों, जो ब्राह्मण हो, हाथ जोड़ रहा हो, जिसके पास बाण न रह गये हों, जिसका कवच टूट गया हो और जिसका शस्त्र गिर पड़ा हो या टूट गया हो। हे पाण्डव! तुम पृथ्वी पर सबसे बढ़कर शूर, साधु-चरित्र, युद्ध-धर्म के ज्ञाता, दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले, युद्ध करने में सहस्रबाहु अर्जुन के तुल्य, महात्मा और अमित पराक्रमी

कहलाते हो। इसलिए हे महाबाहो, तुम मुझे इतना अवकाश दो कि मैं इस पहिये को पृथ्वी से निकाल लूँ। तुम रथ पर सवार हो, मैं पृथ्वी पर खड़ा और विकल हो रहा हूँ। ऐसी दशा में मुझे मारना तुम्हारे योग्य काम नहीं। मैं ये वचन डरकर नहीं कह रहा हूँ। श्रीकृष्ण से या तुमसे मैं बिलकुल नहीं डरता। तुम क्षत्रियों के श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हो, इसी लिए मैं तुमसे यह धर्म-सङ्गत अनुरोध करता हूँ कि क्षण भर ठहर जाओ। ११६

इक्यानबे अध्याय

कर्ण का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, कर्ण के ये वचन सुनकर श्रीकृष्ण कहने लगे—हे राधेय! बड़ी बात, जो तुम यहाँ इस समय धर्म का स्मरण कर रहे हो! प्रायः देखा जाता है कि नीच-प्रकृति के पुरुष सङ्कट आ पड़ने पर दैव की ही निन्दा करते हैं; अपने दुष्कर्मों पर दृष्टि नहीं डालते। [पाण्डव सदा धर्म का पालन करते रहे हैं और इसी से इस समय धर्म उन्हें जय और अभ्युदय दे रहा है। उनके विरोधी कौरव धर्म को छोड़कर अधर्म-मार्ग पर चलते रहे, इसी कारण उनका नाश हो रहा है।] हे कर्ण! जब एक वस्त्र धारण किये हुए द्रौपदी को रजस्वला दशा में तुम, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि आदि सलाह करके सभा में घसीट लाये थे तब तुम्हें धर्म का ख़याल क्यों नहीं हुआ? जिस समय दुर्मति शकुनि ने तुम्हारी सलाह से—जुए से अनभिज्ञ—राजा युधिष्ठिर को बुलाकर जीता और सर्वस्व ले लिया, उस समय तुम्हारी यह धर्मबुद्धि कहाँ चली गई थी? हे कर्ण, वनवास की अवधि बीत जाने पर तेरहवें वर्ष के उपरान्त तुम लोगों ने धर्मराज को उनका राज्य नहीं दिया। उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? जब तुम्हारी सलाह से राजा दुर्योधन ने भीमसेन को विष-युक्त भोजन खिलाकर, साँपों से कटवाकर, मार डालने की चेष्टा की थी तब तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? वारणावत में, लाक्षाभवन में आग लगाकर सो रहे पाण्डवों को जलाकर मार डालने की जब चेष्टा की गई थी तब तुम्हारा धर्म कहाँ था? हे कर्ण! जब तुमने दुःशासन के अधीन हो रही रजस्वला द्रौपदी से सभा में दुर्वचन कहे थे, उपहास और अपमान किया था, तब तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? हे राधेय, अनार्य कर्म करनेवाले कौरव जिस समय निरपराध द्रौपदी को सता रहे थे उस समय तुम सब देखा किये। उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? द्रौपदी की दुर्दशा देखकर जब तुमने कहा था कि "हे द्रौपदी, पाण्डवगण विनष्ट होकर सदा के लिए नरकवासी हो चुके हैं इसलिए अब तुम अन्य पति पसन्द कर लो", तब तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? जब तुमने राज्य के लोभ से पाण्डवों को दूसरी बार जुए के लिए बुलवाया था और शकुनि के द्वारा जीता था, तब तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? जिस समय तुम अनेक महारथियों ने घेरकर अकेले

बालक अभिमन्यु का वध किया था, उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ गया था ? जब तुमने इन सब अवसरों पर धर्म का ख़याल नहीं किया तब इस समय धर्म-धर्म चिल्लाने से क्या होगा ? इस समय लाख धर्म-धर्म चिल्लाओ और धर्म का आचरण करो, लेकिन जीते नहीं बच सकते। पूर्व समय में जैसे नल को उनके भाई पुष्कर ने द्यूत-क्रीड़ा में पहले जीत लिया था—राज्य हर लिया था और पीछे नल ने उसे हराकर यश और अपना राज्य फिर प्राप्त किया था, वैसे ही इस समय निर्लोभ धर्मात्मा पाण्डवगण भी सोमकगणसहित अपने बाहुबल से प्रबल शत्रुओं को मारकर फिर राज्य के अधिकारी होंगे। धर्म के द्वारा रक्षित वीर पाण्डवों के हाथ से धृतराष्ट्र के पुत्रगण अवश्य मारे जायँगे। ११

सञ्जय कहते हैं—महाराज, श्रीकृष्ण के यों कहने पर वीर कर्ण लज्जा से सिर नीचा करके चुप हो रहे। क्रोध के मारे उनके दोनों ओठ फड़कने लगे। वे धनुष तानकर बड़े वेग और पराक्रम के साथ अर्जुन से युद्ध करने लगे। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे धनञ्जय, तुम कर्ण को शीघ्र दिव्य अस्त्र के द्वारा विदीर्ण करके गिरा दो। श्रीकृष्ण के यों कहने पर अर्जुन कुपित हो उठे। श्रीकृष्ण ने जिन अपराधों और अधर्मों का उल्लेख कर्ण के आगे किया था, उनका स्मरण करके अर्जुन घोर क्रोध से अधीर हो उठे। क्रुद्ध अर्जुन के रोम-छिद्रों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। यह अद्भुत दृश्य देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। कर्ण ने जब देखा कि उनकी कुमन्त्रणाओं से पाण्डवों को जो लगातार क्लेश पहुँचे हैं उन्हें स्मरण करके वीर अर्जुन ने उग्र रूप धारण किया है, तब वे ब्रह्मास्त्र से अभिमन्त्रित करके असंख्य बाण अर्जुन के ऊपर बरसाने लगे। इसी अवसर में कर्ण ने फिर अपने रथ को गढ़े से निकालने का यत्न किया। २०

राजन्, तब अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र से ही कर्ण के ब्रह्मास्त्र को शान्त कर दिया। इसके उपरान्त उन्होंने अग्नि का प्रिय घोर आग्नेय अस्त्र कर्ण के ऊपर छोड़ा। वह अस्त्र अपने तेज से प्रज्वलित हो उठा। कर्ण ने भी वारुणास्त्र छोड़कर उस अस्त्र की आग को शान्त कर दिया। चारों ओर बादल घिर आये और घोर अँधेरा छा गया। पराक्रमी अर्जुन ने वायव्य अस्त्र छोड़ा। तब बड़े वेग से हवा चलने लगी और कर्ण के सामने ही सब बादल छिन्न-भिन्न हो गये।

उस समय कर्ण ने अर्जुन को मार डालने के लिए एक महाघोर बाण निकाला, जो अग्नि की तरह प्रज्वलित हो रहा था। जिस समय कर्ण ने उस बाण को धनुष पर चढ़ाया उस समय वन-पर्वत सहित पृथ्वी काँप उठी, कङ्कड़ियाँ उड़ाती हुई घोर आँधी चलने लगी, सब दिशाओं में अँधेरा छा गया और आकाश में देवगण हाहाकार करने लगे। कर्ण को वह उग्र बाण चढ़ाते देखकर पाण्डवगण दीनभाव को प्राप्त और खिन्न हो गये। कर्ण का छोड़ा वह अत्यन्त तीक्ष्ण और इन्द्र के वज्र सा बाण वेग से आकर अर्जुन की छाती में, बिल के भीतर साँप की तरह, घुस गया। अर्जुन उस बाण की गहरी चोट से, भूकम्प में पर्वत की तरह, काँप उठे। मुट्ठी

शिथिल हो जाने से गाण्डीव धनुष भी छूटने लगा। अर्जुन को चक्कर आ गया। वे मूर्च्छित हो
३० गये। फिर इसी बीच में कर्ण रथ से उतरकर दोनों हाथों से पहिया निकालने का यत्न करने लगे।

परन्तु दैववश उनका अपरिमित बल कुछ काम न आया, पहिया नहीं निकला। उधर अर्जुन को होश आ गया। उन्होंने कर्ण को मारने के लिए यमदण्ड-सदृश एक अञ्जलिक बाण लिया। कृष्णचन्द्र ने भी अर्जुन से कहा—हे पार्थ, रथ पर चढ़ने के पहले ही इस बाण से कर्ण का सिर काट डालो।

महावीर अर्जुन ने श्रीकृष्ण का कहा मानकर पहले एक प्रज्वलित अग्नि-सदृश सुवर्ण-पुङ्ख-युक्त क्षुरप्र बाण से कर्ण के रथ की ध्वजा काट डाली। महारथी कर्ण के रथ की वह हस्ति-कक्ष्या-चिह्नित ध्वजा सूर्य के समान प्रकाशमान थी। उसे अनेक कारीगरों ने सुवर्ण-मणि-मोती-हीरा आदि से अलङ्कृत करके बड़े यत्न से बनाया था। महाराज! आपकी सेना को सदा विजय देनेवाली, शत्रुओं के मन में त्रास उत्पन्न करनेवाली, अग्नि-सूर्य-चन्द्र के समान चमकीली, वह कर्ण की दर्शनीय ध्वजा पृथ्वी-मण्डल में प्रसिद्ध थी। उस ध्वजा के साथ कौरवों का यश, दर्प, सब प्रिय कार्यों के पूर्ण होने की आशा आदि सब कुछ नष्ट हो गया। कौरव-सेना के हृदय उत्साहहीन हो गये। वे लोग घोर हाहाकार करने लगे। फुर्तीले अर्जुन के बाण से कटकर जब कर्ण के रथ की ध्वजा गिर पड़ी तब कौरवों को कर्ण के विजयी होने की आशा भी नहीं रही।

महाराज! अब कर्ण-वध के लिए शीघ्रता कर रहे अर्जुन ने तरकस से एक घोर अंजलिक बाण निकाला। वह बाण इन्द्र के वज्र, अग्नि की शिखा और यमराज के दण्ड के समान
४० उग्र था। उसकी लम्बाई तीन अरत्नि थी। उसमें छः पङ्ख लगे थे। उसका वेग बड़ा ही उग्र था। वह सूर्य की किरण के समान चमकीला, मर्मस्थल को काटनेवाला, मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि का संहार करनेवाला, प्राण हरनेवाला, भयङ्कर और मुख फैलाये हुए मृत्यु के समान अत्यन्त घोर था। वह रक्त और मांस से लथपथ था। देवगण भी उसे व्यर्थ नहीं कर

सकते थे। वह शिव के पिनाक और नारायण के चक्र के समान उग्र था और देवता-दानव आदि को भी मार सकता था। अर्जुन सदा उसकी पूजा किया करते थे। जिस समय प्रसन्न-चित्त अर्जुन ने उस बाण को हाथ में लिया उस समय जगत् के सब प्राणी भय से विचलित हो उठे; [क्योंकि वह इन्द्र के वज्र के समान सारे संसार का संहार कर सकता था।] अर्जुन को धनुष पर वह बाण चढ़ाने के लिए उद्यत देखकर सब ऋषि कहने लगे—"जगत् का कल्याण हो।" महाराज, अर्जुन ने उस बाण को महास्त्र से युक्त करके गाण्डीव धनुष पर चढ़ाया और धनुष की डोरी को कान तक खींचकर कहा—मैंने अगर तप किया है, गुरुओं को प्रसन्न किया है, बड़े-बूढ़ों की सेवा की है, मित्रों के हितवाक्य सुने हैं और इज्या-हवन आदि सत्कर्म किये हैं तो उस सत्य के बल से यह शत्रु के शरीर और प्राणों को नष्ट करनेवाला महास्त्र-युक्त अमोघ बाण अवश्य मेरे प्रबल शत्रु कर्ण को मारकर मुझे विजय दान करे। हे बाण, तू अथर्वाङ्गिरसी कृत्या की तरह मेरे शत्रु को मार डाल। इस तरह कहकर अत्यन्त हर्ष-युक्त, फुर्तीले, सूर्य और चन्द्र के समान तेजस्वी, महाबली अर्जुन ने कर्ण-वध के लिए कर्ण के सिर को ताककर वह जयदायक श्रेष्ठ बाण छोड़ दिया। उस बाण ने आकाश-मार्ग में जाकर अपने तेज से आकाश और सब दिशाओं को व्याप्त कर दिया। इन्द्र ने जैसे वज्र से वृत्रासुर का सिर काटा था वैसे ही अर्जुन ने अपराह्न में कर्ण का सिर काट डाला। राजन्, ५० उस बाण से कटा हुआ कर्ण का सिर पहले गिरा और धड़ पीछे। लाल मण्डल से शोभित सूर्य जैसे अस्ताचल से नीचे जाते हैं वैसे ही वह उदय हो रहे सूर्य के समान तेजस्वी, शरद् ऋतु के स्वच्छ आकाश में तप रहे प्रचण्ड सूर्य के समान दुर्निरीक्ष्य महारथी कर्ण का सिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। गृहस्थ धनी पुरुष जैसे बड़े कष्ट से अपने धन-रत्न-पूर्ण भवन को छोड़ता है वैसे ही सदा सुख में पले हुए, सुगन्ध-चर्चित और दर्शनीय कर्ण के शरीर ने बड़ी देर में सिर को छोड़ा। घावों से रक्त बहाता हुआ तेजस्वी कर्ण का उन्नत शरीर भी प्राणहीन होकर वैसे ही पृथ्वी पर गिर पड़ा, जैसे गेरू के झरनों से युक्त किसी पहाड़ का ऊँचा शिखर इन्द्र के वज्र से फटकर गिर पड़े।

राजन्, महावीर कर्ण जब गिर पड़े तब उनके शरीर से एक ज्योति निकली जो आकाश-मण्डल को प्रकाशित और व्याप्त करती हुई सूर्य-मण्डल में समा गई। यह अद्भुत घटना देखकर सब मनुष्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ। महावीर अर्जुन ने जब कर्ण को मार डाला तब पाण्डवों को असीम आनन्द हुआ। श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीमसेन, नकुल, सहदेव तथा अन्य पाण्डवपक्ष के लोग ज़ोर से अपने-अपने शङ्खों को बजाने लगे। सेना सहित पाञ्चाल-सोमकगण भी कर्ण को रण-शय्या में शयन करते देखकर सिंहनाद करने, उछलने, हाथ तथा वस्त्र उछालने और तुरही-नगाड़े आदि बाजे बजाने लगे। सब पाण्डवपक्ष के योद्धा अत्यन्त प्रसन्न होकर अर्जुन के पास आकर उनकी संवर्द्धना करने लगे। कुछ लोग ख़ुशी के मारे नाचने, एक दूसरे से लिपटने और गरज-गरजकर कहने लगे कि बड़े भाग्य की बात है, जो आज कर्ण अर्जुन के हाथ से मारा गया।

महाराज ! जैसे घोर आँधी से पहाड़ उलट गया हो, या यज्ञ के अन्त में आग शान्त हुई हो, वैसे ही अर्जुन के बाण से प्राणहीन होकर पड़े हुए कर्ण की शोभा हुई। कर्ण का कटा हुआ ६० सिर अस्त हुआ सूर्य-बिम्ब जान पड़ता था। कर्ण के शरीर में बाण ही बाण देख पड़ते थे। रक्त से सारा शरीर भीग गया था। उनकी लाश किरणों से शोभित सूर्य के समान शोभायमान हो रही थी। इस तरह कर्ण-रूप सूर्य ने पहले बाण-रूप किरण से शत्रुसेना को बहुत ही सन्ताप पहुँचाया; किन्तु अन्त को काल-रूप अर्जुन ने (सन्ध्या-काल की तरह) उन्हें बलपूर्वक अस्त कर दिया। अस्त हो रहे सूर्य जैसे प्रकाश को लेकर चले जाते हैं, वैसे ही अर्जुन का बाण भी कर्ण के प्राण ले गया। कर्ण के मरने पर मद्रराज शल्य टूटी ध्वजावाला रथ लेकर युद्धभूमि से चले गये। महाराज ! कौरव-सेना के लोग अत्यन्त घायल, पीड़ित और शङ्कित होकर अर्जुन की प्रभापुञ्ज-पूर्ण ६७ वानर-युक्त ध्वजा को बारम्बार देखते हुए डर के मारे चारों ओर बड़े वेग से भागने लगे।

बानबे अध्याय

शल्य का दुर्योधन को दिलासा देना

सञ्जय कहते हैं—हे राजेन्द्र ! महापराक्रमी अर्जुन ने जब शूरश्रेष्ठ कर्ण को मार गिराया तब मद्रराज शल्य, कौरव-सेना को अत्यन्त पीड़ित देखकर, वह ध्वजाहीन रथ लेकर वेग से चल दिये। कुरुराज दुर्योधन असंख्य हाथियों, घोड़ों, मनुष्यों और रथों सहित वीरवर कर्ण को मरा हुआ देखकर—दीन दुःखित होकर—आँखों में आँसू भरकर बारम्बार लम्बी साँसें छोड़ने लगे। योद्धा लोग बाणों से छिदे हुए, खून से तर, अपनी इच्छा से पृथ्वी पर गिरे हुए सूर्य के समान कर्ण को देखने के लिए आये और चारों ओर से उनकी लाश को घेरकर खड़े हो गये। उस समय कोई (अर्जुन आदि) आनन्दित हो रहे थे, कोई (कायर लोग) डरे हुए थे, कोई (कौरवदल के लोग) विषादग्रस्त हो रहे थे और कोई (दर्शक लोग) विस्मित हो रहे थे। महाबली अर्जुन ने कवच, आभूषण, शस्त्र, वस्त्र आदि छिन्न-भिन्न करके महारथी कर्ण को मार डाला—यह सुनकर कौरवगण वैसे ही भागने लगे जैसे निर्जन वन में सिंह के द्वारा यूथपति साँड़ के मारे जाने पर गायों के झुण्ड भागते हैं। उस समय पराक्रमी भीमसेन सिंहनाद और बाहुशब्द से आकाश और पृथ्वी को परिपूर्ण करके आपके पुत्रों के मन में भय का सञ्चार करते हुए आनन्द के मारे नाचने लगे। सोमक और सृञ्जय आदि वीरगण हर्ष के मारे शङ्ख बजाने और एक दूसरे को गले से लगाने लगे। महाराज ! इस तरह महाबली अर्जुन, सिंह जैसे हाथी को मार डालता है वैसे ही, कर्ण को मारकर बदला लेकर, प्रतिज्ञा पूरी करके विजय-कीर्ति के अधिकारी हुए।

उधर मद्रराज शल्य मोहित से होकर [सृञ्जय-सोमकगण की की हुई अवहेला और उपहास को सहते हुए] वह ध्वजाहीन रथ लेकर दुर्योधन के पास पहुँचे। वे आँखों में आँसू भरकर गद्गद स्वर से कहने लगे—हे कुरुराज! असंख्य रथ, हाथी, घोड़े और योद्धा मारे जाने से आपकी सेना यम-राज्य के समान हो रही है। आज कर्ण ने अर्जुन के साथ जैसा अद्भुत युद्ध किया है वैसा युद्ध और कभी न हुआ होगा। कर्ण ने पहले श्रीकृष्ण, अर्जुन और अन्य आपके शत्रुओं को पीड़ित कर दिया था; किन्तु दैव ही हमारे प्रतिकूल होकर पाण्डवों की रक्षा और हमारा नाश कर रहा है। यही कारण है कि आपकी ओर से लड़नेवाले—कुबेर, यमराज, इन्द्र, वरुण आदि देवताओं के समान—प्रभावशाली, पराक्रमी शूर-वीर गुणी योद्धाओं को बलपूर्वक शत्रुओं ने मार डाला। आपका प्रयोजन सिद्ध करने के लिए जो नरेन्द्र लड़े हैं वे अवध्य से थे (अर्थात् कोई मनुष्य युद्ध में उन्हें मार नहीं सकता था); तथापि वे पाण्डवों के हाथ से मारे गये। यह भाग्य का दोष है। इसलिए अब आप शोक न कीजिए, ढाढ़स बाँधिए। सबको सदा विजय नहीं मिलती; कार्यसिद्धि पर्याय-क्रम से कभी कभी होती है। १०

महाराज! शल्य के ये वचन सुनकर, अपने अन्याय और पाण्डवों के साथ किये गये दुर्व्यवहार को स्मरण करके, दुर्योधन बहुत दुखी हुए। उनकी आँखों में आँसू भर आये। वे अचेत से होकर दीन भाव से बार-बार साँसें लेने लगे। १५

तिरानवे अध्याय

दुर्योधन का फिर युद्ध के लिए उद्योग करना और सेना का भागना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, कर्ण और अर्जुन के उस संग्राम में कर्ण के मारे जाने पर बाणों से छिन्न-भिन्न होकर भाग रहे कौरवों और सृञ्जयों की क्या दशा हुई? यह तुम वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—महाराज ! उस दिन के संग्राम में मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि के भयङ्कर संहार का वृत्तान्त मैं आपको सुनाता हूँ, ध्यान देकर सुनिए। वीर कर्ण के मारे जाने पर महाबली अर्जुन का सिंहनाद सुनकर आपके पुत्र बहुत ही डर गये। उस समय कौरवपक्ष का कोई भी वीर सेना को लौटाकर जहाँ की तहाँ स्थापित नहीं कर सका। किसी में इतनी ताब न रही कि वह अपना पराक्रम प्रकट कर सके। शङ्का से आकुल, शस्त्र-प्रहार से अत्यन्त घायल, सिंह-पीड़ित मृगयूथ के समान अनाथ कौरव-सेना उसी तरह अपनी रक्षा करने में समर्थ पुरुष को ढूँढ़ने लगी, जिस तरह सागर के बीच जहाज़ टूट जाने पर यात्री लोग पार पहुँचने के लिए व्याकुल होते हैं, अथवा टापू की तलाश में चारों ओर नज़र डालते हैं। सारी सेना के लोग अर्जुन के बाणों से जर्जर होकर—जिनके सींग टूट गये हों उन साँड़ों की तरह और जिनके दाँत तोड़ दिये गये हों उन साँपों की तरह—भागने लगे। कर्ण और वृषसेन आदि वीरों के मारे जाने पर डर के मारे आपके पुत्रों का यह हाल हुआ कि वे अचेत से होकर भाग रहे थे, उनके यन्त्र-कवच-शस्त्र आदि अस्त-व्यस्त होकर गिर गये थे, उन्हें यह नहीं सूझता था कि किस दिशा को जायँ। वे एक दूसरे को रौंदते-गिराते चले जा रहे थे, घूम-घूमकर देखते जाते थे और उनमें से हर एक यही समझ रहा था कि अर्जुन और भीमसेन मेरी ही ओर आ रहे हैं। अनेक लोग १० डर और घबराहट से गिरकर मर गये। अनेक योद्धा महारथी पैदलों को वहीं छोड़कर हाथियों, घोड़ों और रथों को तेज़ भगाये चले जा रहे थे। बेतहाशा भागते समय हाथियों ने रथों को तोड़ डाला, महारथियों के रथों ने घुड़सवारों को कुचल डाला और डर से भाग रहे घोड़ों ने पैदलों को रौंद डाला। घोर साँपों और लुटेरों से परिपूर्ण वन में साथियों से छुटे हुए असहाय मनुष्य की जो दशा होती है वही दशा, कर्ण के मरने पर, आपके योद्धाओं की हुई। कर्ण के मरने पर कौरव-सेना के लोग, विना सवार के हाथी और छिन्नबाहु मनुष्य की तरह, विपन्न होकर फ़ुर्ती से भागने लगे। उन्हें सब तरफ़ पाण्डव ही पाण्डव दिखाई दे रहे थे।

महाराज, राजा दुर्योधन ने सबको भीमसेन के डर से पीड़ित होकर जब इस तरह भागते देखा तब सारथी से कहा—हे सारथी, तुम सेना के बीच में धीरे-धीरे मेरा रथ ले चलो। धनुष लेकर खड़े हुए मुझको लाँघकर अर्जुन आगे नहीं बढ़ सकता। मैं इस समय युद्ध में अर्जुन, कृष्ण, अभिमानी भीमसेन और बचे हुए अन्य शत्रुओं को मारकर कर्ण का बदला लूँगा। समुद्र जैसे तटभूमि को लाँघकर आगे नहीं बढ़ सकता, वैसे ही अर्जुन मेरे आगे से नहीं जा सकता।

दुर्योधन का सारथी उनके, शूर और आर्य क्षत्रिय के योग्य, वचन सुनकर धीरे-धीरे सुवर्ण-भूपित घोड़ों को आगे बढ़ाने लगा। उस समय रथी, घुड़सवार और गजारोही योद्धाओं के अलावा पचीस हज़ार पैदल योद्धा कौरव-सेना में बच रहे थे। ये सब दुर्योधन को युद्ध के २० लिए उद्यत देखकर लौट पड़े और पाण्डवों की ओर चले। यह देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्न

को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने उन पैदलों को चारों ओर से, चतुरङ्गिणी सेना द्वारा, घेरकर बाणों से मारना शुरू किया। पैदल योद्धा भी प्राणों का मोह छोड़कर धृष्टद्युम्न और भीमसेन को, उनके नाम लेकर, ललकारने और युद्ध करने लगे। कुपित भीमसेन, युद्धधर्म का ख़याल करके, गदा हाथ में लेकर, रथ से उतर पड़े और आप भी पैदल खड़े होकर पैदलों से लड़ने लगे। अपने बाहुबल का भरोसा रखनेवाले भीमसेन सुवर्णभूषित गदा से उन शत्रुओं को, दण्डपाणि यमराज की तरह, मारने और गिराने लगे। वे सब पैदल भी प्राणों का मोह छोड़कर भीमसेन की ओर वेग से चले, जैसे पतङ्ग आग की ओर झपटते हैं। भीमसेन के पास जाते ही वे लोग, मृत्यु के निकटवर्त्ती प्राणियों की तरह, मरने लगे। गदा हाथ में लिये हुए महाबली भीमसेन ने बाज़ की तरह झपट-झपटकर उन पचीसों हज़ार को गिरा दिया। भीमसेन इस तरह पैदल-सेना का संहार करके धृष्टद्युम्न के साथ रणभूमि में अत्यन्त शोभा को प्राप्त हुए।

उधर हमारे पक्ष की जो बची हुई रथसेना थी उसे अर्जुन मारने लगे। दुर्योधन की सेना को मार रहे सात्यकि, नकुल और सहदेव उत्साहपूर्वक वेग से शकुनि की ओर चले। शकुनि के साथ वीर घुड़सवारों का रिसाला था। उसे वे वीर तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। उस समय फिर घनघोर युद्ध होने लगा। महारथी अर्जुन रथी योद्धाओं के पास पहुँचकर त्रिलोक-प्रसिद्ध गाण्डीव धनुष को बजाने लगे। कौरवपक्ष के योद्धा लोग श्रीकृष्ण-सञ्चालित सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ और योद्धा अर्जुन को देखते ही भागने लगे। उधर महावीर भीमसेन और महारथी धृष्टद्युम्न भी उन बाण-प्रहार से विह्वल पचीस हज़ार पैदलों का संहार करके झटपट रथसेना के पास पहुँचे। कबूतर के रङ्ग के अबलख़ घोड़ों से युक्त और कोविदार-चिह्न-युक्त ध्वजा से शोभित रथ पर धृष्टद्युम्न को और महाधनुर्द्धर भीमसेन को आते देखकर कौरव-सेना के योद्धा भय-विह्वल होकर भागने लगे। उधर शीघ्र शस्त्र चलानेवाले फुर्तीले गान्धारराज शकुनि और उनकी घुड़सवार सेना का पीछा कर रहे यशस्वी नकुल, सहदेव और सात्यकि भी वहाँ आ पहुँचे। चेकितान, शिखण्डी और द्रौपदी के पाँचों पुत्र आपकी सेना के अधिक अंश को नष्ट करके अलग-अलग शङ्ख बजाने लगे। साँड़ जैसे अपने प्रतिद्वन्द्वी साँड़ को भागते देखकर और भी वेग से उसका पीछा करता है, वैसे ही ये सब वीर महारथी अपने शत्रुओं के भागने पर भी उन्हें मारते हुए उनका पीछा करने लगे।

इसी समय महापराक्रमी अर्जुन मरने से बचे हुए कौरवयोद्धाओं को [फिर पलटकर युद्ध करने के लिए उद्यत] देखकर क्रोध से अधीर हो उठे। वे उन वीरों के सामने आकर अपना त्रिलोक-प्रसिद्ध गाण्डीव चढ़ाकर बाण बरसाने लगे। उस समय पृथ्वी पर उड़ी हुई धूल ने और आकाश में असंख्य बाणों के जाल ने घना अँधेरा कर दिया। महाराज, आपके योद्धा बाणों से पीड़ित और अँधेरे से व्याकुल होकर फिर डर के मारे भागने लगे।

हे नरनाथ, सेना को भागते और शत्रुओं को सामने आते देखकर आपके पुत्र अकेले ही उनकी ओर बढ़े। राजा बलि ने जैसे सब देवताओं को युद्ध के लिए ललकारा था वैसे दुर्योधन अकेले ही सब पाण्डवों और योद्धाओं को युद्ध के लिए ललकारने लगे। पाण्डवपक्ष के योद्धा विविध अस्त्र-शस्त्र लेकर, क्रुद्ध होकर, भर्त्सना करते हुए कुरुराज पर आक्रमण करने को चले। महाराज, कुपित राजेश्वर दुर्योधन इससे तनिक भी नहीं घबराये। उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से हज़ारों शत्रुओं को मार डाला। एक ओर सारी पाण्डव-सेना थी और दूसरी ओर अकेले दुर्योधन थे, तो भी उन्होंने उस समय ऐसा अद्भुत पौरुष प्रकट किया कि कोई किसी तरह उन्हें ५० विमुख नहीं कर सका। राजा दुर्योधन ने अपनी सेना को उत्साह-रहित और शत्रुओं के प्रहार से पीड़ित देखकर उसे उत्साहित करने के लिए यों कहा—हे वीर पुरुषो, सुश्रृङ्खला के साथ डटे रहकर शत्रुओं का सामना करो। तुम डरकर व्यर्थ भागते हो; क्योंकि मुझे ऐसा कोई स्थान नहीं देख पड़ता, जहाँ भागकर तुम अर्जुन के हाथ से छुटकारा पा सको। देखो, पाण्डवों की सेना बहुत थोड़ी सी रह गई है, कृष्ण और अर्जुन भी बेतरह घायल हैं—थक भी गये हैं। इसलिए मैं कृष्ण-अर्जुन सहित सब शत्रुओं को अवश्य मार डालूँगा और फिर हमारी ही जीत होगी। हे वीरो! इस समय अगर पीठ दिखाकर रण से भागोगे तो अपयश ही हाथ लगेगा; पाण्डव लोग अवश्य पीछा करके तुमको मार डालेंगे। इसलिए सामने डटे रहकर या तो मर जाओ या शत्रुओं को मारकर यश और विजय प्राप्त करो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। क्षत्रिय-धर्म से युद्ध करते-करते मर जाना सर्वथा श्रेयस्कर और सुखदायक है। संग्राम में वीर की तरह मरने से सब दुःखों से छुटकारा मिल जाता है और परलोक में स्वर्गलाभ तथा अक्षय सुख प्राप्त होता है। हे वीर पुरुषो! क्षत्रियो! मेरी बात सुनो। शूर और कायर दोनों को एक दिन अवश्य ही मरना पड़ता है। जब यह निश्चित है तब ऐसा कौन मूढ़ पुरुष होगा, जो मेरे समान क्षत्रियकुल में उत्पन्न होकर भी मृत्यु के डर से युद्ध छोड़कर भागेगा? तुम लोग क्या इस तरह भागकर कुपित शत्रु भीमसेन के वश में हो जाना चाहते हो? तुम अपने बाप-दादे के पाले हुए धर्म को मत छोड़ो। क्षत्रिय के लिए रण से भागने से बढ़कर अधर्म और पाप दूसरा नहीं है। हे कौरवपक्ष के लोगो! युद्धधर्म से अच्छा स्वर्ग जाने का दूसरा मार्ग नहीं है। इसलिए तुम लोग युद्ध में मरकर शीघ्र स्वर्ग प्राप्त करो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज, आपके पुत्र राजा दुर्योधन इस तरह योद्धाओं को उत्साहित और उत्तेजित करने लगे। परन्तु शत्रुओं के प्रहार से अत्यन्त घायल और पीड़ित योद्धा लोग, ६० उनकी बातों पर ध्यान न देकर, भागते ही रहे।

चौरानवे अध्याय

शल्य का दुर्योधन से युद्ध बन्द करने के लिए कहना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! मद्रराज शल्य ने राजा दुर्योधन को सेना के लौटाने का यत्न करते देखकर, दीन, भय-विह्वल और मोहग्रस्त भाव से, उन्हें सम्बोधन करके कहा—महाराज! देखो, मारे गये वीर मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों की लाशों से रणभूमि व्याप्त हो रही है। कहीं पर बाणों से विदीर्ण पर्वताकार हाथी पड़े हुए हैं, जिनमें कुछ मर गये हैं और कुछ अधमरे तड़प रहे हैं। उनके कवच, योद्धा और योद्धाओं के शस्त्र छिन्न-भिन्न हो गये हैं। जिनके घण्टा, ध्वजा-पताका, अङ्कुश, तोमर, सुवर्ण-जाल और हौदे आदि सामान अस्त-व्यस्त और नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं, शरीर रक्त से भीग रहे हैं, वे हाथी उन वज्र-विदीर्ण पर्वतों के समान जान पड़ते हैं, जिनकी शिलाएँ चूर्ण हो गई हों और वृक्ष टूट गये हों। कहीं पर बाणों से विदीर्ण घोड़े पड़े हुए चिल्ला रहे हैं। उनके मुँहों से रक्त बह रहा है और वे दीन, त्रास-युक्त भाव से आँखें निकाले पड़े तड़प रहे हैं। इन दृश्यों से रणभूमि महाभयङ्कर हो रही है। पड़े हुए मरे और अधमरे हाथियों, घोड़ों, रथी योद्धाओं, घुड़सवारों, पैदलों और टूटे हुए रथों से रणभूमि पटी पड़ी है। हाथियों की सूँड़ें और अन्य अङ्ग कट गये हैं और वे पृथ्वी में पड़े तड़प रहे हैं। श्रेष्ठ रथ-योद्धा, घुड़सवार, हाथियों के सवार और पैदल सम्मुख-युद्ध में शत्रुओं के प्रहार से मारे गये हैं। उनके कवच, आभूषण, वस्त्र, शस्त्र आदि अस्त-व्यस्त और इधर-उधर बिखरे पड़े हैं जिनसे रणभूमि नक्षत्र-तारागणयुक्त आकाशखण्ड सी शोभायमान हो रही है। बुझी हुई आग के समान महाबली वीर योद्धा शत्रुओं के बाणों से मरे हुए पड़े हैं। उनमें जो अधमरे हैं, वे पड़े-पड़े चारों ओर देख रहे हैं। कर्ण और अर्जुन के हाथों से छूटे हुए बाण हाथियों, १० घोड़ों और मनुष्यों को विदीर्ण करके, उनके प्राणों को हरते हुए, पृथ्वी में घुस गये हैं, जैसे महानाग बिल में घुसते हैं। जिधर-जिधर कर्ण और अर्जुन के रथ गये हैं, उधर-उधर बाण-विदीर्ण रक्त से नहाये हुए असंख्य मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के ढेर लग गये हैं, जिनसे यह पृथ्वी अत्यन्त दुर्गम और भयानक हो रही है। बाणों से छिन्न-भिन्न हुए सुसज्जित बड़े-बड़े रथ टूटे-फूटे पड़े हैं। उनके सारथी, घोड़े और योद्धा भी मर गये हैं। ध्वजा, शस्त्र, तरकस, पताका, पहिये, जुआ, युग, त्रिवेणु, बन्धन, ईषादण्ड और अनुकर्ष आदि उनके सामान भी बाणों से छिन्न-भिन्न होकर अस्त-व्यस्त पड़े हैं। उन मणि-सुवर्ण-भूषित रथों के आसन, बैठने के स्थान और कूबर कट-फट गये हैं। ऐसे रथ, आकाश में शरद् ऋतु के मेघखण्डों की तरह, रणभूमि में पड़े दिखाई देते हैं। राजाओं के सुसज्जित रथों को, स्वामी के मारे जाने पर, वेग-गामी घोड़े खींचते हुए इधर-उधर फिर रहे हैं। वे रथ पड़े हुए मनुष्य, हाथी, रथ, घुड़सवार

आदि को कुचलते-रौंदते चले जा रहे हैं और कहीं पर अटककर उलट जाते हैं। राजन्! रण-भूमि में पड़े हुए हज़ारों सुवर्णालङ्कृत परश्वध, तीक्ष्ण शूल, मूसल, मुद्गर, परिघ आदि शस्त्र चतु-रङ्गिणी सेना के जाने-आने से चूर्ण हो गये हैं। इसी तरह चमकीले खड्ग, उनकी चित्र-विचित्र म्यानें, ढालें, सुवर्णपट्ट-भूषित गदाएँ, सोने से अलङ्कृत धनुष, सुवर्णपुङ्ख-युक्त बाण, तीक्ष्ण ऋष्टियाँ, उनके साफ़ कोश, कटारें, सोने की मूठ या डण्डीवाले प्रास आदि शस्त्र इधर-उधर पड़े हैं। चमकीले छत्र, सफ़ेद चँवर, शङ्ख, छिन्न-भिन्न बहुमूल्य मालाएँ, विचित्र कम्बल, आसन, पताका-ध्वजा, वस्त्र, पगड़ियाँ, आभूषण, किरीट, मुकुट, कलँगी, माला, मूँगे-मोती के हार, केयूर, २० सुवर्णसूत्र-समलङ्कृत गले में पहनने के निष्क, मणि-हीरा-मोती प्रभृति विविध बहुमूल्य रत्न आदि का ढेर लगा हुआ है। राजाओं के सुख-भोग में पले हुए शरीर, कटे हुए अङ्ग-प्रत्यङ्ग और चन्द्रबिम्ब से सिर जहाँ-तहाँ पड़े हैं। वीर राजा और क्षत्रिय लोग मरकर, विविध भोग, सुख-सामग्री और शरीर छोड़कर, अपने धर्म का पालन करके, पृथ्वी पर अक्षय महायश छोड़कर स्वर्ग को चले गये हैं। इसलिए हे कुरुराज दुर्योधन! तुम भी अब युद्ध बन्द कर दो, शिविर को चलो, सैनिकों को लौटाओ। देखो, सूर्यदेव अस्ताचल के शिखर पर पहुँच गये। आगे तुम्हारी इच्छा।

महाराज, शोक से व्याकुल शल्य ने यों कहकर "हाय कर्ण! हाय कर्ण!" कह रहे विषाद-ग्रस्त दुर्योधन को समझाकर युद्ध से लौटाया। अश्वत्थामा और अन्य राजाओं ने भी दुर्योधन को ढाढ़स बँधाया। इसके उपरान्त सब लोग संग्राम बन्द करके, अर्जुन का यश से समुज्ज्वल दिव्य रथ और उसकी ऊँची ध्वजा को बारम्बार देखते हुए, शिविर की ओर चल दिये। स्वर्गगमन के लिए दृढ़ निश्चय करके सम्मुख-युद्ध में मारे गये वीर मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीरों से इतना रक्त बहा था कि उसके प्रवाह से सारी रणभूमि भीग रही थी। वह रणभूमि लाल रङ्ग के वस्त्र, माला और सुवर्ण के आभूषण धारण किये हुए, सबके लिए रमणीय, वेश्या के समान सर्व-जन-गम्य होकर शोभित हो रही थी। उस रौद्र समय में, सन्ध्याओं के सन्धिकाल में, कौरवगण उस भयङ्कर स्थान में नहीं ठहर सके। [जैसे एक समय पाँचों पाण्डव द्यूतक्रीड़ा में कौरवों से हार जाने पर हस्तिनापुर से दुःखित होकर चले थे वैसे ही आज कौरवगण भी दुःखित, उदास और विह्वल होकर रणभूमि से चले।] कर्ण के मारे जाने से दुःखित कौरवगण सूर्यमण्डल को लाल और अस्त होते देखकर, "हाय कर्ण! हाय कर्ण!" कहकर विलाप-पश्चात्ताप करते हुए, शीघ्रता के साथ अपने शिविरों को चल दिये।

महाराज! अर्जुन के गाण्डीव धनुष से निकले हुए, सुवर्णपुङ्ख-युक्त, तीक्ष्ण और खून से तर असंख्य बाण वीर कर्ण के शरीर भर में लगे थे। वह अद्वितीय वीर मर जाने पर भी किरण-जाल-शोभित सूर्य के समान जान पड़ रहा था। रक्त से तर कर्ण के शरीर को रक्तवर्ण करों (किरणों, पक्षान्तर में हाथों) से स्पर्श करके पुत्र-स्नेह सा दिखा रहे भगवान् सूर्यदेव मानों स्नान

करने के लिए ही पश्चिम-समुद्र को गये। यह समझकर देवता और ऋषिगण भी अपने-अपने लोकों को चल दिये। दर्शक रूप से आई हुई सारी भीड़, कर्ण और अर्जुन के भयङ्कर संग्राम को देखकर, विस्मित होकर उसी की चर्चा और प्रशंसा करती हुई अपने स्थानों को जाने लगी। ३०

राजन्! बाणों से कवच कट गया था, सारा शरीर रक्त से सन रहा था, ऐसी दशा में भी—मृत्यु हो जाने पर भी—कर्ण की शोभा और तेज ने नहीं छोड़ा था। तपे हुए सुवर्ण और बाल-सूर्य के समान प्रभापूर्ण कर्ण को देखकर सबको यही जान पड़ता था कि वे मरे नहीं हैं। सिंह को देखकर जैसे मृग डरते हैं वैसे ही मरे हुए कर्ण को भी देखकर योद्धाओं के मन में त्रास उत्पन्न हो जाता था। वीर कर्ण के मर जाने पर भी देखने से जान पड़ता था कि वे बोलना ही चाहते हैं। सुन्दर वेष और सुडौल ग्रीवा से युक्त कर्ण का मुखमण्डल पूर्ण चन्द्रमा के समान जान पड़ता था। विविध आभूषण और सोने के भुजबन्द पहने हुए कर्ण, किसी काट डाले गये शाखा-प्रशाखा-युक्त बड़े वृक्ष की तरह, रण-शय्या पर पड़े थे। हे नरेन्द्र! अपने तेज से अग्नि की तरह प्रज्वलित कर्ण इस तरह अर्जुन के बाणों के पानी से बुझ गये। प्रज्वलित आग को जैसे पानी बुझा देता है वैसे ही कर्ण-पावक को पार्थ-मेघ ने बुझा दिया। महाराज, घोर युद्ध करके पृथ्वी पर अक्षय यश छोड़कर पुत्र सहित वीर कर्ण अर्जुन के बाण से मारे गये। महातेजस्वी कर्ण ने, श्रीमान् सूर्य-देव की तरह, अस्त्र-तेज और बाण-वर्षा से सब पाञ्चालों तथा पाण्डवों को अत्यन्त पीड़ित किया, असंख्य शत्रुसेना को मारा [और अर्जुन को भी प्राण-सङ्कट की अवस्था तक पहुँचा दिया]। परन्तु अन्त को पुत्र सहित वीर कर्ण अर्जुन के हाथ से मारे गये। हे नरनाथ! जिस सत्पुरुष दानवीर ने माँगने पर "देता हूँ" के सिवा नकार कभी मुँह से नहीं निकाला, वही प्रार्थियों का कल्पवृक्ष कर्ण द्वन्द्व-युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारा गया। सज्जन लोग कर्ण को महात्मा और सत्पुरुष कहकर उनका सम्मान करते थे। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति ब्राह्मणों को अर्पण कर रक्खी थी। वे ब्राह्मणों के लिए जीवन तक देने को तैयार रहते थे। वही स्त्रियों के प्यारे और जगत्प्रसिद्ध दाता कर्ण अर्जुन के बाण से प्राणहीन होकर परमगति को प्राप्त हो गये। जिनके भरोसे पर आपके पुत्र दुर्योधन ने प्रबल पाण्डवों से वैर ठाना था, वे कौरवों के कवच (रक्षक) वीर कर्ण आपके पुत्रों की विजय की आशा और कल्याण लेकर स्वर्गवासी हो गये। ४०

हे कुरुकुलतिलक! जिस समय महावीर कर्ण मारे गये उस समय एकाएक नदियों के प्रवाह रुक गये, सूर्य मलिन होकर अस्त हो गये, सब दिशाओं में धुआँ सा छा गया और दिग्दाह दिखाई दिया। सूर्य के समान प्रज्वलित होकर सोम-पुत्र श्वेतग्रह (बुध) वक्र भाव से आकाश में उदित देख पड़ा। आकाश विचलित सा हो उठा। पृथ्वी घोर शब्द करती हुई काँपने लगी। कठोर आँधी चलने लगी। महासागर क्षोभ को प्राप्त होकर घोर शब्द करने लगे। वनों सहित बड़े-बड़े पर्वत हिल उठे। इन उत्पातों से सब प्राणी अत्यन्त व्यथित और विह्वल हो उठे। बृहस्पति ग्रह सूर्य- ५०

चन्द्र के समान प्रज्वलित होकर रोहिणी को पीड़ित करने लगा। आकाश और दिशाएँ अन्धकार से परिपूर्ण हो गईं और अग्निपुञ्ज सी उल्काएँ गिरने लगीं। निशाचर जीव अत्यन्त प्रसन्न हुए।

राजन्, जिस समय महापराक्रमी अर्जुन ने अञ्जलिक बाण से कर्ण का सिर काट डाला उस समय अन्तरिक्ष में देवगण हाहाकार करने लगे। देवता, गन्धर्व, मनुष्य आदि सब जिनकी पूजा और प्रशंसा करते थे, उन अपने प्रबल शत्रु कर्ण को युद्ध में मारकर महापराक्रमी अर्जुन, वृत्रासुर को मारनेवाले इन्द्र के समान, महान् तेज और प्रभाव से युक्त हुए। भयानक शब्द और ध्वजा-पताका से युक्त, इन्द्र के रथ के समान, महावेग-सम्पन्न, सुवर्ण-मणि-मोती-हीरा-विद्रुम आदि बहुमूल्य रत्नों से अलङ्कृत विशाल श्रेष्ठ रथ के ऊपर बैठे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन, सूर्य और अग्नि के समान, विष्णु और इन्द्र के समान रणभूमि में शोभायमान हुए। वे दोनों पुरुषश्रेष्ठ बर्फ़, चन्द्रमा, शङ्ख और स्फटिक के समान सफ़ेद रथ पर बैठे हुए बेखटके विचर रहे थे। धनुष की डोरी और हथेली के आघात से उत्पन्न शब्द तथा रथ के पहियों की घरघराहट से बल-पूर्वक शत्रुओं को विह्वल विवर्ण करके, बाण-वर्षा से शत्रुसेना को विमुख और परास्त करके, श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपने-अपने शङ्ख बजाये। उस शङ्ख-ध्वनि ने शत्रुओं के हृदय में भय और सन्ताप उत्पन्न कर दिया। महाराज! यादवपति श्रीकृष्ण और पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन ने सुवर्णजाल से अलङ्कृत, गम्भीर शब्द उत्पन्न करनेवाले, सफ़ेद शङ्खों को बजाकर मानों त्रिभुवन में अपनी विजय की घोषणा कर दी। पाञ्चजन्य और देवदत्त नामक शङ्ख का शब्द पृथ्वी, अन्तरिक्ष ९० और सब दिशाओं को व्याप्त करके सर्वत्र फैल गया। उस शङ्खध्वनि से वन, नदी, पर्वत, कन्दरा आदि सब स्थान प्रतिध्वनित हो उठे और आपके पुत्रों सहित सब कौरव-सेना भय-विह्वल हो उठी। इस तरह शङ्ख बजाते हुए दोनों वीर युधिष्ठिर का अभिनन्दन करने के लिए, कर्ण-वध के समाचार से उन्हें आनन्दित करने के लिए, उनकी ओर चले। कौरवगण उस शङ्खध्वनि को सुनकर ऐसे घबराये कि शल्य और राजा दुर्योधन को छोड़कर भागने लगे। उस समय उदय हुए दो सूर्यों के समान शोभायमान और कर्ण के बाणों से छिदे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास जाकर सब योद्धा हार्दिक आनन्द प्रकट करते हुए उनका अभिनन्दन करने लगे। सुहृद्गण सहित वे, विष्णु और इन्द्र के समान, दोनों वीरवर अत्यन्त प्रसन्न हुए। मनुष्य, गन्धर्व, यक्ष, देवता, महर्षि, नाग, चारण, सिद्ध आदि सब श्रीकृष्ण सहित अर्जुन को विजयाशीर्वाद देने लगे। इस तरह लोगों से प्रशंसा प्राप्त करके बान्धवों सहित दोनों महात्मा, बल-वध के बाद ९८ विष्णु और इन्द्र की तरह, अत्यन्त आनन्दित हुए।

पञ्चानबे अध्याय

दुर्योधन आदि का शिविर को जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज, इस तरह महारथी कर्ण के मारे जाने पर कौरवदल के हज़ारों लोग शत्रुओं के बाणों से अत्यन्त घायल और भय-विह्वल होकर सब ओर देखते हुए भागने लगे। आपके पुत्र ने लाख-लाख उन्हें रोकने की चेष्टा की, मगर घबराहट के मारे कोई नहीं रुका। तब सेना की इच्छा जानकर, शल्य की सलाह से, राजा दुर्योधन ने युद्ध बन्द करने की आज्ञा दे दी। उस समय महारथी कृतवर्मा, बची हुई नारायणी सेना और कौरव-सेना लेकर, शिविर की ओर भागे। शूर अश्वत्थामा, पाण्डवों की विजय देखकर, बारम्बार साँसें लेते हुए शिविर की ही ओर चले। कृपाचार्य भी मेघदल-तुल्य गजसेना लेकर शिविर की ही ओर चले। गान्धार देश के हज़ारों घुड़सवार योद्धाओं को लेकर गान्धार-राज शकुनि शिविर की ही ओर भागे। भय-पीड़ित शूर सुशर्मा भी, बचे हुए संशप्तकगण के साथ, वेग से शिविर की ही ओर भागे। जिसका सर्वस्व लुट गया हो उस पुरुष की तरह व्याकुल और कर्ण तथा दुःशासन की मृत्यु से शोकाकुल राजा दुर्योधन भी पछताते और बारम्बार परिणाम को सोचते हुए लाचार होकर शिविर की ओर चले। श्रेष्ठ रथी मद्रराज शल्य भी कर्ण के ध्वजा-रहित रथ को लेकर, डर के मारे चारों ओर १० देखते हुए, शिविर की ओर चले। इसी तरह कर्ण की मृत्यु से भय-विह्वल, आँखों में आँसू भरे, काँप रहे, घबराये हुए अन्यान्य कौरवपक्ष के महारथी भी भाग खड़े हुए। कोई कर्ण की प्रशंसा कर रहा था, कोई अर्जुन को साधुवाद दे रहा था। हे नरेन्द्र! उन हज़ारों योद्धाओं में एक भी ऐसा नहीं था, जो उस समय युद्ध करना चाहता हो। बात यह है कि कर्ण के मारे जाने पर कौरवगण जीवन, राज्य, स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति आदि से निराश हो गये।

शोक और दुःख से व्याकुल दुर्योधन ने यत्नपूर्वक उन सबको लौटा लाकर शिविरों में विश्राम करने की आज्ञा दी। दीन, विषादग्रस्त, भय-विह्वल महारथी लोग भी राजा दुर्योधन की आज्ञा शिरोधार्य करके, बारम्बार अर्जुन की विजय और कर्ण-वध का वृत्तान्त सोचते हुए, १५ शिविरों में जाकर विश्राम करने लगे।

छियानबे अध्याय

श्रीकृष्ण और अर्जुन का युधिष्ठिर के पास जाना और कर्ण की मृत्यु का हाल सुनकर युधिष्ठिर का प्रसन्न होना

सञ्जय ने कहा कि हे नरनाथ, महामति श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गले से लगाकर आनन्द प्रकट करते हुए कहा—हे अर्जुन, इन्द्र ने जैसे वज्र से वृत्रासुर का संहार किया था वैसे ही इस

समय तुमने दुर्जय महारथी कर्ण को उग्र बाण से मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। अब सब मनुष्य, वृत्रवध के वृत्तान्त की तरह, कर्णवध की चर्चा करेंगे। इस समय धर्मराज से जाकर यशस्कर कर्णवध का हाल कहना हमारा प्रधान कर्तव्य है। तुम बहुत दिनों से चाहते थे कि कर्ण को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो, सो आज वह तुम्हारी इच्छा पूरी हुई। अब चलकर धर्मराज से यह हाल कहो और उनके ऋण से अपने को मुक्त करो। पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठिर तुम्हारा और कर्ण का संग्राम देखने के लिए रणभूमि में आये थे; लेकिन अत्यन्त घायल और वेदना से पीड़ित होने के कारण शिविर को चले गये हैं।

राजन्, महावीर अर्जुन यादवश्रेष्ठ श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर युधिष्ठिर के पास जाने को उद्यत हुए। अर्जुन का रथ फेरकर श्रीकृष्ण सैनिकों से कहने लगे—हे योद्धाओ! तुम्हारा कल्याण हो, तुम लोग सुसज्जित और सुश्रृङ्खला-युक्त होकर शत्रुओं के सामने यहीं स्थित रहो; सम्भव है, वे लोग फिर लौटकर आक्रमण करें। हे नरेन्द्र! महात्मा श्रीकृष्ण ने योद्धाओं से
१० यों कहकर धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, भीमसेन, सात्यकि, शिखण्डी और नकुल-सहदेव से कहा—हे वीरो, मैं और अर्जुन दोनों कर्ण-वध का वृत्तान्त सुनाने के लिए धर्मराज के पास जाते हैं। जब तक हम लौटकर न आवें तब तक तुम लोग यत्नपूर्वक यहीं ठहरो।

उक्त वीरों ने कृष्णचन्द्र के ये वचन सुनकर उनके कथन का अनुमोदन किया और कहा—आप जाइए। महात्मा कृष्णचन्द्र अर्जुन को साथ लेकर शिविर में पहुँचे। वहाँ सुवर्णभूषित श्रेष्ठ शय्या पर शयन कर रहे धर्मराज को देखकर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने उनके चरण छुए। शत्रु-नाशन महाबाहु युधिष्ठिर ने दोनों वीरों के मुख पर हर्ष के चिह्न देखकर समझ लिया कि कर्ण मार डाला गया। उनके नेत्रों से आनन्द के आँसू बहने लगे। उन्होंने उठकर दोनों को गले से लगाया और पूछा कि वीरवर कर्ण किस तरह मारा गया। अर्जुन सहित श्रीकृष्ण ने कर्णवध का वृत्तान्त आदि से अन्त तक धर्मराज के आगे वर्णन किया। इसके उपरान्त कुछ मुसकाकर, हाथ जोड़कर, कृष्णचन्द्र ने कहा—आज बड़े भाग्य की बात है कि पाँचों पाण्डव इस रोमहर्षण भयानक संग्राम से सकुशल छुटकारा पा गये। अब आप समयोचित अन्य कार्य कीजिए। बड़े ही भाग्य की बात है कि कर्ण मारा गया, आप विजयी हुए और आपके अभ्युदय और सौभाग्य
२० की वृद्धि हुई। जो नराधम द्यूतक्रीड़ा में आपको द्रौपदी तक को दाँव पर रखकर हार जाते देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ था—जिस नीच ने उस समय द्रौपदी का उपहास और पाण्डवों का अपमान किया था, उस कर्ण का रक्त आज पृथ्वी ने पी लिया। आपका यह शत्रु बाणों से विदीर्ण और प्राणों से हीन होकर रणभूमि में पड़ा हुआ है। आप रणस्थल में चलकर अपनी आँखों से उसकी दुर्दशा देख लें। आज आपका राज्य निष्कण्टक हुआ। अब आप हम लोगों के साथ यत्नपूर्वक इस पृथ्वी का शासन कीजिए और विशाल साम्राज्य का सुख भोगिए।

सञ्जय कहते हैं कि हे राजेन्द्र! श्रीकृष्ण के वचन सुनकर, अत्यन्त आनन्दित होकर, धर्मराज ने कहा—हे श्रीकृष्ण, आज मेरे भाग्य की सीमा नहीं है। तुम अर्जुन के सारथी और सहायक बने थे, इसी कारण अर्जुन कर्ण को मार सके। तुम्हारी ही बुद्धि और प्रभाव से कर्ण मारा गया, इसी कारण कर्ण का मारा जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

हे राजेन्द्र! धर्मपरायण राजा युधिष्ठिर ने यों कहकर, श्रीकृष्ण का अङ्गद-शोभित दाहना हाथ अपने हाथ में लेकर, फिर उन दोनों वीरों से कहा—हे वीर पुरुषो, मैंने देवर्षि नारद के मुँह से सुना है और महर्षि वेदव्यास ने भी मुझसे बारम्बार कहा है कि तुम दोनों प्राचीन ऋषि महात्मा नर-नारायण हो। हे कृष्णचन्द्र, केवल तुम्हारे प्रसाद से ही अर्जुन ने शत्रुओं के सामने जाकर उनको परास्त किया और वे कभी संग्राम से विमुख नहीं हुए। तुम अर्जुन के ३० सारथी हुए हो तो हम लोग अवश्य जय प्राप्त करेंगे। हे श्रीकृष्ण! तुम्हारी ही बुद्धि और प्रभाव से भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य और कर्ण ऐसे महारथी योद्धा मारे गये हैं और अब बचे हुए कौरवपक्ष के कृपाचार्य आदि अन्य योद्धा भी शीघ्र ही मरेंगे।

राजन्! धर्मनन्दन युधिष्ठिर इतना कहकर काली पूँछवाले, मन के समान वेग से जानेवाले, सुवर्ण-मण्डित, सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर, सैनिकों को साथ लेकर, श्रीकृष्ण और अर्जुन से प्रिय वार्तालाप करते हुए रणस्थल का परिदर्शन करने के लिए चले। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि महावीर कर्ण असंख्य बाण लगने से, केसर-परिवृत कदम्ब-कुसुम के समान, वीरशय्या पर पड़े हुए हैं। सुगन्ध-तैल-पूर्ण हज़ारों दीपक उनके आसपास जल रहे हैं, जिनसे उनका शरीर जगमगा रहा है। अर्जुन के बाणों से उनका कवच छिन्न-भिन्न हो गया है। कर्ण के पुत्र भी मरे हुए पड़े हैं। धर्मराज ने बारम्बार कर्ण को देखकर यह निश्चय कर लिया कि अब उनके शरीर में प्राण नहीं हैं। फिर वे श्रीकृष्ण और अर्जुन की बारम्बार प्रशंसा करते हुए कहने लगे—हे माधव, तुम्हारे सहायक और रक्षक होने के कारण ही आज मैं ४० अपने भाइयों सहित राजा के पद का अधिकारी हुआ। आज कर्ण के मारे जाने से दुर्मति दुर्योधन राज्य और जीवन से निराश हो गया होगा। केवल तुम्हारे अनुग्रह से ही आज हम कृतकार्य हुए। हम लोगों ने वन में तेरह बरस अत्यन्त क्लेश से बिताये हैं। मुझे तो कर्ण के भय से एक रात को भी अच्छी तरह नींद नहीं आई। आज तुम्हारी कृपा से कर्ण मारा गया और मैं अब सुख की नींद सोऊँगा।

राजन्! धर्मपुत्र युधिष्ठिर इस तरह बार-बार अर्जुन सहित श्रीकृष्ण की प्रशंसा करने लगे। सञ्जय कहते हैं—अर्जुन के बाणों से पुत्र सहित कर्ण को मरा हुआ देखकर युधिष्ठिर ने यह समझा कि उनका फिर से जन्म हुआ। इसके उपरान्त महारथी नकुल, सहदेव, भीमसेन, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, पाञ्चालगण और सृञ्जयगण स्तुतियोग्य पूजनीय श्रीकृष्ण और अर्जुन

५० की प्रशंसा और राजा युधिष्ठिर की संवर्द्धना करते हुए, उनके साथ, बड़े हर्ष से अपने-अपने शिविर को गये। हे नरेन्द्र, केवल आपकी कुमन्त्रणा और दुर्नीति से ही ऐसा लोमहर्षण हत्याकाण्ड हुआ है। अब आप क्यों वृथा शोक और पश्चात्ताप कर रहे हैं?

वैशम्पायन ने कहा—हे जनमेजय! राजा धृतराष्ट्र सञ्जय के मुँह से कर्ण-वध-रूप अप्रिय अशुभ समाचार सुनते ही अचेत होकर, कटे हुए वृक्ष की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़े। दूर-दर्शिनी देवी गान्धारी भी पृथ्वी पर गिरकर कर्ण के लिए अनेक प्रकार से विलाप करने लगीं। तब सञ्जय और विदुर ने धृतराष्ट्र को पकड़कर उठाया और होश में लाकर उन्हें समझाना शुरू किया। कुरुकुल की स्त्रियों ने गान्धारी को उठाकर समझाया। चिन्ता और शोक से व्याकुल राजा धृतराष्ट्र, विदुर और सञ्जय के समझाने पर, दैव और होनी को सबसे प्रबल और अनिवार्य जानकर अपने आसन पर बैठे हुए अचेत की तरह चुपचाप सोचने लगे।

महाराज! जो कोई महात्मा अर्जुन और कर्ण के संग्राम का यह वृत्तान्त पढ़ता या सुनता है, उसे विधिपूर्वक यज्ञ करने का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है। पण्डितों का कहना है कि अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य—ये भगवान् सनातन विष्णु के रूप हैं और वे विष्णु ही यज्ञ-स्वरूप हैं। जो व्यक्ति असूया-शून्य होकर इस संग्राम-यज्ञ के वृत्तान्त को पढ़ता या सुनता है वह सुखी और ६० सर्वश्रेष्ठ होता है। भक्ति-पूर्वक निरन्तर इस पवित्र उत्कृष्ट वर संहिता (महाभारत) को जो पढ़ता है वह धन-धान्य-सम्पन्न, यशस्वी और समग्र सुख पाने का अधिकारी होता है। उस पर भगवान् स्वयम्भू, शम्भु और विष्णु सदा कृपा करते हैं। इस कर्णपर्व को पढ़ने से ब्राह्मण का वेद-ज्ञान बढ़ता है, क्षत्रिय का बल-वीर्य बढ़ता है और उसे संग्राम में विजय प्राप्त होती है। ऐसे ही वैश्य को धन-सम्पत्ति और शूद्र को आरोग्य प्राप्त होता है। इस पर्व में सनातन भगवान् विष्णु के माहात्म्य का कीर्तन किया गया है। इसलिए जो कोई इस कर्णपर्व को पढ़ता या सुनता है उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। वेदव्यास का यह कथन सत्य है। एक वर्ष तक नित्य बछड़े सहित दुधार गाय का दान करने से जो पुण्य होता है, वही पुण्य इस कर्ण-६५ पर्व के पढ़ने और सुनने से भी प्राप्त होता है।

महाभारत के स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) जो सज्जन हमारे यहाँ महाभारत के स्थायी ग्राहकों में अपना नाम और पता लिखा देते हैं उन्हें महाभारत के अङ्कों पर २०) सैकड़ा कमीशन काट दिया जाता है। अर्थात् ॥) प्रति अङ्क के बजाय स्थायी ग्राहकों को १) में प्रति अङ्क दिया जाता है। ध्यान रहे कि डाकखर्च स्थायी और फुटकर सभी तरह के ग्राहकों को अलग देना पड़ेगा।

(२) साल भर या छः मास का मूल्य १२) या ६), दो आना प्रति अङ्क के हिसाब से रजिस्ट्री ख़र्च सहित १३॥) या ६॥।) जो सज्जन पेशगी मनीआर्डर-द्वारा भेज देंगे, केवल उन्हीं सज्जनों को डाकखर्च नहीं देना पड़ेगा। महाभारत की प्रतियाँ राह में गुम न हो जायँ और ग्राहकों की सेवा में वे सुरक्षित रूप में पहुँच जायँ, इसी लिए रजिस्ट्री द्वारा भेजने का प्रबन्ध किया गया है।

(३) उसके प्रत्येक खंड के लिए अलग से बहुत सुन्दर जिल्दें भी सुनहले नाम के साथ तैयार कराई जाती हैं। प्रत्येक जिल्द का मूल्य ।॥) रहता है परन्तु स्थायी ग्राहकों को वे ॥) ही में मिलती हैं। जिल्दों का मूल्य महाभारत के मूल्य से बिलकुल अलग रहता है।

(४) स्थायी ग्राहकों के पास प्रतिमास प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही बिना विलम्ब वी० पी० द्वारा भेजा जाता है। बिना कारण वी० पी० लौटाने से उनका नाम ग्राहक-सूची से अलग कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकों को चाहिए कि जब किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करें तो कृपा कर अपना ग्राहक-नम्बर जो कि पता की स्लिप के साथ छपा रहता है और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक-नम्बर के लिखे हज़ारों ग्राहकों में से किसी पत्र का नाम ढूँढ़ निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और पत्र की कार्रवाई होने में देरी होती है। क्योंकि एक ही नाम के कई-कई ग्राहक हैं। इसलिए सब प्रकार का पत्र-व्यवहार करते तथा रुपया भेजते समय अपना ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

(६) जिन ग्राहकों को अपना पता सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो, अथवा पते में कुछ भूल हो, उन्हें कार्यालय को पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक-नम्बर भी लिखना चाहिए। जिससे उचित संशोधन करने में कोई दिक़्क़त न हुआ करे। यदि किसी ग्राहक को केवल एक दो मास के लिए ही पता बदलवाना हो, तो उन्हें अपने हलके के डाकख़ाने से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(७) ग्राहकों से सविनय निवेदन है कि नया आर्डर या किसी प्रकार का पत्र लिखने के समय यह ध्यान रक्खें कि लिखावट साफ़ साफ़ हो। अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़ साफ़ हिन्दी या अँगरेज़ी में लिखना चाहिए ताकि अङ्क या उत्तर भेजने में दुबारा पूछ-ताछ करने की ज़रूरत न हो। "हम परिचित ग्राहक हैं" यह सोच कर किसी को अपना पूरा पता लिखने में लापरवाही न करनी चाहिए।

(८) यदि कोई महाशय मनी-आर्डर से रुपया भेजें, तो 'कूपन' पर अपना पता-ठिकाना और रुपया भेजने का अभिप्राय स्पष्ट लिख दिया करें, क्योंकि मनीआर्डरफ़ार्म का यही अंश हमको मिलता है।

सब प्रकार के पत्रव्यवहार का पता—

मैनेजर महाभारत विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।